



स
०० इण्टर कॉलिज
250002
)
)

द प्रकाश शर्मा

वो सोला खद्दरवाला

मेरे प्रेरक पाठकों,

अपनी अदालत में असली 'लल्लू' की हाजरी दर्ज करें।

असली-नकली का सवाल इसलिये उठा क्योंकि अभी मैं 'लल्लू' उपन्यास पूरी तरह लिख भी नहीं पाया था कि एक 'सूरमा' प्रकाशक ने जाने किस लेखक से 'लल्लू' लिखवाकर न केवल मेरे नाम से छाप दिया बल्कि उस पर 'तुलसी पॉकेट बुक्स' मेरठ भी लिख दिया। इतना ही नहीं नकली 'लल्लू' के चौथे पृष्ठ पर मेरे पूर्व प्रकाशित असली उपन्यासों की सूची भी दे दी गयी। आपको याद होगा, मैंने 'जिगर का टुकड़ा' के द्वितीय संस्करण में 'लल्लू' की झलक दी थी। नकली 'लल्लू' में न केवल वे तीस-बत्तीस पेज ज्यों के त्यों उतार दिये गये बल्कि उन्हें 'बेस' बनाकर एक उटपटांग कहानी 'फिट कर' दी गयी अर्थात् प्रयास ये था कि आप लोग उसे 'तुलसी पॉकेट बुक्स' से प्रकाशित होने वाला 'वेद प्रकाश शर्मा' का नया उपन्यास 'लल्लू' समझकर ही खरीदें। ठगे जायें। पढ़कर माथा पीटें और मुझे गालियां दें।

मुझे समय रहते इस षड़यंत्र की जानकारी मिल गयी। दिल्ली क्राईम ब्रांच से कार्यवाई की गुहार की और आज . . . कॉपीराईट एक्ट का खुला उल्लघंन करने वाला प्रकाशक कानून के चक्रव्यूह में फंसा है।

'जिगर का टुकड़ा' के द्वितीय संस्करण में दी गयी लल्लू की झलक क्योंकि ज्यों की त्यों उतार ली गयी इसलिये मुझे 'लल्लू' की कहानी बदलनी पड़ गयी। परन्तु यकीन मानें, ये नई कहानी उस पुरानी कहानी से कई गुना ज्यादा बेहतरीन है जो 'लल्लू' के लिये मैंने पहले सोची थी।

'लल्लू' आपकी कसौटी पर खरा उतरा या नहीं . . . इस सम्बन्ध में हमेशा की भांति अपनी निष्पक्ष और बगैर लाग-लपेट वाली राय से अवश्य अवगत करायें ताकि मुझे भविष्य हेतु 'दिशा' मिल सके क्योंकि आप जानते हैं, मैं आपके पत्रों से प्रेरणा पाकर ही नये उपन्यासों का सृजन करता हूं।

रैना कहे पुकार के :– ये नाम है, लल्लू के बाद प्रकाशित होने वाले मेरे आगामी नये उपन्यास का। मुझे मालूम है, इस नाम को पढ़कर मेरे उन पाठकों की बांछें खिल गई होंगी जो एक लम्बे समय से 'विजय-विकास सीरीज' के उपन्यास की मांग कर रहे हैं! ठीक भी है, मुझे आपके प्रिय पात्रों पर उपन्यास लिखे लम्बा अर्सा बीत चुका है। मुझे पूरी उम्मीद है कि 'रैना कहे पुकार के' आपकी सभी शिकायतों को न केवल दूर कर देगा बल्कि रोमांच की ऐसी दुनिया में ले जायेगा जहां आपकी भेंट

विजय-विकास के अलावा अलफांसे, सिंगही, प्रिंसेज जैकसन, टुम्बकटू, जैकी, हैरी और बागारोफ जैसे अनेक महारथियों से होगी।

वो साला खद्दरवाला :– ये नाम है मेरे आगामी विशेषांक का। इस उपन्यास में वह कहानी होगी जो महज मेरे ही नहीं बल्कि आज के हर जागरूक भारतीय के दिमाग में घुमड़ रही है। भारत के दुश्मनों की सबसे बड़ी ख्वाहिश भारत को टुकड़ों में बंटा देखने की है। इसके लिये वे अपने कुत्सित प्रयास सतत् जारी रखे हुये हैं। उन्हीं के परिणाम स्वरूप कभी असम समस्या उठ खड़ी होती है तो कभी पंजाब सुलगाने लगता है। आज कश्मीर में हिंसा की 'लू' चल रही है लेकिन विदेशियों द्वारा खड़े किये गये इन बवालों से निपटने में हम सक्षम हैं। निपटे भी हैं। तभी तो न आज कहीं असम समस्या है, न गुमराह पंजाब! निश्चय ही कश्मीर में भी दुश्मन को मुंहतोड़ जवाब देंगे परन्तु . . . स्थिति तब विकट हो जाती है जब समस्यायें वे खड़ी करें जिनके हाथों में हमने देश की बागडोर सौंप रखी है। 'वोट' के लोभ में कोई हमें हिन्दू-मुस्लिम में बांट रहा है तो कोई स्वर्ण-हरिजन में। कोई ब्रह्ममणों का मसीहा बना बैठा है तो कोई बनियों का। कोई गूजरों की राजनीति कर रहा है तो कोई जाटों की।

किधर ले जा रहे हैं ये देश को ?

'वो साला खद्दरवाला' एक ऐसे ही नेता की कहानी है जो सत्ता में आने के लिये अपने देश के टुकड़े तक करने को तैयार है।

'वर्दी वाला गुण्डा' को प्रकाशित होने से रोकने की भरपूर चेष्टा की गई परन्तु अंततः मैंने उसे आपके हाथों में पहुंचा ही दिया। इसी तरह, मुमकिन है – 'वो साला खद्दरवाला' भी प्रभावशाली लोगों की आंख की किरकिरी बन जाये और उसे आप तक न पहुंचने देने के प्रयास किये जायें परन्तु . . . मैं भी आपको विश्वास दिलाता हूं, चाहे जितने झंझावातों से गुजरना पड़े परन्तु 'वो साला खद्दरवाला' में मैं वर्तमान राजनीति के परखच्चे उड़ाकर रहूंगा . . . जरूरत है तो केवल आपके प्यार, दुलार, विश्वास और स्नेह की। इसे बनाये रखें, मैं किसी से डरने वाला नहीं हूं।

आपका
वेद प्रकाश शर्मा
'तुलसी'
K 1264 शास्त्रीनगर
मेरठ।

लल्लू

साक्षात् यमराज बना एक ट्रक आंधी तूफान की तरह सड़क रौंदता चला आ रहा था। मार्निंग वाक करने वालों में भगदड़ मच गई।

हलक से चीखें निकलीं।

कई लोग बेकाबू ट्रक की चपेट में आते-आते बचे।

ऐसा लगता था जैसे उसके ब्रेक फेल हो गये हों।

मिस्टर खन्ना भी बचने के लिये फुटपाथ की तरफ लपके मगर ट्रक का लक्ष्य मानो उन्हीं को रौंदना था। गोली की सी रफ्तार से वह नजदीक आया और वे उसकी चपेट में लगभग आ ही गये थे कि किसी ने जोरदार धक्का देकर फुटपाथ पर उछाल दिया।

उसी क्षण 'धड़ाम' की आवाज गूंजी!

वातावरण में चीख उभरी।

ट्रक से टकराने के बाद एक युवा जिस्म हवा में लहराकर दूर जा गिरा। ट्रक उसके ऊपर से गुजरता चला गया। गनीमत थी वह चारों पहियों के बीच में रहा।

और फिर . . . बेकाबू ट्रक अचानक काबू में नजर आने लगा।

मगर रफ्तार कम नहीं हुई थी उसकी, बल्कि बढ़ गई।

लोगों के देखते-देखते न केवल दूर निकल गया बल्कि एक मोड़ पर मुड़ने के बाद आंखों से ओझल भी हो गया। मार्निंग वॉक करने वाले लोग चारों तरफ से दौड़कर युवक की तरफ लपके।

हालांकि फुटपाथ पर गिरने के कारण मिस्टर खन्ना के

जिस्म पर जगह-जगह खरोंचें आई थीं, मगर वे तेजी से उठे, सड़क पर पड़े युवक की ओर लपके। तब तक उसके चारों तरफ मार्निंग वाक करने वालों का वृत बन चुका था।

वृत को चीरकर मिस्टर खन्ना आगे पहुंचे।

युवक लहूलुहान था। बेहोश था। मुख्य चोट सिर पर लगी थी।

सफेद धोती, बादामी रंग का कुर्ता और पैरों में जूतियां पहने हुये था वह। कुछ दूर तक एक पोटली लुढ़की पड़ी थी, जो शायद उसी की थी।

एक बूढ़े ने कहा – "गांव का लड़का मालूम पड़ता है।"

"जो भी है।" दूसरा बोला – "मिस्टर खन्ना को इसने बचा लियां ?"

"सच है . . . अगर ये 'ऐन' वक्त पर मिस्टर खन्ना को धक्का न देता . . ."

"प्लीज! " मिस्टर खन्ना युवक की तरफ लपकते चीखे – "इसे डाक्टर के यहां पहुंचाने में हमारी मदद करें।"

●

अगली सुबह!

तब, जबकि बेड पर पड़े युवक के हलक से कराहें निकलने लगीं। उसकी देखभाल कर रही नर्स दौड़ती हुई कमरे से बाहर निकली और दो मिनट बाद वापस आई तो उसके साथ डाक्टर गिरवर भी थे।

पचपन वर्षीय डाक्टर गिरवर बेड की तरफ लपके।

युवक पूरी तरह होश में आ चुका था। उसने उठने की कोशिश की।

"लेटे रहो।" डाक्टर गिरवर ने उसे सम्भाला – "प्लीज तुम्हारे सिर में चोट है।"

"ह . . . हम कहां हैं ?" वह बुदबुदाया।

"अस्पताल में।" डाक्टर ने उसे सान्तवना दी – "चिंता की बात नहीं है, तुम ठीक हो।"

"व . . . वो आदमी ?"

"कौन . . . मिस्टर खन्ना ?"

"हम नाम नहीं जानते, ट्रक ने उन्हें . . ."

"हां . . . वे मिस्टर खन्ना हैं। खन्ना बिल्डर्स के मालिक। इस शहर की पचास पर्सेन्ट इमारतें उन्हीं की बनाई हुई हैं। काम उन्हें सांस तक लेने की फुर्सत नहीं देता मगर . . . कल सुबह से एक पल के लिये भी यहां से नहीं हटे।"

"य . . . यानी वे ठीक हैं ?"

"उनकी चिंता मत करो।" डाक्टर गिरवर कहते चले गये – "मैं उनका फैमिली डाक्टर ही नहीं बचपन का दोस्त भी हूं। ट्रक का जो धक्का तुम जवान होने के कारण 'सह' गये, उसे वे साठ साल के होने के कारण हरगिज नहीं झेल सकते थे और फिर . . . हार्ट पेशेन्ट भी तो हैं वे, निश्चित रूप से तुमने उन्हें मरने से बचाया है।"

"अब वे कहां हैं?"

"तुम्हारे लिये दवाईयां लेने गयें हैं। हमने बहुत कहा, दवा कोई और ले आयेगा मगर वे नहीं माने।"

यही क्षण था जब हाथों में दवाईयों के ढेर सारे पैकिट सम्भाले मिस्टर खन्ना कमरे में प्रविष्ट हुये। युवक को होश में आया देखकर वे उसकी तरफ लपके, बोले – "थैंक्स गॉड . . . तुम्हें होश आ गया बेटे।"

"हम ठीक हैं।" युवक मुस्कुराया।

नर्स ने आगे बढ़कर मिस्टर खन्ना के हाथ से दवाईयों के पैकिट ले लिये।

"भगवान का लाख-लाख शुक्र है।" क्षण भर के लिये आंखें बंद करके मिस्टर खन्ना कहते चले गये – "तुम्हें कुछ हो जाता तो हम खुद को कभी माफ न कर पाते !"

युवक ने कुछ कहने के लिये मुंह खोला ही था कि –

"डैडी . . . डैडी।" वातावरण में एक नारी स्वर गूंजा।

सबकी नजर दरवाजे की तरफ उठ गयी।

हवा के खुश्बूदार झोंके की तरह जो युवती कमरे में दाखिल हुई वह इतनी खूबसूरत थी कि जो देखता . . . बस देखता रह जाता। ऊंचा कद, लम्बी टांगें, सांचे में ढला जिस्म, शीप सी पलकें, बड़ी-बड़ी आंखें, गुलाबी होंठ और ऐसा रंग जैसे

माखन में सिंदूर मिला हो।

वह ऊंची एड़ी के सैंडिल, टांगों से चिपकी जींस और हाफ बाजू वाला टॉप पहने हुये थी। लम्बे, घने और काले बाल खुले हुये थे। कमरे में आते ही उसने कहा – "यह क्या हरकत है डैडी, आप सारी रात घर नहीं आये ?"

"इससे मिलो बेटी।" मिस्टर खन्ना ने युवक की तरफ इशारा किया – "ये वो लड़का है जिसके बारे में हमने फोन पर बताया था, अगर कल सुबह इसने . . ."

"ओफ्फो डैडी, आपको तो रट लग जाती है एक बात की। इसके इलाज का सारा खर्चा उठा तो रहे हैं आप . . . ऐसे लोगों के लिये इससे ज्यादा किया भी क्या जा सकता है ?"

"ऐसा नहीं कहते बेटी, जिसने हमें मरने से बचाया . . ."

"छोड़िये डैडी।" उसने पूरे अधिकार से मिस्टर खन्ना का हाथ पकड़ा और उन्हें दरवाजे की तरफ खींचती बोली – "घर चलिये, गिरवर अंकल इसकी द्रेखभाल कर लेंगे।"

"स - सुनीता।" थोड़े गुस्से में कहने के साथ मिस्टर खन्ना ने एक झटके से अपना हाथ छुड़ाया और कुछ देर तक आग्नेय नेत्रों से उसे घूरते रहे . . . फिर, जाने क्या हुआ कि उनके चेहरे से सख्ती के भाव गायब हो गये। गिड़गिड़ा उठे वे – "समझने की कोशिश क्यों नहीं करतीं, ये लड़का न होता तो . ."

"आपने इतने लोगों के बीच मेरा अपमान किया ?" वह बफर पड़ी – "ओ. के., मैं जा रही हूं।" कहने के बाद आंधी की तरह आई लड़की तूफान की तरह ठक . . . ठक . . . करती बाहर निकल गई मगर कमरे में छोड़ गयी तनावपूर्ण सन्नाटा . . . ऐसा कि काफी देर तक कोई उसे तोड़ने कि हिम्मत न जुटा सका। झेंपें-झेंपे से मिस्टर खन्ना किसी से नजरें नहीं मिला पा रहे थे।

"आपने बेकार हमारी वजह से उन्हें नाराज किया।" युवक कह उठा – "ठीक ही तो कह रही थीं वे। आपको घर चले जाना चाहिये था। हम गरीब लोगों का क्या है . . . लेकिन . . . हम आपके पैसे से इलाज नहीं करायेंगे। हमारे पास एक पोटली थी।"

"तकिये के नीचे रखी है।" डाक्टर गिरवर ने बताया।

युवक टटोल कर उसे निकालने का प्रयत्न करने लगा।

मिस्टर खन्ना ने लपककर उसकी कलाई पर हाथ रखा और बोले – "माफ कर दो बेटे। बगैर मां की उस लड़की को हमने इतने लाड़ प्यार से पाला है कि आज . . . उसे इतनी तक तमीज नहीं रही कि कब किसके लिये क्या कहना चाहिये। उसकी तरफ से हम माफी मांग रहे हैं।"

"ह . . . हम भला किसी को क्या सजा दे सकते हैं?" युवक की आंखें डबडबा उठीं।

"तुम्हारा परिचय जानने की गर्ज से ये पोटली खोल कर देखी थी। इसमें दो जोड़ी कपड़े और पांच सौ पैंसठ रुपये हैं। उन्हें डाक्टर गिरवर को देकर तुम हमारा अपमान नहीं करोगे।"

"ल-लेकिन . . . अपने इलाज का खर्चा हमीं को उठाना चाहिये न ?"

"बेटे!" मिस्टर खन्ना बुरी तरह आहत नजर आने लगे, गिड़गिड़ा से उठे वे – "क्या उस नादान लड़की की तरह तुम भी हमारी भावनाओं को नहीं समझोगे?"

युवक देखता रह गया उनकी तरफ।

दोनों की आंखें डबडबाई हुई थीं। फिर . . . युवक ने अपना हाथ पोटली से हटा लिया।

"थैंक्यू . . . थैंक्यू यंगमैन।" कहने के साथ मिस्टर खन्ना ने अपने गालों पर ढलक आये आंसू पोंछे और जोर से उसका कंधा दबाते हुये बोले – "तुम एक दयालु लड़के हो।"

"अब इसका अता-पता भी पूछेगा खन्ना या टसुवे ही बहाता रहेगा?" कहने के बाद डाक्टर गिरवर ने युवक से पूछा – "तुम्हारा नाम क्या है यंगमैन?"

"ये सब पूछने के लिये हम पधार गये हैं।" युवक के जवाब देने से पहले कमरे में एक अन्य आवाज गूंजी।

चारों ने चौंककर दरवाजे की तरफ देखा।

वहां जो कार्टून सा नजर आने वाला शख्स खड़ा था, उसके जिस्म पर पुलिस इन्सपैक्टर की वर्दी थी। बेहद पतला दुबला था वह। लम्बा चेहरा, बड़े-बड़े कान, तोते जैसी नाक और बाहर को उबली हुई आंखें, पतले होंठों के ऊपर मौजूद दो बैठी हुई मक्खियों जैसी मूंछें उसे कुछ ज्यादा ही हास्यास्पद बनाये दे

रही थीं।

"अ . . . आप?" गिरवर के मुंह से निकला।

"खाकसार को केकड़ा कहते हैं . . . इन्सपैक्टर केकड़ा।" कहने के साथ वह कमरे के अन्दर आया।

मिस्टर खन्ना ने पूछा – "यहां किसलिये आये हैं?"

"ड्यूटी – ।" उसने अपनी घने बालों वाली भवें मटकाई।

"मतलब?"

"बंदे ने मार्निंग वॉक करने वाले काफी लोगों का 'भेजा' चाटा।" वह कहता चला गया – "एक ही निचोड़ निकला, वो बगैर नम्बर प्लेट वाला ट्रक आपको पापड़ बना कर सड़क से चिपका देने के 'फेर' में था।"

"तो?"

"जाहिर है, मेरे इस भेजे को अनेक सवाल कीड़े बनकर कचोट रहे हैं।" उसने रुल के एक सिरे से अपनी कनपटी ठकठकाते हुये कहा।

"जैसे?"

"उस ट्रक को कौन 'हांक' रहा था? खास आप ही को पापड़ बनाने में उसकी क्या दिलचस्पी थी? नम्बर प्लेट क्यों नहीं लगी थी उस पर और . . . इन हजरत ने आपको बचाने की जहमत क्यों उठाई?"

"आखरी सवाल का कारण समझ में नहीं आया।"

"आ जायेगा . . . जरूर आयेगा। जब केकड़ा समझाने पर आमादा होता है तो ये तक समझा देता है कि सूरज पूरब से प्रकट होकर गलती करता है, पश्चिम से उदय हुआ करता तो अस्त होने की जहमत ही न उठानी पड़ती, खैर!" उसने सीधा सवाल युवक से किया – "आप का शुभ नाम?"

"ज . . . जी?" युवक बौखला गया।

"शुभ नहीं है तो 'अशुभ' बता दीजिये, नाम क्या है आपका?"

"विनाश।" कहने के साथ उसने अपनी बांई कलाई आगे कर दी। जिस पर 'विनाश' लिखा था। जहां रिस्टवॉच बांधी जाती है वहां एक बड़ा सा काला मस्सा था।

"उंहं।" केकड़ा ने मुंह बनाकर अजीब सा झटका खाया – "नाम तो बर्खुरदार तुम्हारा हन्ड्रेड परसेन्ट अशुभ है, दुनिया में विनाश फैलाने आये हो क्या?"

"ज . . . जी . . . हम समझे नहीं।"

"छोड़ो . . . पैदावार कहां की हो?"

"अ . . . आप पूछ क्या रहे हैं?" युवक झुंझला उठा – "हमारी समझ में कुछ नहीं आ रहा।"

"कहां के रहने वाले हो?"

"कहीं के नहीं।"

"ये भी ठीक रही, यानी खजूर से टपके हो?"

"क्या कहें?" युवक शुरू हो गया – "कहीं घर बार, भाई बहन, माता-पिता हों तो कहें फलां जगह के रहने वाले हैं। सब कुछ बाढ़ ने तबाह कर दिया। जाने कहां-कहां भटकते परसों इस शहर में पहुंचे हैं।"

"और आते ही हीरोशिप दिखानी शुरू कर दी?"

"ज . . . जी?"

केकड़ा ने मिस्टर खन्ना की तरफ इशारा करके पूछा – "ये ताऊ लगते हैं तुम्हारे?"

"अरे . . .?" विनाश हैरान रह गया – "मरते को बचाना पाप है क्या?"

"पाप ही नहीं मियां, इन्सपैक्टर केकड़ा के इलाके में इस किस्म की हरकत करना बहुत बड़ा जुर्म है और उस हालत में तो ये जुर्म और संगीन हो जाता है ज़ब किसी को बचांने के 'फेर' में खुद अपनी जान खतरे में डाल दी गई हो।"

"क . . . कमाल की बात कर रहे हैं आप ?"

"तुम्हीं क्या, सब यही कहते हैं कि केकड़ा कमाल की बात करता है और . . . सुना है, ट्रक के नीचे लोट पोट हो गये थे, गनीमत रही कोई पहिया ऊपर नहीं चढ़ा वरना मिस्टर खन्ना की जगह तुम पापड़ बनकर सड़क से चिपक जाते, क्या ये सच है?"

"सच है।"

"क्यों हुआ ऐसा, पहिया तुम पर चढ़ा क्यों नहीं?"

"अ . . . अब हम इस बारे में क्या कहें?" विनाश

परेशान हो गया।

केकड़ा ने पुनः कुछ कहने के लिये मुंह खोला ही था कि बहुत देर से सहन कर रहे मिस्टर खन्ना ने हस्तक्षेप किया – "बस कीजिये मिस्टर केकड़ा। बहुत हो लिया। पुलिस वालों की इन्हीं हरकतों से 'हेट' है पब्लिक को। जो कसूरवार है, यानि उस ट्रक वाले को तो ढूंढने की कोशिश कर नहीं रहे हैं आप – उल्टे उसे परेशान कर रहे हैं जिसने अपनी जान पर खेल कर हमारी जान बचाई, क्या गुनाह किया इस गरीब ने ?"

"मेरी खोपड़ी के मुताबिक मामला सीधा नहीं है खन्ना साहब, तिरछा है। यक्ष प्रश्न ये है कि इन हजरत ने आपको क्यों बचाया, बचाया . . तो ट्रक का कोई पहिया इनके ऊपर क्यों नहीं चढ़ा – अभी तक जिन्दा क्यों हैं ये?"

मिस्टर खन्ना बिगड़ गये – "अगर ये बेवकूफाना बातें बंद नहीं कीं तो हम तुम्हारी शिकायत पुलिस कमिश्नर से करेंगे।"

"कर सकते हैं, ऐसा हन्डरेड परसेन्ट कर सकते हैं आप क्योंकि आप इस शहर की नाक ठहरे, कमिश्नर साहब आपकी बात को पानी जरूर देंगे। वे आपकी एक कम्पलेन्ट पर इस इलाके से बंदे का बिस्तर गोल कर सकते हैं और फिलहाल बंदे का इस इलाके से टलने का मूड नहीं है, गैर सीजन में हुये तबादले के कारण बच्चों के एडमिशन आदि में दिक्कत आ जाती है इसलिये वे सवाल करने बंद कर देते हैं जो आपकी नजर में 'बेवकूफाना' हैं और यहां से रुख्सत होते हैं।" कहने के साथ वह दरवाजे की तरफ बढ़ा।

सबकी निगाहें उसी पर चिपकी थीं।

चौखट पर पहुंचकर ठिठका, मुड़ा और बोला – "फिर भी, आप सतर्क रहें। मुमकिन है सारा ड्रामा प्लान्ट किया गया हो और बिस्तर तोड़ रहा ये बागड़बिल्ला ट्रक ड्राइवर को जानता हो।"

कहने के तुरन्त बाद वह बगैर किसी को कुछ बोलने का मौका दिये गायब हो गया था।

एक बार फिर कमरे में खामोशी छा गयी, बड़ी ही सनसनीखेज खामोशी थी वह जिसे विनाश ने तोड़ा – "अजीब

पुलिस वाला था ये।"

"फिक्र मत करो।" मिस्टर खन्ना ने उसके कंधे पर हाथ रख कर सांत्वना दी – "हमारे सामने उसकी कोई हैसियत नहीं है।"

विनाश के चेहरे पर पसीना उभर आया था।

गिरवर ने पूछा – "ठीक होने के बाद कहां जाओगे?"

"जहां नौकरी मिल जाये।"

"नौकरी की क्या चिंता करते हो?" मिस्टर खन्ना मुस्कुराये – "हमारे पास नौकरियां ही नौकरियां हैं।"

युवक बुदबुदा उठा – "आंखों के अलावा अंधे को चाहिये भी क्या?"

●

"क . . . क्या?" सुनीता चिहुंक उठी – "क्या कहा आपने?"

मिस्टर खन्ना मुस्कुराये, बोले – "वही . . . जो तुमने सुना।"

"ये लल्लू यहां रहेगा, हमारी विला में?"

"इसका नाम लल्लू नहीं, विनाश है।"

जिस्म पर धोती कुर्ता और पैरों में गंवारू जूतियां पहने खड़े विनाश की तरफ देखती सुनीता उसकी खिल्ली उड़ाने वाले अंदाज में हंसी और फिर सड़ा सा मुंह बनाती बोली – "इसका नाम लल्लू के अलावा कुछ नहीं हो सकता।"

"एक बात कहूं सुनीता जी?"

"शटअप!" सुनीता दहाड़ उठी – "सब नौकरों की तरह बीवी जी बोलो।"

विनाश सकपका गया।

"सुनीता . . .।" आहत से मिस्टर खन्ना ने कहा – "प्लीज . . . . विनाश का अपमान मत करो।"

"तो आप क्या चाहते हैं, सिर पर बैठाकर नाचूं इसे?" सुनीता बफर पड़ी – "क्या करेगा विला में, है ही किस लायक ये?"

"कमाल कर रही हैं आप?" विनाश का अंदाज पूरी तरह मूर्खाना था – "मिडिल पास हैं हम, दुनिया का ऐसा कोई काम नहीं जिसे न कर सकें।"

"यानी रहोगे तो नौकर ही?"

"हमने कब कहा मालिक बनके रहेंगे?"

"लो . . . सुन लो डैडी।" वह मिस्टर खन्ना से मुखातिब हुई – "मैंने यह कह कर कौन सा अपमान कर दिया कि मुझे बीवी जी कहकर पुकारें?"

"पुकार तो लें लेकिन . . ."

विनाश ने अपना वाक्य स्वयं अधूरा छोड़ दिया।

"ल - लेकिन?" सुनीता ने आंखें तरेरीं – "लेकिन क्या?"

"शर्म आती है हमें।" वह सचमुच लड़कियों की तरह शरमा उठा।

"इसमें शरमाने की क्या बात है?"

विनाश का चेहरा यूं सुर्ख हुआ जैसे किसी नवयौवना को प्रथम बार उसके सजना ने स्पर्श किया हो, नजरें जमीन में गढ़ा कर दांतों से अपनी तर्जनी के नाखून को कुतरता बोला – "हमारे गांव में 'बीवी जी' केवल पत्नी को बोला जाता है।"

मिस्टर खन्ना के मुंह से बरबस ठहाका फूट पड़ा जबकि सुनीता भन्ना उठी . . . और ऐसी भन्नाई कि विनाश को जाहिल, गंवार और बेवकूफ जैसे जाने कितने शब्द कहती, पैर पटकती हॉल से बाहर चली गयी।

विनाश ने चेहरा ऊपर उठाया, पूरी मासूमियत के साथ मिस्टर खन्ना से पूछा – "क्या हम 'टें' बोल गये मालिक?"

"हां . . . ।" मिस्टर खन्ना के चेहरे पर बनावटी गुस्सा था – "सरासर 'टें' बोले हो तुम।"

"व . . . वो क्या?"

"तुमने हमें मालिक कहा।"

"मालिक को मालिक न कहूं तो क्या . . ."

"नहीं यंगमैन।" मिस्टर खन्ना ने आगे बढ़कर अपने दोनों हाथ अपनत्व के भाव से उसके कंधे पर रखे, लहजा भावुक हो उठा – "तुम हमें बाबूजी कहोगे।"

"मगर हम आपकी और अपनी नहीं, उस बात की बात कर रहे थे जो सुनीता जी से कही, क्या हमने कुछ गलत कहा?"

"नहीं . . . एकदम सही बात कही तुमने और . . ."

कहकर वे चुप हो गये।

विनाश ने पूछा – "अटक क्यों गये बाबूजी?"

"सोच रहे हैं, क्या वह सब तुमसे कहना मुनासिब होगा जो इस वक्त हमारे मन में आ रहा है?"

"जो मन में आये, कह देना चाहिये वरना पेट में 'ऐंठन' शुरू हो जाती है।"

मिस्टर खन्ना पल भर को मुस्कुराये, फिर गम्भीर होकर बोले – "कुछ देर पहले तुम्हारे और सुनीता के बीच जो छोटी सी झड़प हुई उसे देखकर जाने क्यों हमारे मन में यह विचार उठा कि सुनीता को कोई सही रास्ते पर ला सकता है तो वो तुम हो।"

"क्या वे गलत रास्ते पर जा रही हैं?"

मिस्टर खन्ना ने ब्रास के स्टैण्ड पर टिकी कांच की गोल मेज पर रखे सिगार केश से एक सिगार निकाला। 'म्यूजिकल लाईटर' से सुलगाया और गहरा कश लगाने के बाद चहलकदमी करने लगे। विनाश ऊंट की तरह गर्दन उठाये उन्हें देखता रहा। एकाएक मिस्टर खन्ना ठिठके और उसकी तरफ पलटकर बोले – "लगता है, वो किसी से मुहब्बत करने लगी है।"

"हमने लैला-मजनू, हीरा रांझा, शीरी फरहाद . . . सभी के नाम सुने हैं . . . नाम ही नहीं किस्से भी सुने हैं उनके . . . ऐसा है तो बड़ी खुशी की बात है बाबू जी, हम आपसे विनती करेंगे। उनके बापों की तरह सुनीता जी पर जुल्म न ढायें। पाप लगता है, शादी कर दें उनकी।"

"तुम बहुत भोले हो विनाश।"

"सो तो हैं बाबू जी।" उसने शरमा कर गर्दन झुका ली।

"आज मुहब्बत के नाम पर लोग एक दूसरे को ठगते हैं, लूटते हैं।"

भौंडे अंदाज में 'गुद्दी' खुजाता विनाश कह उठा – "हमारी खोपड़ी में कुछ नहीं घुसा।"

"जिस महानगर में इस वक्त तुम खड़े हो, वहां का हर शख्स पैसे के पीछे भाग रहा है।" मिस्टर खन्ना उसे समझाने पर

आमादा थे – "आज लोगों के बीच न कोई रिश्ता रह गया है, न प्यार-स्नेह, विश्वास और संवेदनायें। सब कुछ पैसे की लालसा की होली में जलकर भस्म हो चुका है। कोई चोरी कर रहा है, डाके डाल रहा है, बैंक लूट रहा है, तो कोई हत्यायें कर रहा है। सुना था, पूत कपूत हो सकते हैं, माता कुमाता नहीं हो सकती मगर कलयुग में ये कहावत भी झूठी पड़ गयी है। पैसे के लिये आज मां भी बेटे की गर्दन काटने से नहीं चूकती।"

"राम-राम!" विनाश ने अपने दोनों हाथ कानों पर रख लिये, बोला – "मगर मुहब्बत की बात चलते-चलते पैसे का जिकर कहां से आ गया बाबूजी?"

"जिस पैसे के लिये बेवकूफ आदमी डकैती डालता है, खून करता है – उसी पैसे के लिये चालाक आदमी ऐसा जाल बिछाता है कि नाकाम भी हो जाये तो किसी कानून के तहत न उसे मुजरिम ठहराया जा सके, न सजा दी जा सके।"

विनाश कीमती सोफे पर 'धम्म' से गिर पड़ा, दोनों हाथों से अपना सिर थामता बोला – "हमारी खोपड़ी फटने वाली है।"

"ऐसी सबसे आसान और सबसे खतरनाक साजिश का नाम है मुहब्बत। ये एक ऐसी बीमारी है जो एड्स से ज्यादा घातक है और प्लेग से कहीं ज्यादा तेजी से फैल रही है। चालाक लोग जाल फैंकते हैं, सुनीता जैसी कच्ची उम्र की मछलियां उसमें आसानी से फंस जाती हैं। मुहब्बत के जाल में फंसी लड़कियों को अपने प्यारे से प्यारे शख्स की नसीहत 'अत्याचार' नजर आने लगता है और 'विद्रोह' कर उठना उन्हें अपनी शान नजर आती है।" कहने के साथ मिस्टर खन्ना ने विनाश की तरफ देखा तो लगा, वे भैंस के आगे बीन बजा रहे हैं क्योंकि दोनों हाथों से सिर थामें जिन नजरों से वह उनकी तरफ देख रहा था वे नजरें साफ बता रही थीं, उसकी मोटी अक्ल में कुछ नहीं घुसा है।

उन्होंने सवाल किया – "कुछ समझे?"

विनाश ने इतनी मासूमियत से इंकार में गर्दन हिलाई कि जहां मिस्टर खन्ना को झुंझलाना चाहिये था वहां होंठों पर मुस्कान फैल गयी, बोले – "समझने की कोशिश करो विनाश, खुद हमें नहीं मालूम कि हम कितने अरब रूपयों की सम्पत्ति के मालिक हैं। इसी शहर के नहीं, दुनिया भर के लोग जानते हैं

हमारे बाद यह सम्पत्ति सुनीता की होगी और सुनीता के साथ उसकी जिससे उसकी शादी होगी।"

"ऐसा तो दुनिया में होता ही आया है।"

"सोचो, सुनीता के जरिये इस अरबों की सम्पत्ति पर डाका मारना . . . इसे हड़पना कितना आसान है।" मिस्टर खन्ना कहते चले गये – "क्या कोई षड़यंत्रकारी अपने मकसद में कामयाब होने की खातिर सुनीता का पति बनने के ख्वाब नहीं देख रहा हो सकता?"

"ओह।" विनाश के दिमाग के सभी खिड़की दरवाजे मानो एक साथ खुल गये – "क्या कोई इतना नीच आदमी सुनीता जी के पीछे पड़ा है?"

"कह नहीं सकते।"

"मतलब?"

"कोई अमित नाम का लड़का है। उसे हमने देखा नहीं है। सुनीता के मुंह से सुना है, फाईव स्टार्स होटल्स में गाने-गाने का काम करता है। सुनीता आजकल उसकी दीवानी नजर आती है। जब देखो अमित की बातें। उसके गानों की तारीफें। जिस दिन, जिस होटल में अमित को गाना हो उस दिन, उसी होटल में जाना . . . ये सब ज़ाहिर करता है, वह उससे मुहब्बत करने लगी है।"

"आप क्या चाहते हैं?"

"यह जानना कि उनके बीच क्या सम्बन्ध हैं। कितने आगे निकल चुके हैं वे। सुनीता अमित के बारे में क्या सोचती है – और अमित के सुनीता के बारे में क्या विचार हैं। वह वास्तव में सुनीता से मुहब्बत करता है या दौलत से। हम सुनीता को समझाने की कोशिश करें तो उसका रुख क्या होगा, आदि।"

"ऐसा कैसे हो?"

"तुम कर सकते हो?"

"ह . . . हम?" विनाश हकलाया।

"हमारे पास आदमियों की कमी नहीं है विनाश, इस शहर में प्राइवेट डिटेक्टिव भी हैं जिन्हें ये काम सौंप सकते थे परन्तु यकीन मानों, ये बेशुमार दौलत हमारी सबसे बड़ी दुश्मन है। जाने कौन अपने किस स्वार्थ के वशीभूत होकर गलत रिपोर्ट

दे दे। हमें लगता है, तुम्हारी रिपोर्ट निस्वार्थ होगी, उसमें कोई पूर्वाग्रह नहीं होगा। ऐसा शायद इसलिये है क्योंकि हमारी समझ के मुताबिक तुम जानते ही नहीं कि मिस्टर खन्ना चीज क्या है?"

"म . . मगर ये सब हम कर कैसे पायेंगे?"

"आओ।" मिस्टर खन्ना ने सिगार का बचा हुआ टुकड़ा ऐश्ट्रे में कुचला – "बताते हैं।"



आदमकद आईने के सामने खड़े विनाश के चेहरे पर बौखलाहट के भाव थे। कभी जिस्म पर मौजूद पैंट को दुरुस्त करने की कोशिश करता, कभी गर्दन में बंधी टाई को। गर्दन को शुर्तुमुर्ग की तरह लम्बी किये हुये था वह। नजदीक खड़े मिस्टर खन्ना लगातार मुस्कुराये जा रहे थे। टाई पकड़े विनाश ने उनकी तरफ पलट कर पूछा – "इसके बगैर काम नहीं चल सकता बाबू जी?"

"नहीं।" मिस्टर खन्ना की मुस्कान गहरी हो गयी।

"क्यों?"

"जिन जगहों पर सुनीता जाती है, वहां घुसने के लिये ये ड्रेस जरूरी है।"

"ल . . . लेकिन ये टाई . . . हमें लगता है, गले में फांसी का फंदा पड़ा गया है।"

"एकाध दिन लगेगा, फिर आदत पड़ जायेगी।"

विनाश पुनः आईने की तरफ घूमा। चेहरे पर ऐसे भाव थे जैसे खुद को पहचानने की कोशिश कर रहा हो, मिस्टर खन्ना ने कहा – "आओ, हम तुम्हें कार चलाना सिखायेंगे।"



पानी पर तैरती सी मर्सीडीज 'ओबराय कान्टिनेन्टल' के पोर्च में रुकी। राज दरबारियों जैसा लिबास पहने गेटमैन ने लपक कर ड्राईविंग डोर खोला। चाबी इग्निशीयन में लगी छोड़ कर विनाश बाहर निकला। उसके तन पर काली पतलून, फर का काला कोट, सफेद शर्ट और लाल टाई थी। सिर पर हैट, पैरों में

चमकदार जूते ही पहने हुये नहीं था बल्कि होठों के बीच सुलगी हुई सिगरेट भी लटकाये हुये था। सिगरेट ब्राउन कलर की . . . यानी चांसलर की थी।

दरबान ने जोरदार सैल्यूट मारा।

विनाश ने गर्दन अकड़ा कर हल्की सी जुम्बिश दी और अपने दरबार में दाखिल हो रहे शहंशाह की तरह द्वार की तरफ बढ़ा।

बांया हाथ पतलून की जेब में डाले विनाश तेज कदमों के साथ लाबी से गुजरता लिफ्ट की तरफ बढ़ा। लिफ्ट में सवार होने से पहले करीब-करीब आधी सिगरेट फर्श पर डाली और जूते के तले से कुचल दी।

लिफ्ट द्वारा सातवीं मंजिल पर पहुंचा।

फिर!

ऐसे हॉल में जिसके दाईं तरफ खूबसूरती से सजा स्टेज था। हॉल युवा पीढ़ी के लड़के लड़कियों से भरा था। अधिकांश सीटें फुल थीं। उसने सिर पर मौजूद हैट इस हद तक ललाट पर झुका लिया कि चेहरे का अधिकांश भाग ढक जाये।

वैसे भी, हाल में मद्धिम रोशनी थी।

चारों तरफ हंसी, ठहाके और खिलखिलाहटें गूंज रही थीं।

विनाश की नजरों ने शीघ्र ही सुनीता को ढूंढ लिया। दो कुर्सियों वाली सीट पर बैठी वह लापरवाही के साथ व्हिस्की चुसक रही थी। जिस्म पर चुस्त पैंट और ऐसा टाप जिसमें वक्षस्थल की गोलाईयां साफ नजर आ रही थीं।

विनाश ने उसके आस पास की सीटों पर नजर डाली।

एक खाली सीट की तरफ बढ़ा। वह सुनीता के नजदीक तो नहीं मगर ज्यादा दूर भी नहीं थी। बैठते ही कोट की जेब से चांसलर का पैकिट निकाला और मिस्टर खन्ना द्वारा दिये गये कीमती लाईटर से सिगरेट सुलगाई। वेटर ने नजदीक आकर आदरपूर्वक पूछा -- "आर्डर प्लीज।"

"कोक!" कहने के साथ उसने सिगरेट में कश लगाया।

कोक आ गई।

उसे धीरे-धीरे पीता विनाश सुनीता पर नजरें गड़ाये रहा।

कुछ देर बाद स्टेज से घोषणा हुई — "अब अमित नामक वह गायक स्टेज पर आयेगा जिसका गाना सुनने आप लोग यहां आये-हैं।"

चारों तरफ से 'हुर्रे' का शोर उठा।

उस वक्त तो हाल में मानो तूफान आ गया जब संगीत के तेज झनाकों के साथ अमित स्टेज पर प्रकट हुआ।

निसन्देह वह खूबसूरत और स्मार्ट नौजवान था।

जिस्म से चिपका ऐसा काला लिबास पहने था वह जो स्टेज की खास रोशनियों के बीच झिलमिला रहा था।

चारों तरफ हंगामा सा मच गया।

तालियाँ, सीटियाँ और 'हाय अमित' का शोर!

फिर . . . अमित ने अपने हाथ में मौजूद माईक पर गाना शुरू किया। यकीनन उसकी आवाज में जबरदस्त कशिश थी। चारों तरफ से उठता शोर स्वतः शान्त हो गया और अब हाल में गूंज रही थी केवल संगीत और अमित की आवाज।

विनाश सहित हाल में मौजूद हर शख्स ने मंत्रमुग्ध होकर गाना सुना। अंत तक पहुंचते पहुंचते गाना जोशीला और संगीत इतना फास्ट हो चला कि लड़के लड़कियां सीटें छोड़-छोड़कर नाचने लगे। नाचता हुआ अमित भी स्टेज छोड़कर हाल में आ गया।

वह सुनीता की तरफ बढ़ रहा था।

अनेक लड़कियों ने बीच में रोक कर उसके साथ डांस करना चाहा। वह हरेक को बहलाता, एकाध स्टैप नाचता और सुनीता की तरफ बढ़ जाता। अंततः सुनीता की सीट के नजदीक पहुंच गया और उस वक्त सुनीता मानो निहाल हो गयी जब अमित ने उसे रबर की गुड़िया की मानिन्द गोद में उठा लिया।

विनाश की नजरें उन्हीं पर स्थिर थीं।

नशे और खुशी की मस्ती में चूर सुनीता बिंदास अंदाज में नाचती स्टेज की तरफ बढ़ी। अमित उसे बांहों में सम्भाले था। विनाश के देखते देखते वे स्टेज के पार्श्व भाग में लुप्त हो गये।

गाना समाप्त!

संगीत अब भी शोर मचाये हुये था। लड़के लड़कियां उसी पर फुदक रहे थे।

विनाश तेजी से उठा। हाल का दरवाजा पार करके गैलरी में पहुंचा। नजर उस तरफ उठी ही थी जिस तरफ से स्टेज के पीछे जाया जा सकता था कि गैलरी में अमित की हंसी और सुनीता की खिलखिलाहट गूंज उठी।

वे एक दूसरे की कमर में बांहें डाले चले आ रहे थे।

विनाश ने हैट कुछ ज्यादा ही झुका लिया जबकि उन्होंने उस पर ध्यान तक नहीं दिया और उसी तरह हंसते खिलखिलाते नजदीक से गुजर गये।

विनाश ने एक निश्चित दूरी बनाये रखकर 'पीछा' शुरू किया।

वे रूम नम्बर सात सौ सात में घुस गये। दरवाजा बंद हुआ। विनाश चहलकदमी करता उसके सामने से गुजर गया। गैलरी के अंतिम सिरे तक पहुंचा, वापस मुड़ा और पुनः सात सौ सात की तरफ बढ़ा। गैलरी पूरी तरह सुनसान पड़ी थी, इसलिये उसकी हिम्मत 'की होल' से आंख सटाने की पड़ गयी।

एक बार क्या सटाई कि आंख वहीं सटी रह गयी।

होश ही न रहा इस पोज में कितनी देर हो गयी है। चौंका तब, जब किसी ने हौले से कंधा थपथपाया। सीधा हुआ। नजर कंधा थपथपाने वाले पर पड़ी तो चिहुंक उठा। जिस्म के सभी मसामों ने एक झटके से पसीना उगल दिया था।

ऊपर की सांस ऊपर, नीचे की नीचे।

चेहरा पीला पड़ गया।

हालत ऐसी थी जैसे चोरी करता रंगे हाथों पकड़ा गया हो।

मुंह से बोल न फूट सका, नजदीक खड़े कार्टूननुमा इन्स्पैक्टर केकड़ा के होठों पर ऐसी मुस्कान थी जैसे बहुत बड़ा तीर मारा हो, बोला – "सारा मजा अकेले लूट गये यार?"

"ज . . . जी।" मारे बौखलाहट के विनाश का बुरा हाल था।

"बंदे को पार्टनर नहीं बनाओगे?"

"व . . . वो . . . बात ये है कि . . . ."

"हटो जरा।" कहने के साथ केकड़ा ने विनाश को एक तरफ किया और 'की होल' से आंख सटा दी।

अंदर का दृश्य देखते ही इस तरह पीछे हटा जैसे करेंट लगा हो, बोला – "छि . . . छि . . . ब्ल्यू फिल्म देखने की गंदी आदत कहां से पड़ गयी दोस्त?"

विनाश को काटो तो खून नहीं।

समझ नहीं पा रहा था केकड़ा से कैसे निपटे। केकड़ा उसकी कलाई पकड़ कर कमरे से दूर ले जाता बोला – "यही तो बुराई है पुलिस की नौकरी में। देख रहे हैं गलत काम हो रहा है--मगर कुछ कर नहीं सकते। वो पुरानी कहावत है न, मियां बीवी राजी, तो क्या करेगा काजी ?"

विनाश पर कुछ कहते न बन पड़ा। केकड़ा के साथ इस तरह खिंचता चला गया जैसे उसके अपने जिस्म में विरोध करने की क्षमता न हो। केकड़ा उसे 'बार' में ले आया, पूछा –"क्या पियोगे ?"

"ह . . . हम शराब नहीं पीते।" विनाश बड़ी मुश्किल से कह सका।

"सो तो है, डिस्को हाल में भी कोक गटक रहे थे।"

"आप वहां थे ?"

"हम हर जगह होते हैं, अन्तरयामी जो ठहरे ?"

विनाश की जुबान पुनः तालू से जा चिपकी।

"खैर ! केकड़ा ने उसकी आंखों में झांका –"हो न हो . . . तुम हो कोई ऊंचे खिलाड़ी।"

"ज . . . . जी ?"

"ये चक्कर क्या चलाया है गुरू, ट्रक वाला किस्सा हुए एक महीना गुजरा है। उस दिन तुम्हारे तन पर धोती कुर्ता था। आज पूरे हीरो, बल्कि जेम्स बांड बने हुए हो। मिस्टर खन्ना की मर्सीडीज में उन्हीं की लौंडिया की जासूसी करते फिर रहे हो। घुट्टी क्या पिलाई है तुमने मिस्टर खन्ना को ?"

"हमारी समझ में नहीं आ रहा है कि आप क्या पूछ रहे हैं, क्या जानना चाहते हैं ?"

केकड़ा ने उसे इस तरह घूरा जैसे कच्चा चबा जायेगा, बोला –"इतने लल्लू हो नहीं उस्ताद, जितने दर्शाने की कोशिश कर रहे हो।"

विनाश झुंझला उठा –"अ-आखिर आप चाहते क्या हैं?"

"इस वर्दी से मत डरो। बाल बच्चे मेरे भी हैं, एक सुन्दर सी बीवी है-बीवी जितनी सुन्दर हो फरमाईशें उतनी ही तगड़ी होती हैं और रात को लात न खानी हो तो फरमाईशें पूरी करनी पड़ती हैं। बच्चे साले अंग्रेजी स्कूल में पढ़ते हैं। तनख्वाह के भरोसे रहें तो उनकी फीस तक न जा सके। कुछ समझे या मैं भैंस के आगे बीन बजा रहा हूं ?"

"हमारी समझ में कुछ नहीं आ रहा।"

केकड़ा ने उसे और तगड़ी नजरों से घूरा। कुछ देर घूरता रहा, फिर गुर्राया —"सीधी सीधी भाषा में सुनना चाहता है तो सुन . . . मिस्टर खन्ना से जो कमाई तू करेगा उसमें से फिफ्टी परसेन्ट हिस्सा अपना भी होगा।"

"क . . . क्या बात कर रहे हैं आप ?"

"बहती गंगा में हर कोई डुबकी लगाता है मियां। एक उसकी बेटी को फंसाये जायदाद पर क़ब्जा करने के मंसूबे बना रहा है, दूसरा एक महीने के अन्दर मर्सीडीज में घूम रहा है, तो हम ही हर हर गंगे क्यों न करें ?"

जैसे 'अब' विनाश की समझ में उसकी बात आई, बोला —"अमित के बारे में तो क्या कहें — हां, अपने बारे में जरूर कह सकते हैं। गलत सोच रहे हैं आप . . . हम ऐसे आदमी नहीं हैं!"

"कैसे ?"

"जैसा अमित है!"

"कैसा है वो ?"

"जैसा अभी-अभी आपने कहा!"

"तुम कैसे जानते हो ?"

"हमने उसे . . .।" फिर जैसे कुछ याद आते ही खुद को बोलने से रोक लिया, बोला —"हम इस बारे में बाबूजी के अलावा किसी से बात नहीं करेंगे।"

"गुड !" केकड़ा की उबली आंखों में अनोखी चमक उभरी —"यानी अपनी लौंडिया की जासूसी करने का काम तुम्हें खुद मिस्टर खन्ना ने सौंपा है ?"

विनाश चुप रहा।

केकड़ा ने अचानक अनोखा सवाल किया —"तुमने कभी किसी लड़की को ट्रक चलाते देखा है ?"

"ल . . . लड़की को ?" विनाश बौखला उठा —"न . . . नहीं तो ?"

"मैंने भी नहीं देखा — लड़कियों को सब कुछ करते देखा है मैंने लेकिन ट्रक चलाते नहीं देखा और मेरा ख़्याल है दुनिया के किसी आदमी ने नहीं देखा होगा मगर . . . "

"मगर?"

"उस दिन मार्निंग वॉक करने वाले कई आदमियों ने देखा।" कहते वक्त केकड़ा उसे इस तरह घूर रहा था जैसे चेहरे पर उभरने वाले हर भाव को पढ़ लेना चाहता हो — "उनका दावा है, ट्रक को एक लड़की चला रही थी।"

"कमाल है।"

"उससे बड़ा कमाल ये है और लोगों ने देखा मगर तुमने नहीं देखा।"

"इसमें क्या कमाल है ?"

"तुम हीरो हो यार उस घटना के।"

"आप शायद यह कहना चाहते हैं कि हमने देखा था मगर बता नहीं रहे ?"

"एग्जेक्टली, यही बकना चाहता हूं मैं।"

"देखा होता तो बताते क्यों नहीं ?"

"मुमकिन है, बताने से किसी किस्म के नुकसान का अंदेशा हो ?"

"पता नहीं आप क्या क्या बेपर की बातें सोचते रहते हैं। आपकी आदत है, सोचते रहिये — हम चलते हैं।" कहने के बाद विनाश मुड़ा और बार के दरवाजे की तरफ़ बढ़ गया। रोकने की कोशिश केकड़ा ने भी नहीं की। उसे बाहर निकलता देखकर बड़बड़ाया जरूर —"या तो ये आदमी सचमुच का लल्लू है, या कोई घुटा हुआ शातिर।"



क्लिनिक में से ऐसा सन्नाटा व्याप्त था कि सुई भी गिरे तो आवाज स्पष्ट सुनाई दे ! गिरवर और उसके सामने खड़े विनाश के चेहरों पर चिंता की लकीरों का जाल बना हुआ था।

डाक्टर गिरवर ने परेशानी के आलम में अपना माथा रगड़ा, चहलकदमी शुरू की और कहा —"तो आज तुमने उन दोनों के बीच वह होते देखा जो केवल पति-पत्नी के बीच होना चाहिये ?"

"इन्सपैक्टर ने भी देखा है।"

"और दो दिन पहले अमित को फोन पर अपने डैडी से बात करते सुना था।" डाक्टर गिरवर इस तरह कहते चले गये जैसे इन्फारमेशन्स को अपने दिमाग में सेट कर रहे हों — उसने फोन पर कहा — 'देख लेना डैडी, मैं बहुत जल्द अरबपति बनने वाला हूं।' दूसरी तरफ से जाने क्या पूछा गया । जिसे सुनने के बाद उसने कहा — 'ये लम्बी बातें हैं डैडी, फोन पर नहीं बता सकता। . . . बस यूं समझिये, मंजिल के बहुत करीब हूं। ऐसी चाल चली है कि आप अपने बेटे की पीठ ठोके बगैर नहीं रह सकेंगे' — यही सब कहा था न उसने ?"

"इंस्पैक्टर के बारे में भी तो कोई बात कीजिये, वो कम्बख्त हमीं पर शक कर रहा था"

"उसकी फिक्र मत करो, खन्ना भुगत लेगा।"

"जहां तक अमित की बात है, इस एक महीने में हम उसके बारे में सब कुछ जान चुके हैं।" विनाश कहता चला गया — "उसका बाप 'अरबन' नामक गांव का जमींदार और प्रधान है। नाम अमर सिंह । पन्द्रह दिन लगातार गांव तक में घूम आये हैं हम। गरीबों को सताना, उन पर जुल्म करना और गांव की औरतों के साथ मुंह काला करना उसके लिये आम बात है। ऐसे ही काम शहर में बेटा कर रहा है।"

"खन्ना को यह सब पता नहीं लगना चाहिये विनाश।"

विनाश झुंझला उठा —"आप शुरू से, बार-बार यही कह रहे हैं। उस दिन बाबूजी हमें अंग्रेजी ढंग से नाचना सिखा रहे थे जब आप उनसे मिलने विला में आये और हमें सूटबूट में देखकर हैरान रह गये। तब बाबू जी ने आपको सब कुछ बता दिया। यह भी कि वे हमें 'शहरी' क्यों बना रहे हैं। आपने उसी दिन हमसे अकेले में कहा — 'जिस मिशन पर खन्ना तुम्हें लगा रहा है उसकी रिपोर्ट खन्ना से पहले हमें देना' हमने पूछा —'क्यों ? आपने कहा 'खन्ना' हार्ट पेशेन्ट है, अगर सुनीता सचमुच गलत

रास्ते पर चल रही हुई तो सुनते ही जानलेवा अटैक पड़ सकता है।' बात हमें जंची। इसलिये जब जब जो जो पता लगा आपको बताते रहे। इस बीच बाबू जी ने लाख पूछा — 'कुछ पता लगा ?' हमने हर बार यह कहकर टाल दिया - 'सब ठीक है, चिंता करने की कोई बात नहीं है'— मगर . . . कब तक डाक्टर साहब, कब तक चलता रहेगा ये खेल। हम उन्हें ज्यादा दिन नहीं टाल सकते।"

"सच है।" डाक्टर गिरवर ने बुदबुदाकर मानो स्वयं से कहा —"जो हो रहा है, उसे हमेशा के लिये खन्ना से छुपाकर नहीं रखा जा सकता। हम लोग नहीं बतायेंगे तो किसी दूसरे जरिये से पता लग जायेगा। मुमकिन है, सुनीता और अमित ही अपनी शादी का प्रस्ताव लेकर पहुंच जायें या कोर्ट में शादी कर लें।"

"ऐसा हो गया तो और बुरा होगा।"

"और सच्चाई उसे बताई तो वो मर जायेगा विनाश, ये बात हम उसका डाक्टर होने के नाते जानते हैं।"

"ऐसे हालात में हम क्या कर सकते हैं ?"

तुरन्त कोई जवाब न दे सके डाक्टर गिरवर। चहलकदमी जारी रखी और फिर . . . जैसे दिमाग में अचानक विचार आया हो, फुर्ती से विनाश की तरफ पलटकर बोले — "क्यों न तुम सीधे सुनीता से बात करो ?"



"त — तुम ?" सुनीता इस तरह उछल पड़ी जैसे बिच्छू ने डंक मारा हो, हाथों में मौजूद 'फेन्टेशी' नामक मैग्जीन एक तरफ फैंकी और बैड से उछल कर खड़ी होती हुई आंखें तरेर कर गुर्राई —"मेरे कमरे में घुसे चले आने की जुर्रत कैसे हुई तुम्हारी ?"

विनाश ने गम्भीर स्वर में कहा —"हम आपसे कुछ बातें करने आये हैं सुनीता जी।"

"फिर नाम लिया तुमने मेरा ?" सुनीता भड़क उठी —"हजार बार कह चुकी हूं, बीबी जी बोला करो — हूंह— जाने डैडी ने क्या देख लिया तुममें, सिर पर चढ़ा रखा है —ये मांगा हुआ सूट-बूट और टाई पहन कर कोई जेंटलमैन नहीं बन जाता

लल्लू राम . . . तुम गन्दे हो और गलीज ही रहोगे !"

"हम अच्छी तरह जानते हैं, आप क्या हैं और हम क्या हैं?"

"मुझे जानते हो तुम ?" सुनीता भड़क उठी —"क्या जानते हो मुझे ?"

"आप बहुत अच्छी हैं, दिल की बुरी नहीं हैं लेकिन . ."

"लेकिन ?" सुनीता ने आंखें तरेरीं।

"आपके डैडी . . . यानी बाबू जी हार्ट पेशेन्ट हैं। जो कुछ आप कर रही हैं, उसके बारे में पता लगा तो उनकी जान जा सकती है ?"

"ऐसा क्या कर रही हूं मैं ?" वह चीखी।

"अमित अच्छा लड़का नहीं है, वह आपसे नहीं आपकी दौलत से . . . ."

"शटअप !" सुनीता हलक फाड़कर दहाड़ उठी —"आई से . . . शटअप ! दूसरी बार अमित का नाम भी जुबान से निकाला तो जुबान खींच लूंगी। उसके बारे में जानते कैसे हो तुम। अमित के सम्बन्ध में टिप्पणी करने की हिम्मत कैसे पड़ गयी तुम्हारी। और . . . मुझे नसीहत देने वाले तुम होते कौन हो?"

विनाश गिड़गिड़ा उठा — "प्लीज . . . प्लीज सुनीता जी, इतनी जोर जोर से न बोलिये। बाबू जी ने सुन लिया तो गजब हो जायेगा, जो बात हम उनसे छुपाना . . . "

"क्या हो रहा है बेटी, इतनी जोर-जोर से क्यों चीख रही हो तुम ?" इन शब्दों के साथ मिस्टर खन्ना कमरे के दरवाजे पर खड़े नजर आये। इधर विनाश ने घूमकर पीछे देखा उधर सुनीता बफर पड़ी —"इस लल्लू राम को आपने सिर चढ़ा रखा है डैडी, आप ही भुगतिये इसे, मेरे मुंह न लगा करे।"

"मगर हुआ क्या है ?" कमरे में दाखिल होते मिस्टर खन्ना ने पूछा —"कह क्या दिया इसने ?"

"पहले बगैर दस्तक दिये मेरे कमरे में आने की बदतमीजी की, ऊपर से अमित के बारे में टिप्पणियां कर रहा है।"

"अमित !" मिस्टर खन्ना अन्जान बने —"कौन अमित?"

"वही, जिसके गानों का पूरा शहर दीवाना है।"

"ओह !" मिस्टर खन्ना के मस्तक पर बल पड़े —"मगर . . . उसका तुमसे क्या सम्बन्ध ?"

सुनीता ने बेखौफ, बेहिचक कह दिया —"मैं उससे मुहब्बत करती हूं।"

सब कुछ जानने के बावजूद मिस्टर खन्ना पर बिजली सी गिरी। जहां खड़े थे, स्टैचू की मानिन्द वहीं खड़े रह गये। विनाश को लग रहा था कि बस अब . . . बस अब मिस्टर खन्ना को अटैक पड़ा जबकि सुनीता अपनी धुन में कहती चली गई —"मैं और अमित शादी करने का फैसला कर चुके हैं। आपसे बात करने के सम्बन्ध में सोच ही रहे थे कि इस लल्लू को जाने कहां से पता लग गया और अमित के बारे में जाने क्या क्या बकने कमरे में घुसा चला आया।"

एकाएक मिस्टर खन्ना विनाश पर बरस पड़े —"तुम यहां किससे पूछ कर आये ?"

विनाश ने गर्दन झुका ली।

"जवाब दो।" वे चीखे —"सुनीता से बात करने की बेवकूफी क्यों की तुमने ?"

"ग . . . गलती हो गई बाबू जी।" विनाश ने उसी तरह गर्दन झुकाये कहा।

कुछ देर तक मिस्टर खन्ना उसे आग्नेय नेत्रों से घूरने का नाटक करते रहे। फिर . . . आगे बढ़े, सुनीता के नजदीक पहुंचे और स्नेहवत् कंधे पर हाथ रख कर कहा —"ऐसा था तो तुम्हें अमित के बारे में बात कर लेनी चाहिये थी।"

"सॉरी डैडी, मैं सोच ही रही थी कि . . . "

"खैर, अमित से कहना, हम उससे मिलना चाहते हैं।" कहने के बाद वे पलटे और तेजी के साथ कमरे से बाहर निकल गये। सुनीता ने कुछ ऐसी मुस्कान विनाश की तरफ उछाली कि वह एक पल भी खड़ा न रह सका।



एकान्त में मिलते ही मिस्टर खन्ना बिगड़ गये —"सुनीता से बात करने के लिये किसने कहा था तुमसे ?"

"ड - डाक्टर साहब ने।" विनाश ने साफ बता दिया।

"गिरवर ?" मिस्टर खन्ना चौंके —"उससे क्या मतलब?"

"मतलब आपने जोड़ा बाबूजी।" विनाश कहता चला गया —"उस दिन आप हमें अंग्रेजी ढंग से नाचना सिखा रहे थे। वे आ गये। आपने सब कुछ उन्हें बताया। हम समझ गये, आप उनसे कुछ नहीं छुपाते। उन्होंने उसी दिन हमसे अकेले में बात की . . . कहा कि इस बारे में जो भी पता लगे, पहले उन्हें बतायें। वे उचित समझेंगे तो आपसे बात करेगें। उनके ख्याल से, सीधे आपको बताने से अटैक पड़ने का खतरा था और . . . न वे, न हम चाहते थे कि आपको कुछ हो।"

मिस्टर खन्ना उसे घूरते रहे। चेहरे पर तनाव छाया हुआ था, फिर . . . जैसे जैसे यह बात समझ में आई कि गिरवर और विनाश का मकसद 'पाक' था, तनाव कम होता चला गया बल्कि दिल में दोनों के प्रति अजीब सा प्यार उमड़ा। खुद को व्यवस्थित करने के लिये उन्होंने सिगार सुलगाया, बोले —"तो तुम सारी रिपोर्ट गिरवर को देते रहे ?"

"जी हां।"

"और उसने हमें कुछ नहीं बताया . . . यानी रिपोर्ट ऐसी है जिसे सुनकर गिरवर के मुताबिक हमें अटैक पड़ सकता है ?"

विनाश चुप रहा।

मिस्टर खन्ना ने सीधा सवाल किया —"क्या है रिपोर्ट?"

विनाश अब भी चुप रहा।

"डरो नहीं, हमें कुछ नहीं होगा। पूरे महीने की रिपोर्ट दो। वैसे भी एकाध दिन में सुनीता अमित को हमसे मिलाने लायेगी। हमें वो फैसला लेना होगा जो सुनीता का भविष्य हमेशा के लिये बना या बिगाड़ सकता है। उससे बात करने से पूर्व हमारे पास पूरी जानकारी होनी चाहिये ताकि गलत फैसला न किया जा सके।"

विनाश ने बता दिया कि अमित सुनीता से नहीं, अरबों की सम्पत्ति से मुहब्बत करता है। उसके पिता का नाम, गांव और उसके कर्म भी बता दिये मगर सुनीता और अमित के शारीरिक सम्बन्धों के बारे में कुछ नहीं कहा। जब उन्होंने पूछा —"सुनीता को समझाने की कोशिश की जाये तो उसका रुख

क्या होगा ?" विनाश ने कहा —"वे विद्रोह कर सकती हैं। अमित का जाल काफी मजबूत है। पूरी तरह उसके रंग में रंगी हुई हैं वे।"

कुछ देर के लिये मिस्टर खन्ना के चेहरे पर चिंता की लकीरों का जाल जरूर फैला लेकिन अगले पल सामान्य नजर आने लगे, बोले —"गिरवर भी गधा है और तुम भी . . . इतना सब सुनने के बाद हमें कुछ हुआ ?"

विनाश ने हाथ जोड़कर ऊपर की तरफ़ देखा —"भगवान का लाख-लाख शुक्र है बाबूजी।"

"पागल ।" उन्होंने प्यार से उसके कंधे पर हाथ रखा —"समस्या तब होती जब अमित सचमुच सुनीता से मुहब्बत करता होता। अगर वह पैसे से मुहब्बत करता है तो कोई समस्या नहीं रही। तुम फिक्र मत करो, मामला सुलझ जायेगा।"

चेहरे पर हैरानगी लिये विनाश मिस्टर खन्ना की तरफ देखता रह गया।



सुनीता ने अमित के साथ हॉल में कदम रखा।

सोफे पर बैठा विनाश उन्हें देखकर खड़ा हो गया।

"उफ्फ !" झटका सा खाकर मुंह बनाती सुनीता ने सीधे उसी से कहा —"तुम अपनी मनहूस सूरत मेरी नजरों से दूर नहीं रख सकते ?"

विनाश चुप खड़ा रहा।

"ये साहेबान कौन हैं ?" अमित ने पूछा।

"वही, जिसका मैंने जिक्र किया था। डैडी का मुंह चढ़ा नौकर।"

"ओह . . . लल्लूराम ।" कहने के साथ वह तेजी से आगे बढ़ा और तपाक से उसकी तरफ हाथ बढ़ाकर खिल्ली उड़ाने वाले अंदाज में बोला —"मुझे अमित सिंह कहते हैं लल्लू जी।"

"हमारा नाम विनाश है।" उसने हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा।

"अरे।" अमित ने हाथ पीछे खींच कर सुनीता से पूछा —"तुमने तो इनका नाम लल्लू बताया था न ?"

खिलखिलाकर हंसती सुनीता बोली —"शक्ल से क्या नजर आते हैं तुम्हें ?"

"सचमुच का लल्लू।" अमित ठहाका लगा कर हंस पड़ा।

विनाश ने भी दांत निकाल दिये।

अंत में सुनीता बोली — "खैर तुम यहां हो तो तुम्हीं से पूछ लेते है . . . डैडी कहां हैं ?"

"सटेडी में।"

"स - सटेडी?" अमित चौंका।

सुनीता खिलखिलाकर हंस पड़ी, बोली —"स्टेडी कहना चाहता है ये घोंचू . . . आओ।" कहने के साथ वह अमित को खींचती स्टेडी की तरफ ले गई।

उस वक्त मिस्टर खन्ना एक बुक सैल्फ के पास खड़े कोई किताब तलाश करने की कोशिश कर रहे थे जब 'भड़ाक' की जोरदार आवाज के साथ स्टेडी का ढुका हुआ दरवाजा खुला।

वे चौंक कर पलटे।

"ये अमित है डैडी।" सुनीता उसे साथ लिये स्टेडी में दाखिल हुई।

"ओह!" मिस्टर खन्ना ने आंखों से चश्मा उतारते हुए कहा —"आओ बेटे ।"

"नमस्ते अंकल ।" अमित ने शालीनता पूर्वक हाथ जोड़े।

"गुड।" वे उनके नजदीक आये, सुनीता से कहा —"क्या कुछ देर अमित से अकेले में बात करने की इजाजत दोगी बेटी ?"

"ऑफकोर्स ?" कहने के बाद सुनीता अमित से बोली — "मैं ऊपर, अपने कमरे में हूं . . . मिले बगैर नहीं जाओगे!"

"जो हुक्म।" अमित मुस्कुराया।

सुनीता बाहर चली गयी। स्टेडी में सन्नाटा छा गया।



करीब एक मिनट बाद मिस्टर खन्ना ने कहा —"बैठो।"

अमित बेबाक अंदाज में राईटिंग टेबल के इस तरफ पड़ी तीन कुर्सियों में से एक पर बैठ गया। 'थैंक्यू' कहने की जहमत नहीं उठाई उसने। मिस्टर खन्ना ने चश्मा वापस आंखों पर चढ़ाया और मेज के उस तरफ पड़ी शानदार रिवाल्विंग चेयर पर बैठ गये। जेब से डिब्बी निकाल कर म्यूजिकल लाईटर से सिगार सुलगाया।

"लाईटर प्लीज।" कहने के साथ अमित ने हाथ फैला दिया।

मिस्टर खन्ना हल्के से चौंके मगर . . . लाईटर दे दिया।

अमित ने बेहिचक सिगरेट का पैकेट निकाला। सिगरेट सुलगाई और पूरी बेहयायी के साथ धूवें का छल्ला हवा में उछालने के बाद बोला —"सुन्दर लाईटर है, सोने का मालूम पड़ता है।"

अमित की हरकत ऐसी थी कि मारे गुस्से के मिस्टर खन्ना सूखे पत्ते की तरह कांपने लगे। जी चाहा . . . उठ कर उसके गाल पर चांटा जड़ दें मगर विवेक ने काम किया। लगा, इस तरह बात बिगड़ सकती है। उस वक्त वे खुद को नियंत्रित करने का प्रयास कर रहे थे जब लाईटर को अपनी अंगुलियों के बीच नचाते अमित ने कहा —"सुनीता कह रही थी आप कुछ बातें करना चाहते हैं।"

जबड़े भींचे मिस्टर खन्ना बड़ी मुश्किल से कह सके —"हां।"

"तो कीजिये, मेरे पास टाईम कम है।"

खुद को नियंत्रित रखे मिस्टर खन्ना ने कहा —"सुना है, तुम सुनीता से मुहब्बत करते हो ?"

"गलत सुना है आपने।" अमित का जवाब उनकी सभी आशाओं के विपरीत था।

बुरी तरह चौंके वे —"मतलब ?"

"झूठ नहीं बोलूंगा।" उसके होठों पर कुटिल मुस्कान थी —"मैं सुनीता से नहीं, आपकी बेशुमार दौलत से मुहब्बत करता हूं। आज के जमाने में मुहब्बत करने की चीज लड़की है भी नहीं, दौलत जरूर है। लड़कियों का क्या है . . . गाजर - मूली के भाव मिलती हैं।"

अवाक् रह गये मिस्टर खन्ना।

उन्होंने स्वप्न तक में नहीं सोचा था अमित इस अन्दाज में सच्चाई बयान करेगा। काफी देर तक कोशिश करने के बावजूद मुंह से लफ्ज न निकाल सके जबकि अमित कहता चला गया —"शुक्र मनाईये, मैं कोई नाटक नहीं कर रहा, जो हकीकत है वही बयान की। मेरी जगह कोई और होता तो . . . . .

"तुमने हमारी मुश्किल आसान कर दी।" दांतों पर दांत जमाये कहने के साथ मिस्टर खन्ना ने दराज खोली। एक चैक बुक और पैन निकाल कर मेज पर डालते हुए बोले —"जो चाहो भर लो और पीछा छोड़ो हमारी बेटी का ।"

अमित के होंठों पर नाचने वाली कुटिल मुस्कान में धूर्तता के कीटाणु आ मिले, बोला —"ये चैक बुक केवल एक बैंक एकाउन्ट की है, मेरी जानकारी के मुताबिक आपके एकाउन्ट पांच बैंकों में हैं।"

गुस्से की ज्यादती के कारण मिस्टर खन्ना का बुरा हाल हो गया। कांपते हुए उन्होंने चार और बैंकों की चैक बुकें निकाल कर मेज पर फैंकी और चीखे — "ये लो . . . हर चैक पर हमारे साईन हैं।"

"इतने सारे साईन करने की क्या जरूरत थी ?" उसने एक चैकबुक में फुरेरी सी मारते हुए कहा —"एक एकाउन्ट के केवल एक चैक पर साईन कर देना काफी होता है लेकिन . . . .

उसने जानबूझकर अपना वाक्य अधूरा छोड़ दिया।

"अब लेकिन के लिये बचा ही क्या है ?" मिस्टर खन्ना गुर्राये।

"ये सिर्फ आपकी चल सम्पत्ति हुई।" अमित की धूर्तता पराकाष्ठा पर पहुंच चुकी थी —"अचल सम्पत्ति का क्या होगा?"

"म . . . मतलब ?" मिस्टर खन्ना के मुंह से झाग निकलने लगे।

"नहीं मिस्टर खन्ना, इतने सस्ते में सौदा करने वाला सौदागर नहीं हूं मैं।" अमित एक-एक शब्द पर जोर डालता कहता चला गया —"मुझे आपका सब कुछ चाहिये . . . सब कुछ . . . ये विला, ऐसी दसियों इमारतें, समुद्र में तैरते आपके शिप, वह चार्टड प्लेन जिसमें बैठकर आप देश -विदेश घूमा करते हैं,

वह कन्स्ट्रक्शन कम्पनी जिसने राजनगर की पचास परसेन्ट इमारतें बनवाई हैं, ये फर्नीचर, वो कुर्सी तक चाहिये मुझे जिस पर इस वक्त आप विराजमान हैं और ये लाईटर . . . इस तक को छोड़ने का मूड नहीं है मेरा।"

"प . . . पागल हो क्या —ये सब तुम्हारा कैसे हो सकता है ?"

"अभी नहीं होगा तो शादी के बाद हो जायेगा।"

"खामोश ।" मिस्टर खन्ना दहाड़ उठे।

"चीखो मत मिस्टर खन्ना, सुनीता ने सुन लिया तो नुकसान आपको होगा।"

मिस्टर खन्ना की सहन शक्तियों के सभी बांध टूट चुके थे। आपे से बाहर होकर वे चीखते चले गये —"सुनीता से तुम्हारी शादी हरगिज नहीं होगी। हमारी बेटी को समझते क्या हो तुम। हकीकत ज़ानते ही तुम्हारे मुंह पर थूक देगी वह।"

अमित दांत भींच कर गुर्राया —"वो मेरे हाथों अपना सब कुछ गंवा चुकी है बुढ्ढे।"

"न . . . न नहीं।" मिस्टर खन्ना मानो पागल हो गये।

कुर्सी से उठे। घूमकर उसके नजदीक आये। अमित ने बड़े आराम से सिगरेट फर्श पर डाली और जूते से कुचलता हुआ खड़ा हो गया। मिस्टर खन्ना दोनों हाथों से उसका गिरेबान पकड़े दहाड़ते चले गये —"हम तुझे कच्चा चबा जायेंगे — खाल में भुस भर देंगे तेरी . . . कह दे कि यह झूठ है . . . बकवास है, हमारी बेटी . . .

"क - क्या हुआ ?" दौड़ती हुई सुनीता आई और हांफती हुई बोली — "क्या हुआ डैडी ?"

"इनसे क्या पूछती हो, मुझसे पूछो।" अमित एक झटके से खुद को मिस्टर खन्ना से छुड़ाता हुआ बफर कर बोला —"तुम अपमान कराने यहां लाई थी मुझे ?"

"अपमान तूने हमारा किया है।" मिस्टर खन्ना दहाड़े।

सुनीता चीख पड़ी —"आखिर हुआ क्या है ?"

"हो क्या सकता था . . . वही . . . जो इन जैसे धनवान हमेशा करते आये हैं।" अमित कहता चला गया — प्यार को बिकने वाली चीज समझते हैं। मुझे खरीदना चाहते थे। बिकने से

इंकार कर दिया तो चीखने - चिल्लाने लगे।"

"ये झूठ है बेटी, इसने खुद . . ."

"झूठ है तो ये सारी चैक बुक मेज पर क्यों पड़ी हैं। वो पैन क्यों पड़ा है - क्या आपने नहीं कहा इनमें अपने हाथ से रकम भर लूं और सुनीता की ज़िन्दगी से दूर चला जाऊं ?" भड़का हुआ अमित कहता चला गया —"मैंने तुमसे प्यार किया है सुनीता - ये तो क्या, सारे जहां की दौलत से भी अगर मुझे कोई खरीदना चाहे तो नहीं खरीद सकता। बहुत अपमान सह लिया, अब और जलील नहीं होना चाहता। मैं जा रहा हूं सुनीता . . . तुम्हारी जिन्दगी से दूर जा रहा हूं मैं।" कहने के बाद वह तेजी से दरवाजे की तरफ बढ़ा।

"नहीं अमित . . . . रूको।" सुनीता लपक कर उससे लिपट गयी।

स्टेडी के दरवाजे पर खड़ा विनाश सब कुछ देख रहा था।

"अब और क्या चाहती हो मुझसे ?" अमित की आंखें डबडबा गईं, गला रूंध गया। उसे झंझोंड़ता सा चीखा —"और कितना अपमान कराओगी मेरा ?"

"नहीं !" सुनीता के चेहरे पर पत्थर की सी कठोरता छा गई — "तुम्हारा अपमान कोई नहीं कर सकता अमित!"

"उसे जाने दो सुनीता!"

"डैडी!" सुनीता ने दृढ़ स्वर में कहा —"आपको अमित से माफी मांगनी होगी।"

"समझने की कोशिश करो बेटी, ये आदमी . . .

"मेज पर पड़ी चैक बुकें मुझे सब कुछ समझा चुकी हैं। आपने हमारे प्यार को दौलत के तराजू में तोला — शर्म आनी चाहिये आपको। प्यार बाजार में बिकने वाली चीज नहीं होता।"

"ह - हमारी बात तो सुनो सुनीता।"

"जब तक अमित से माफी नहीं मांगेंगे, तब तक मुझे कुछ नहीं सुनना।"

अड़ गये मिस्टर खन्ना भी —"हमने इस हराम के बच्चे से माफी मांगने जैसा कोई काम नहीं किया।"

"तो ठीक है, मैं इसके साथ जा रही हूं।" सुनीता उग्र हो उठी —"कान खोल कर सुनो, आपकी इस अरबों की सम्पत्ति को

ठोकर मार कर जा रहे हैं हम - इसे सीने से लगा कर रखें, हो सके तो ऊपर भी साथ लेकर जायें . . . आओ अमित।" कहने के बाद वह अमित को साथ लिये दरवाजे की तरफ बढ़ी।

वहां खड़े विनाश को जोरदार धक्का दिया और हवा के झौंके की तरह बाहर निकल गये।

उधर . . . मिस्टर खन्ना के मुंह से जोरदार 'आह' निकली और दोनों हाथ स्वतः सीने पर बाईं तरफ जा चिपके। उस वक्त वे दर्द से बिलबिलाते, सारी स्टेडी में फड़फड़ाते फिर रहे थे जब 'बाबूजी . . . बाबूजी' चीखता विनाश उनके नजदीक आया। मिस्टर खन्ना गिरने वाले थे, विनाश ने अपनी मजबूत बांहों में सम्भाल लिया।

वे बेहोश हो चुके थे।

बुरी तरह घबराये विनाश ने पुकारा – "बाबूजी . . . बाबूजी।"



"एक बार फिर तुमने खन्ना को मरने से बचा लिया विनाश।" बैड पर बेहोश पड़े मिस्टर खन्ना के चेहरे को देखते डाक्टर गिरवर ने कहा –"सही समय पर यहां न ले आते तो . . . अमित और सुनीता ने इसकी हत्या कर डालने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी।"

"सारा दिन निकल गया डाक्टर साहब, इन्हें होश क्यों नहीं आया ?"

"आ जायेगा। घबराओ मत, अब ये खतरे से बाहर हैं।"

और . . . मिस्टर खन्ना मानो डाक्टर गिरवर के इसी वाक्य का इन्तजार कर रहे थे। उनके जिस्म में हलचल हुई। होंठ फड़फड़ाये। पलकें कांपीं। दोनों का ध्यान सारी दुनिया से सिमटकर उन पर केन्द्रित हो गया।

"स . . . सुनीता . . . सुनीता।" मिस्टर खन्ना के होठों से बार-बार यह लफ्ज निकलने लगा।

डाक्टर गिरवर झुंझला उठे – "अब भी उसी के नाम की माला जप रहा है गधा।"

"बाबूजी . . . बाबूजी ।" उनके चेहरे पर झुकते विनाश ने पुकारा।

मिस्टर खन्ना के मुंह से निकला —"तुम ऐसा नहीं कर सकतीं बेटी। हमने सदा अपने बांहों के झूले में झुलाया है तुम्हें . . . तुम हमारा अपमान नहीं कर सकतीं । हमसे ज्यादा प्यारा तुम्हें कोई नहीं हो सकता।"

"अ-आप फिक्र न करें बाबूजी ।" उन पर झुके विनाश ने कहा —"वह केवल तब तक की बात थी जब तक सुनीता जी को अमित की हकीकत पता नहीं लगी थी। हम उन्हें सब कुछ बता चुके हैं. . . . "

"ब - बता चुके ?" मिस्टर खन्ना ने आंखें खोल दीं —"क्या बोली सुनीता ?"

"उन्होंनें थूक दिया अमित के चेहरे पर ।"

"स . . . सच ?" खुशी की ज्यादती के कारण उनका लहजा कांप उठा—"हमें मालूम था, अंत में यही होगा। कहां है सुनीता, हम अपनी बेटी से मिलना चाहते हैं ।"

विनाश बौखला गया, बोला —"ल - लाता हूं उन्हें ।" कहने के साथ उसने डाक्टर गिरवर की तरफ देखा - उनकी आंखों में भी वही सवाल था जो शब्द कहने के तुरन्त बाद से उसके जहन में मचलने लगा था।

कहां से लायेगा सुनीता को ?

एकाएक विनाश का चेहरा सख्त हो उठा, दृढ़ता पूर्वक बोला —"हम उन्हें ले आयेंगे . . . हम जा रहे हैं डाक्टर साहब, तब तक बाबूजी को सम्भाल कर रखना।" कहने के बाद वह चक्रवात की तरह क्लिनिक से बाहर निकल गया।

खन्ना के होठों पर फीकी मुस्कान उभर आई, बोले —"ये लड़का वाकई लल्लू है गिरवर।"

"क - क्यों ?"

"हमसे झूठ बोलने की क्या जरूरत थी इसे।"

"वह तुझे मरने नहीं देना चाहता।"

"क्यों ?"

यह एक ऐसा सवाल था जिसका जवाब डाक्टर गिरवर काफी देर तक सोचते रहने के बावजूद न दे सके, टूटे स्वर में

मिस्टर खन्ना ने कहा –"जिसे अपना समझा, वह मार डालना चाहती है और . . .

"और ?"

"हमारे वकील को बुला । अभी ! यहीं! फोन कर !"

"वकील क्या करेगा ?"

"टाईम कम है बेवकूफ, जल्दी बुला उसे।"



ओबरॉय कॉन्टिनेन्टल के रूम नम्बर सात सौ सात में खड़ा विनाश हाथ जोड़कर गिड़गिड़ा रहा था –"बाबूजी को अटैक पड़ा है सुनीता जी ! जिन्दगी और मौत के बीच फंसे वे अब भी बार-बार आपको . . . केवल आप ही को याद कर रहे हैं, हमारे साथ चलिये।"

"जिसने अमित का अपमान किया उससे मेरा कोई रिश्ता नहीं।" उसने एक नजर अमित पर डाली और कहती चली गई –"हमारे प्यार को खरीदने की कोशिश की उन्होंने, मैं नहीं जाऊंगी।"

"हम आपके पैर पड़ते हैं सुनीता जी, इतनी कठोर न बनिये।"

तमतमाई सुनीता कुछ कहने वाली थी कि अमित आगे बढ़कर बोला– "ये ठीक नहीं होगा सुनीता, लोग हमें स्वार्थी कहेंगे। उन्हें कुछ हो गया तो दुनिया हमारे प्यार पर अंगुलियां उठायेगी।"

चकित सुनीता ने अमित से पूछा – "तुम्हारे ख्याल से मुझे क्या करना चाहिये ?"

"जो उन्होंने किया, वे जानें। हमें कुछ गलत नहीं करना, इस तरह प्यार बदनाम हो जाता है।"

"तुम कहते हो तो चली जाती हूं वरना मैं उनकी शक्ल तक देखना नहीं चाहती।"

"याद रखना, वे मेरे बारे में झूठ बोलकर तुम्हें बरगलाने की कोशिश कर सकते हैं।"

"हूंह !" उसने विनाश को घूरा –"इस मिशन में कोई

कामयाब नहीं हो सकता।"

●

उधर सुनीता और विनाश कमरे से बाहर निकले इधर, अमित ने टेलीफोन पर जम्प लगा दी। उत्साहित अंदाज में कई बार एक लम्बा नम्बर डायल किया। करीब पांच मिनट बाद नम्बर मिला। दूसरी तरफ से 'हैलो' कहने वाले की आवाज पहचानते ही उसने कहा —"अमित बोल रहा हूं डैडी।"

"ओह !" दूसरी तरफ से पूछा गया —"बोलो बेटे, अरबपति बने या नहीं ?"

"बुढ्ढा अटका पड़ा है।"

"मतलब ?"

"हार्ट पेशेन्ट है साला। सुना था, जरा सा शॉक लगते ही दुनिया से कूच कर जायेगा। यह सोच कर बड़े बड़े शाक दिये कि फूटे दुनिया से मगर . . . सख्त जान लगता है। अभी-अभी सूचना मिली है, बिस्तर पकड़े पड़ा है।"

"कोई ऐसा काम मत कर बैठना बेटे जिसके परिणाम स्वरूप जेल की हवा खाते नजर आओ।"

"क्या किसी अरबपति बाप की इकलौती बेटी से मुहब्बत करना जुर्म है ?"

"नहीं ।"

"अगर मैं एक बाप से उसकी बेटी का हाथ मांगू और वह हार्ट अटैक के दौरे से चल बसे तो क्या दुनिया का कोई कानून मुझे हत्यारा ठहरा सकता है ?"

"हरगिज नहीं !"

"यही खेल चल रहा है यहां !"

"समझ गये — सब कुछ समझ गये बेटे!" दूसरी तरफ से चटकारा सा लेकर कहा गया —"बिल्कुल ठीक जा रहे हो, हमारा आशीर्वाद तुम्हें 'फब' रहा है।"

●

मर्सीडीज काफी तेज दौड़ रही थी मगर विनाश मानो संतुष्ट न था, दांतों पर दांत जमाये वह पैर का दबाव एक्सीलेटर

पर बढ़ाता चला गया। बगल वाली सीट पर बैठी सुनीता को डर लग रहा था। काफी देर तक सांस रोके खामोश बैठी रही, अंततः कहना पड़ा —"गाड़ी काबू में रखो, तुम्हें वैसे ही ड्राइविंग सीखे ज्यादा समय नहीं गुजरा है।"

"बाबूजी की तबियत बहुत खराब है।" उसने एक्सीलेटर पर और दबाव डाला —"आप समय रहते पहुंच जायें तो शायद वे बच जायें।"

"लेकिन . . . ।" सुनीता कुछ कहना चाहती थी कि मर्सीडीज सामने से आ रही एक मारूति से टकराते टकराते बची — "देखो . . . तुम जरूर मारोगे, मैं कहती हूं रफ्तार कम करो।"

वह चीखती रही, चिल्लाती रही, कलपती रही परन्तु विनाश ने एक पल के लिये भी एक्सीलेटर से पैर न हटाया — तब भी नहीं, जब एक चौराहे पर पहुंचते-पहुंचते ग्रीन लाईट रेड लाईट में तब्दील हो गयी — उसके आगे जा रही एम्बेसडर रुक गयी मगर वह स्टेयरिंग को थोड़ा सा दाईं तरफ घुमा कर 'सर्र' से चौराहा पार कर गया।

"ये क्या बेवकूफी है ?" सुनीता ने प्रलाप किया —"तुम रेड लाईट क्रास कर आये हो।"

मगर, विनाश सुने तब जब होश में हो — उस पर तो मानो जुनून सवार था, उधर . . . चौराहे पर अपनी जीप में मौजूद इन्सपैक्टर केकड़ा ने न केवल ट्रेफिक के इस उल्लंघन को देखा बल्कि मिस्टर खन्ना की मर्सीडीज पहचान भी ली, उसने तेज स्वर में ड्राईवर से कहा —"पीछा करो ।"

ड्राईवर ने आदेश का पालन किया।

'बैक व्यू मिरर' के जरिये विनाश ने जीप को देखा जरूर लेकिन परवाह नहीं की — आंधी तूफान की तरह दौड़ रही मर्सीडीज उसने डाक्टर गिरवर के क्लीनिक के ठीक सामने रोकी। पहले खुद ड्राईविंग सीट से कूदा फिर घूमकर बगल वाला दरवाजा खोला और हाथ पकड़ कर उसे लगभग घसीटता सा दौड़ता चला गया। किन्तु कमरे के दरवाजे पर पहुंचते ही पैरों को ब्रेक लग गये।

चादर मिस्टर खन्ना के चेहरे पर ढकी थी।

कमरे में डाक्टर गिरवर, वकील और एक नर्स थी।

तीनों के चेहरे लटके हुए।

सुनीता की सांस धौंकनी की मानिन्द चल रही थी। बुरी तरह हांफते विनाश ने जब सवालिया नजरों से डाक्टर गिरवर की तरफ देखा तो उन्होंने भर्राये गले से कहा —"तुम्हें देर हो गयी यंगमैन।"

"न - नहीं ।" विनाश के हलक से चीख निकल गई।

वैसी ही चीख सुनीता के हलक से भी निकली थी - 'डैडी . . . डैडी' चिल्लाती वह दौड़ कर मिस्टर खन्ना के शव से लिपट गयी।

आंसुओं से तर चेहरे के साथ विनाश इस अंदाज में दीवार पर हौले हौले मुक्के मार रहा था जैसे अब तक की मेहनत जाया जाने का अफसोस हो।

काफी देर तक कमरे का वातावरण वही रहा।

इस बीच दौड़ता हुआ केकड़ा भी पहुंच चुका था। वस्तुस्थिति समझते ही दरवाजे पर ठिठका खड़ा रह गया। सिर से कैप उतार कर बगल में दबा ली।

डाक्टर गिरवर न केवल सुनीता के नजदीक पहुंच चुके थे बल्कि उसे सांत्वना दे रहे थे। सुनीता अब मिस्टर खन्ना की लाश की जगह उनसे लिपटकर रो रही थी।

करीब पन्द्रह मिनट गुजर गये, तब . . . वकील ने अपने हाथ में मौजूद कागज को आंखों के सामने करते हुए कहा —"हालांकि वसीयत मृत्यु के तुरन्त बाद नहीं पढ़ी जाती परन्तु मिस्टर खन्ना की इच्छा ऐसी ही थी, इसलिये मजबूर हूं।"

विनाश ने चौंक कर उसकी तरफ देखा।

सुनीता डाक्टर गिरवर के सीने से लगी सुबकती रही।

वकील ने कागज पर लिखी इबारत पढ़नी शुरू की —"मेरी एक मात्र उत्तराधिकारी सुनीता है और मेरी सम्पूर्ण चल अचल सम्पत्ति पर उसका हक है लेकिन यदि वह निम्न शर्तों का पालन नहीं करे तो सम्पूर्ण चल-अचल सम्पत्ति का मालिक विनाश होगा।"

विनाश चौंका।

सुनीता सुबकना भूल गयी। कभी वकील की तरफ देख रही थी, कभी विनाश की तरफ।

सस्पैंस की ज्यादती में फंसे विनाश, सुनीता और इन्सपैक्टर केकड़ा के दिल 'धाड़-धाड़' करके बज रहे थे।

वकील ने आगे कहा —"शर्त नम्बर एक — सुनीता को विनाश से शादी करनी होगी।"

"न . . . नहीं।" यह चीख सुनीता और विनाश के हलक से एक साथ निकली। दोनों के चेहरे पर हैरत के भाव थे।

दरवाजे पर खड़े इन्स्पैक्टर केकड़ा की उबली हुई आंखें सिर्फ और सिर्फ विनाश के चेहरे पर जमी थीं। वह यह जानने की कोशिश कर रहा था उसके चेहरे पर मौजूद भाव असली हैं या नकली ?

वकील बोला —"शर्त नम्बर एक अभी पूरी नहीं हुई, मिस्टर खन्ना ने आगे लिखवाया है —"अगर सुनीता विनाश के अलावा किसी से भी शादी करती है या कभी शादी न करने का फैसला करती है तो मेरी चल अचल सम्पत्ति पर उसका कोई हक नहीं होगा। अगर तीन महीने के अन्दर उसने विनाश से शादी नहीं की तो सम्पूर्ण जायदाद पर मालिकाना हक केवल विनाश का होगा।"

कमरे में सन्नाटा छाया रहा।

वकील ने आगे पढ़ा —"शर्त नम्बर दो — अगर विनाश सुनीता से शादी करने को तैयार नहीं है और तीन महीने तक यह शादी नहीं हो पाती है . . . तब भी तीन महीने बाद सम्पूर्ण जायदाद का हकदार विनाश और केवल विनाश होगा।"

इन्स्पैक्टर केकड़ा की आंखों में हैरत के भाव उभर आये।

"शर्त नम्बर तीन।" वहां केवल वकील की आवाज गूंज रही थी —"बैंक आदि से कोई पैसा दोनों के हस्ताक्षरों से निकाला जा सकेगा— इसी तरह अचल सम्पत्ति और व्यापार के सम्बन्ध में भी हर फैसला केवल तभी मान्य होगा जब उस पर दोनों के हस्ताक्षर हों।"

सभी को लगा, मिस्टर खन्ना सुनीता को काफी दूर तक बांध गये हैं।

"इन शर्तों के बाद मिस्टर खन्ना ने एक 'अपील' लिखवाई है, यह अपील विशेष रूप से मिस्टर विनाश के लिये

है।" कहने के बाद वकील ने अपील पढ़नी शुरू की —"विनाश बेटे, अगर तुमने वसीयत पढ़ ली है तो समझ गये होगे, हमने जायदाद अपनी उस प्यारी बेटी के नाम जरूर की है जिसे मरने के बाद भी खुश देखना चाहते हैं मगर विश्वास तुममें व्यक्त किया है। शर्त नम्बर दो पर गौर करो, जायदाद तीन महीने बाद तब भी तुम्हारी होगी जब अपनी इच्छा से सुनीता से शादी न करो — जाहिर है, हमने ऐसा तभी लिखवाया है जब पूरा यकीन है कि तुम सुनीता से शादी वाले हमारे इस अंतिम आदेश को टाल नहीं सकते। तुम समझ सकते हो, विल में हमारे द्वारा की गई सुनीता की 'नाकेबंदी' केवल उसकी खुशियों के लिये है। हम चाहते हैं, वह कभी अमित या वैसे किसी दूसरे शख्स के पंजे में न फंसे। तुम्हारे साथ रहे, तुम्हारी पत्नी बनकर रहे। हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है, तुम सुनीता की नादानियों को न केवल माफ करते रहोगे बल्कि हमारी ही तरह उसे हमेशा खुश रखोगे।"

तुम्हारा बाबूजी

वकील के चुप होने पर सन्नाटा कुछ और गहरा हो गया।

विनाश के चेहरे पर ऐसे भाव थे जैसे समझ न पा रहा हो कि ये सब आखिर हो क्या गया है ?

इन्स्पैक्टर केकड़ा की आंखें सोचने वाले अंदाज में सुकड़ चुकी थीं मगर ठीक से कुछ सोच नहीं पा रहा था, सुनीता इस अवस्था में भी थोड़े क्रोध में बड़बड़ा उठी —"आप जायदाद के बूते पर मुझे इस लल्लू से शादी करने पर मजबूर करना चाहते हैं डैडी, मगर . . . सुनीता को एक पाई नहीं चाहिये आपकी। मरते दम तक आपने नहीं समझा, प्यार करने वाले ऐसी जायदादों को ठोकरों पर रखते हैं।"



"बात तो तुम्हारी दुरूस्त है।" अमित ने सुनीता को अपनी भुजाओं में भरते हुए कहा —"प्यार करने वाले दौलत की नाकाबंदी के परखच्चे उड़ा देते हैं . . . और मुझे भी, तुम्हारे डैडी की जायदाद का रत्ती भर लालच नहीं है लेकिन . . .

"लेकिन ?" सुनीता चौंक कर उसकी बाहों से अलग हो गयी, आंखों में सवालिया निशान था।

चेहरे को गम्भीर और गमगीन बनाये रखे अमित ने एक सिगरेट सुलगाई।

जब काफी देर तक वह कुछ नहीं बोला, केवल कश लगाता रहा तो बुरी तरह बेचैन और आशंकित सुनीता लगभग चीख पड़ी —"जवाब क्यों नहीं देते अमित, तुम्हारी लेकिन . . . मेरी सांस रोके हुए है।"

"मैं उस आदमी के बारे में सोच रहा हूं जिसे हम लल्लू समझते रहे।"

"मतलब ?"

"वह कोई घुटा हुआ 'फ्राडिया' है।"

"मैं समझी नहीं।"

अमित उसकी तरफ पलटकर बोला —"देखते-देखते एक 'फ्राडिया' हमारे डैडी की जिन्दगी में आया, उनकी जीवन भर की पूंजी लूट ले गया और हम . . . हम कुछ न कर सके- क्या कहेगी दुनिया, यही न कि दुनिया के सबसे बड़े लल्लू हम हैं ?"

"ल . . . लेकिन हम कर क्या सकते हैं ?"

"साजिश का जवाब साजिश होता है।" कहने के साथ उसने सिगरेट का अंतिम सिरा जमीन पर डालकर जूते से कुचल दिया।

●

कोर्ट में सुनीता और विनाश की शादी हो गयी।

गवाह बने डाक्टर गिरवर और विल लिखने वाला मिस्टर खन्ना का वकील।

शादी की खुशी में किसी पार्टी आदि का आयोजन नहीं किया गया। क्योंकि मिस्टर खन्ना को गुजरे केवल पच्चीस दिन हुए थे। गले में मालायें डाले जब वे रॉल्स-रायल से पति-पत्नि के रूप में विला में पहुंचे तो नौकरों ने अपनी तरफ से भव्य स्वागत किया। जब वे उन्हीं के द्वारा सजाये गये विशेष कक्ष में पहुंचे तो होठों पर शरारती मुस्कान लाते विनाश ने कहा —"इजाजत हो

तो आज से हम तुम्हें 'बीवी जी' कहना शुरू कर दें ?"

"मतलब ?" वह तेजी से उसकी तरफ पलट कर फुंफकारी।

"हमारे गांव में पति, पत्नि को 'बीवीजी' कहता है न ?"

"हुंह —।" उसने जहर उगला- "पति . . . तुम पति बनोगे मेरे, आईने में शक्ल देखी है कभी ?"

"क्या मतलब ?" विनाश भौंचक्का रह गया —"क्या हम दोनों की शादी नहीं हो गयी है ?"

"श . . शादी ।" दांत भींचकर कहने के साथ उसने अपने गले में पड़ी माला तोड़ डाली और जख्मी नागिन की तरह फुंफकारी —"हवा में मत उड़ो लल्लू राम, जमीन पर आ जाओ — हमारी शादी केवल 'विल' की शर्त पूरी करने के लिये हुई है- उधर कोर्ट में हमारी शादी का रिकार्ड दर्ज हुआ। इधर विल की शर्त पूरी हो गयी — मामला खत्म — तुम्हारा प्लान चौपट— मैं कल ही डाईवोर्स की एप्लीकेशन लगा रही हूं।"

विनाश के चेहरे पर ऐसे भाव उभरे जैसे आश्चर्य के सागर में गोते लगा रहा हो, बोला — "हमारी समझ में कुछ नहीं आ रहा, तुम क्या कह रही हो — भला ऐसा कहीं होता है ?"

"होता है— पहले नहीं देखा तो अब देख लेना, बहुत जल्द मैं अमित से शादी करूंगी।"

विनाश भाड़ सा मुंह फाड़े खड़ा रह गया।

"क्यों, उड़ गये तोते ?" सुनीता ने चटकारा लिया —"उड़ने भी चाहियें — किसी के हाथ में अरबों की सम्पत्ति आकर 'फुर्र' हो जाये — इससे बड़ा शॉक भला क्या लग सकता है ?"

"अ . . . आप आखिर कह क्या रही हैं ?"

"मेरा ख्याल है, अब तुम्हें लल्लूराम वाली एक्टिंग छोड़ देनी चाहिये मिस्टर फ्राडिये, क्योंकि डैडी की तरह हम मूर्ख बनने वाले नहीं हैं। दिमाग मेरा अमित भी रखता है, वह समय रहते तुम्हारी फितरत समझ गया और ऐसी चाल चली कि तुम अब तक . . . इस क्षण तक भी शॉक से उबर नहीं पाये हो — जरा सोचो, तलाक के बाद दौलत मेरी और सिर्फ मेरी हो जायेगी और मैं अमित से शादी कर लूंगी ।"

"इसका मतलब ये हुआ कि बाबूजी की मौत के बाद से तुम हमें बेवकूफ बना रही थीं ?"

"हन्डरेड परसेन्ट ठीक समझे, लेकिन देर से समझे ।" सुनीता कामयाबी की मस्ती में चूर थी —"वक्त काफी आगे निकल चुका है — डैडी की जिस सम्पत्ति को अपनी चालाकियों से हड़प गये थे उसे वापस तुम्हारे हलक से खींच निकालने का यही एक रास्ता बचा था . . . यह कि मैं तुमसे कानूनी शादी का प्रपंच रच लूं।"

"इतना बड़ा धोखा . . . इतना बड़ा फरेब ?" विनाश हलक फाड़कर चीख पड़ा —"कैसा शहर है ये जहां की लड़कियां शादी को प्रपंच बताती हैं। गले में पति द्वारा डाली गई माला तोड़ कर फैंक देती हैं — हे भगवान, ये धरती फट क्यों नहीं गयी, आसमान गिर क्यों नहीं पड़ता . . . और कितने पाप होंगे यहां?"

सुनीता यूं हंसी जैसे कोई पागल के प्रलाप पर हंसता है, बोली —"अमित ने ठीक कहा था . . . ठीक यही कि जब तुम्हें अपनी चाल के पिटने का पता लगेगा तो तुम पागल हो जाओगे — कपड़े फाड़ डालोगे अपने। बाल नोंच लोगे।"

"ठीक है, नहीं करनी हमें भी ये शादी।" सचमुच पागल से हो गये विनाश ने भी माला तोड़ कर फैंक दी —"हम तो पहले ही तैयार न थे — वो तो डाक्टर गिरवर ने कहा — कहने लगे, हमने शादी नहीं की तो बाबू जी की आत्मा को कष्ट पहुंचेगा — हमें जालसाज कहती हो तुम — पैसे का लालची बताती हो — अरे थूकते हैं हम ऐसे पैसे पर . . . और तुम जैसी लड़की पर भी जो शादी से पहले अपना सबसे कीमती गहना गंवा बैठी-मजबूर न होते तो ऐसी गंदगी में सांस तक नहीं लेते हम — तुम क्या तलाक दोगी, हम ही जा रहे हैं यहां से !" कहने के साथ वह जोश और गुस्से से पागल हुआ दरवाजे से बाहर निकल गया।

पूरी तरह खुश सुनीता ने ऊंची आवाज में कहा — "शर्मदार हो तो फिर कभी अपनी मनहूस सूरत मत दिखाना ।"

जाने क्या क्या बकता विनाश वहां से जा चुका था।

इतराई सुनीता फोन की तरफ लपकी, अमित से सम्बन्ध स्थापित करके बोली —"बधाई हो अमित।"

"क्या हुआ ?" अमित ने व्यग्र स्वर में पूछा।

"वही जिसकी तुम्हें उम्मीद थी बल्कि उससे भी ज्यादा।"

"मतलब ?"

"पगलाया हुआ वह यह कह कर चला गया कि मैं क्या उसे तलाक दूंगी, वही मुझे छोड़ कर जा रहा है।"

"हमेशा के लिये ?"

"अंदाज तो यही था, आखिर वह फंस ही गया।"

"जो चाल मैंने चली, उसमें फंसना तो था ही डार्लिंग – जीत तो केवल तब सकता था जब तुम्हीं मेरे बताये मुताबिक एक्टिंग करने से इनकार कर देतीं।"

सुनीता ने रोमांटिक स्वर में कहा –"क्या मैंने कभी तुम्हे किसी चीज के लिये इंकार किया है ?"

"नहीं . . . कभी नहीं ।" अमित का स्वर अश्लील हो उठा।

"धत् . . . शरीर कहीं के ।" कहने के साथ उसने सम्बन्ध विच्छेद कर दिया।



डाक्टर गिरवर काफी देर तक आग बबूला हुए विनाश की बातें सुनते रहे।

वह बुरी तरह आहत था और लगातार चीख-चीख कर सुनीता के व्यवहार के बारे में बता रहा था। गिरवर की समझ में सुनीता और अमित की सारी प्लानिंग आ गई थी। विनाश जब यह कहता हुआ क्लीनिक के दरवाजे की तरफ बढ़ा कि अब वह इस शहर में एक पल नहीं रहेगा। गांव वापस जा रहा है तो कुर्सी से खड़े होते हुए डाक्टर गिरवर ने कहा –"अपनी ही बकवास किये जाओगे या हमारी भी सुनोगे ?"

"अपना चाहा हमने किया ही क्या है?" पलट कर वह पुन : भड़का –"पहले बाबू जी का कहा मानते रहे और अब वह किया जो आपने कहा।"

"लेकिन फायदा क्या हुआ?"

"मतलब?"

"गुस्से से काम नहीं चलेगा विनाश - ठंडे दिमाग से काम

लो।" डाक्टर गिरवर जैसे किसी बच्चे को समझा रहे थें – "सोचो, अगर तुम इस तरह चले गये तो क्या होगा - वही न, जो खन्ना नहीं चाहता था - जिसे रोकने के लिये विल के जरिये उसने इतनी नाकाबंदी की थी?"

"लेकिन अब . . . जब वो हमें अपना पति मानती ही नहीं तो चाह कर भी क्या कर सकते हैं?"

"अहमियत उसके मानने न मानने की नहीं बल्कि इस बात की है कि आज की तारीख में तुम उसके पति हो और पति के अधिकार असीमित होते हैं। तुम उनका इस्तेमाल कर सकते हो।"

"ज . . . जबरदस्ती कैसे?" विनाश हकला गया।

"एक पति को अपना अधिकार इस्तेमाल करने से कोई नहीं रोक सकता।"

"ह - हम समझ नहीं पा रहे, आप कह क्या रहे हैं?"

डॉक्टर गिरवर ने कुछ कहने के लिये मुंह खोला ही था कि एक नर्स ने कमरे में प्रविष्ट होने के साथ कहा – "आप भूल गये लगते हैं डॉक्टर, आज आपका पोस्टमार्टम का टर्न है।"

"ओह!" डॉक्टर गिरवर ने चौंककर रिस्टवॉच पर नजर डाली – "हम वाकई लेट हो गये लेकिन . . . एक पोस्टमार्टम यहां भी चल रहा है सिस्टर, इस लल्लूराम के दिमाग का पोस्टमार्टम - पहले इसे पूरा होने दो।"

●

"त – तुम?" उसे देखते ही सुनीता चिंहुक उठी।

"हां डार्लिंग . . . हम।" विनाश एक झटके से सामने वाले सोफे पर बैठ गया।

"त – तुम यहां आये कैसे ?"

"क्यों ?" उसने भवें मटकाईं – "आ नहीं सकते क्या ससुराल में ?"

"तुम तो कह गये थे विला से हमेशा के लिये जा रहे हो?"

"बेवकूफी थी हमारी ।" विनाश ने साफ कह दिया –

"अब समझदार होकर लौटे हैं।"

"समझदार होकर लौटे हो ?" सुनीता भड़क उठी – "आखिर बक क्या रहे हो तुम ?"

"बक नहीं रहे डार्लिंग, फरमा रहे हैं।" विनाश के होंठों पर दिलचस्प मुस्कान उभर आई –"दरअसल हमने उस बागड़ बिल्ले, क्या नाम है उसका- हां, अमित . . . हमनें अमित के प्लान में पंक्चर करने का फैसला कर लिया है।"

खोपड़ी घूम गयी सुनीता की।

इस वक्त बिल्कुल दूसरा विनाश उसके सामने था।

हैरत और बौखलाहट के कारण बुरा हाल हुआ जा रहा था उसका, गुर्राई –"अ . . . आखिर तुम चाहते क्या हो ?"

"वही ।" विनाश की आंखों में विशिष्ट भाव उभर आये –"जो एक पति, पत्नी से चाहता है।"

"होश में रहो लल्लूराम।" उसका इशारा समझकर सुनीता बफर पड़ी –"भांग चढ़ाकर आये हो क्या ?"

विनाश ने रोमांटिक अंदाज में कहा –"जिसकी बीवी की आंखों में इतना नशा हो उसे भांग चढ़ाने की क्या जरूरत है ?"

"तो मेरी आंखों में नशा नजर आ रहा है तुम्हें ?"

"यकीनन।"

"जबकि कल मैं कोर्ट में डाईवोर्स की एप्लीकेशन लगाने वाली हूं।"

"कल की कल देखी जायेगी जानेमन, फिलहाल तो आज की पूरी रात पड़ी है – वैसे भी, ये हमारी सुहागरात है।"

सुनीता हक्की बक्की रह गयी।

उसे बिल्कुल नहीं लग रहा था यह वही शख्स है जिसने 'स्टेडी' को 'सटेडी' कहा था। उसे लगा, अब ये शख्स एक्टिंग छोड़कर खुले रूप में सामने आ गया है। कह भी दिया उसने – "तो ये है तुम्हारी हकीकत ?"

"जब तुम आज तक अमित की हकीकत नहीं जान सकीं डार्लिंग तो हमारी हकीकत क्या जानोगी ?" वह कहता चला गया – "उससे तो कई गुना ज्यादा 'गहरे' हैं हम – जरा सोचो, जिसने एक महीने के अन्दर तुम्हारे बाप पर ऐसा जादू चला दिया कि तुम सहित उसकी सम्पूर्ण जायदाद ले उड़ा वह कितना गहरा

होगा और अमित . . . वह अमित मूर्ख नहीं तो और क्या है जिसने यह सोचा कि हाथ आई जायदाद को विनाश इतनी आसानी से छोड़कर चला जायेगा ?"

"तुम भूल रहे हो, जायदाद डैडी हम दोनों के नाम कर गये हैं।"

विनाश ने तपाक से कहा – "और तुम्हें केवल मेरे नाम।"

"मैं तुम्हारी हरगिज नहीं हो सकती।"

विनाश मुस्कुराया। बड़ी ही कातिल मुस्कान थी वह । सुनीता की रीढ़ में सिहरन दौड़ गयी। विनाश ने जेब से चांसलर का पैकिट निकाला। मिस्टर खन्ना वाले म्यूजिकल लाईटर से सिगरेट सुलगाई और मुंह से ढेर सारा धुवां निकालता हुआ पूरे कांफीडेन्स के साथ बोला –"चाहूं तो आज ही रात अपनी बना सकता हूं।"

मारे घबराहट के सुनीता चीख पड़ी –"क-क्या तुम जबरदस्ती करोगे ?"

"देखो . . . हम आगे बढ़ रहे हैं।" कहने के साथ उसने सिगरेट में कश लगाया और सचमुच उसकी तरफ बढ़ने लगा।

सुनीता के छक्के छूट गये। जिस्म के सभी मसामों ने एक साथ ठंडा पसीना उगल दिया।

विनाश उसके करीब . . . और करीब आता जा रहा था। उसके होठों पर कुटिल मुस्कान थी और . . . सुनीता को लग रहा था, एक दरिन्दा उसकी तरफ बढ़ता चला आ रहा है।

बुरी तरह खौफजदा हो गयी वह।

इतनी . . . कि चाहने के बावजूद हलक से चीख न निकाल सकी। बचने के लिये पीछे हटती चली गई।

"कितने प्यारे होंठ हैं तुम्हारे, ठीक ताजे गुलाब की पंखुड़ियों जैसे।" निरन्तर उसकी तरफ बढ़ते विनाश ने कहा –"सबसे पहले हम इन्हीं का रस चूसना चाहेंगे डार्लिंग।"

पीछे हटती सुनीता दीवार से जा सटी।

यही क्षण था जब उसका मुंह चीख पड़ने के लिये खुला और . . . यही क्षण था जब बाज की मानिन्द झपटकर विनाश ने न केवल कबूतरी की तरह उसे दबोच लिया बल्कि अपने होंठ

उसके होठों पर रख दिये।

सुनीता की चीख घुटकर रह गयी।

वह बुरी तरह विनाश की गिरफ्त से निकलने के लिये छटपटा रही थी परन्तु मर्द . . . आखिर मर्द था। विनाश के दोनों हाथ उसके दोनों गालों पर थे। होंठ, होठों पर।

दायें हाथ की दो अंगुलियों के बीच फंसी सिगरेट अभी भी धुवां उगल रही थी।

ये चुम्बन एक मिनट से छोटा हरगिज नहीं था।

एक मिनट बाद जब विनाश स्वेच्छा पूर्वक अलग हुआ तो सुनीता हक्की बक्की थी – भय से चेहरा पीला पड़ा हुआ था – आंखों में विनाश के लिये खौफ और नफरत के भाव थे, विनाश ने जानदार मुस्कान के साथ पूछा –"चूमा तो तुम्हें अमित ने भी है लेकिन . . . अपने पतिदेव का ये पहला चुम्बन कैसा लगा ?"

सुनीता हलक फाड़कर चीख पड़ी –"तुम जानवर हो . . . दरिन्दे हो . . . राक्षस हो तुम।"

विनाश उसके प्रलाप पर ठहाका लगाकर हंसा। सिगरेट में कश लगाया। बाकी फर्श पर डाली, उसे जूते से कुचला और कमरे से बाहर निकलता हुआ बोला –"मैं आज की रात को सुहागरात में बदलने आऊंगा डार्लिंग, इन्तजार करना।"

सुनीता ने लपककर दरवाजा बंद कर लिया, सूखे पत्ते की तरह कांप रही थी वह।



"स - सुनीता !" अमित झुंझला उठा –"आखिर हो क्या गया है तुम्हें, इतनी कमजोर तो मैं नहीं समझता था कि अपने सतीत्व तक की रक्षा न कर सको।"

"समझते क्यों नहीं अमित ?" खौफ सुनीता के चेहरे पर मानो स्थाई निवास कायम कर चुका था –"कोई और होता तो अपने बचाव हेतु मैं हजार हथकंडे इस्तेमाल कर सकती थी मगर, वह दुनिया की नजरों में मेरा पति है – हालांकि चुम्बन से आगे आज तक नहीं बढ़ा परन्तु बंद दरवाजे पर सारी रात बार बार

दस्तक देकर मेरे प्राण सुखाये रखता है— यह सब होते चार रातें गुजर चुकी हैं। मैं ऐसी खौफजदा रातें और ज्यादा नहीं गुजार सकती।"

"नौकर कहां मर जाते हैं, जब तुम चीखती-चिल्लाती और उसका विरोध करती हो तो वे तुम्हारी मदद नहीं करते ?"

"सारे नौकर रात के दस बजे तक सर्वेन्ट्स क्वाटर्स में चले जाते हैं— विला तो तुमने देखी ही है कितनी बड़ी है। इमारत से लोहे वाला गेट और सर्वेन्ट्स क्वाटर्स इतनी दूर हैं कि रात के वक्त विला की इमारत में कोई लाख चीखता रहे, आवाज गेट या सर्वेन्टस क्वाट्र्स तक नहीं पहुंच सकती – हां, हाल में एक स्वीच है जिसे दबाने पर सर्वेन्ट्स क्वाटर्स में बैल बजती है लेकिन . . ."

"लेकिन ?"

"पहली बात, मैं अपने कमरे में बंद रहती हूं— दूसरी बात, नौकरों से उम्मीद नहीं कि वे हैल्प करेंगे क्योंकि वे उसे पसन्द करते हैं और मेरे पति के रूप में देखते हैं।"

"समझने की कोशिश करो सुनीता, बलात्कार का हक कानून 'पति' को भी नहीं देता - वह तुम्हें डरा रहा है, वैसा कुछ नहीं कर सकता।"

"क्यों ?" आतंकित सुनीता चीख पड़ी –"क्यों नहीं कर सकता। किसी रात आमादा हो गया तो क्या कर सकूंगी मैं। कैसे रोकूंगी उसे ?"

"ओ. के. ।" कहने के साथ अमित ने कोट की जेब से एक रिवाल्वर निकाला –"इससे रोकना ।"

"र.- रिवाल्वर ?" सुनीता के सभी मसामों ने एक साथ पसीना उगल दिया।

"इसे तुम्हारे पास देखने के बाद वह किसी किस्म की बद्तमीजी करने के बारे में सोच तक नहीं सकेगा।"

"म -मगर !" सुनीता के प्राण खुश्क हुए जा रहे थे, चेहरा पीला पड़ चुका था— बड़ी मुश्किल से अटकते-अटकते पूछ सकी वह –"मैं इससे उसे कैसे रोक सकूंगी ?"

"जैसे ही बदतमीजी पर आमादा हो – तुम इसे उस पर तान देना। कहना, यदि नहीं माना तो गोली मार दोगी।"

"तब भी न माने तो ?"

"सचमुच गोली मार देना साले को ।"

"ग - गोली मार दूं ?" सुनीता हकबका गई।

"कानून ने हर औरत को अपने सतीत्व की रक्षा का अधिकार दे रखा है।"

"ल - लेकिन . . . कोर्ट में लगी मेरी डाईवोर्स की एप्लीकेशन के मुताबिक वह नपुंसक है - ऐसी अवस्था में कैसे सिद्ध होगा कि उससे मुझे सतीत्व का खतरा था ?"

"उफ्फ !" अमित का जी चाहा, अपने बाल नोंच ले —"समझने की कोशिश क्यों नहीं कर रहीं सुनीता। ऐसी नौबत नहीं आयेगी। एक बार रिवाल्वर देखने के बाद वह तुम्हारे आस-पास नहीं फटकेगा।"

"क्यों न तुम भी मेरे साथ विला में रहो अमित ?"

"व - विला में ?"

"सोचो, कसमसाने के अलावा क्या कर सकेगा वह ?"

अमित की आंखें सोचने वाले अंदाज में सुकड़ गयीं। दूर तक सोचता चला गया वह और जितना सोचा . . . मजा आया।

●

दोपहर का वक्त।

चारों तरफ छिटकी धूप शरीर को सुहा रही थी।

"खन्ना विला" के मैदान जैसे लॉन के बीचों बीच एक बांस टेबल और उसके चारों तरफ चार बांस चेयर्स मौजूद थीं। अलसाया सा विनाश उनमें से एक चेयर पर अधलेटी अवस्था में पड़ा था। पैर जूतों सहित मेज पर फैला रखे थे।

लोहे वाले विशाल गेट के बाहर एक गाड़ी रुकी।

हॉर्न बजा।

गेटमैन ने दौड़कर दरवाजा खोला। विनाश ने आंखों के बीच झिर्री पैदा की और देखा- सुनीता की रॉल्स रायल गेट के अन्दर आने के बाद पोर्च की तरफ बढ़ रही थी। सुनीता ड्राईविंग सीट पर थी, अमित उसके बगल वाली सीट पर – उन्हें देखकर विनाश के होंठों पर मुस्कान उभरी परन्तु ज्यों का त्यों पड़ा रहा।

हल्की सी जुम्बिश तक नहीं खाई उसने।

रॉल्स रायल पोर्च से पहले ही, लॉन के एक किनारे पर रुकी। सुनीता और अमित न केवल बाहर निकले बल्कि इतनी ज़ोर-ज़ोर से दरवाज़े बंद किये कि विनाश की तंद्रा भंग हो मगर विनाश टस से मस न हुआ।

वे करीब पहुंचे।

अमित ने हाथ बढ़ाते हुए कहा —"हैलो लल्लू राम जी।"

"हिलने का मूड नहीं है मिस्टर महालल्लू।" विनाश उसी पोज में पड़ा-पड़ा बोला।

"कोई बात नहीं, मूड बनाना हमें आता है।" कहने के साथ स्वयं एक चेयर पर बैठते हुए अमित ने सुनीता से कहा —"बैठो डार्लिंग।"

विनाश की तरफ देखती सुनीता बैठ गयी, आंखों में अब भी खौफ गर्दिश कर रहा था। अमित्त ने उसे जलाने के लिये तीर चलाया —"कैसी लगी हमारी जोड़ी ?"

"ओबरॉय कॉन्टीनेन्टल के रूम नम्बर सात सौ सात में ज्यादा अच्छी लगती हैं।"

"वो सब देखा है तुमने ?" अमित मुस्कुराया।

विनाश ने कहा — "ब्ल्यू फिल्में देखना हमारा पुराना शौक है।"

"गुड ।" अमित ठहाका लगाकर हंसा —"अब हम तुम्हें यहीं दिखायेंगे, इसी विला में।"

"एक आर्टिस्टों की फिल्म एक से ज्यादा बार नहीं देखते।"

"मगर ये देखनी होगी दोस्त, बार-बार देखनी होगी तुम्हें।"

"लगता है, मूड बनाना ही पड़ेगा ।" कहने के साथ विनाश कुर्सी पर सीधा होकर बैठा, पैर मेज से हटा कर जमीन पर रखे और मिस्टर खन्ना वाले म्यूजिकल लाईटर से चांसलर की सिगरेट सुलगाने के बाद बोला —"सुनीता नाम की ये अरबपति मछली ब्ल्यू फिल्मों की शूटिंग चाहे जिसके साथ करती फिरे मगर पत्नि हमारी है - और हमारी रहेगी।"

"तुम जैसा नीच, जलील और गिरा हुआ आदमी मैंने

अपनी जिन्दगी में नहीं देखा।" अमित के कुछ कहने से पहले सुनीता फुंफकार उठी —"अपनी बीवी को दूसरे की बांहों में, दूसरे के बिस्तर पर देखकर मरे से मरे व्यक्ति के खून में उबाल आ जाता है मगर तुम . . . लगता है तुम्हारे जिस्म में खून ही नहीं है।"

"कभी ठण्डे दिमाग से अपनी और हमारी तुलना करना जानेमन ।" विनाश ने ठहाका लगाया —"जानने की कोशिश करना, तुम ज्यादा नीच, जलील और गिरी हुई हो या हम - खून तुम्हारे जिस्म में नहीं है या हमारे ?"

"त - तुमने मुझे गालियां बकीं ?" तमतमाई सुनीता शुरू होने वाली थी कि अमित ने उसे रोका — "उत्तेजित हमें नहीं, इसे होना है सुनीता - देखते हैं, विला में . . . हमें अपनी आंखों के सामने रंग-रलियां मनाते कब तक देख सकता है ?"

विनाश मुस्कुराता रहा।

अमित ने सीधे उसी से कहा —"अब मैं यहीं रहूंगा लल्लूराम। तुम्हारी बीवी के बैडरूम में सोया करूंगा। चाहो तो इसे चरित्रहीन सिद्ध करके तलाक ले सकते हो।"

धूर्तता पूर्ण मुस्कान के साथ विनाश ने कुछ कहने के लिये मुंह खोला ही था कि लोहे वाले गेट के बाहर एक लाल रंग की चमचमाती मारूति वेन रुकी - हॉर्न बजा - गेटमैन ने आदतानुसार लपक कर गेट खोल दिया।

वेन 'सर्र' से अन्दर आई।

रॉल्स - रॉयल के ठीक पीछे रुकी।

अपने बीच चल रही वार्ता को भूल कर तीनों उस तरफ देखने लगे थे।

वेन के शीशों पर गहरी काली फिल्म चढ़ी थी, तीनों में से किसी को अन्दर का दृश्य नजर नहीं आया।

एक झटके से ड्राईविंग डोर खुला।

जो शख्सियत वेन से बाहर निकली उस पर नजर पड़ते ही विनाश इस तरह उछल पड़ा जैसे सैकड़ों बिच्छुओं ने एक साथ डंक मारा हो।

कुर्सी से उछल कर खड़ा हो गया वह।

न केवल खड़ा हो गया बल्कि सुलगी हुई सिगरेट

अंगुलियों के बीच से फिसल कर स्वतः घास पर गिर गई।

चेहरा पीला पड़ गया था, जिस्म पसीने पसीने ।

आखें निस्तेज ।

इस तरह खड़ा रह गया था विनाश जैसे देवऋषि के श्राप से शिला में तब्दील हो गया हो।

सुनीता और अमित उसकी हालत देखकर दंग थे। वेन से निकली शख्सियत अपने सिंदूरी मुखड़े पर संगमरमरी कठोरता लिये सीधी उन्हीं की तरफ बढ़ी चली आ रही थी। उसकी बड़ी बड़ी आंखों का रंग कांच की नीली गोलियों जैसा था। कद किसी भी तरह पौने छहः फुट से कम नहीं। सम्पूर्ण जिस्म काले चोंगे में छुपा रखा था उसने।

केवल मुखड़ा नजर आ रहा था।

सिर और कान तक काली चुनरी से ढके थे।

इतनी रहस्यमय लग रही थी वह कि अमित और सुनीता के दिल 'धाड़-धाड़' करके बजने लगे और विनाश . . . विनाश की हालत तो सिंहनी के सामने बंधे हिरन जैसी थी।

शख्सियत ने अमित और सुनीता पर ध्यान न दिया।

मानो वे मौजूद ही न थे।

सीधी विनाश के सामने जाकर खड़ी हो गयी वह । कांच की नीली गोलियों जैसी आंखों की चुभन अपने चेहरे पर महसूस करते ही विनाश की टांगें कांपने लगीं, बड़ी मुश्किल से उसके हलक से एक शब्द विस्फुटित हुआ —"व - विमला।"

उसके कंठ से आवाज नहीं, खनखनाहट निकली —"मैं तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ूंगी।"

"म - मगर . . . ।" विनाश हड़बड़ा उठा। चेहरे पर हवाईयां उड़ रही थीं, आंखों में आतंक की हुकूमत।

"यहीं ।" विमला के हलक से पुनः खनखनाहट निकली —"इनके सामने बात करोगे या . . . "

"प - प्लीज . . . प्लीज विमला ।" विनाश अर्तनाद कर उठा —"य . . . यहां नहीं, म . . . मेरे साथ आओ । म . . . मेरे कमरे में . . . प्लीज।" कहने के बाद वह मुड़ा और विला की इमारत के द्वार की तरफ बढ़ गया - ये अलग बात है टांगें अपनी 'कैपेसिटी' से ज्यादा 'पी' गये शराबी की मानिन्द लड़खड़ा रही

थीं।

विमला ने निर्विकार भाव से एक नज़र सुनीता और अमित पर डाली।

यही क्षण था जब दो तीन कदम आगे निकल गये विनाश ने पलटकर देखा, गिड़गिड़ा उठा वह –"प्लीज विमला।"

विमला उसकी तरफ बढ़ी।

ठीक ऐसा लगा जैसे काले कफन में लिपटी लाश लड़खड़ाते शराबी के पीछे चली जा रही हो। अमित और सुनीता स्टैचू से बने उस दृश्य को देखते रहे। प्रबल इच्छा के बावजूद अमित विमला को रोक न सका।

निश्चय ही उसके व्यक्तित्व में जादू था।

●

विमला के अन्दर आते ही विनाश ने दरवाजा बंद कर लिया। इस वक्त उसकी हालत ऐसी थी जैसे कत्ल करता रंगे हाथों पकड़ लिया गया हो। दरवाजा बंद करने के बाद अपना पीला जर्द चेहरा विमला की तरफ घुमाया ही था कि वह फुंफकारी– विस्तार से बताऊं तुम यहां क्यों आये हो या . . . ."

"न - नहीं ।" विनाश कमरे के दरवाजे और खिड़कियों की तरफ देखकर गिड़गिड़ा उठा। –"किसी विस्तार की जरूरत नहीं है। तुम्हारा यहां पहुंचना ही मुझे समझाने के लिये काफी है।"

"गुड !" पहली बार उसके गुलाबी होठों पर मुस्कान रेंगी, जहर में बुझी मुस्कान थी वह।

"ब . . . बस ये बता दो, क्या चाहती हो ?"

उल्टा विनाश ही से सवाल किया उसने -"क्या चाहना चाहिये मुझे ?"

"फ - फ़िफ्टी . . . फिफ्टी परसेन्ट माल तुम्हारा।" विनाश ने बगैर हील - हुज्जत के ऑफर दे डाला।

विमला यूं मुस्कुराई जैसे उसने बचकानी बात कह दी हो, बोली –"इतना तो सुनीता और अमित भी दे देंगे।"

"व - वे भला क्यों देने लगे, उनकी कोई कमजोर नस

थोडी है तुम्हारे पास ?"

"उनकी कमजोर नस तुम हो ।"

"म - मैं ?"

"तुम उनके रास्ते का एक मात्र ऐसा रोड़ा हो जो अगर हट जाये तो पलक झपककते ही सारे मंसूबे पूरे हो जायें और मेरे पास वो गुरूमंत्र है जो तुम्हें न केवल रास्ते से बल्कि दुनिया से गारत कर सकता है।"

—"ब – बोलो तो सही, क्या चाहती हो ?"

"सेविन्टी फाईव परसेन्ट ।"

"य - ये तो बहुत . . .

"सीधा जवाब दो। " उसकी आवाज में कोड़े की फटकार थी —" कुबूल . . या ना कुबूल ?"

"क - कुबूल ।" विनाश ने इस तरह कहा जैसे डर हो कि एक पल भी चूका तो वह उसके खिलाफ फैसला ले लेगी।

"गुड !" विमला के होठों पर पुनः जहरबुझी मुस्कान रेंगी।

विनाश घिघियाया —"अब तो मेरा खेल चलने दोगी ?"

"आज . . . मेरे हाथ तुम्हारी गर्दन पर हैं तो तुम मेरे तलवे चाट रहे हो लेकिन इस बात को मुझसे बेहतर कोई नहीं जान सकता कि तुम किस दर्जे के हरामजादे हो - मुझे मालूम है, गिरगिट ने तुम्हीं से रंग बदलना सीखा है अतः ऐसी कोई गारन्टी चाहिये मुझे जिससे बंधकर अंत तक सौदे पर कायम रह सको।"

"ज - जैसी चाहो, वैसी गारंटी देने को तैयार हूं।"

"सोचना पड़ेगा गारन्टी क्या हो। ओ. के.। फिर मिलूंगी।" कहने के साथ वह दरवाज़े की तरफ बढ़ी।

"ठ - ठहरो।" उसके पीछे लपकते विनाश ने कहा —"बेहतर ये होगा, जो गारंटी चाहिये इसी मुलाकात में तय हो जाये। तुम्हारा यहां बार-बार आना या इस बीच हमारी ज्यादा मुलाकातें मेरा खेल बिगाड़ सकती हैं।"

विमला ने उसकी तरफ पलट कर कहा – "डरो मत, अपने बिल में जाते सांप की तरह चलते रहे तो खेल नहीं बिगड़ने दूंगी।"

"फ - फिर भी, मुलाकातें कम हों तो . . . .

"ओ . के . . . . केवल एक मुलाकात और होगी।" कहने के बाद वह पुनः दरवाजे की तरफ पलट गयी।

विनाश ने उसके पीछे लपकते हुऐ कहा —"यहां आने की जगह फोन करके मुझे बुला लोगी तो ठीक होगा। तुम जब, जहां, जिस वक्त बुलाओगी, हाजिर हो जाऊंगा।"

विमला दरवाजा खोलकर बाहर निकल चुकी थी।

●

उस वक्त तेज कदमों के साथ गेलरी से गुजर रही थी जब पीछे से एक कड़क आवाज उभरी - "ठहरो।"

विमला जहां की तहां स्थिर हो गयी।

साथ ही स्थिर हो गया उससे एक कदम पीछे चल रहा विनाश।

दोनों ने एक साथ घूमकर पीछे देखा।

अमित और सुनीता लपकते से उनकी तरफ बढ़े चले आ रहे थे। अमित के हाथ में रिवाल्वर था। उसे देख कर विनाश के चेहरे पर जहां उलझन के भाव उभर आये वहीं, विमला के होठों पर मुस्कान रेंगने लगी थी।

उधर, सुनीता डरी-डरी नजर आ रही थी जबकि अमित अपने चेहरे को क्रूर बनाने का भरसक प्रयास कर रहा था, उनके काफी नजदीक पहुंचने के बाद वह गुर्राया —"हमने तुम्हारी एक-एक बात सुनी है।"

विनाश का चेहरा 'फक्क' पड़ गया।

विमला ने आराम से कहा —"अच्छा किया।"

"कौन हो तुम ?" अमित का रिवॉल्वर उसी पर तना था।

विमला ने बेखौफ पूछा —"नहीं बताऊँ तो क्या करोगे?"

"ज्यादा स्मार्ट बनने की कोशिश मत करो।" अमित ने चेतावनी दी —"तुम दोनों की जो बातें हुई, उनसे जाहिर है - तुम पूर्व परिचित ही नहीं, पुराने अपराधी हो - विनाश ने तो शायद कोई ऐसा जुर्म कर रखा है जो इसे सीधा फांसी पर लटकवा देगा। ऐसे लोगों को गोलियों से भून देने पर कानून शायद मुझे सजा नहीं, ईनाम दे ।"

विनाश ने कहा —"साबित कैसे करोगे हम अपराधी हैं?"

"तुम चुप रहो ।" अमित ने उसे डांटा, विमला से मुखातिब हुआ — "जवाब दो, कौन हो तुम ?"

विमला ने कहा — "पूरा नाम विमला पुरी है।"

विनाश चौंका।

विमला एक नजर उस पर डालने के साथ रहस्यमय अंदाज में मुस्कुराई।

"कहां रहती हो ?" अमित ने दूसरा सवाल ठोका।

"ये है मेरा कार्ड ।" विमला ने चौंगे से अपना गोरा और पतली पतली अंगुलियों वाला हाथ निकाला। लम्बे लम्बे नाखूनों पर महरून कलर की नेल पालिश लगी थी। अमित ने हाथ बढ़ाकर उसकी अंगुलियों के बीच फंसा विजिटिंग कार्ड ले लिया।

"कार्ड रिवाल्वर से डर कर नहीं बल्कि इसलिये दिया है क्योंकि मैं खुद तुमसे ढेर सारी बातें करना चाहती हूं, टाईम मिले तो आना।" कहने के बाद वह मुड़ी और तेज कदमों के साथ विपरीत दिशा में बढ़ गयी।

न तो अमित को लगा कि अब उसे विमला को रोकने की जरूरत है, न ही विनाश को। शानदार खेल , खेल गयी थी वह।



विमला उसे मूर्ख बना गयी थी यह बात अमित को उसी रात तब पता लगी जब विजिटिंग कार्ड हाथ में लिये घंटों उस क्षेत्र में भटकता और पूछताछ करता रहा जहां का कार्ड पर एड्रेस था।

पता लगा, उस क्षेत्र में विजिटिंग कार्ड पर दिये गये नम्बर का कोई मकान नहीं है। झुंझलाया हुआ विला में लौटा।

आते ही विनाश ने लपक लिया, व्यंग्यात्मक स्वर में पूछा —"मिल आये विमला से ?"

"मैं समझ गया हरामजादे ।" वह गुर्राया —"तुझे उसी वक्त मालूम था कि उसने गलत नाम पता बताया है, तभी तो चुप रहा — सही बताया होता तो उसके पैरों में गिर पड़ा होता —

चूक मुझी से हो गयी, मुझे उसी वक्त सोचना चाहिये था, जिस शख्स के उसे मुझसे बात करते देखकर होश उड़े जा रहे थे, वह कार्ड देने पर खामोश क्यों रहा ?"

"जो देर से समझे, उसे समझदार नहीं कहते ।" विनाश ने चटकारा लिया।

अमित ने दांत भींच कर उसे घूरा। इस वक्त विनाश वह शख्स हरगिज नहीं लग रहा था जिसे उसने बात-बात पर विमला के समक्ष गिड़गिड़ाते देखा था – न ही वह लग रहा था, जो सुनीता से शादी होने तक नजर आता था। अमित को विमला के शब्द याद आये, उसने कहा था –'मुझे मालूम है, गिरगिट ने तुम्हीं से रंग बदलना सीखा है' – एक एक शब्द को चबाते अमित ने कहा –"तूने बहुत रंग बदले, लेकिन अंततः असली रंग सामने आ ही गया और यकीन रख, बहुत जल्द मैं तेरा खेल खत्म कर दूंगा।"

"बच्चा है प्यारे, अभी तू बच्चा है।" विनाश ने ये शब्द ऐसे अंदाज में कहे कि अमित के जिस्म में चिंगारियां भर गयीं –"मेरे असली रंग तक पहुंचने के लिये तुझे सात जन्म लेने पड़ेंगे।"

दांत पीसता हुआ अमित उसके सामने से हट गया।

उसने सुनीता के साथ विनाश को दिखा-दिखा कर प्रेम क्रीड़ा की मगर विनाश उत्तेजित होने के स्थान पर हर बार ऐसे अंदाज में मुस्कुराता नजर आया जैसे उनकी हरकत को बेवकूफाना मान रहा हो।

दिन गुजर रहे थे।

उधर, कोर्ट में डाईवोर्स से सम्बन्धित मुकदमें की पहली ही तारीख पर विनाश के वकील ने मामले को जिस तरह उलझा कर पेश किया उससे यह बात क्लीयर हो गयी कि केस लम्बा चलेगा।

एकाध साल में फैसला होने वाला नहीं था।

अब . . . अमित की सभी आशाएं विमला पर टिकी थीं।

उस विमला पर जो निश्चित रूप से विनाश का कोई ऐसा राज जानती थी जिसके कारण वह उसके कदमों में नाक

तक रगड़ने पर मजबूर था — उस विमला पर जो अंतिम क्षणों में उसे चकमा दे गयी थी —अमित उससे मिलना चाहता था।

परन्तु कहां ढूंढे उसे। कैसे मिले ?

●

रात के दस बजे।

अमित का अंगूठा एक फ्लैट की कालबेल पर था, दिल काबू में रखने की लाख चेष्टाओं के बावजूद रह-रह कर पसलियों से टकरा रहा था। करीब पांच सैकिण्ड बैल बजाने के बाद उसने अंगूठा हटा लिया।

थूक सटककर सूख चले गले को तर करने की कोशिश की।

अन्दर से किसी की पदचाप उभरी, अमित ने दायां हाथ कोट की जेब में डाल लिया। इतना सतर्क नजर आने लगा जैसे दरवाजा खुलते ही आफत टूट पड़ने वाली हो।

दरवाजा खुला।

विमला सामने थी।

उसे देखते ही विमला के हलक से चीख निकल गई —"त — तुम ?"

"हां ।" अमित ने बिजली की सी फुर्ती से रिवॉल्वर उस पर तान दिया —"आखिर मैं पहुंच ही गया।"

मुखड़े पर हैरत के असीमित भाव लिये विमला हकबकाई सी उसकी तरफ देखती रह गयी। उसकी हैरानगी ने अमित में आत्म-विश्वास का संचार किया। जीत का एहसास विजयी मुस्कान बन कर होठों पर उभरा, बोला —"आश्चर्य हो रहा है ?"

"त — तुम यहां पहुंच कैसे गये ?"

"तुम्हारे हर सवाल का जवाब देने और अपने हर सवाल का जवाब लेने आया हूं मगर दरवाजे पर खड़े रह कर बातें नहीं हो सकतीं . . . पीछे सरको।" कहने के साथ उसने रिवॉल्वर लहराया।

विमला केवल चकित थी, खौफजदा नहीं।

वह पीछे हटी।

अमित ने दरवाजा पार किया और फिर . . . उसे अंदर से बंद भी कर लिया।

विमला के जिस्म पर इस वक्त ढ़ीला-ढाला काला गाऊन था। गाउन के नीचे टांगों में 'जिन' और ऊपरी हिस्से में सफेद रंग का 'टॉप' पहना हुआ था।

लम्बे और घने बालों का रंग तांबे के तारों जैसा था।

मुखड़े पर कोई मेकअप नहीं।

"अब बताओ ।" हलक से वही खनखनाहट निकली —"कैसे पहुंचे ?"

"तुमने विनाश को फोन पर यहां का पता दिया, कल सुबह मिलने के लिये बुलाया — मैंने सोचा, मुझे आज ही मिल लेना चाहिये।"

"ओह ।" विमला के मस्तक पर बल पड़ गये।

"अगर गलत एड्रेस वाला विजिटिंग कार्ड न देतीं तो मैं उस दिन तुम्हें विला से बाहर नहीं निकलने देता।"

"ये बात मेरी समझ में आ गयी थी इसलिये चकमा दिया — इसलिये दिया क्योंकि मैं तुमसे मिलना नहीं चाहती थी — मिलना इसलिये नहीं चाहती थी क्योंकि मेरी नजर में तुम मेरे किसी काम के नहीं थे।"

"अब हूं ?"

"होने चाहिये, मगर नहीं हो ।"

अमित की आंखें गोल हो गयीं —"मतलब ?"

"विनाश और तुम्हारे बीच चल रही जंग का फैसला अगर तलाक को मान लिया जाये तो तुम ये जंग हार चुके हो मिस्टर अमित।" विमला बेखौफ अंदाज में कहती चली गयी —"क्योंकि दो - चार साल में तो तलाक सुनीता को मिलने से रहा और इतने सालों में हालात बदल कर कहीं से कहीं पहुंच जायेंगे।"

"ये बाजी मुझे हर हाल में जीतनी है मैडम।" अमित ने पुनः दांत पीसे।

विमला ने उसकी आंखों में झांकते हुए कहा —" तब तो एक ही रास्ता बाकी बचा है।"

"क्या ?"

"उसका मर्डर ।"

"मेरा काम इतना बड़ा कदम उठाये बगैर भी हो सकता है।"

"वो कैसे ?"

"वे सुबूत मेरे हवाले करो जिनके कारण विनाश सूखे पत्ते की तरह कांपता है।"

"उन्हें किसी के हवाले करना तो दूर, मैं 'उजागर' तक नहीं कर सकती ।"

"क्यों ?"

विमला ने एक झटके से कह दिया —"क्योंकि उनके सामने आने पर अकेले उसी को नहीं, मुझे भी फांसी होगी।"

"त —तुम्हें ?" अमित उछल पड़ा।

और . . . ठीक इसी क्षण विमला ने जबरदस्त फ़ुर्ती का परिचय दिया, अमित को कुछ समझने का तो दूर, चौंकने तक का मौका नहीं मिला। जाने कब विमला का दायां हाथ 'कराट' की शक्ल में रिवॉल्वर वाली कलाई पर पड़ा, घुटना टांगों के बीच में। जिस्म के सबसे नाजुक हिस्से में पीड़ा की प्रचंड लहर उठी। हलक से चीख निकालता हुआ अमित दुहेरा हो गया — दुहेरा ही था कि गर्दन पर विमला के दोनों हाथों का जबरदस्त दुहत्तड़ पड़ा।

हलक से दूसरी चीख निकालता अमित मुंह के बल फर्श पर गिरा।

अभी कुछ समझ नहीं पाया था कि विमला की ठोकर ने वहां से उछाल कर सेन्टर टेबल के नज़दीक फैंक दिया।

विमला के जिस्म में मानो विद्युत भर चुकी थी।

उसने झपट कर सोफे के पीछे पड़ा वह रिवाल्वर उठाया जो उसके पहले ही कराट स्वरूप अमित के हाथ से निकल कर वहां जा गिरा था। उधर दर्द से कराहता अमित खड़ा होने का प्रयत्न कर रहा था इधर विमला ने रिवाल्वर का चेम्बर खोला। सारी गोलियां उसमें से निकालीं और लड़खड़ाते अमित के ऊपर फैंकती बोली —"अब हमारे बीच बराबरी के स्तर पर वार्ता होगी, न तुम मुझ पर 'हावी' हो, न मैं तुम पर ।"

मारे आश्चर्य के अमित का बुरा हाल था।

●

यही हाल एक खिड़की के जरिये अंदर का दृश्य देख रही सुनीता का था। अमित ने उसे कॉलबेल बजाने से पहले वहां तैनात किया था — साथ ही, सख्त हिदायत दी थी— 'कमरे में चाहे जो होता रहे, तुम्हें खुद को प्रकट नहीं करना है।'

जब विमला ने बिजली की सी तेजी से अमित पर हमला किया तो हलक से निकलने वाली चीख को बड़ी मुश्किल से रोक पायी। जो हुआ, इतनी तेजी से हुआ कि कब क्या हुआ, उसे वह ठीक से बयान नहीं कर सकती थी। एक बार पलक झपक कर जब खोली तो न केवल रिवाल्वर विमला के हाथों में था बल्कि गोलियां अमित के ऊपर फैंकती नजर आई वह।

गोलियां फैंकते वक्त जो कहा, उससे जाहिर था . . . वह वार्ता के मूड में है और अमित की जान को कोई खतरा नहीं है अतः पसीने पसीने हो चुकी सुनीता सांस रोके अन्दर का दृश्य देखती रही।

चेहरे पर पीड़ा और हैरत के संयुक्त भाव लिये अमित उस वक्त काफी हद तक सम्भल चुका था जब विमला ने कहा —"चाहती तो भरा हुआ रिवाल्वर ठीक उसी तरह तुम्हारी कनपटी पर रखकर मारने की धमकी दे सकती थी जैसे अब तक तुम दे रहे थे मगर उस तरह हमारे बीच उस माहौल में बातें नहीं हो सकतीं जिस माहौल में होनी चाहियें।"

"मतलब ?"

"जो चमक मैंने तुम्हारी आंखों में उस शख्स के खिलाफ देखी है जिसका खात्मा मेरे जीवन का लक्ष्य है, उस चमक को देखने के बाद लगा, मुझे तुम्हारे सामने खुद को खोल देना चाहिये लेकिन . . . अगर इस रिवाल्वर के तुम्हारे हाथ में रहते खुद को खोलती तो इस भ्रम का शिकार रहते कि मैं जो कह रही हूं इसके खौफ से कह रही हूं।"

"मैं समझ नहीं पा रहा।" अमित के चेहरे पर आश्चर्य के भाव थे —"तुम कहना क्या चाहती हो ?"

विमला ने चौगे की जेब में हाथ डाला और एक

पोस्टकार्ड साईज का फोटो निकालती हुई बोली —"ये है वो सुबूत जो विनाश को पलक झपकते ही फांसी पर चढ़ा देगा।"

इधर अमित का और उधर सुनीता का दिल 'धाड़-धाड़' करके बजने लगा, अमित ने व्यग्र स्वर में पूछा — "क्या है इसमें?"

"ये देखो ।" उसने फोटो सीधा कर दिया।

खिड़की के पार छुपी सुनीता फोटो देखने के लिये मरी जा रही थी परन्तु मजबूर थी — खिड़की साईड में होने के कारण उसे नजर नहीं आ रहा था जबकि फोटो पर नजर पड़ते ही अमित की आंखें जगमगा उठीं।

उसके रास्ते का रोड़ा साफ-साफ एक अधेड़ आयु के व्यक्ति का मर्डर करता नजर आ रहा था। अधेड़ का चेहरा साफ नहीं था मगर उस पर चाकू से वार करते विनाश को साफ पहचाना जा सकता था।

विमला ने पूछा —"क्या दुनिया का कोई वकील विनाश को बचा सकता है ?"

"हरगिज नहीं।" अमित के मुंह से निकला।

"इसके बावजूद मैं इस फोटो को दुनिया की किसी कोर्ट तक नहीं पहुंचने दे सकती — ऐसा इसलिये नहीं है कि मुझे अपने जीवन से बहुत मोह है बल्कि असली कारण कोई और है।" कहने के साथ विमला ने फोटो के टुकड़े-टुकड़े करने शुरू कर दिये।

"अ . . . अरे ।" अमित उछल पड़ा —"य - ये क्या कर रही हो ?"

"फिक्र मत करो, निगेटिव सुरक्षित है ।"

"म . . . मगर . . ."

"यकीन मानो, इतनी समझ मुझे है — उसे इस फ्लैट में रखने की मूर्खता नहीं कर सकती।" कहने के साथ उसने अपनी जेब से एक लाईटर निकाला और फोटो के टुकड़ों को एक एक करके जलाती हुई बोली — "जिसे इस हरामजादे ने इतनी बेरहमी से मारा, वे मेरे पापा थे।"

"प . . . पापा?" अमित के कानों में सीटियां सी गूंजने लगीं।

"तुम्हारी सुनीता के बराबर तो नहीं, लेकिन करोड़पति तो थे ही हम – मैं विनाश के प्यार में गिरफ्तार थी – उस दौर में वह जो कहता, मुझे ब्रहमवाक्य लगता। ये कुत्ता मुझे आदमी नहीं देवता नजर आता था – पापा किसी कीमत पर हमारी शादी करने को तैयार न थे – सारे प्रयास कर चुके थे हम मगर वे न माने – अपने पापा मुझे सबसे बड़े दुश्मन नजर आने लगे। उन्होंने हमारे मिलन के सभी रास्ते 'ब्लॉक' कर दिये – तब विनाश ने कहा – 'जब तक तुम्हारे पापा हैं, तब तक हम एक नहीं हो सकते – क्यों न उन्हीं को रास्ते से हटा दें –।' पहली बार विनाश के मुंह से यह सब सुनकर मैं कांप उठी – होश फाख्ता हो गये – अन्तरात्मा ने कहा भी कि विनाश का प्यार किस किस्म का है परन्तु कुछ स्वार्थ ऐसे होते हैं जो अंतरात्मा की आवाज का गला घोंट देते हैं – मैं खुद विनाश से शादी करने के लिये मरी जा रही थी, पता नहीं तुम समझ सकोगे या नहीं मगर ये सच है, विनाश के बार बार समझाने पर यह बात मेरी समझ में आ गयी – बात समझ में आनी थी कि विनाश ने मुझे सहमत करने के लिये तार्किक हमले तेज कर दिये – उसके जाल में फंस कर मेरे मुंह से यह निकलना था कि ऐसा करें भी तो कैसे, किसी को पता लग गया तो . . .' मेरी ये बात पूरी तक नहीं सुनी विनाश ने – पूरा प्लान पेश कर दिया – मैं हिचकी जरूर, मगर सहमत थी।"

सांस रोके सुन रहे अमित ने पूछा – "प्लान क्या था?"

"एक रात दो बजे विनाश चाकू लिये हमारे घर आया। दरवाजा मैंने खोला। मैंने कह दिया था – 'मैं पापा वाले कमरे में नहीं जा सकूंगी' – उसने कहा – 'इसकी जरूरत भी क्या है–' मेरी जानकारी के मुताबिक उस कमरे में जो होना था, मुझमें उसे देखने की हिम्मत न थी लेकिन जाने वो कौन सी ताकत थी जो मुझे खींच कर न केवल पापा के कमरे की खिड़की तक ले गयी बल्कि जो होना था उसके फोटो खींचने के लिये प्रेरित किया – मेरे देखते-देखते विनाश ने पापा को चाकुओं से गोद-गोद कर मार डाला। प्रेम में अंधी मैं देखती रही, अन्जानी ताकत के वशीभूत फोटो भी खींचे और विनाश के लौट कर अपने कमरे में आने से पहले कैमरे को छुपा भी दिया। उसने मुझे बताया –

'काम हो गया है — ' आतंक से इस क़दर ग्रस्त थी मैं कि मुंह से एक लफ्ज न फूट सका। प्लान के मुताबिक विनाश ने मुझे रेशम की सुतली से डबल बैड के साथ बांधा, मुंह में कपड़ा ठूंसा और मुख्य द्वार का कुंडा तोड़ कर चला गया। सुबह को पुलिस और सारी दुनिया वही समझी जो विनाश समझाना चाहता था — पापा की तिजोरी ही नहीं सेफ आदि सब खुली पड़ी थीं — जेवर और कैश गायब था। पुलिस और लोगों ने माना . . . ये कार्यवाही अज्ञात लुटेरों की थी — बेटी को बांध गये — बाप ने विरोध किया, उसका कत्ल कर गये और जो मिला लूट ले गये। मैंने भी यही ब्यान दिया।" कहने के बाद विमला लम्बी लम्बी सांसें लेने लगी।

ऐसा लग रहा था, जैसे लम्बी रेस लगा कर अभी अभी यहां पहुंची हो।

बुरी तरह भावुक नजर आ रही थी वह।

इधर अमित, उधर सुनीता सांस रोके सुन रही थी।

"वक्त गुजरा।" विमला ने पुनः कहना शुरू किया — "लोग लूट की घटना को भूलने लगे — चार महीने बाद मैंने और विनाश ने कोर्ट में शादी कर ली। शादी के बाद यह भेद खुलना शुरू हुआ कि मेरे जिस पापा को लोग करोड़पति समझते थे। वास्तव में उनकी स्थिति खोखली थी। व्यापार के एकाउन्ट्स देखने के बाद विनाश को पता लगा — देनदारियां, लेनदारियों से कहीं ज्यादा थीं — मकान तक गिरवी पड़ा था — यह सब देखकर विनाश बौखला गया और अपनी असली औकात पर उतर आया — उसने मुझे मारना पीटना ही नहीं बल्कि बात-बात पर यह कहना शुरू कर दिया — 'मैंने करोड़ों की जायदाद की खातिर तुझसे शादी की थी, फंस गया तेरे बाप द्वारा लिये गये लाखों के कर्ज तले—' जाहिर है, तब जाकर मेरे प्यार का नशा काफूर हुआ मगर अब हो क्या सकता था — मुझे मारना पीटना और गन्दी-गन्दी गालियां बकना उसका रोज का नियम हो गया — ऐसे ही एक दिन मैं भी बिगड़ गयी और चीख पड़ी — चीख-चीख कर कहा कि मेरे पास उसके फोटो हैं — उसके पैरों तले से जमीन खिसक गई — उस वक्त तो होश ही फाख्ता हो गये जब फोटो की एक प्रति उसके सामने फैंक दी और कहा —

'अगर तुम अपनी हरकतों से बाज नहीं आये तो मैं सुबूतों के साथ पुलिस के पास पहुंच जाऊंगी —' उसने कहा — 'मेरे साथ तुम्हें भी फांसी पर चढ़ना होगा क्योंकि मैं पुलिस को न केवल हकीकत बता दूंगा बल्कि उसे साबित भी कर दूंगा —' मैं चीखी — 'मुझे परवाह नहीं है, मैं अपनी अन्तरात्मा पर पापा की हत्या का बोझ और ज्यादा नहीं ढो सकती —' वह डर गया, न केवल मार-पीट और गाली गलोच बंद कर दी बल्कि खौफ जदा रहने लगा।"

"उसके बाद?" अमित ने पूछा।

विमला ने तुरन्त जवाब नहीं दिया, कुछ देर ध्यान से अमित को देखती रही — जैसे जांच रही हो, यह सब उसे बताकर ठीक भी कर रही है या नहीं, सम्भल कर बोली — "विनाश के चेहरे से पर्दे हटते जा रहे थे। यह पूरी तरह क्रिमिनल माइन्डेड था — ठगी इसका मुख्य धंधा था, कभी कभी राहजनी भी कर लेता — कांता नामक एक तवायफ से भी सम्बन्ध थे — इसने अनेक बार मेरे चुंगल से फोटूओं के निगेटिव निकालने की कोशिश की मगर नाकाम रहा — इस सम्बन्ध में मैं जरूरत से ज्यादा सतर्क थी और हूं क्योंकि जानती हूं, जिस दिन वो इसके हाथ लग गये उस दिन इसी के हाथों मारी जाऊंगी। इसकी तरफ से उत्पन्न होने वाले किसी आकस्मिक खतरे से निपटने के लिये मैंने जूडो, कराटे और कूंगफू की ट्रेनिंग ली — उसी का नमूना तुमने कुछ देर पहले देखा था।"

"यहां कैसे पहुंचा ये?"

"तीन महीने पहली बात है, एक दिन घर से निकला तो लौट कर नहीं आया। शुरू में मैंने परवाह नहीं की क्योंकि दो चार रातों को यह अकसर गायब हो जाता था लेकिन जब एक-एक दिन करके महीना गुजर गया तो होश आया — खोज शुरू की। कई बार कांता से मिली — शुरू में वह यही कहती रही, उसे नहीं पता — परन्तु जाने क्यों मुझे लग रहा था, वह झूठ बोल रही है और अंततः शक सही निकला — जब मैंने धमकी दी — 'नहीं बताया तो मैं तुम पर अपने पति को गायब करने का आरोप लगाती हुई पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करा दूंगी, — वह डर गयी।"

अमित ने व्यग्र स्वर में पूछा — "क्या बताया उसने?"

"बोली . . . 'करीब ढाई महीने पहले विनाश मुझे राजनगर ले गया था – वहां एक होटल में रखा और खुद सारी रात गायब रहा – सुबह के चार बजे लौटा – मैं दंग रह गयी, उस वक्त उसका हुलिया पूरी तरह बदला हुआ था'।"

"धोती कुर्ता और जूतियां पहन रखी होंगी उसने?" अमित ने सम्भावना व्यक्त की।

"कांता ने यही बताया था।"

"उसके बाद?" रोमांचित होते अमित ने पूछा।

"बकौल कांता, विनाश ने उसे पांच हजार रूपये दिये और एक फोटो दिखाते हुये कहा – 'इसे ट्रक के नीचे कुचलना हैं'।"

"निश्चय ही फोटो डैडी अर्थात् मिस्टर खन्ना का होगा।"

"स्पष्ट है।" विमला बोली – "शुरू में कांता उसकी बात सुनकर घबरा गई मगर जब पता लगा, ऐन वक्त पर वह फोटो वाले शख्स को बचा लेगा तो राहत की सांस ली – विनाश ने उसे बताया, ट्रक चोरी का है अतः जितना काम बताया है उतना करके ट्रक को कहीं छोड़ दे और तत्काल अपने शहर लौट जाये। उस स्तर की तवायफ के लिये पांच हजार का लालच काफी था – अतः जैसे विनाश ने बताया, उसने कर दिया।"

"उसके बाद?"

"जो कुछ कांता ने बताया उसे सुनकर मैं समझ गयी, विनाश पुनः किसी ठगी के चक्कर में पड़ा है – महानगर आई – यह पता लगाने में खास मेहनत नहीं करनी पड़ी कि ढाई महीने पहले वह नाटक किसके साथ हुआ था – खुद को छुपाये रख कर सारे घटनाक्रम की जानकारी इकट्ठा की – ये फ्लैट लिया और विला में जा पहुंची – मुझे देखकर उसका जो हाल हुआ, वो तुमने देखा ही था।"

कुछ देर चुप रहने के बाद अमित ने सवाल किया – "ये सारा किस्सा तुमने मुझे क्यों सुनाया?"

"क्योंकि हमारी मंजिल अब एक है।" कहने के साथ चहलकदमी करती वह अमित के नजदीक . . . बेहद नजदीक आ गई और अचानक अपना मुंह उसके कान के नजदीक ले जाकर रहस्यमय स्वर में फुसफुसाई – "सावधान, खिड़की के उस पार

खड़ा कोई हमारी बातें सुन रहा है।"

उछल पड़ा अमित।

दंग रह गया। मुंह से आवाज तक नहीं निकाल पाया था कि विमला ने फर्श पर पड़ी गोलियों में से एक गोली उठाई, उसे रिवॉल्वर में डालती हुई दरवाजे की तरफ झपटी। उस वक्त वह दरवाजा खोल कर गैलरी में छलांग लगा चुकी थी जब अमित हलक फाड़ कर चिल्ला उठा – "बचो सुनीता।"

खिड़की के उस तरफ खड़ी सुनीता ने अमित की चीख सुनी।

हड़बड़ाई।

पीछे से भागते कदमों की आहट उभरी – सुनीता ने पलटना चाहा परन्तु रिवॉल्वर की नाल उसकी पीठ से आ सटी, साथ ही गूंजा विमला का कर्कश स्वर – "हैन्डस अप।"

घबराकर सुनीता ने दोनों हाथ हवा में उठा दिये।

विमला के पीछे भाग कर आता हुआ अमित चीखा – "गोली मत चलाना, वो सुनीता है।"

"ओह।" विमला एक क्षण में मानो सब कुछ समझ गयी – "तो इसे तुमने छुपा रखा था यहां?"

"ह - हां।" अमित हांफ रहा था – "तब मुझे मालूम नहीं था तुमसे हुई मुलाकत क्या करवट लेगी !"

"हुंऊ . . . खोदा पहाड़, निकली चुहिया।" कहने के साथ विमला ने रिवॉल्वर वापस खींच लिया।

सुनीता को ऐसा लगा, जैसे जीवनदान मिला हो। 'फक्क' पड़े चेहरे पर बड़ी मुश्किल से रंगत ने लौटना शुरू किया।

●

"इन्सपैक्टर केकड़ा आये हैं शाब।"

"क – केकड़ा?" विनाश उछल पड़ा।

नौकर ने कहा – "आपसे मिलना चाहते हैं।"

"क – कहां है?"

"हॉल में।"

विनाश ने केकड़ा के आगमन की सूचना सुनते ही अंतरिक्ष में परवाज करने चले गये अपने मन-मस्तिष्क को वापस लाकर काबू में किया। जहन में सैकड़ों सवाल लिये कमरे से बाहर निकला।

गैलरी पार की।

उस वक्त वह डबल हाईट हाल की बॉल्कनी में था जब नजर केकड़ा पर पड़ी।

वह नीचे . . . हॉल में था मगर सोफे पर बैठा नहीं था।

हॉल के साथ अटैच्ड बाथरूम का दरवाजा खोल कर उसके अन्दर झांक रहा था।

सीढ़ियां उतरना शुरू करते विनाश ने कहा — "हैलो इन्सपैक्टर साहब।"

"हैलो।" केकड़ा चौंका, बाथरूम का दरवाजा बंद करता बोला — "काफी अच्छी इंग्लिश हो गयी तुम्हारी, रैपीडैक्स पढ़ते हो क्या?"

"हैलो - हाय तो बाबूजी ने सिखा ही दी थी।" वह नीचे आ गया।

केकड़ा ने उसके नजदीक पहुंचते हुये पूछा — "कैसी पट रही है बीवी से?"

"हमारी तो ठीक पट रही है मगर, आप क्या तांक-झांक कर रहे थे?"

"क्या तुमने अपनी पिछली लाईफ में ऐसा पुलिसिया देखा है जो मर्डर होने से पहले मर्डर स्पाट का निरीक्षण करने गया हो?"

"आप मिलते ही कमाल की बातें शुरू कर देते हैं।" विनाश ने कहा — "और कम से कम हमारे पल्ले आपकी बातें नहीं पड़तीं। भला मर्डर होने से पहले किसी इंस्पैक्टर को कैसे पता लग सकता है फलां जगह मर्डर होगा?"

"लग जाता है।" केकड़ा ने अपनी मक्खी जैसी मूछें फड़फड़ाइं — "इन्सपैक्टर अगर केकड़ा की तरह आंखें फाड़े रखे तो सब पता लग जाता है।"

"तो बताईये।" इस बार विनाश ने भी मजा लेने की ठान ली — "कहां होने वाला है मर्डर?"

"यहां . . . खन्ना विला की चारदीवारी में बहुत जल्द मर्डर होगा।"

"किसका?"

"तुम्हारा।"

"ह – हमारा?" बौखला गया विनाश – "क – क्या बात कर रहे हैं आप?"

"सोलह आने दुरूस्त बक रहे हैं बर्खुरदार, स्टाम्प पेपर पर लिखवा कर रख लो।"

हैरान-परेशान विनाश ने पूछा – "क्या आप मुझे डराने आये हैं?"

"आगाह करने।"

"म – मगर, हमने किसी का क्या बिगाड़ा है . . . कौन मारेगा हमें?"

"अमित।" केकड़ा ने साफ कहा – "शायद सुनीता भी शामिल हो।"

"ल-लेकिन क्यों . . . वे क्यों मारेंगे हमें?"

"अब मेरी जगह कमाल की बात करने का ठेका तुमने ले लिया।" कहते वक्त केकड़ा उसे बहुत ध्यान से देख रहा था – "जो शख्स उनकी अरबों -खरबों की जायदाद पर कुंडली मारे बैठा है, वे उसे मारेंगे नहीं तो क्या आरती उतारेंगे?"

"हम . . . हम कब कुंडली मारे बैठे हैं?"

"बगैर पंख उड़ने की कोशिश करने वाला जमीन पर आकर गिरता है मित्र।"

"कहना क्या चाहते हैं आप, हम क्या . . ."

केकड़ा ने उसकी बात काट कर अजीब सवाल किया – "दो पतंगों के पेच लड़ते देखे हैं तुमने?"

"प – पतंगों के पेच?"

"पेच जब लड़ जाते हैं तो उनमें से एक का कटना लाजिमी हो जाता है।" केकड़ा कहता चला गया – "और पेचों को देखने वाला मेरे जैसा खुर्राट पतंगबाज हो तो 'ताड़' जाता है, कौन सी पतंग कटेगी।"

"एक बार फिर हमारी समझ में कुछ नहीं आ रहा।"

"तुम्हारे और अमित के बीच चलते पेच मैं शुरू से देख

रहा हूँ।" उसकी बात पर ध्यान दिये बगैर केकड़ा कहता चला गया – "एक तरफ से अमित मिस्टर खन्ना की लौंडिया को फंसाकर जायदाद की तरफ बढ़ रहा था दूसरी तरफ से तुम मिस्टर खन्ना की सहानुभूति बटोरते हुये दाल-भात में मूसलचंद बनकर आ टपके। मिस्टर खन्ना की विल मेरे सामने पढ़ी गयी – मैं समझ गया, मैदान तुमने मार लिया है – फिर, सुनीता और तुम्हारी शादी – शादी के तुरन्त बाद लगी डाईवोर्स की एप्लीकेशन ने मुझे रोमांचित कर दिया – अच्छा आड़ा मारा था अमित ने, लेकिन अपने वकील द्वारा 'फसावड़े' की ढील देकर तुम न केवल उसके आड़े को बेकार कर चुके हो बल्कि उसे स्थाई शिकस्त का एहसास होने लगा है और ऐसी जंग के दरम्यान किसी एक पक्ष को हुआ यह एहसास हमेशा विध्वंसकारी होता है अर्थात् . . . . अरबों-खरबों की जायदाद को वह इतनी आसानी से तुम्हारे हलक में नहीं उतर जाने देगा – निश्चित रूप से अपनी शिकस्त को फतह में बदलने के लिये आखरी चाल चलेगा, अगर मैं उसकी जगह होता तो ये आखरी चाल तुम्हारा मर्डर होती।"

"इसलिये आपको हमारे मर्डर का 'डाऊट' हुआ?"

"पहली बार मेरी कोई बात तुम्हारे भेजे में ज्यों की त्यों घुसी।"

"ऐसा समझते हैं तो अमित को गिरफ्तार क्यों नहीं कर लेते?"

"यही तो मुसीबत है साली पुलिस की नौकरी में – अपराध होने से-पहले, केवल लग रहा है कि अपराध होगा की ग्राउन्ड पर किसी को बगैर सबूत के गिरफ्तार नहीं किया जा सकता – अगर किया जा सकता तो केकड़ा अपने इलाके में अपराध होने ही नहीं देता।"

"मुझसे क्या चाहते हैं?"

"इसके अलावा क्या चाह सकता हूं सरकार कि चौकस रहना, वे कोशिश भी करें तो मरना मत।"

"पहली बार पता लगा, हमसे आपको सहानुभूति है।"

"गलतफहमी के शिकार मत रहो, केकड़ा की डिक्शनरी में 'सहानुभूति' नाम का लफ्ज किसी के लिये नहीं है।"

"फिर यहां आकर, हमें सावधान करने की वजह?"

केकड़ा ने स्पष्ट कहा — "कोई पुलिस वाला नहीं चाहता उसके इलाके में ठीक उस वक्त क्राईम हो जब उसका इन्क्रीमेन्ट ड्यू हो, अड़ंगा पड़ जाता है साला।"

"तो आपका इन्क्रीमेन्ट ड्यू है?"

"अगले महीने से पूरे इक्यावन रूपये पैंतीस पैसे बढ़ने वाले हैं और उसमें मैं किसी किस्म का विघ्न बर्दाश्त नहीं करूंगा।"

"भगवान करे, आपको इसी तरह तरक्की मिलती रहे।"

"भगवान से छेड़खानी मत करो — उसे अपना काम करने दो, तुम अपना करो।" कहने के बाद केकड़ा ने अचानक पूछा — "विमला कौन है?"

"व — विमला?" विनाश इस तरह उछल पड़ा जैसे पैरों तले की जमीन गर्म तवे में तब्दील हो गयी हो — हवाईयां खुद उसकी हालत बयान कर रही थीं।

जिस्म के सभी मसामों ने एक साथ पसीना उगल दिया।

उसकी इस हालत को बहुत ध्यान से देख रहा था केकड़ा — देखता रहा — और जब विनाश अपनी हालत को नियंत्रित करने की तरफ बढ़ा तो बोला — "तुम्हारे तो 'पित्ते' ही ढीले हो गये उस्ताद, मैंने नहीं सोचा था ये नाम एक ही झटके में तुम्हारे सारे 'नट-बोल्ट' ढीले कर देगा, कौन है वह महान हस्ती जिसका नाम विमला है?"

"क — कौन विमला?" विनाश मानो खुद अपने काबू में नहीं था — "ह — हम किसी विमला को नहीं जानते।"

केकड़ा ने उसे घूरते हुये कहा — "तुम्हारी शक्ल बता रही है जानते हो या नहीं।"

विनाश को काटो तो खून नहीं, एक लफ्ज न फूटा उसके हलक से।

"तो नहीं बताओगे?" केकड़ा ने उसे चेतावनी दी।

"क — कह चुके हैं, हम किसी विमला . . . ."

"ओ. के.।" केकड़ा फिरकनी की तरह घूमा और हवा के झोंके की तरह दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

विनाश अपनी टांगों में कम्पन महसूस कर रहा था —

इतना अधिक कि लगा, ज्यादा देर खड़ा रहा तो लड़खड़ा कर गिर जायेगा।

'धम्म' से सोफे पर बैठ गया वह बल्कि ढेर हो गया और लम्बी-लम्बी सांसें लेने लगा।



"जो ऑफर मैं तुम्हारे सामने रखने जा रही हूं — अच्छा है, उसे सुनने के लिये सुनीता भी मौजूद है।" कमरे के अन्दर विमला बारी-बारी से दोनों के चेहरों को रीड करती कहती चली गयी — "और यह भी अच्छा हुआ — जो बातें मैंने कहीं, वे सुनीता ने भी सुनी हैं।"

सुनीता ने पूछना चाहा — "आपको पता कैसे लगा कि मैं . . ."

"उसे छोड़ो।" विमला ने कहा और नजरें अमित के चेहरे पर गड़ाकर बोली — "मुकम्मल हालात पर गौर करके, एक-एक प्वाईंट को ध्यान में रखते हुये मुझे इस सवाल का स्पष्ट जवाब दो मिस्टर अमित, क्या तुम्हें ऐसी कोई तरकीब सूझती है जिसके जरिये विनाश के जीते जी उसके हलक से मिस्टर खन्ना की जायदाद निकाल सको?"

"नहीं।"

"अब और भी स्पष्ट शब्दों में जवाब दो।" विमला का स्वर 'पैना' हो गया — "क्या तुम उसका मर्डर करने के लिये तैयार हो?"

अमित का दिल तो फिर भी काबू में रहा परन्तु सुनीता के दिल ने 'धक्क' की जोरदार आवाज के बाद मानों धड़कना बंद कर दिया — रोमांच की सर्द लहर उसके सम्पूर्ण जिस्म में इस तरह गड़गड़ाती चली गयी जैसे बादलों के बीच बिजली गड़गड़ाया करती है — अमित की तरफ देखा — उसके जवाब के प्रति सुनीता की आंखों में जिज्ञासा के जो भाव उभरे वे विमला तक की आंखों में नहीं थे। एक नजर सुनीता पर डालने के बाद अमित ने विमला की तरफ देखते हुये नपे-तुले शब्दों में जवाब दिया — "जब और कोई रास्ता है ही नहीं तो क्या करें, मजबूरी है।"

"एक आदमी दूसरे आदमी के मर्डर का फैसला लेता ही तब है जब अन्य सब रास्ते 'ब्लाक' हो जायें अर्थात् अधिकांश लोग मजबूरी में यह कदम उठाते हैं।"

अमित ने एक झटके से कह दिया – "तो समझो हम तैयार हैं।"

"अ – अमित।" सुनीता के हलक से चीख निकल गयी।

अमित ने जोर से उसका हाथ दबाया।

अंदाज सांत्वना देने वाला था परन्तु सुनीता के चेहरे पर उड़ती हवाईयां द्योतक थीं इस बात की कि उसके दिलो-दिमाग में कितना तेज अंधड़ चल रहा है, उसकी हालत देखकर विमला कह उठी – "मेरा ख्याल है, सुनीता ये काम नहीं कर पायेगी।"

"उसे छोड़ो।" अमित ने कहा – "ये बताओ, तुम क्या चाहती हो?"

"मैं उस दरिन्दे के खात्मे के अलावा और क्या चाह सकती हूँ। जिसने झूठे प्रेम-जाल में फंसा कर, मेरी मदद से, मेरी आंखों के सामने, मेरे ही पापा को चाकूओं से गोद डाला?" एकाएक विमला जख्मी सर्पणी सी नजर आने लगी– "मेरी नीचता का एक ही प्रायश्चित है – विनाश नामक इस शैतान का खात्मा – ये आंखें अगर उसे ठीक उसी तरह तड़त-तड़प कर मरता देखें जैसे पापा को दम तोड़ते देखा था तो शायद मेरी आत्मा को चैन मिले।"

अमित ने उसे बहुत गहरी नजरों से देखते हुये पूछा – "तुम्हारे सेविन्टी फाईव परसेन्ट हिस्से का क्या होगा?"

मेरी फर्स्ट च्वाइस उसका मर्डर है – सैकिन्ड च्वाइस सेविन्टी फाईव परसेन्ट हिस्सा। जब मुझे फर्स्ट च्वाइस के पूरी होने की उम्मीद न थी तो यह सोच कर सैकिन्ड च्वाइस पर समझौता कर रही थी कि कम से कम आर्थिक कठिनाईयां तो हल होंगी – अब, जबकि लगता है मुझे वह मौका मिल सकता है जिसकी तलाश में लम्बे समय से हूं तो आर्थिक कठिनाईयां हल करने में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है।"

"यानी हमारा साथ केवल तब दोगी जब उसकी हत्या के लिये तैयार हों?"

"मेरे सामने सवाल साथ देने का नहीं, मौका हासिल करने का है।"

"अपने पापा की हत्या के सुबूतों को उजागर न करने का असली कारण नहीं बताया तुमने?"

"ये है असली कारण।" कहने के साथ उसने अपने तन पर मौजूद ढीला-ढाला लबादा एक झटके से, पेट के ऊपर तक उठा दिया – लबादे के नीचे उसने 'जिन' पहन रखी थी – पेट उभरा हुआ था, स्पष्ट नजर आ रहा था कि वह 'प्रेग्नेन्ट' है।

अमित और सुनीता इस दृश्य को देखकर हकबका गये।

"तुम शायद इस मजबूरी को न समझ सको मगर एक औरत होने के नाते सुनीता अच्छी तरह समझ सकती है।" चोंगा छोड़ती हुई विमला भावुक स्वर में कहती चली गयी – "मेरे गर्भ में पैर पसारता ये बच्चा हालांकि है उसी दरिन्दे के पाप का बीज जिसकी हत्या की मैं तलबगार हूं लेकिन . . . मां . . . मां होती है – मैं इसे जन्म देना चाहती हूं, पालना पोशना चाहती हूं . . . और इसी की खातिर नहीं चाहती कि उस हैवान के साथ फांसी के फंदे पर झूलूं – पापा की कसम, कोंख में ये न होता तो अपनी परवाह न करती, उस हरामजादे को लेकर फांसी के फंदे पर झूल जाती लेकिन . . . . लेकिन . . . ."

विमला का स्वर भर्रा गया।

"विनाश नहीं जानता कि तुम . . ."

"नहीं जानता, जानना भी नहीं चाहिये – जान गया तो शायद उन फोटूओं से उतना खौफ न खाये जितना खाता है।" विमला कहती चली गई – "यदि एक बार उसके जहन में यह आ गया कि किसी कारण से मैं खुद को फांसी पर नहीं लटका सकती तो वह 'बे लगाम' हो जायेगा – न मेरे कब्जे की चीज रहेगा न तुम्हारे . . . . न किसी अन्य के।"

अमित को कहने के लिये तत्काल कुछ न सूझा।

कमरे में खामोशी छा गयी।

अमित सभी बातों को अपने जहन में अच्छी तरह घुमाने के बाद बोला – "तुम यह कहना चाहती हो न कि हमारा और तुम्हारा मकसद एक है?"

"जाहिर है।" विमला का लहजा स्पष्ट था – "तुम

इसलिये उसका मर्डर करने पर मजबूर हो क्योंकि दूसरा कोई रास्ता नहीं है और मुझे इस रूप में वह मौका मिल रहा है जिसकी तलाश थी।"

"इस काम में तुम क्या मदद करोगी?"

"ये काफी आगे की बात है।"

"मतलब?"

"पहले 'तय' हो कि हमें यह करना है — फिर तय हो कि मर्डर कैसे होगा — जो प्लान बने, उसमें तय हो सकेगा किसकी क्या भूमिका रहेगी।"

अमित का चेहरा कठोर नजर आने लगा — "पहली बात तो तय समझो।"

"अ — अमित।" सुनीता ने विरोध करना चाहा।

"समझने की कोशिश करो सुनीता, अब इसके अलावा कोई रास्ता नहीं है।"



राल्स-रायल में ऐसी खामोशी छायी हुई थी जैसे मातम मन रहा हो। ड्राईविंग सीट पर अमित था और सुनीता बगल वाली सीट पर बैठी थी। विमला के पास से लौट रहे थे वे — दिल में ढेर सारी बातें करने की इच्छा के बावजूद मुंह से लफ्ज नहीं निकाल पा रहे थे, अतंतः अमित ने शान्ति भंग की — "क्या सोच रही हो सुनीता?"

"सोच रही हूं, अपनी मुहब्बत की दुनिया से निकल कर आखिर हम कहां भटक रहे हैं?"

"सोच तो मैं भी यही रहा हूं लेकिन . . . .

"लेकिन?"

"सब कुछ विनाश की वजह से गड़बड़ाया है। न वह हमारी जिन्दगी में आता, न किसी झमेले में फंसते मगर, अब तो पता ही लग चुका है कि वह कितना बड़ा जालसाज है — जालसाज ही नहीं, खूनी भी है, एक नम्बर का हरामी है। दौलत के लिये कुछ भी कर सकता है।"

"मैं उसके नहीं अमित, अपने और तुम्हारे बारे में सोच रही थी।"

"क्या?"

"जो करने का फैसला हमने किया है, क्या वह सही है?"

"तुम जरूरत से ज्यादा डर गयी हो सुनीता!" अमित ने उसे समझाने वाले भाव से कहना शुरू किया – "जबकि मेरी समझ के मुताबिक डरने की कोई वजह नहीं है – यकीन रखो, मैं तब तक कोई कदम उठाने वाला नहीं हूं जब तक हन्डरेड वन परसेन्ट श्योर न हो जाऊं कि हम पर किसी को बाल बराबर शक नहीं होगा।"

"क्या वाकई इसके अलावा कोई और रास्ता नहीं है?"

"होता, तो मैं ये रास्ता हरगिज न चुनता – विमला ने ठीक कहा था, एक आदमी दूसरे आदमी के मर्डर का फैसला तभी करता है जब दूसरा कोई रास्ता नहीं रह जाता।"

"क्या हम विमला पर पूरा विश्वास कर सकते हैं?"

"मतलब?"

"अगर वह कोई ऐसा खेल खेल रही हुई कि हत्या के इल्जाम में हम . . . केवल हम दोनों पकड़े जायें, वह साफ बच जाये?"

"इस प्वॉइन्ट पर मैंने गौर कर लिया है, लगता नहीं वह कोई ऐसा गेम खेल रही है।"

"कारण?"

"जो तय हुआ है, उस पर गौर करो।"

"तय तो केवल ये हुआ है, मर्डर ऐसे ढंग से होगा कि आत्महत्या सिद्ध हो।"

"और सुसाईड नोट लिखवाने की जिम्मेदारी उसने खुद ली है – इससे सिद्ध होता है, उसकी दिलचस्पी इसमें नहीं है कि रिस्क के सारे काम हम करें बल्कि काम होने में है – यकीन मानो सुनीता, वह हमसे ज्यादा उसके मर्डर की तलबगार है।"

"मेरी समझ में यह नहीं आ रहा कि वह विनाश से सुसाईड नोट कैसे लिखवा लेगी – कोई ऐसा आदमी जिसका मरने का कोई इरादा न हो, किसी के कहने पर ऐसी तहरीर कैसे लिख देगा जिसे सुसाईड नोट कहा जा सके!"

"निश्चय ही काम टिपिकल है – फिलहाल मेरी समझ में भी नहीं आ रहा विमला इसे इस ढंग से कैसे अंजाम देगी कि

विनाश उसकी मनचाही तहरीर लिख भी दे और किसी किस्म का शक भी न करे परन्तु उसने पूरे कान्फिडेन्स से कहा है कि वह इस काम को अंजाम दे लेगी और हमारे सामने देगी।"

सुनीता ने कुछ कहने के लिये मुंह खोला ही था कि रुक गई, बल्कि रुक जाना पड़ा उसे।

इधर, अमित ने जोर से ब्रेक मारे – न मारता तो उस बैरियर की बल्ली को अपने साथ ले उड़ता जो इस वक्त 'डाउन' थी – साथ ही ले उड़ता उस कार्टून नुमा इन्सपैक्टर को जो बैरियर के बीचों बीच खड़ा उन्हें रुकने का इशारा कर रहा था।

इस बैरियर की बल्ली अमित को पहले कभी डाउन नहीं मिली थी इसलिये सतर्क न था अतः अचानक चौंककर ब्रेक लगाने पड़े – टायरों की तीव्र चरमराहट के साथ गाड़ी कार्टून-नुमा इन्स्पैक्टर से केवल एक गज इधर रुकी।

वह फुदक कर ड्राइविंग विंडो के नजदीक पहुंचता बोला – "आप तो मर्डर करने पर आमादा लगते हैं मिस्टर अमित।"

"म – मर्डर?" अमित के अन्दर छुपे चोर ने उसे हड़बड़ाया – "क – किसका?"

"मेरा।" वह हंसा – "और किसका?"

"अ – आप . . . मैं तो आपको जानता तक नहीं।"

"जानती तो आपकी बगल में बैठी सुनीता जी भी नहीं मगर पहचानती जरूर हैं बन्दे को – डाक्टर गिरवर के क्लिनिक में जब मिस्टर खन्ना की विल पढ़-पढ़कर इन पर बिजलियां गिराई जा रही थीं तब खाकसार वहीं था – वैसे नाम केकड़ा है और आज़कल इसी इलाके में डंडा घुमाने की तनख्वाह पाता हूं।"

"हमें क्यों रोका है?"

"मिलने का तलबगार था – विला की खाक भी छान आया मगर दर्शन लाभ न हुये – नौकर से पता लगा, आप लोग मटरगश्ती करने गये हैं – सोचा, क्यों न यहीं जम जाऊं – आखिर कभी तो विला की तरफ लौटेंगे और लौटेंगे तो यहां से गुजरे बगैर वहां नहीं पहुंच सकते।"

अमित ने रूखे स्वर में पूछा – "क्यों मिलना चाहते थे हमसे?"

"मेरी राय है, एकान्त में बातें करें तो ज्यादा खूबसूरत

लगेंगे।"

"मुझे सुनीता से कोई पर्दा नहीं है।" अमित ने बुरा सा मुंह बनाया – दरअसल जिस तरह केकड़ा ने उसे रोका था और जिस अंदाज में बातें कर रहा था, उससे वह 'उखड़' गया था, बोला – "जो कहना है, कहो।"

"मैंने आपको चेतावनी देने के लिये रोका है।"

भन्ना गया अमित, गुर्राया – "कैसी चेतावनी?"

"विनाश का मर्डर करने का फितूर अपनी खोपड़ी से 'हवा' कर दें।"

"क – क्या?" अमित उछल पड़ा।

सुनीता के हलक से चीख निकलते-निकलते बची।

अमित की हालत ऐसी थी जैसे जिस्म पर हज़ारों बिच्छुओं ने एक साथ डंक मारे हों – भिनभिनाते हुये उसने न केवल एक झटके से ड्राइविंग डोर खोला बल्कि गाड़ी से बाहर भी निकल आया, दिलो-दिमाग पर छाये खौफ को छुपाने के लिये चीख पड़ा वह – "क – कह क्या रहे हो तुम – दिमाग तो दुरूस्त है?"

केकड़ा मुस्कुराया, बोला – "आप तो 'चार्ज' हो उठे।"

"औकात में रहो इन्सपैक्टर।" अमित ने झपटकर दोनों हाथों से उसका गिरेबान पकड़ लिया – "तुम जैसे इन्सपैक्टरों का तबादला मैं चुटकी बजा कर करा देता हूँ।"

"जरूर करा देते होंगे, लेकिन क्या मैं जान सकता हूं सर . . . ये जुल्म आप मुझ पर क्यों ढ़ायेंगे?"

"तुमने एक शरीफ आदमी को रास्ते में रोका और छूटते ही बोले फलां आदमी के मर्डर का विचार अपने दिमाग से निकाल दो?"

केकड़ा ने बेख़ौफ कहा – "खुद को शरीफ का तमगा देने से कोई शरीफ नहीं हो जाता जनाब।"

"मतलब?"

"इस बात की जांच पड़ताल मैं भी करना चाहूंगा कि मेरा कौन सा अफ़सर उस आदमी को शरीफ मानता है जो रात के बारह बजे दूसरे की बीवी को अपनी बगल में दबाये मटरगश्ती करता फिरता हो।"

अमित गुर्रा उठा – "निहायत ही बदतमीज और बदमिजाज पुलिसिये हो तुम।"

"बदतमीज और बदमिजाज पुलिसिये अभी आपने देखे नहीं – मैं वैसा होता तो ये दोनों हाथ तोड़ कर आपके मुंह में ठूंस चुका होता जिनसे मेरा गिरबान पकड़ रखा है।" केकड़ा अपने चुभते हुये मजाकिया लहजे में कहता चला गया – "ये गिरेबान किसी ऐरे गैरे, नत्थू खेरे का नहीं बन्दा परवर, पुलिसवाले का है – पुलिस वालों में भी इन्सपैक्टर केकड़ा का – तनख्वाह का एक तिहाई हिस्सा मैं अपनी वर्दी पर कलफ लगवाने और इस्त्री करवाने पर खर्च कर दिया करता हूँ।"

अमित को लगा, उत्तेजना में वह गलती कर बैठा है।

हाथ स्वतः केकड़ा के गिरेबान से हटते चले गये, बोला – "सॉरी . . . लेकिन आपने किस आधार पर कह दिया मेरे दिमाग में विनाश की हत्या की बात है?"

"मिस्टर खन्ना की जायदाद के लिये जो जंग आपके और विनाश के बीच चल रही थी उसमें विनाश ने आपको इस स्थिति में लाकर पटक दिया है कि अब अगर आप जीतना चाहते हैं तो एक ही रास्ता है – विनाश का क्रिया-कर्म – ऐसा नहीं करते तो जाहिर है, आप हार चुके – दौलत वो ले उड़ा, क्या आप शिकस्त कुबूल करते हैं?"

"अब समझ में आया।" अमित ने एक-एक शब्द नाप तोल कर कहना शुरू किया – "किसी वजह से आपको हमारे और विनाश के बीच चल रही उठा-पटक की जानकारी है और यह महज आपका अनुमान है कि मैं उसके मर्डर के बारे में सोच रहा हूँ।"

"अगले महीने इस गरीब का इंक्रीमेंट ड्यू है हुजूर, कम से कम इस महीने अपने इलाके में ऐसी कोई वारदात नहीं चाहता जो इंक्रीमेन्ट के सामने चट्टान बन कर खड़ी हो जाये – आखिर बाल-बच्चे मेरे भी हैं और सवाल पूरे इक्यावन रूपये पैंतीस पैसे का है।"

अमित ने कुछ कहना चाहा लेकिन गाड़ी के अन्दर बैठी सुनीता बोली – "अब चलो न अमित, देर हो रही है।"

"ओह . . . हां, चलता हूं इन्सपैक्टर।" कहने के साथ

उसने गाड़ी का दरवाजा खोलने के लिये हाथ बढ़ाया ही था कि–

"एक मिनट मिस्टर अमित।" केकड़ा ने रूल बीच में अड़ाया – "एक सवाल मेरे पेट में गैस का गोला बनकर चकरा रहा है!"

"कैसा सवाल?" वह ठिठका।

"विमला कौन है?"

"व – विमला?" अमित के होश उड़ गये।

"कमाल का जादू है इस नाम में, जिसके सामने ले दो वही 'फड़फड़ाने' लगता है।"

अमित हकला उठा – "अ – और किसके सामने लिया आपने ये नाम?"

"विनाश के सामने लिया था, पट्ठा करेंट से भर गया – पूछा, कौन है विमला – तो आय-बांय-शांय गाने लगा – मैंने सोचा, ठीक है बेटा – तू नहीं बतायेगा तो अमित बाबू बता देंगे मगर, हैरत की बात है – ये नाम सुनते ही आपकी जुबान भी कत्थक करने लगी, तो क्या बंदा ये समझे कि आप भी उसके बारे में कुछ बताने से इंकार करते हैं?"

"य – ये बात नहीं है।" अमित ने खुद को नियंत्रित करने की चेष्टा की।

"तो बता दीजिये, मेहरबानी होगी आपकी।"

"द – दरअसल विमला के बारे में विनाश ही बता सकता है।"

"क्यों?"

"वह उसी की परिचित थी।"

"लेकिन उसके विजिटिंग कार्ड को सीने से लगाये डिफेंस कालोनी के इलाके में भटक तो आप रहे थे?" केकड़ा की उबली हुई आंखें अमित के चेहरे पर उभरने वाले एक-एक भाव का एक्सरे कर रही थीं – "बताने वाले ने बताया, उस कार्ड पर नकली एड्रेस था।"

"जब आपके पास ये इन्फारमेशन है तो समझ जाना चाहिये – मुझे खुद उसकी तलाश है, ऐसी अवस्था में कैसे बता सकता हूं वह कौन है?"

केकड़ा इस तरह गर्दन हिलाता रहा जैसे स्टूडेन्ट टीचर

की बात सुन रहा हो।

●

"व – वो आ गया।" बॉलकानी से नीचे झांक रहा अमित मर्सीडीज पर नजर पड़ते ही चीख पड़ा।

विमला ने गोरी कलाई पर बंधी रिस्टवाच पर नजर डालते हुये कहा – "एकदम राईट टाईम है।"

अमित कमरे के अन्दर आ गया था।

सोफे पर बैठी सुनीता उठती हुई बोली – "राईट टाईम क्यों नहीं आयेगा, आपके हाथों में गर्दन जो फंसी है।"

"तुम अन्दर वाले कमरे में जाओ – मैजिक आई के जरिये निर्विघ्न देखना कि वह कैसे सुसाईड नोट लिखता है मगर।" उसका लहजा चेतावनी देने वाले अंदाज में बदल गया – "काई आवाज, कोई आहट नहीं होनी चाहिये – उसे जरा भी शक हो गया तो पहले ही चरण में सारा खेल बिगड़ जायेगा।"

यही क्षण था जब फ्लैट की कालबेल बजी।

सुनीता और अमित झपट कर न केवल भीतरी कमरे में पहुंच गये बल्कि दोनों कमरों के बीच का दरवाजा आहिस्ता से बंद भी कर लिया।

चटकनी चढ़ाने के साथ अमित ने 'मैजिक आई' से आंख सटा दी।

जिस्म पर मौजूद काले चौंगे को दुरूस्त करती विमला फ्लैट के मुख्य दरवाजे की तरफ बढ़ती नजर आई।

इस बीच दूसरी बार कालबेल बज चुकी थी।

विमला ने दरवाजा खोला।

उम्मीद के मुताबिक चौखट पर विनाश खड़ा था।

किसी ने किसी को देखकर कोई अभिवादन नहीं किया, किसी होंठ पर कोई मुस्कान नहीं रेंगी – दोनों चेहरों पर गम्भीरता छाई हुई थी बल्कि विमला का चेहरा थोड़ा कठोर नजर आने लगा था।

"आओ।" खनखनाते स्वर में कहने के साथ वह एक तरफ हटी।

विनाश ने अन्दर कदम रखा।

विमला ने दरवाजा बंद किया और सोफे की तरफ बढ़ती बोली – "बैठो।"

उसने बैठने के साथ एक सिगरेट सुलगा ली – विमला उसके ठीक सामने सोफे पर बैठी, विनाश ने सवाल किया – "तुम यहां पहुंच कैसे गयीं?"

"मतलब?"

"पता कैसे लगा मैं राजनगर में मिस्टर खन्ना के यहां. ."

"मैंने तुम्हें, तुम्हारे सवालों का जवाब देने नहीं बुलाया है।" विमला के लहजे में कोड़े की सी फटकार पैदा हो गयी।

"तो मैं भी तुम्हारे लहजे की ये कोड़े जैसी फटकार सुनने नहीं आया जानेमन।" विनाश का लहजा एकाएक चेंज हो गया, न केवल चेंज हुआ बल्कि होठों पर धूर्त मुस्कान भी उभर आई, कहता चला गया वह – "विनाश ने उतनी कच्ची गोलियां नहीं खेलीं, जितनी तुम समझ बैठी हो।"

उधर सुनीता और अमित हैरान!

इधर विमला के मस्तक पर बल पड़ गये – "क्या मतलब?"

"मुझे सांचे में ढले जिस्म पर मौजूद इस चौंगे का रहस्य मालूम हो गया है।" विनाश ने मानो विस्फोट करने की ठान ली – "दुख की बात है, जो सूचना एक अच्छी पत्नी को सबसे पहले अपने सुहाग को देनी चाहिये – उसे मुझसे छुपाकर रखा।"

"क – कहना क्या चाहते हो तुम?" विमला का लहजा कांप गया।

"वही।" विनाश ने चटकारा लिया – "जिसका तुम्हें डर है।"

"ड – डर?"

"मैं पापा बनने वाला हूं न?"

विनाश के शब्द गड़गड़ाती बिजली बनकर सीधे अन्दर वाले कमरे में मौजूद अमित और सुनीता पर गिरे – एक ही झटके में सारे हालात अपनी गिरफ्त से फिसलते नजर आये – जिस मुलाकात में उन्होंने विनाश को विमला के सामने पालतू कुत्ते की तरह दुम हिलाते और तलवे चाटते देखने की कल्पना की थी उस मुलाकात में वह न केवल 'हावी' था बल्कि विमला के

होश उड़ाये हुये था।

अमित और सुनीता समझ गये, खेल बिगड़ चुका है।

सुसाईड नोट लिखवाने की तो बात ही दूर, विमला अब खुद राजनगर से भागती नजर आयेगी।

विमला की आंखों में आंखें डालकर पूछा विनाश ने – "क्या मैंने गलत फरमाया?"

"प – पता कहां से लगा तुम्हें?" विमला के होश अभी तक फाख्ता थे।

विनाश ने बड़े आराम से एक सिगरेट सुलगाने के बाद कहा – "मैंने कोठी पर फोन किया, बंसी ने उठाया।"

"उफ्फ!" विमला कसमसा उठी – "मूर्ख बंसी।"

"उसे क्यों कोसती हो डार्लिंग, बंसी बेचारे को क्या पता आजकल की पत्नियां ऐसी बातें पति से छुपाने लगी हैं?"

"और तुमने सोच लिया, मैं तुम्हारी गिरफ्त में आ गयी?" विमला ने मानो साहस किया।

"अब अगर मुझे यह समझाने की कोशिश करोगी डार्लिंग कि अपने और मेरे साथ तुम इस बच्चे को भी फांसी पर लटकाने के लिय तैयार हो तो यह बात मेरे हलक से नीचे नहीं उतरेगी।" विनाश दृढ़ता पूर्वक कहता चला गया – "क्योंकि अगर तुम इसके लिये तैयार होती तो इसके अस्तित्व को मुझसे छुपाती नहीं, बल्कि खुले आम कहतीं . . ."

जाने क्या सोचकर विमला के चेहरे की चमक लौट रही थी, गुर्राई – "तुम अब भी गलतफहमी के शिकार हो विनाश।"

"वो कैसे डार्लिंग?" विनाश मजा ले रहा था।

विमला ने रहस्यमय स्वर में पूछा – "टिब्बा का नाम सुना है?"

"क्यों नहीं, ठगी और राहजनी के धंधों में अपना यार था।"

"मगर आज की तारीख में तुम उसके सबसे बड़े दुश्मन हो।"

"वो साला अपनी हैसियत से ज्यादा हिस्सा मांगने लगा था – मैंने दुत्कार दिया, दुश्मनी मानता है तो मानता रहे – ऐसे टुच्चे बदमाशों से दुश्मनी की विनाश ने न पहले कभी परवाह की

है, न अब करता है।"

"लेकिन भविष्य में करनी पड़ेगी।" विमला ने एक-एक लफ्ज चबाया।

विनाश ने अब भी चटकारा लिया – "भविष्यवाणी की वजह?"

"मेरा इशारा होते ही, या मुझे कुछ होते ही वह उन फ़ोटुओं के साथ कोर्ट में पहुंच जायेगा जो तुम्हें फांसी पर लटका सकते हैं और कहेगा कि जब तुम ये कांड कर रहे थे तब वह भी तुम्हारे साथ था – तुमने उससे कहा था, सेठ लक्ष्मीनारायण के घर में काफी माल हैं, यह नहीं बताया था वह तुम्हारी प्रेमिका का बाप है –तुमने उसे विमला को बांधने की ड्यूटी सौंपी थी, वैसा ही उसने किया – जो फोटो कोर्ट में पेश कर रहा है, वे उसी ने खींचे थे – विमला बेचारी तो दूसरे कमरे में बंधी पड़ी थी।"

"यानि मेरे साथ खुद को भी फांसी पर चढ़ाने की तैयारी करेगा टिब्बा?"

"मैं उसे समझा चुकी हूं, सरकारी गवाह को कोर्ट माफ कर देती है।"

"यानि खुद को बचाने का प्लान बनाया है तुमने?" लहजे से लगता था वह सोच में पड़ गया है।

"खुद को नहीं, इसे।" विमला ने अपना उभरा हुआ पेट दिखाया।

विनाश का चेहरा बता रहा था विमला की नई कहानी ने उसके पित्ते ढीले कर दिये हैं।

उधर अमित और सुनीता के चेहरों पर उम्मीद के साये लहराने लगे। उन्हें विनाश के जवाब और रुख का इन्तजार था – बेचैन नजर आ रहे विनाश ने आधी सिगरेट फर्श पर डाली, जूते से कुचली, बोला – "चाहती क्या हो?"

"सेविन्टी फाईव परसेन्ट!"

"इससे मैंने कब इंकार किया?"

"बहुत खूब।" विमला ने तंज कसा – "तो इंकार नहीं किया तुमने?"

"कब किया?"

"तब तो मैं ही मूर्ख हूं।" विमला के हर लफ्ज में व्यंग

भरा था – "तुमने जो मेरे पित्ते ढीले करने की कोशिश की तो मैं समझी, तुम हिस्सा देने से इंकार कर रहे हो – तभी तो टिब्बा वाली बात बतानी पड़ी – न लगा होता तो भला क्या जरूरत थी – खैर, मैं गलत समझी, इसके लिये खेद है – तो तुम सेविन्टी फाईव परसेन्ट देने को तैयार हो?"

मरता क्या न करता वाली पोजीशन में कहा विनाश ने – "क्या गारन्टी चाहती हो?"

"गुड।" कहने के साथ विमला ने जेब से एक कागज और पैन निकाल कर सेन्टर टेबल पर रखते हुये कहा – "मैं इमला बोलती हूं, तुम लिखो।"

विनाश सोफे पर बैठ गया, पैन खोलकर कागज पर झुका।

अमिता और सुनीता के दिल जोर जोर से धड़क रहे थे – आखिर वह क्षण आ ही गया जिसका उन्हें इन्तजार था और . . . कुछ देर पहले यकीन हो गया था कि ये क्षण कभी नहीं आयेगा – बड़ी सफाई से विमला ने अपनी गिरफ्त से निकल गये हालात को वापस समेट लिया था, उसने कोड़े जैसी फटकार के साथ कहा –"लिखो –"मैं सचमुच नपुंसक हूं।"

विनाश ने लिख दिया।

"और ज्यादा जलालत नहीं सह सकता ।" विमला ने आगे लिखने के लिये कहा।

विनाश ने चौंककर उसकी तरफ देखा।

"लिखो ।" विमला गुर्रायी –"रुक कैसे गये ?"

"य - ये सब लिखवाने से क्या फायदा होगा तुम्हें ?"

"इन दो लाईनों के बूते पर मैं जिस क्षण चाहूंगी सुनीता को तुमसे तलाक दिला दूंगी।" विमला ने प्रभावशाली स्वर में कहा –"और याद रखना, ऐसा मैं ठीक उस क्षण कर बैठूंगी जिस क्षण एहसास होगा कि तुम मेरा हिस्सा देने वाले सौदे से मुकरने की फिराक में हो।"

"वो क्षण कभी नहीं आयेगा विमला।"

"तो डर क्यों रहे हो मेरे राजा, वो क्षण नहीं आया तो ये कागज भी क़ोर्ट में नहीं पहुंचेगा, लिखो!"

विनाश को लिखना पड़ा।

विमला ने 'मैजिक आई' की तरफ देखा, गुलाबी होठों पर थिरक रही विजयी मुस्कान 'मैजिक आई' सें आंख सटाये अमित ने साफ देखी — कामयाबी के रोमांच की लहर उसके सम्पूर्ण जिस्म में गर्दिश कर रही थी।

●

"उफ्फ !" विमला इस तरह 'धम्म' से सोफे पर गिर पड़ी जैसे बुरी तरह थक गयी हो —"एक नम्बर का हरामी है ये आदमी, मैं जरा भी चूक जाऊं तो . . . ."

"सचमुच ।" उसकी बात पूरी होने से पहले अमित कह उठा —"एक बार को तो उसने होश ही फाख्ता कर दिये थे — सोचने लगे, तुम क्या उसे काबू में करोगी, वही तुम्हें अंगुलियों पर नचा डालेगा।"

"ऐन वक्त पर बचाव की कहानी दिमाग में न आती तो नचा ही दिया था।"

"क - कहानी ?" सुनीता पूछ उठी।

"टिब्बा वाली कहानी मुझे हाथ की हाथ सूझी थी मगर, सूझी खूब।"

"यानी टिब्बा से तुम्हारा कोई सौदा नहीं हुआ ?" अमित चौंका।

"सौदे की बात छोड़ो, इस सम्बन्ध में टिब्बा से मिली तक नहीं हूं — मिलती तब, जब कल्पना की होती कि इसे इस सम्बन्ध में पता लग सकता है — केवल इतना जानती हूं, कभी वह इसका साथी था मगर आज की तारीख में 'खुंदक' खाता है — इसी जानकारी का लाभ उठाया मैंने - खुद हैरान हूं, ऐन वक्त पर ये तरकीब दिमाग में आई कैसे - ऐसा शायद इसलिये हो सका क्योंकि वह बुरी तरह हावी हो गया था— बचाव में मेरे मुंह से एक झूठ निकला और फिर खुद-ब-खुद कहानी बनती चली गयी।"

"ये तो बड़ी खतरनाक बात है।" सुनीता के चेहरे पर पुनः खौफ के लक्षण काबिज हो गये —"वह बहुत जल्द इस सम्बन्ध में टिब्बा से बात करेगा - मुमकिन है इसी वक्त फोन पर सम्पर्क स्थापित कर रहा हो और . . . पता लगते ही . . . ."

"इतनी मत डरो, अब कुछ नहीं कर सकेगा ।"

"क्यों ?"

"टिब्बा से बात करके वह उस दबाव से तो मुक्त हो सकता है जिसमें यह कागज लिख गया मगर इस कागज के दबाव से कैसे मुक्त होगा ?"

"कागज के दबाव से ?"

"वह जानता है, इसके इस्तेमाल से जिस क्षण चाहूं सुनीता को उससे तलाक दिला सकती हूं और तलाक का मतलब है, उसका खेल बिगड़ जाना — वह मुझे सारे मौके दे सकता है, अपना खेल बिगाड़ने का मौका नहीं देगा।"

"ल - लेकिन ।" सुनीता ने कहा —"तुम तो उससे सुसाइड नोट लिखवाने वाली थीं न ?"

बड़ी गहरी मुस्कान उभरी विमला के होठों पर, बोली —"ये सुसाइड नोट नहीं तो क्या है ?"

"स - सुसाइड नोट . . . वह कैसे ?"

"कल्पना करो, वह मरा पड़ा है - मर्डर स्पाट पर पुलिस को उसके हाथ का लिखा ये कागज मिलता है, क्या सोचेगी पुलिस ?"

"ओह !"

विमला ने कहा —"आगामी शुक्रवार का मुहूर्त इस काम के लिये शुभ रहेगा।"



शुक्रवार !

सरकारी अस्पताल के आफिस में खड़े विनाश ने कहा —"मेरी मैडिकल रिपोर्ट !"

"नाम ?" नाईट ड्यूटी पर तैनात कम्पाऊन्डर ने पूछा।

"विनाश ।"

कम्पाऊन्डर ने मेज पर फैले पचासों लिफाफों में से विनाश के नाम का लिफाफा निकालना शुरू किया और मिलते ही उसके हवाले कर दिया। विनाश ने 'थैंक्यू' कहते हुए लिफाफा लिया और उसके अंदर से रिपोर्ट निकालकर देखी।

रिपोर्ट को देखते ही होठों पर ऐसी मुस्कान उभरी जैसी

दुश्मन का किला फतह करने पर उभरती है। रिपोर्ट लिफाफे में डालो और लिफाफा कोट की जेब में डालने के बाद मस्त चाल से चलता बाहर की तरफ लपका। उसका रुख पार्किंग की तरफ था।

गाड़ी स्टार्ट करके आगे बढ़ाते वक्त ही नहीं बल्कि भीड़-भाड़ वाली सड़कों से गुजरते वक्त भी वह इतना मस्त था कि सीटी द्वारा बाकायदा एक फिल्मी गीत का आनन्द ले रहा था।

उसने मर्सीडीज की इलैक्ट्रिक वाच में टाइम देखा।

ग्यारह पांच हो रहे थे।

सड़कों पर अभी तक भीड़ थी।

सरकारी लाईटें और न्यून साईन बोर्ड जगमगा रहे थे।

शीघ्र ही वह उस बैरियर के नजदीक पहुंच गया जहां से गुजरे बगैर कार द्वारा खन्ना विला में नहीं पहुंचा जा सकता था — बैरियर हमेशा उठा रहता था इसलिये कभी यहां रुकने की जरूरत नहीं पड़ी - बैरियर आज भी उठा हुआ था परन्तु पैर ब्रेक पैडल पर ले जाना पड़ा सड़क के बीचों बीच खड़ा इन्सपैक्टर केकड़ा उसे रुकने का इशारा कर रहा था।

गाड़ी रोकने के साथ उसने सीटी बजानी बंद कर दी।

लपक कर ड्राइविंग डोर के नजदीक आते केकड़ा ने पूछा — "कहां से आ रहे हो मिस्टर अशुभ नाम दास ?"

"मुकदमा जीत कर आ रहे हैं।" विनाश रहस्यमय स्वर में बोला।

"इस वक्त कौन सी कोर्ट 'चौपट' पड़ी थी ?"

"कोर्ट ?" विनाश हंसा —"कोर्ट तो कल खुलेगी ।"

"तो इस वक्त कौन से मुकदमे की जीत का राग अलाप रहे हो ?"

"कोर्ट में चल रहे मुकदमें कोर्ट के बाहर जीते जाते हैं इन्सपैक्टर साहब ।" विनाश पूरी तरह मस्त था —"कल डाईवोर्स वाले मुकदमें की तारीख है और कल ही सारे शहर को पता लग जायेगा कि मुकदमा हम जीत चुके हैं।"

"ऐसी क्या संजीवनी बूटी हाथ लग गई है मित्र ?"

विनाश ने रहस्यमय स्वर में कहा —"एक बंदरिया ने दो

लाईनें लिखवा ली थीं। उसकी हवा निकालने का इन्तजाम करके आये हैं ।"

"आज हमारी जगह पहेलियां तुम बुझा रहे हो बर्खुरदार, माजरा क्या है ?"

"कल कोर्ट में देखना या अखबार में पढ़ लेना, इजाजत हो तो फूटें ?"

"इजाजत तो है मगर . . . ."

"मगर ?"

केकड़ा ने उसकी तरफ बहुत गौर से देखते हुए पूछा – "उस ट्रक को विमला चला रही थी न ?"

सकपका गया विनाश, सम्भलकर बोला – "प . . . पिछली बार बताया तो था, हम किसी विमला को नहीं जानते ।"

"उसका क्या नाम था जो विला में मिलने आई थी ?" केकड़ा की उबली हुई आंखें लगातार उसके चेहरे पर टिकी थीं।

"क - कोई मिलने नहीं आया हमसे - आपसे शायद अमित या सुनीता ने झूठ बोल दिया है।"

"बेशक वे झूठ बोल सकते थे क्योंकि तुम्हारे प्रतिद्वंदी हैं मगर नौकर झूठ नहीं बोल सकते, वे सब तो अमित के मुकाबले तुम्हारे 'फैन' है!"

बुरी तरह हकला उठा विनाश - "क - किसने बताया आपको ?"

"जिसने भी बताया, लेकिन देखा सभी ने था – विमला पर नजर पड़ते ही तुम्हारे छक्के छूट गये - बात-बात पर उसके तलवे चाट रहे थे - उधर, मार्निंग वाक करने वालों का ये बयान कि ट्रक कोई लड़की चला रही थी - मेरा ख्याल है, वह वही थी और विला में तुम्हें धमकाने आयी थी !"

"ध - धमकाने ?" विनाश पसीने -पसीने हो चुका था।

"आखिर राजदार है तुम्हारी, उसने कहा होगा - 'मेरा हिस्सा नहीं मिला तो सब चौपट कर दूंगी' ।"

"ए - ऐसी बात नहीं थी ।"

"तो क्या बात थी ?"

"क - कुछ नहीं ।"

"कौन है विमला, कहां पाई जाती है ?"

"स - सॉरी . . . हम कुछ नहीं बता सकते ।"

"बक तो टार्चर रूम में हवाई जहाज बनते ही तुम सब कुछ दोगे बर्खुदार मगर इन्सपैक्टर केकड़ा का तरीका जरा जुदा है – मैं मुल्जिम के साथ जबरदस्ती नहीं किया करता, अपना 'खोपड़ा' भिड़ाया करता हूं और जम्बूरे से तब पकड़ता हूं जब तुम जैसे लोगों के मुंह में लपर-लपर चलती ये जुबान न रहे ।"

विनाश ने पीछा छुड़ाने की गर्ज से कहा –"हम चलें ?"

"एक बात और ।"

विनाश के मुंह से बोल न फूटा।

"इतनी रात तक सड़कों पर न घूमा करें तो मेरी सेहत के लिये बेहतर होगा!"

"आपकी सेहत ?"

"इंक्रीमेन्ट का सवाल है बाबा।" केकड़ा ने तुरन्त मूड चेंज करके इस तरह कहा जैसे भिखारी भीख मांग रहा हो –"तुम मर गये तो तुम्हारा तो शायद कुछ न बिगड़े, बंदे का इंक्रीमेन्ट जरूर लटक जायेगा।"

"ओ. के. ।" कहने के साथ उसने गाड़ी आगे बढ़ा दी। बैक व्यू मिरर के जरिये देखा, सड़क पर खड़ा केकड़ा हाथ में दबा रूल होले-होले अपने दायें पैर की पिंडली पर मार रहा था।

विनाश खन्ना विला के लोहे वाले गेट पर पहुंचा।

हॉर्न बजाया।

गेटमैन ने केबिन से निकल कर गेट खोला।

मर्सीडीज सरसराती हुई पोर्च की तरफ बढ़ी - पोर्च में गाड़ी रोकते वक्त उसने नोट किया, राल्स रायल कहीं न थी।

होठों पर मुस्कान रेंगी।

गाड़ी से निकल कर इमारत के मुख्य द्वार की तरफ बढ़ा ढुके हुए दरवाजे को खोल कर डबल हाईट हाल में पहुंचा - हाल के बीचों बीच खड़े होकर म्यूजिकल लाईटर से एक सिगरेट सुलगाई – लाईटर को अंगुलियों में नचाता जीने की तरफ बढ़ा।

पहली सीढ़ी पर कदम रखना चाहता था कि – मुख्य द्वार बंद होने की आवाज गूंजी।

विनाश फिरकनी की तरह घूमा।

दरवाजा बंद हो चुका था लेकिन बंद करने वाला नजर

नहीं आया।

दिल जाने क्यों जोर-ज़ोर से धड़कने लगा।

तभी !

"हा . . . हा. . . हा ।" हॉल में जोरदार कहकहा गूंज उठा।

विनाश तेजी से आवाज की दिशा में घूमा।

सीढ़ियों की बैक से प्रकट होकर अमित को ठहाका लगाते देखा उसने।

"डर गये ?" अमित का स्वर काफी खूंखार था।

बेकाबू होकर जोर जोर से धड़क रहे दिल पर काबू पाने का प्रयास करते विनाश ने कहा —"क्या बात है, बड़े खुश नजर आ रहे हो आज ?"

"दरवाजा मैंने इससे बंद किया है।" उसने अपने हाथ में दबा 'रिमोट' दिखाया।

"सो तो मैं समझ . . . ."

विनाश इतना ही कह पाया था कि पीछे से एक मोटर चलने की आवाज उभरी और साथ ही , जिस्म पर ऐसी फुहार पड़ी जैसे स्कूटर की सर्विस करने वाले पाईप से उसे भिगोया जा रहा हो।

बौखलाकर तेजी से घूमा।

फुहार ने चेहरे और जिस्म के अगले हिस्से को तर कर दिया।

पाईप का सिरा पांच कदम दूर खड़ी सुनीता के हाथों में था।

फुहार से बचने की कोशिश करता विनाश चीख पड़ा —"अरे . . . अरे . . . क्या कर रही हो ये ?"

"अब भी नहीं समझा हरामजादे ?" नफरत युक्त आवाज तीसरी दिशा से उभरी थी। इस आवाज को सुनकर चौंक पड़ा विनाश।

बिजली की सी गति से घूमकर उस तरफ देखा, चीख सी निकल गयी हलक से —"त . . . तुम ?"

"हां कुत्ते . . . मैं ।" चेहरे पर घृणा का सागर लिये विमला दहाड़ी —"तेरी धर्मपत्नी . . . लेकिन नहीं, उससे ज्यादा

उस बाप की इकलौती बेटी जिसे तूने मेरी आंखों के सामने चाकुओं से गोद -गोदकर मार डाला।"

विनाश के चेहरे पर हर तरफ आतंक ही आतंक नजर आने लगा।

नथुनों में मिट्टी के तेल की दुर्गन्ध घुसी।

भयाक्रांत स्वर में हलक फाड़ कर चीख पड़ा वह —"ब . . . बचाओ।"

ठीक इसी क्षण अमित की तरफ से 'फर्र . . . फर्र' करती एक माचिस की तीली मिट्टी के तेल से सराबोर उसके जिस्म से आ टकराई - कपड़ों ने 'फक्क ' से आग पकड़ ली — पलक झपकते ही लपलपाती आग की छोटी सी मीनार नजर आने लगा विनाश।

"बचाओ . . . बचाओ।" चिल्लाता वह सारे हाल में दौड़ा दौड़ा फिर रहा था।

उसके तीन तरफ खड़े थे — अमित, विमला और सुनीता।

विमला दांते पीस रही थी — अमित के जबड़े सख्ती के साथ भिंचे थे और सुनीता के चेहरे पर खौफ नाच रहा था।

आग की लपटों में घिरा विनाश उसी की तरफ लपका — सुनीता को लगा, वह उसे बाहों में भरने वाला है।

"ब - बचाओ अमित।" खौफजदा स्वर में चीखती वह अमित की तरफ दौड़ी।

अमित ने आगे बढ़ कर उसे बाहों में भर लिया।

जलता हुआ विनाश उस तरफ लपका तो अमित ने दायें बूट की ठोकर जोर से उसके जिस्म में मारी।

चीख के साथ विनाश लुढ़कता चला गया।

बाथरूम के बंद दरवाजे से टकराया।

उठा।

लपटें उगलते ही उसने बाथरूम का दरवाजा खोला।

पलक झपकते ही अन्दर समाया और दरवाजा 'भड़ाक' से बंद हो गया।

फिर . . . बाथरूम से ऐसी आवाज उभरी जैसे पानी से भरे बाथटब में कूदा हो।

उसके बाद।

सन्नाटा छा गया।

गहरा और जानलेवा सन्नाटा!

न हाल में कोई आवाज थी, न बाथरूम से निकल कर कोई आवाज हाल में आ रही थी।

अमित से लिपटी सुनीता थर थर कांप रही थी — कांप अमित भी रहा था मगर अपनी इस अवस्था का सुनीता और विमला को एहसास नहीं होने देना चाहता था। इसके बावजूद, चेहरे पर छाये पीलेपन को कहां ले जाता ?

विमला ने तेज स्वर में पूछा —"इस बाथरूम का कोई और दरवाजा तो नहीं है ?"

"न . . . नहीं !" सुनीता कांप रही थी।

विमला के होठों पर ऐसी मुस्कान फैली जैसे मानसिक सुकून मिला हो।

सन्नाटा मुकम्मल खन्ना विला में सांय — सांय करता फिर रहा था।

खुद खौफ से मरे जा रहे अमित ने सुनीता को कस कर बांहों में भींच रखा था।

फिर, विमला ने सन्नाटा भंग किया —"तुम लोग इतने डरे हुए क्यों हो ?"

अमित ने जवाब देने के लिये मुंह खोला। बोलने की कोशिश की परन्तु हलक से आवाज न निकल सकी। उस वक्त वह हलक में पड़ गये 'सूखे' से जूझ रहा था जब बुरी तरह कांपती आवाज में सुनीता ने पूछा — "क . . . क . . . क्या वह मर गया ?"

"क - क्या बेवकूफी भरा सवाल पूछ रही हो ?" अमित झुंझलाया —"इतने सबके बाद क्या जिन्दा बचा होगा ?"

"म-मुमकिन है।" वो लगभग रो पड़ी — "म — मुझे उसके बाथटब में कूदने की आवाज आई थी।"

उनकी तरफ बढ़ती विमला कह उठी —"बाथटब में कूद कर क्या वो बच जायेगा ?"

"ब - बच क्यों नहीं सकता, आग तो बुझ गयी होगी ।"

"बेवकूफी की बातें मत करो सुनीता।" आतंक की

पराकाष्ठा के कारण अमित चीख पड़ा —"अगर जिन्दा होता तो बाथरूम में सन्नाटा क्यों होता — इतनी देर तक चुपचाप क्यों पड़ा रहता वह — निकल कर हॉल में क्यों नहीं आता ?"

"क्या पता , वो दरवाजे के पीछे घात लगाये बैठा हो — जैसे ही हममें से कोई दरवाजा खोले . . ."

"शटअप . . . आई से शटअप ।" अमित दहाड़ा —"बेवजह डराने की कोशिश मत करो।"

सुनीता उसके सीने में चेहरा छुपा कर फूट-फूट कर रो पड़ी।

अमित ने विमला से पूछा —"क्या वो जिन्दा हो सकता है ?"

"दरवाजा खोलकर देखो।"

"त - तुम ।" अमित की आवाज कांप रही थी —"तुम खोलो।"

"दरवाजा खोलो अमित — अगर जिन्दा हुआ और तुम पर हमला किया तो मैं उसे ढेर कर दूंगी।" कुछ ऐसे अन्दाज में कहने के साथ उसने वक्षस्थल से छोटा सा पिस्तौल निकाल कर हाथ में ले लिया कि इच्छा के बावजूद अमित इंकार न कर सका।

"आगे बढ़ो।" विमला के लहजे में कोड़े की फटकार उत्पन्न हो गयी।

अमित ने खुद से लिपटी सुनीता को अलग किया — सांत्वना देने वाले अंदाज में उसकी पीठ थपथपाई और बाथरूम की तरफ बढ़ा।

सुनीता रोना भूल गयी थी, बोली —"स — सम्भलकर अमित ।"

अमित के होठों से बोल न फूटा। टांगों का कम्पन छुपाये नहीं छुप रहा था।

तीनों के दिल 'धाड़-धाड़' करके बज रहे थे।

अमित ने कांपते हाथों से दरवाजे का हैंडिल पकड़ा - धीरे धीरे नीचे किया और बाल-बाल करके दरवाजा खोला।

झिर्री पैदा की, झिर्री बड़ी की।

विमला के हाथ की गिरफ्त पिस्तौल पर सख्त हो गयी, जबड़े भिंच गये। सुनीता की हालत ऐसी थी कि अब रोई . . कि

अब रोई।

अन्दर का दृश्य देखते ही अमित के हलक से चीख उबल पड़ी।



पानी से भरे बाथटब में आंखें फाड़े पड़ा था विनाश।

आंखें भैंस की आंखों सी लग रही थीं। चेहरा विकृत नजर आ रहा। दोनों बाजू अपनी-अपनी दिशा में फैले थे। कुल मिलाकर इतना डरावना नजर आ रहा था कि नजर पड़ते ही, सुनीता भी चीख पड़ी।

सारे बाथरूम का निरीक्षण करती विमला के होठों पर कुटिल मुस्कान थी।

"य - ये क्या किया अमित ?" खौफ की ज्यादती के कारण सुनीता उसे झंझोड़ती हुई चीख पड़ी – "ये क्या किया हमने ?"

कांपता हुआ अमित उसे बाहों में भींचने से ज्यादा कुछ न कर सका।

विनाश के तन पर मौजूद कपड़े अधजली अवस्था में थे।

चेहरा . . . और बाल तक कहीं से जले हुए नजर नहीं आये, हां, हौले-हौले अठखेलियां करते पानी में घुला खून साफ नजर आ रहा था - खून टब की रेलिंग के ऊपरी सिरे पर भी लगा था।

सिर के पृष्ठ भाग में जख्म था।

खून उसी से रिस रहा था।

जिस्म पानी की छोटी छोटी लहरों के साथ आहिस्ता-आहिस्ता हिचकोले खा रहा था।

"म - मुझसे नहीं देखा जाता अमित, बाहर चलो।" रोती हुई सुनीता ने चेहरा उसके सीने में छुपा लिया।

विमला गुर्राई –"इतनी डरोगी तो केकड़ा का सामना कैसे कर सकोगी ?"

सुनीता उसकी तरफ देखने लगी - सोच रही थी, कैसी औरत है ये ?

"ये ठीक से जल नहीं पाया।" विमला ने बड़बड़ा कर

मानो खुद से कहा —"फिर मर कैसे गया ?"

जवाब कौन देता ?

इस बार उसने सीधे अमित से पूछा —"कहीं ऐसा तो नहीं, सिर्फ बेहोश हो ?"

"क - क्या पता ?" ये दो लफ्ज उसके मुंह से बड़ी मुश्किल से निकल पाये।

"देखो!"

"क - कैसे ?"

"नब्ज देखो बेवकूफ, धड़कन चैक करो, देखो कि सांस चल रही है या नहीं ?" विमला गुर्रा उठी —"मरे हुए और बेहोश आदमी में फर्क करना नहीं आता तुम्हें ?"

अमित ने महसूस किया, सचमुच वह जरूरत से ज्यादा डर गया है।

हौसला समेटा, सुनीता को अलग किया।

बाथटब के पास पहुंचा।

नब्ज, धड़कन और सांसें चैक कीं।

सब गायब।

उसने हाथ पानी से खींचते हुए कहा —"म - मर चुका है।"

"आओ।" कहकर विमला बाथरूम से हाल में आ गयी।

अमित और सुनीता तो पहले ही वहां से निकलने के लिये मरे जा रहे थे — सो, उसके पीछे लपके - अमित ने दरवाजा बंद कर दिया। हाल की स्थिति देखती हुई विमला ने कहा —"फिलहाल इस हाल को देखकर बेवकूफ से बेवकूफ पुलिसिया भी समझ सकता है कि विनाश का मर्डर किया गया है।"

दोनों में से किसी के मुंह से बोल न फूटा।

"केकड़ा को बुलाने से पूर्व हमें यहां का हुलिया बदलना है।" कहने के साथ उसने आगे बढ़कर फर्श पर पड़ी चांसलर की आधी सिगरेट उठा ली — वह बुझ चुकी थी, बोली —"विनाश ने यहां कोई सिगरेट नहीं पी थी।"

"ये तीली भी केकड़ा को नहीं मिलनी चाहिये।" कहने के साथ अमित ने अधजली तीली उठा ली।

"गुड, अब तुम्हारा दिमाग काम करने लगा है।" विमला

के होठों पर मुस्कान उभरी –"तुम भी खुद को सम्भालो सुनीता और अपने हिस्से का काम निपटाओ।"

तीनों जुट गये।

पन्द्रह मिनट में काम पूरा कर लिया।

सन्तुष्ट होने के बाद विमला ने सुसाइड नोट वाला कागज और पैन निकाल कर सेन्टर टेबल पर रखा। पैन जब तक हाथ में रहा, साफ सुथरी रूई में लिपटा रहा। उसे सेन्टर टेबल पर लुढ़काने के बाद विमला ने रूई वापस वक्षस्थल में ठूंसी और बोली –"पैन से केकड़ा को विनाश की अंगुलियों के निशान मिलेंगे।"

"कागज से ?"

"कोई स्पष्ट निशान नहीं मिलेगा, मैंने साफ कर दिये हैं।"

सुनीता ने कहा – "अब चलें यहां से ?"

"हां चलना चाहिये, मगर ?"

"मगर ?"

"आगे का पूरा प्लान तुम्हारे दिमाग में सुरक्षित है न ?" विमला ने पूछा।

"हां।" अमित ने कहा –"यहां से ठीक उसी तरह चुपचाप ताज होटल पहुंचेंगे जिस तरह आये थे और फिर वहां से अपनी रॉल्स-रायल के साथ मेन गेट के जरिये विला में - गेटमैन गवाह होगा हम विला में कब आये और . . . यहां आते ही इस हादसे के बारे में पता लगेगा।"

"गुड।" विमला के चेहरे पर हर तरफ कामयाबी ही कामयाबी नजर आ रही थी।

●

"क - केकड़ा।" सुनीता उछल पड़ी –"अमित, केकड़ा हमें रुकने का इशारा कर रहा है।"

"अच्छा है साला वहीं खड़ा है।" पैर ब्रेक पेडल की तरफ ले जाते अमित ने दांत भींच कर कहा –"उसे पता तो रहेगा हम विला में कब पहुंचे लेकिन प्लीज . . . प्लीज खुद को सम्भालो सुनीता - हम उसे पूरी तरह 'नार्मल' नजर आने चाहियें।"

सुनीता के मुंह से न आवाज निकली, न जरूरत पड़ी।

राल्स रायल केकड़ा से दो गज पहले रुक चुकी थी।

केकड़ा लपक कर ड्राइविंग डोर की तरफ आया।

सुनीता के जिस्म में मानो दिल नहीं धड़क रहा था, हथौड़ों की चोट पड़ रही थी।

खुद को नार्मल दर्शाने के फेर में केकड़ा से पहले अमित चहका —"क्या बात है इन्सपैक्टर, तुम्हारी परमानेन्ट ड्यूटी क्या इसी बैरियर पर लग गई हैं ?"

"इन्क्रीमेन्ट का सवाल है जनाब, पचास रूपसे पैंतीस पैसे के लिये मेरे जैसा पुलिसिया जान दे सकता है।"

अमित ने हंसने की कोशिश करते हुए कहा —"फिक्र मत करो, तुम्हारे इन्क्रीमेन्ट को कुछ नहीं होगा।"

"बस कृपानिधान, आप ही की नजरें कर्म चाहियें।" केकड़ा कहता चला गया —"अगर उल्टा-सीधा कुछ करने की जरूरत भी पड़े तो बराये मेहरबानी अगले महीने कर लें — कम से कम इन्क्रीमेन्ट पर आंच न आये मेरे।"

"हमें कुछ नहीं करना।" अमित फिर हंसा — "पता नहीं तुम्हारे दिमाग में कहां से वहम घुस गया ?"

"कुसूर मेरा नहीं हुजूर, जमाने की चाल ही टेढ़ी है — जब आदमी को सीधी अंगुली से घी निकलता नजर नहीं आता तो टेढ़ी कर लेता है, उधर किसी की अंगुली टेढ़ी हुई इधर हम जैसों के इंक्रीमेन्ट पर खतरों के बादल मंडराये ।"

"हमें अंगुली टेढ़ी करने की जरूरत नहीं है, घी के सीधी अंगुली से निकल आने की उम्मीद है।"

"सीधी अंगुली से घी निकला तो नहीं करता सरकार, आप निकाल लें तो बात और है।"

"निकल आयेगा ।" अमित पुनः हंसा —"वो गधे का बच्चा सचमुच नपुंसक है।"

"आज तो आप से डर लग रहा है मिस्टर अमित!"

"ड - डर ?" वह फिर हंसा —"आपको मुझसे डर लग रहा है, जिससे लोग डरते हैं वह मुझसे डरेगा ?"

"इंक्रीमेन्ट की कसम, झूठ नहीं बोल रहा।"

ठहाका लगा उठा अमित, बोला — "क्यों . . . क्यों डर

लग रहा है मुझसे ?"

"आज आप हंस बहुत रहे हैं ?"

"ह - हंस रहा हूं ?" अमित सकपका गया —"म -मतलब ?"

"क्यों सुनीता जी ?" केकड़ा अचानक सुनीता से मुखातिब हुआ —"जरूरत से कुछ ज्यादा ही दांत नहीं फाड़ रहे अमित जी ?"

"ए - ऐसी तो कोई बात नहीं है!"

"है ।" केकड़ा ने इस एक मात्र शब्द पर जोर देकर कहा— "निश्चित रूप से आज ये बहुत हंस रहे हैं !"

अमित का दिमाग सांय-सांय करने लगा।

बहुत ही काईयां था केकड़ा।

उसे लगा, इस आदमी से पार नहीं बसायेगी।

अंदर ही अंदर कांप कर रह गया अमित मगर, सम्भल कर बोला —"हंस भी रहा हूं तो डरने की क्या बात हुई ?"

"डरने की बात है जनाब, उस वक्त हन्डरेड परसेन्ट सामने वाले को डरना चाहिये जब उसे बात-बात पर हंसता देखे जो कम हंसता हो।"

"अजीब आदमी हो यार ।" अमित बात को उड़ाने की कोशिश के अलावा और कर भी क्या सकता था —"उस दिन थोड़े आफ मूड में बात की तब भी तुम्हें आब्जेक्शन था — आज जौली मूड में हैं तो इसी बात को पकड़ कर बैठ गये।"

"तो यूं कहिये न, आज हुजूर जौली मूड में हैं ?"

"अब क्या कहें, मूड तो तुम चौपट कर चुके हो।"

"कान पकड़ कर माफी मांगते हैं सरकार ।" कहने के साथ उसने सचमुच अपने दोनों कान पकड़ लिये —"कहें तो उट्ठक-बैठक . . ."

अमित ने उसकी बात काट कर पूछा —"रोका क्यों था हमें ?"

"मतलब ?"

"रात के इस वक्त, आप पधार कहां से रहे हैं ?"

"ताज से ।"

"ताज ?"

"आज वहां मेरा गाना था।"

"ओह . . . काफी देर तक चला गाना ?"

"गाना साढ़े दस बजे खत्म हो गया था, उसके बाद ग्रीन रूम में रहे।"

"ग्रीन रूम में ?"

अर्थ पूर्ण मुस्कान होठों पर लाकर कहा अमित ने —"हम दोनों ।"

"दाल में काला है।" अचानक केकड़ा बड़बड़ा उठा।

अमित चौंका —"ज - जी ?"

"पूरी दाल ही काली नजर आ रही है मुझे।"

"ये दाल बीच में कहां से आ गयी ?"

"दाल को इसलिये बीच में आना पड़ा बंदा नवाज क्यों कि आज आप मेरे हर सवाल का जवाब बड़े आराम से दिये चले जा रहे हैं - ठीक ऐसे, जैसे 'ऐलीबाई' बनाने की जुगत में हों।"

"ऐलीबाई ?"

"ऐलीबाई वो होती है जो कोई बंदा मेरे जैसे पुलिसिये को तब देता है जब पुलिसिया पूछे कि जब फलां वारदात हो रही थी तब तुम कहां थे — जो वो बताता है, उसे ऐलीबाई कहते हैं।"

सन्न रह गया विनाश।

सुनीता की तो हालत ही खराब थी।

वे इस वक्त केकड़ा के दिमाग में यही बैठाने की कोशिश कर रहे थे कि जब विनाश मरा तब वे 'ताज' के ग्रीन रूम में थे और केकड़ा था कि साफ-साफ वही कह रहा था जो वे कर रहे थे।

ऐसे मौके पर भला किसके होश फाख्ता न हो जायेंगे ?

फिर भी अमित ने काफी हद तक खुद को सम्भाला, सवाल किया उसने —"कोई वारदात हो गयी है क्या ?"

"मेरे संज्ञान के मुताबिक तो अभी तक खैरियत है।"

"फिर हमारे जवाबों को तुमने किस वारदात की ऐलीबाई समझ लिया ?"

"मुमकिन है आपके संज्ञान में वारदात हो गयी हो ?"

"ह — हमारे संज्ञान में ?" आखिर पसीने छूट ही गये

अमित के।

"और आप वारदात के मेरे संज्ञान में आने से पहले ही मेरी खोपड़ी में ऐलीबाई ठूंस रहे हों ?" केकड़ा कहता चला गया —"इतने बुद्धिमान तो मैं आपको समझता ही हूं कि आप ये जरूर जानते होंगे कि अगर इस इलाके में कोई वारदात हुई है तो देर सवेर उसे मेरे संज्ञान में आना पड़ेगा— इस लिहाज से, एडवांस ऐलीबाई आपकी समझ के मुताबिक एक जबरदस्त सुरक्षा कवच हो सकती है।"

"तुम हद से गुजर रहे हो इन्स्पैक्टर ।" अन्दर से सूखे पत्ते की तरह कांप रहे अमित को लगा अब गुर्राये बगैर काम नहीं चलेगा.—"न तुम्हारी नॉलिज में कोई वारदात हुई है, न हमारी — केवल कल्पनाओं के आधार पर हम जैसे प्रतिष्ठित लोगों को रास्ते में रोक कर इस तरह की बातें करना तुम्हें महंगा पड़ सकता है।"

केकड़ा मुस्कुराया, बोला —"हुजूर पहले ही इतना सख्त रुख अख्तियार कर लेते तो बंदे को शक क्यों होता ?"

"क्या मतलब ?"

"फाईव स्टार होटल के स्वीमिंग पूल में भरे पानी की तरह साफ है।" केकड़ा कहता चला गया —"मैंने आपसे निहायत ही घटिया और बदतमीजी भरी बातें कीं मगर, उस दिन की तरह गिरेबान पकड़ना तो दूर . . .उत्तेजित तक नहीं हुए आप - हर सवाल का माकूल जवाब देते रहे, इसलिये बंदे को दाल में काला नजर आया और लगा, आप ऐलीबाई दे रहे हैं — उलझना नहीं चाहते मुझसे ।"

"यानी सख्ती के यार हो, शराफत से सवालों का जवाब देता आदमी भी पसंद नहीं तुम्हें ?"

"आदमी तो जनाब मुझे हर तरह का पसंद है और यार हम पुलिस वाले किसी के हो नहीं सकते — माथा दरअसल तब ठनकता है जब सामने वाले को अपने करेक्टर के ठीक विपरीत बातें या हरकतें करते देखता हूं — मेरे हिसाब से आप ऐसे शख्स हैं जो तब तक मेरे जैसे छोटी रैंक के पुलिसिये की ओछी बातों को बर्दाश्त नहीं करेगा जब तक अंगुली न दबी हो ।"

"हमने जो शराफत से बात की, तुम्हें लगा . . . हम कहीं

कमजोर हैं ?"

"यकीनन लगा और . . . अब भी लग रहा है – बंदे के भेजे से यह बात तब तक नहीं निकलेंगी जब तक इस सवाल का माकूल जवाब न मिल जाये कि इस अदने पुलिसिये की बदतमीजी भरी बातें इतनी देर तक आपने झेली क्यों ?"

"हमें उस दिन के व्यवहार पर खेद है।"

बड़े अजीब स्वर में कहा केकड़ा ने –"मेरे कान फिर खड़े हो रहे हैं।"

"म - मतलब ?"

"ये जो इस वक्त आप मेरी चमचागीरी कर रहे हैं, मैं इसका भेद जान कर रहूंगा मिस्टर अमित ।"

"च - चमचागीरी ?" एक बार फिर अमित को भड़कने में ही भलाई नज़र आई –"हम चमचागीरी कर रहे हैं तुम्हारी - बड़े अहमक आदमी हो यार – कोई शराफत से बात करे तो चमचागीरी लगती है तुम्हें-तुम्हारा तो दिमाग ही खराब हो गया, समझ क्या रहे हो खुद को ?"

"गुड !" केकड़ा हंसा– "आपका ये 'टोन' मुझे स्वाभाविक लगता है।"

"अब चलो भी अमित।" सुनीता कह उठी –"इस घटिया पुलिस मैन के मुंह लगने से कोई फायदा नहीं ।"

"कमीश्नर से तुम्हारी शिकायत करूंगा ।" भुनभुनाते हुए अमित ने न केवल गाड़ी स्टार्ट की बल्कि फर्स्ट गेयर में डाल कर आगे बढ़ा दी।

केकड़ा फुदक कर अलग हो गया।

होंठों पर मुस्कान थी।



खौफ खाया अमित 'बैक व्यू मिरर' के ज़रिये तब तक केकड़ा को देखता रहा जब तक नजर आता रहा।

सुनीता के होश फाख्ता थे।

"अजीब खफ्ती पुलिसिया है साला ।" अमित बड़बड़ा उठा –"एक बात के पीछे पड़ जाता है।"

"कम्बख्त ने हमारे जवाबों से ही अनुमान लगा लिया कि

वारदात हो चुकी है और हम ऐलीबाई दे रहे हैं।"

"गलती मुझ ही से हुई, उससे उसी दिन वाले मूड में बात करनी चाहिये थी।"

"उस दिन की तरह उलझ तो नहीं सकते थे, कुछ देर बाद हम उसी के रहमोकरम पर होंगे।"

"यही सोच कर मैं 'पोलाईट' था मगर, पट्ठे को यही बात खटक गई।"

"लगता है अमित, केकड़ा से बच नहीं पायेंगे।"

"मतलब ?"

"जिस आदमी को पहले से शक है कि हम विनाश का मर्डर करने वाले हैं —जों हमारे जवाबों को ऐलीबाई समझ रहा था और जिसे इतना इल्म हो गया कि हमारी जानकारी में वारदात हो चुकी है, वह भला हमारे भरमाने से कैसे भ्रमित हो जायेगा ?"

"स - सुबूत ।" अमित मे कहा —"हॉल में मौजूद सुबूत भ्रमित करेंगे उसे।"

"कोई और होता तो भले ही 'चकमा' खा जाता मगर, केकड़ा . . ."

"चलो माना वह चकमा नहीं खायेगा — समझ जायेगा हमने मर्डर किया है और स्पाट से जो आत्महत्या के सुबूत मिले हैं वे हमारे द्वारा प्लान्ट किये गये हैं मगर, इस बात को सिद्ध कैसे करेगा वह — गौर करो सुनीता, कानून और अदालतों का पेट एक इन्स्पैक्टर के सब कुछ समझ ज़ाने से नहीं भरता बल्कि गवाह और सुबूतों से भरता है — केकड़ा दोनों चीजें कहां से लायेगा — कोशिश भी करे तो पैदा नहीं कर सकता अर्थात . . . हमें केकड़ा के सब कुछ समझ जाने से नहीं डरना चाहिये - समझता है तो समझता रहे, सिद्ध कुछ नहीं कर पायेगा।"

अमित की बात सुनीता के दिमाग में बैठ तो रही थी मगर भयमुक्त फ़िर भी नहीं हो पाई।



"फूटते हैं सरफराज ।" साढ़े बारह बजा रही रिस्टवॉच पर नजर डालने के साथ थाने पर तैनात सब इन्स्पैक्टर से केकड़ा ने कहा — "आदमी साला पत्नी की नौकरी न बजाये तो वो

सरकारी नौकरी नहीं बजाने देती ।"

"आप दुरूस्त फरमा रहे हैं सर !" सरफराज मुस्कुराया।

"तुम्हें कैसे मालूम ?"

"ज – जी ।" सरफराज सकपका गया।

केकड़ा ने पूछा –"जब तुम्हारी शादी नहीं हुई मियां तो ये 'गुर' की बात कैसे पता ?"

सरफराज के जवाब देने से पहले फोन की घन्टी घनघना उठी।

हाथ सरफराज ने भी बढ़ाया परन्तु केकड़ा उससे फुर्तीला साबित हुआ, रिसीवर उठाते ही बोला – "परेशानी क्या है ?"

"त - तुम ?" अमित का हड़बड़ाया स्वर उभरा –"तुम वहां पहुंच गये इन्स्पैक्टर ?"

"हम हर उस जगह पहुंच जाते हैं जनाब जहां हमारी जरूरत हो ।" अमित की आवाज पहचानते ही केकड़ा के जहन में खतरे की घंटियां घनघनाने लगी थीं, बगैर सांस लिये पूछा उसने –"कर दिया क्या काम तमाम ?"

"क - काम तमाम ?"अमित की बौखलाहट भरा स्वर –"न– नहीं . . . हमने कुछ नहीं किया इन्स्पैक्टर ।"

"चलो अपने आप हुआ होगा, मगर हुआ क्या है ?"

"विनाश ने सुसाइड कर ली ।"

केकड़ा ने रिसीवर क्रेडिल पर पटक दिया, बोला –"अब पत्नी साली सारी रात बिस्तर की जगह अंगारों पर लेटती फिरेगी।"



"तो मेरा इन्क्रीमेन्ट 'डकार' ही गये तुम लोग ?" हॉल में दाखिल होते इन्स्पैक्टर केकड़ा ने कहा।

अमित उसके ऐसे ही किसी वाक्य का सामना करने के लिये तैयार था, रणनीति के तहत गुर्राया – "मुझे मालूम था विनाश के मरने की खबर सुनकर तुम यही सोचोगे मगर . . ."

"मगर ?" पूछते हुए केकड़ा ने सुनीता की तरफ देखा।

"पूर्वाग्रह से ग्रसित होकर फैसला लेने से बेहतर होगा,

यहां का निरीक्षण कर लो।"

"बड़ा विश्वास है अपने प्लान्ट किये गये ड्रामे पर ?"

"फिर कहता हूं इन्स्पैक्टर !" अमित के लहजे में कहीं कोई 'लोच' न था – "बगैर सुबूत के हम पर लगाया गया आरोप तुम्हें महंगा पड़ेगा।"

"मंजूर है प्यारे !" केकड़ा ने दांत पीसे – "तुम्हारा चैलेन्ज मंजूर है मुझे ।"

"च . . . चैलेंज . . . मैंने कब चैलेंज दिया ?"

"चैलेंज तो दे चुके हुजूर।" उसने एक एक शब्द चबाया –"मेरे बार बार चेताने, झोली फैला-फैला कर इंक्रीमेन्ट की भीख मांगने के बावजूद तुमने वो काम आखिर कर ही दिया जिसके बारे में मुझे मालूम था कि तुम करोगे – मैंने कहा था, पचास रूपये पैंतीस पैसे के लिये मेरे जैसा पुलिसिया जान दे सकता है इतने सब के बावजूद तुमने ये महान काम किया है तो जाहिर है,चैलेंज दिया है बंदे को ।"

"हमने कोई चैलेन्ज नहीं दिया।" अमित चीख पड़ा –"विनाश ने आत्महत्या की है।"

"यही तो मुगालता है तुम्हें . . . यह कि प्लान्ट किये गये मसाले के आधार पर मैं इसे आत्महत्या से ज्यादा कुछ सिद्ध नहीं कर सकूंगा –मजा आयेगा दोस्त – ऐसे चैलेंजिंग किस्सों में मुझे खासतौर पर मजा आता है।"

"तुम पूर्वाग्रह से मुक्त नहीं हो पा रहे इन्सपैक्टर ज़बकि . . . "

"हां . . . हां . . . फरमाओ . . . रुक क्यों गये ?"

"एक सुलझे हुए पुलिसमैन को घटनास्थल पर मौजूद लोगों के बयान लेने और खुद निरीक्षण करने के बाद किसी नतीजे पर पहुंचना चाहिये।"

"ओ. के. . . .प्लान्ट किये गये सुबूतों पर इतना विश्वास है तो पहले इन्हीं से निपटते हैं ।" कहने के बाद केकड़ा चेहरे पर हवाईयां लिये नौकरों से मुखातिब हुआ –"आप लोग लॉन में चले जायें – जब जिसकी जरूरत होगी बुला लिया जायेगा।"

नौकर मानो चाहते ही यह थे।

वे दरवाजे की तरफ बढ़ गये।

सुनीता ने भी निकल जाना चाहा परन्तु . . .

"न . . . . न . . . . न . . . . आप नहीं।" केकड़ा उसके आगे अड़कर खड़ा हो गया।

"क – क्यों ?"

"अभी – अभी आपके प्रेमी साहब ने जो फरमाया, आपने उस पर ध्यान नहीं दिया लगता - उन्होंने मुझे सलाह दी – एक सुलझे हुए पुलिस मैन को घटनास्थल पर मौजूद लोगों के बयान लेने चाहियें – इस मामले में मेरी पहली शिकार आप हैं!"

"श - शिकार ?" उसने थूक सटका।

"इतनी मत घबराओ वरना केस मेरे लिये आसान हो जायेगा और उतना मजा नहीं आयेगा जितना 'चखाने' के मिस्टर अमित ने मंसूबे बनाये हैं ।" केकड़ा कहता चला गया –"पूरे कान्फिडेन्स के साथ, ठुक कर मेरे सवालों का जवाब दो . . . क्यों दोस्त ?" एकाएक उसने अमित से पूछा –"कुछ गलत तो नहीं बका मैंने ?"

"सुनीता को नर्वस करने की कोशिश छोड़ कर, सवाल करो तो बेहतर होगा।"

"समझो !" केकड़ा पुनः सुनीता से मुखातिब हुआ –"अमित बाबू घुमा फिरा कर तुमसे कह रहे हैं कि 'ये इन्स्पैक्टर तुम्हें नर्वस करने की कोशिश कर रहा है सुनीता, मगर . . . तुम्हें नर्वस नहीं होना है'– इनके संदेश को समझो और बगैर नर्वस हुए जवाब दो, लाश कहां है ?"

"बाथरूम में ।"

"गुड, अमित बाबू को आपसे इसी कान्फिडेन्स की दरकार है।" कहने के बाद उसने अगला सवाल किया –"ये बात आपको कब और कैसे पता लगी ?"

"क – कौन सी बात ?"

"कि लाश बाथरूम में है, हकलायें नहीं . . . साफ साफ बतायें।"

"हाल में कदम रखते ही हम दोनों चौंके . . . ."

"कौन दोनों ?"

"मैं और अमित।"

"क्यों ?"

जिस्म पर केवल अण्डरवियर पहने वह शावर के नीचे खड़ा था।

ऐसा क्यों कर रही है सुनीता?

कमरे में आते ही टी. वी. ऑन क्यों नहीं किया?

अपना पसंदीदा प्रोग्राम क्यों नहीं देखा?

कहीं कोई गड़बड़ है।

लेकिन क्या ?

कहीं ताड़ तो नहीं गई कमरे में उसकी हत्या का जाल बिछा था?

जरूर कोई अनहोनी हुई है – तभी तो बार-बार पागलों की तरह चिल्लाती जुनूनी अवस्था में दरवाजा पीट रही है – अब दरवाजा न खोलना इस बात को दर्शा देना था कि वह जानबूझकर सारी आवाजों को अनसुना कर रहा है।

शावर के चलते ही चलते एक बार उसने ऊंची आवाज में पूछा – "क्या है सुनीता?"

"दरवाजा खोलो अमित . . . जल्दी . . . प्लीज।" सुनीता गिड़गिड़ाई।

"क्या मुसीबत है यार?" उसने शावर बंद किया – "मैं नहा रहा हूं।"

"उफ्फ!" सुनीता ने तोड़ डालने वाले अंदाज में दरवाजा भड़भड़ाया – "दरवाजा खोलो।"

"आ रहा हूं।" अमित ने टालना चाहा – "तुम तब तक टी. वी. देखो – 'जुबान सम्भाल के' आ रहा होगा।"

सुनीता जैसे पागल हो गयी, चीखी – "खोलो . . . खोलो अमित।"

अंततः अमित को दरवाजा खोलना पड़ा, खोलने के साथ बिफरा – "आखिर बात क्या है?"

"व - वह जिन्दा है।" कहती हुई सुनीता अमित के गीले जिस्म की परवाह किये बगैर उससे लिपट गयी।

तेज आंधी के बीच फंसे सूखे पत्ते की तरह कांप रही थी वह।

सांस धौंकनी की मानिन्द चल रही थी।

मजबूर अमित को अपनी बांहों में समेट कर पूछना पड़ा

— "कौन जिन्दा है?"

"व - विनाश!"

"क - क्या?" अमित उछल पड़ा।

"हां अमित।" वह उससे अलग होकर उसके चेहरे की तरफ देखती कह उठी — "व - वो मुझे अभी-अभी लिफ्ट में मिला था।"

अमित ने गौर से उसका चेहरा देखा।

बिल्कुल नहीं लगता था उसके जिस्म में खून की एक भी बूंद है — ऐसी हालत में नजर आ रही थी वह जैसे भूतों से जान बचाकर भागी चली आ रही हो — अमित उसके चेहरे के फीकेपन और आंखों की निस्तेजी को देखता हुआ बोला — "बात क्या है, इतनी डरी हुई क्यों हो तुम?"

"ब — बताया तो है, लिफ्ट में विनाश मिला था।"

ठहाका लगा उठा अमित — "भूत मिला होगा उसका?"

"न — नहीं — वह जिन्दा था, उसने छुआ था मुझे मगर . . . घुटला रहा था, दर्शा रहा था जैसे मुझे जानता न हो — अपना नाम अविनाश बताया — कितना मिलता-जुलता नाम है मगर नहीं . . . मैं नहीं मान सकती वह कोई और था — दो आदमियों की शक्ल और कद-काठी इस हद तक एक नहीं हो सकती . . . और शक्ल ही क्यों, आवाज तक वही थी — हू-ब-हू वही — नहीं अमित, वह वही था — और कोई हो ही नहीं सकता . . . विनाश जिन्दा है . . . विनाश जिन्दा है।"

"पागल हो गई क्या?" अमित झल्ला उठा — "कैसे जिन्दा हो सकता है विनाश — पानी से भरे टब में पड़ी उसकी लाश हमने एक बार नहीं, अनेक बार देखी है — हम ही ने क्यों केकड़ा ने देखी है — विला के नौकरों ने देखी है — पुलिस वालों ने देखी है — सबके सामने सील करके उसे पोस्टमार्टम के लिये भेजा गया — उसके बाद अंतिम संस्कार किया गया और तुम कहती हो वह जिन्दा है . . . लिफ्ट में मिला था . . . कैसे हो सकता है ये?"

"म — मुझे नहीं पता कैसे हुआ, मगर हुआ है — वह जिन्दा है . . . वह जिन्दा है अमित।" पागलों की मानिन्द बड़बड़ाती वह उसके जिस्म पर आ गिरी। अमित सम्भाल न लेता

तो बाथरूम के फर्श पर गिरती।

सस्पैंस और खौफ की ज्यादती के कारण सुनीता बेहोश हो चुकी थी।



अमित बड़ी मुश्किल से सुनीता को बाथरूम से बैड तक ला सका — रिसेप्शन पर फोन करके किसी डाक्टर को भेजने के लिये कहा — जब तक डाक्टर, उसके साथ मैनेजर और होटल स्टाफ के अन्य दो व्यक्ति आये तब तक वह न केवल गीले जिस्म को पोंछ चुका था बल्कि कपड़े भी पहन चुका था।

चैकअप करने के बाद डाक्टर ने कहा — "कोई खास बात नहीं है, किसी शॉक के कारण बेहोश हो गयी हैं।"

अमित पर कुछ कहते न बन पड़ा।

मैनेजर ने पूछा — "हुआ क्या था मिस्टर अमित?"

"मुझे कुछ खास नहीं पता।" अमित ने 'विनाश' का जिक्र करना मुनासिब नहीं समझा — "माल रोड से लौटी और लगी जोर-जोर से बाथरूम का दरवाजा पीटने — मैं उस वक्त नहा रहा था — दरवाजा खोला तो मेरे ऊपर गिरकर बेहोश हो गयी।"

"कोई बात नहीं।" डाक्टर ने कहा — "कई लोग . . . विशेष रूप से महिलायें इतनी 'सैंसेटिव' होती हैं कि छोटी सी घटना से बुरी तरह डर जाती हैं — मुमकिन है, किसी मनचले द्वारा पीछा करने से ही नर्वस हो गयी हों।"

अमित पुनः चुप्पी साध गया।

"चिन्ता की बात नहीं है — इंजैक्शन लगा दिया है, जल्दी होश आ जायेगा।" कहने के बाद डाक्टर चला गया।

मैनेजर और स्टाफ के लोग भी।

अमित के दिमाग को अनेक सवालों ने जकड़ लिया।

सुनीता के बेहोश होने का मतलब था उस बात में कुछ न कुछ परसेन्ट सच्चाई है जो वह कह रही थी।

मगर . . . . उसमें सच्चाई कैसे हो सकती है?

कैसे जिन्दा हो सकता है विनाश?

जरूर उसने लिफ्ट में किसी ऐसे आदमी को देखा है जिसकी शक्ल विनाश से दस - बीस परसेन्ट मिलती होगी —'इस हद तक' दो आदमियों की शक्लें आमतौर पर मिल जाती हैं— तभी तो बम्बई में लगभग हर आर्टिस्ट का 'डुप्लीकेट' पहुंच जाता है।

अमित को अपना विचार जंचा।

यही सोच कर संतुष्ट हो गया कि सुनीता ने विनाश से मिलता जुलता आदमी देखा है।

'लेकिन . . .।' दिमाग में नया विचार कौंधा — 'क्या नये हालात में सुनीता का मरना ठीक होगा?'

अमित की अंतरात्मा ने कहा —'नहीं।'

'सुनीता के मरने पर बखेड़ा खड़ा हो सकता है।' ये बात शायद उसके अन्दर छुपे खौफ ने कही थी —'अभी डाक्टर आया था, होटल स्टाफ के अन्य दो लोग आये थे — सब गवाह हैं कि वह 'शॉक' से बेहोश हुई थी — कुछ देर बाद या सुबह को अगर इन लोगों को सुनीता की लाश मिली तो निश्चय ही मामला संदिग्ध नजर आयेगा — इन्वेस्टीगेटर इसके बेहोश होने तक की बखिया उधेड़ेगा — पता नहीं उसके पीछे क्या निकले और फिर . . ये सवाल भी उठ सकता है — 'ऐसी अवस्था' में सुनीता ने टी.वी. क्यों ऑन किया — उसने क्यों नहीं?'

अमित को लगा, वर्तमान हालात में सुनीता की मौत उसे फंसा देगी। निश्चय किया, कम से कम आज रात सुनीता नहीं मरनी चाहिये।

'मगर।' उसे ध्यान आया —'टी.वी. के स्विच में अभी तक करेंट है।'

वह उठा।

सबसे पहले 'प्लग' विद्युत लाईन से अलग किया।

फिर . . केबिनेट खोला।

इरादा उन तारों को अलग करके, जिनके मिले होने के कारण करेंट स्विच में प्रवाहित हो रहा था, पुनः उन तारों से जोड़ने का था जिनसे अमरसिंह ने अलग किये थे — छेड़खानी करने हेतु अभी झुका ही था —

"ऐसी ही बेवकूफियों के कारण मुजरिम पकड़े जाते हैं।"

"क्या मतलब ?"

"जरा सोच, पिछले एक साल से गांव छोड़ कर तुम लोगों के साथ विला में रह रहा हूं – आज-कल तुम शादी की चौथी वर्षगांठ मनाने शिमला आये हुऐ हो – लोगों की निगाह में मैं विला में हूं – अगर उस रात विला में न हुआ जिस रात सुनीता को यहां मरना है तो बैठे बिठाये लोगों के शक के दायरे में नहीं आ जाऊंगा मैं ?"

"इस बारे में क्या सोचा है ?"

"अमर सिंह सोचता नहीं रहता बर्खुरदार, काम को अंजाम दिया करता है – मैं केवल एक घंटा पहले शिमला में लैंड करने वाली फ्लाईट से पहुंचा हूं और ठीक एक घंटे बाद वाली फ्लाईट से उड़ कर वापस राजनगर पहुंच जाऊंगा – ठीक बारह बजे विला पर फोन करके तू मुझे सुनीता की मृत्यु का समाचार दे सकता है।"

"इस यात्रा का रिकार्ड ?"

"कभी किसी को नहीं मिलेगा, रामलाल के नाम से आया हूं श्याम सुन्दर के नाम से वापस जाऊंगा।"

अमित कह उठा –"हर प्वॉइन्ट पर अच्छी तरह गौर किया लगता है आपने!"

"तभी तो विश्वास है, केवल वह होगा जो मैंने सोचा है।" कहने के बाद अमर सिंह ने पुनः रिस्टवॉच की तरफ देखा और बोला – "चलता हूं, –इधर सुनीता के आने का टाईम हो रहा है उधर लेट हुआ तो फ्लाईट मिस हो जायेगी!"

अमित चुप रहा।

अमर सिंह ने एक नजर टी.वी. पर डाली और दरवाजे की तरफ बढ़ता बोला –"मेरे जाते ही तुझे कपड़े उतार कर बाथरूम में घुस जाना है 'जुबान सम्भाल के' खत्म होने से पहले बाहर नहीं निकलना, तब तक सुनीता मर चुकेगी।"

अमित के मुंह से बोल न फूट सका तो स्वीकृति से गर्दन हिलाई।

रिस्टवॉच पर नजर डालती सुनीता तेजी से लिफ्ट में दाखिल हुई।

उसे 'जुबान सम्भाल के' का एक सीन भी बगैर देखे निकल जाना गवारा नहीं था – लिफ्ट का गेट बंद करने के लिये स्विच की तरफ हाथ बढ़ाया ही था कि 'धक्क' से रह गयी।

सामने से विनाश लिफ्ट की तरफ भागा चला आ रहा था।

उसे रुकने का इशारा भी किया था विनाश ने।

सुनीता को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ।

लगा, वह सपना देख रही है।

मगर नहीं।

वह सपना नहीं था।

सचमुच विनाश भागता हुआ लिफ्ट में दाखिल हुआ।

लिफ्ट रोके रखने के लिये उससे 'थैंक्यू' कहा और पूछा – "टू विच फ्लोर डू यू वांट टू गो?"

जवाब देने की स्थिति में थी कहां सुनीता . . . और होती भी कैसे . . . जो शख्स चार साल पहले उसकी आंखों के सामने मरा था बल्कि जिसे मारने वालों में वह खुद शामिल थी वह उसके नजदीक . . . बेहद नजदीक खड़ा ही नहीं था बल्कि उससे पूछ भी रहा था कि कौन सी मंजिल पर जाना है – पल भर में वह पसीने से सराबोर हो उठी।

चेहरा पीला जर्द पड़ गया।

सच्चाई ये है कि लिफ्ट में खड़ी खड़ी वह जूड़ी के मरीज की मानिन्द कांप रही थी।

अपनी बगल में साक्षात् विनाश का भूत खड़ा नजर आ रहा था उसे।

चेहरे-मोहरे, कद-काठी और आवाज तक में कोई अन्तर नहीं।

उसने 'ब्लू कलर' का सूट और आईने की तरह

चमचमाते काले जूते पहन रखे थे। टाई पर सुन्दर डायमड पिन और कोट पर गुलाब का लाल फूल लगा था।

सुनीता का दिमाग चकरा उठा – लिफ्ट भंवर की मानिन्द तेजी से घूमती नजर आई उसे – चक्कर खाकर गिरने वाली थी कि विनाश ने सम्भाला, झंझोड़ता हुआ चीखा – "क-क्या हुआ मैडम . . . क्या हुआ?"

इस एहसास ने तो सुनीता के छक्के ही छुड़ा दिये कि उसे इस वक्त विनाश ने पकड़ रखा है।

खुद को बड़ी मुश्किल से सम्भाला उसने।

छिटक कर दूर हटी।

लिफ्ट की एक दीवार का सहारा लिये वह थर-थर कांपती विनाश की तरफ देख रही थी।

आंखों में ख़ौफ!

चेहरा मुर्दे के चेहरे जितना निस्तेज!

लाख प्रयासों के बावजूद मुंह से आवाज नहीं निकाल पा रही थी जबकि विनाश ने पूछा – "बात क्या है मैडम, आपकी तबियत तो ठीक है?"

"न . . . नहीं।" हलक से टूटे फूटे लफ्ज विस्फुटित हुये – "त . . . तुम जिन्दा नहीं हो सकते।"

"मैं . . मैं ?" विनाश चौंका – "क . . क्या बात कर रही हैं आप – आपके सामने जिन्दा खड़ा हूँ।"

"क . . . कौन हो?" भयाक्रांत सुनीता अचानक हिस्टीरियाई अंदाज में चिल्ला उठी – "कौन हो तुम?"

उलझ से गये युवक ने कहा – "अविनाश।"

"अ - वि - ना - श?" मुंह से निकलने वाला हर लफ्ज टूटा -फूटा था।

"क्या आप मुझे जानती हैं?"

सुनीता की जुबान तालू से जा चिपकी – बड़ी तेजी से उसके दिमाग में यह विचार कौंधा, अगर ये आदमी विनाश है तो उसे पहचान क्यों नहीं रहा और जब वही नहीं पहचान रहा तो वह क्या पागलपन कर रही है?

विनाश ने स्विच दबा कर लिफ्ट का गेट बंद किया।

हड़बड़ा कर सुनीता ने तीसरे फ्लोर का बटन दबा दिया।

लिफ्ट ने सफर शुरू किया।

होंठों पर हल्की मुस्कान लिये युवक ने कहा – "लगता है, मेरी शक्ल आपके किसी परिचित से मिलती है?"

"ह – हां।" मुंह से यही एक मात्र लफ्ज बाहर आ सका।

"और शायद वह मर चुका है?"

"ह – हां।"

"क्या नाम था उसका?"

"व - व - विक्रम।" सुनीता असली नाम बताते-बताते 'चेंज' कर गई।

"कैसे डैथ हो गयी उनकी?"

"ए-एक्सीडेन्ट में।" सुनीता को मुंह से एक-एक लफ्ज निकालने में दिक्कत हो रही थी।

"ओह।" कम से कम सुनीता की नजर में साक्षात् विनाश ने पूछा – "आपके कौन लगते थे?"

"द – दूर के रिश्ते में द – देवर।"

"क्या उनकी शक्ल मुझसे इतनी मिलती थी कि आप ."

वाक्य पूरा होने से पहले तीसरी मंजिल आ गई।

लिफ्ट रूकी।

और दरवाजा खुलते ही सुनीता इस तरह भाग पड़ी जैसे सैकड़ों भूत पीछे लगे हों – एक बार भी पलटकर उसने लिफ्ट की तरफ नहीं देखा – वह अपने कमरे की तरफ भाग रही थी . . . भागती जा रही थी।

बेतहाशा . . . पी. टी. उषा से कहीं तेज।

●

"अमित . . . अमित।" अर्धविक्षिप्त अवस्था में चीखती सुनीता ने बाथरूम का दरवाजा पीट डाला।

हालांकि सुनीता की पहली ही आवाज और दरवाजा पीटे जाने ने अमित को आकर्षित कर लिया था मगर, जवाब नहीं दिया।

अपना काम करने लगा वह।

अमित को भी लगा, यदि बात बढ़ाई तो सवालों के जवाब देने उसी को भारी पड़ेंगे। यह भी समझ रहा था कि मैनेजर ने इलैक्ट्रीशियन को क्यों डपट दिया है – उसे डर था, कहीं अमित ही उस पर न चढ़ दौड़े।

कमरे में सन्नाटा छा गया।

इस सन्नाटे को सुनीता के हलक से निकलने वाली कराहों ने भंग किया।

तीनों का ध्यान एक साथ उसकी तरफ गया।

मैनेजर और अमित उसकी तरफ लपके जबकि इलैक्ट्रीशियन अपने काम में मशगूल हो गया। सुनीता की चेतना लौट रही थी।

"स - सुनीता - सुनीता।" कहते हुए अमित ने बैड पर बैठकर उसका सिर अपनी गोद में रख लिया।

कुछ देर बाद सुनीता ने आंखें खोलीं – अमित के चेहरे पर नजर पड़ते ही उसने राहत की सांस ली मगर अगले पल से चेहरा पुन : पीला पड़ने लगा, आंखों में आतंक के साये नजर आये, होठ फड़फड़ाये – "व - वो जिन्दा है, अमित . . . मेरा यकीन करो . . . मैने उसे देखा है।"

"खुद को सम्भालो सुनीता।" मैनेजर की मौजूदगी के एहसास ने अमित को थर्रा कर रख दिया –"ये क्या पागलपन है?"

"किसे देखा है आपने?" मैनेजर उस पर झुका – "कहां देखा है?"

"ल – लिफ्ट में – मुझे 'जुबान सम्भाल के' देखने की जल्दी थी – जैसे ही लिफ्ट के अन्दर घुसकर . . . "

"ओफ्फो . . . सुनती क्यों नहीं सुनीता?" अमित ने यह एहसास करते ही दहाड़कर उसकी बात काटी कि अगर उसने सुनीता को बोलने दिया तो मैनेजर सब कुछ समझ जायेगा – यदि वह सुनीता के प्रथम शब्दों का 'लिंक' टी.वी. की खराबी से जोड़ दे तो समझ सकता है कमरे में किसकी हत्या का जाल बिछा था, सुनीता का सिर गोद में रखे अमित ने थोड़े कठोर स्वर में मैनेजर से कहा – "प्लीज . . . प्लीज मिस्टर मैनेजर, सुनीता

अभी अभी होश में आयी है — इसे उस घटना की याद मत दिलाओ — जिससे 'शॉक' लगा है, मामला और बिगड़ सकता है।"

उसे अजीब नजरों से घूरते मैनेजर ने कहा — "सॉरी।"

"प्लीज, हमें अकेला छोड़ दो।"

"ओ. के.।" कहने के बाद उसने इलैक्ट्रीशियन से पूछा — "कितना रह गया?"

"बस हो गया।" उसने कैबिनेट लगाते हुऐ कहा।

सुनीता भी मानो समझ चुकी थी उसे ये बातें अन्य लोगों के सामने नहीं करनी चाहियें।

कुछ देर बाद मैनेजर और इलैक्ट्रीशियन चले गये।



"हां, बोल अमित।" अमर सिंह ने फोन पर बुरी तरह बेचैन स्वर में पूछा — "कहां से बोल रहा है?"

अमित की आवाज उभरी — "होटल के नजदीक एक एस. टी. डी. बूथ से।"

"मैं बारह बजे से तेरे फोन का इन्तजार करता - करता पागल हो गया — सारी रात नहीं सो सका, हजार तरह की शंकायें,कचोटती रहीं — इधर से होटल में फोन करने की तुक नहीं थी और तू . . . अब, सुबह के आठ बजे फोन कर रहा है?"

"रात भर मौका ही कहां मिला?"

"खैर छोंड़।" अमर सिंह परिणाम जानने के लिये मरा जा रहा था — "काम हो गया?"

झुझंला उठा अमित — "कहां हो गया?"

"क्या मतलब?" अमर सिंह उछल पड़ा — "क्या वह टाईम पर होटल नहीं पहुंची?"

"आ तो गई थी मगर . . ."

"मगर?" अमर सिंह उद्वेलित था, चेहरे पर निराशा फैल चुकी थी।

अमित बताता चला गया।

सुनीता के होटल में आगमन से लेकर, मैनेजर और इलैक्ट्रीशियन के जाने तक का वृतांत सुनाने के बाद उसने कहा – "सारी रात सुनीता एंक ही राग अलापती रही – सुबह वो पांच बजे मुश्किल से सोई है, सोती छोड़ कर फोन करने आया हूं – मैनेजर ने अगर टी. वी. की खराबी और सुनीता के मुंह से निकले लफ्जों का लिंक जोड़ लिया होगा तो समझ गया होगा कमरे मे किसकी हत्या का जाल बिछा था।"

"ये सब तेरी बेवकूफी से हुआ।" अमर सिंह हत्थे से उखड़ गया था।

"म – मेरी बेवकूफी?"

"और नहीं तो क्या – स्विच से करेंट खत्म करने के लिये केबिनेट खोलने की जरूरत क्या थी ?"

"आप समझ नहीं रहे डैडी, नये हालात में . . ."

"क्या हो गया था हालात को, ऐसी कौन सी आफत टूट पडी थी कि तुझे इरादा चेंज करना पड़ा, लिफ्ट में विनाश की शंक्ल से मिलता जुलता आदमी ही तो मिल गया था। वह जरूरत से ज्यादा डर गयी --बेहोश हो गयी मैनेजर और डाक्टर कमरे में आ गये और फिर चले भी गये -- ये तो और ज्यादा आदर्श स्थिति बन गयी थी बेवकूफ। वे सब गवाह होते कि सुनिता 'नर्वस' अवस्था में थी। टी. वी. में अचानक करेंट आ गया और वह मर गयी।"

"म–मैंने सोचा. . . .

"खाक सोचा तूने।" अमर सिंह उसकी सुनने को तैयार न था – "हुए हुआए काम पर पानी फेर दिया।"

नर्वस अमित ने पूछा – "अब क्या करूं?"

"करेगा क्या, मौका हाथ से निकल चुका है – इतना ही नहीं, ऐसी बेवकूफी भी कर चुका है कि खुदा - न - खास्ता अगर सुनीता को इस टूर में खुद भी कुछ हो जाये तो जेल की चारदीवारी के अन्दर चक्की पीसता नजर आयेगा।"

"मैं समझा नहीं।"

अमरसिंह की इच्छा अपने बाल नोंच डालने की हो रही थी – बड़ी मुश्किल से उसने खुद को नियंत्रित किया और थोड़े

शान्त स्वर में बोला – "जितना तूने बताया, उसे सुनकर दावे के साथ कह सकता हूं – मैनेजर अगर यह समझ नहीं गया है कि तू टी. वी. के करेंट से सुनीता को मार डालना चाहता था तो समझने के करीब जरूर पहुंच चुका है – इन हालात में अगर किसी भी तरह शिमला में सुनीता मर गयी तो तू धरा जायेगा, मैनेजर पुलिस को बयान देगा और पुलिस पलक झपकते ही लिंक जोड़ लेगी अत : सुनीता के मर्डर की बात इस तरह जहन से निकाल दे जैसे कभी सोची नहीं थी – पत्नी को खूब प्यार करने वाले पति की तरह घूम – फिर, मौज ले और प्रोग्राम के मुताबिक वापस आ जा।"

"ओ. के.।"

अमर सिंह ने हारे हुए जुआरी की तरह रिसीवर क्रेडिल पर पटक दिया।



उस वक्त ग्यारह बज रहे थे जब अमित और सुनीता 'कुफरी' जाने के लिये कमरे से निकले।

अमित ने लगभग जबरदस्ती तैयार किया था सुनीता को – यह कह कर कि अगर सारे दिन कमरे में पड़ी-पड़ी विनाश के बारे में सोचती रही तो दिमाग खराब हो जायेगा – सुनीता को बात जंची तो थी फिर भी, बेमन से तैयार हुई।

उस वक्त वे लिफ्ट के नजदीक खड़े थे।

लिफ्ट फर्स्ट फ्लोर पर थी।

अमित ने उसे ऊपर बुलाने के लिये स्विच दबाया और जेब से सिगरेट लाईटर निकाल लिया।

सुनीता की आंखे बोर्ड पर जमी थीं।

दो नम्बर से लाईट ऑफ हुई।

जाहिर था, लिफ्ट तीसरी मंजिल की तरफ आ रही है।

सुनीता की आंखें 'लिफ्ट वे' पर जम गई।

अमित उस वक्त गर्दन झुकाये सिगरेट सुलगाने में व्यस्त था जब सुनीता को पहले लिफ्ट की छत, फिर ऊपरी पोर्शन और

"अरे?" कमरे में आवाज गूंजी – "आप वहां क्या कर रहे हैं मिस्टर अमित?"

अमित ने इस तरह चौंक कर दरवाजे की तरफ देखा जैसे चोरी करता रंगे हाथों पकड़ा गया हो।

पलक झपकते ही जिस्म पसीने से भरभरा उठा।

कमरे में दाखिल होते मैनेजर ने पूछा – "टी.वी. में कोई खराबी है क्या?"

"ह –हां।" बौखलाहट में इसके अलावा कह भी क्या सकता था – "म – मैने ऑन किया तो चला ही नहीं।"

"कमाल है।" प्लग के नजदीक पहुंचता मैनेजर हंसा – "प्लग तो आपने निकाल रखा है,चलेगा कैसे?"

"प्लग केबिनेट खोलने से पहले निकाला था ताकि करेंट लगने का खतरा न रहे।"

"देखते हैं।" कहने के साथ मैनेजर ने प्लग वापस लगा दिया।

अमित को अपने आप पर जबरदस्त 'खीझ' हो रही थी – अब उसे सूझ रहा था, यह काम कमरा बंद करके करना चाहिये था।

उधर मैनेजर टी.वी. का स्विच ऑन करने के लिये बढ़ा, इधर अमित हिस्टीरियाई अंदाज में चिल्ला उठा – "नही . . . उसे मत छेड़ना।"

मैनेजर ने चौंककर उसकी तरफ देखा।

अमित की हालत ही ऐसी थी कि मैनेजर को पूछना पड़ा – "क्या बात है मिस्टर अमित, तबियत तो ठीक है?"

"उ – उसमें करेंट है।" अमित ने कहा।

"काहे में?"

"स – स्विच में . . टी.वी. के ऑन – ऑफ स्विच में।"

"स्विच में करेन्ट?" मैनेजर की आंखें गोल हो गयीं – "स्विच में कहां से करेंट आ गया?"

"प – पता नहीं – म . . मगर मैंने इसे ऑन करने की कोशिश की थी, बड़ी जोर से झटका मारा।" इस एहसास ने अमित के छक्के छुड़ा दिये कि यदि वह रोक न लेता तो मैनेजर

मरने वाला था, मुंह में जो अनाप – शनाप आया बकता चला गया – "त – तभी तो प्लग निकाल कर चैक करने की कोशिश कर रहा था कि क्या गड़बड़ है?"

"ऐसा था तो रिसेप्शन पर फोन करना चाहिये था, होटल में चौबिस घंटे एक इलैक्ट्रीशियन मौजूद रहता है।"

"म – मैने सोचा कोई छोटा मोटा फाल्ट होगा।"

"क्या आप टी.वी. की मशीनरी के बारे में जानते हैं?"

"नहीं।"

"तब तो केबिनेट खोलने की बात ही दिमाग में नहीं आनी चाहिये थी।" कहने के साथ वह फोन की तरफ बढ़ा, रिसेप्शन के नम्बर डायल करता बोला –"बगैर जानकारी के इलैक्ट्रिक के आईटम्स को छेड़ना मूर्खता ही नहीं, खतरनाक भी होता है।"

अमित पर कुछ कहते न बन पड़ा।

रिसेप्शन से सम्बन्ध स्थापित होते ही उसने रूम नम्बर बताकर इलैक्ट्रीशियन भेजने के लिये कहा और रिसीवर क्रेडिल पर रखता हुआ बोला – "इस फ्लोर का निरीक्षण करने के बाद 'ग्राउन्ड' पर स्थित अपने ऑफिस की तरफ लौट रहा था कि दिमाग में विचार आया – 'जाता-जाता देख जाऊं मिसेज सुनीता को होश आया या नहीं'?"

"अभी तक तो नही।" अमित ने विषय-बदलने में भलाई समझी।

मैनेजर ने पूछा – "सुनीता जी मिस्टर खन्ना की बेटी हैं न?"

"ह – हां।"

"तब तो आप वही अमित हुए जिन्होंने एक जमाने में 'होटलों में' गाने के क्षेत्र में तहलका मचाया था?"

अपनी तारीफ सुनकर थोड़ा खुश हुआ अमित, बोला –"तुमने ठीक पहचाना।"

"अब क्यों नहीं गाते?"

"श्रीमति जी की इच्छा नहीं है।" अमित के होठों पर हल्की मुस्कान उभरी।

"ठीक भी है, इतनी बड़ी कंस्ट्रक्शन कम्पनी के मालिक

बनने के बाद आपको ये छोटा काम करने की जरूरत भी क्या है?"

मैनेजर की बात सुनकर उसे 'खीझ' भी हुई और 'जलन' भी — खीझ इसलिये क्योंकि उसने उसके काम को छोटा कहा था और जलन इसलिये क्योंकि यह वही जानता था 'खन्ना बिल्डर्स' में उसे कितना मालिकाना हक हासिल है — उसने प्रतिक्रिया जाहिर नहीं की, विषय को थोड़ा चेंज करके बोला —"आपने कैसे जाना कि सुनीता . . .।"

"डाऊट तो आज सुबह . . यानी तभी से था जब से आप होटल में पधारे — दरअसल शिमला में मिस्टर खन्ना का पसंदीदा होटल यही था — वे जब भी आते, हमारे ही यहां ठहरते — एक बार सुनीता जी भी साथ आई थीं — काफी पुरानी बात हो गयी — उस वक्त ये छोटी थीं — उम्र के साथ शक्ल में थोड़ा चेंज तो आता ही है — एड्रेस वाले कालम में जब आपने राजनगर का एड्रेस भरा तो मैं कुछ 'कन्फर्म' भी हुआ लेकिन टोकना मुनासिब न समझा, अब मौका मिला तो . . .

"यस सर।" कमरे में दाखिल होते इलैक्ट्रीशियन ने उसकी बात काट दी।

मैनेजर ने कहा — "टी.वी. के ऑन-ऑफ स्विच में करेंट है, चैक करो।"

"स्विच में करेंट?" हौले से चौंकता हुआ वह टी.वी. की तरफ बढ़ा।

"वैसे जो आज हुआ वह सुनीता जी की उन दिनों की नेचर से मेल नहीं खाता।"

"मैं समझ नहीं पाया आप क्या कहना चाहते हैं?"

"डाक्टर ने बताया, ऐसा 'शॉक' अक्सर ज्यादा 'सेंसेटिव' लोगों को लगता है — अगर मैं उन दिनों को याद करूं तो दावे के साथ कह सकता हूं, कम से कम सुनीता जी किसी मनचले द्वारा अपना पीछा किये जाने से 'नर्वस' होने वाली नहीं हैं — अपने डैडी के ठीक विपरीत बड़ी बोल्ड और बिंदास लड़की थीं ये — मिस्टर खन्ना जहां मिलनसार, भावुक और दयालु आदमी थे वहीं, न ये अपने से नीचे के लोगों से बात करना पसंद करती थीं, न किसी की परवाह करती थीं — जरा सी गलती पर इन्होंने 'हैड

वेटर' के गाल पर तमाचा जड़ दिया था – ऐसी लड़की भला छोटी – मोटी बात पर इतना 'शॉक' कैसे खा सकती है?"

"उम्र के साथ नेचर में भी चेंज आता है।" अमित ने कहा।

"करेक्ट।" मैनेजर बोला – "वैसे भी, जैसी घटनायें सुनीता जी के साथ घटी हैं – वे आदमी को गम्भीर और परिपक्व बना देती हैं।"

"मतलब?"

"मैंने अखबार में पढ़ा था, इनके पहले पति ने शादी के कुछ दिन बाद सुसाइड . . ."

"टी.वी. किसी ने छेड़ा है?" इलैक्ट्रीशियन ने पूछा।

मैनेजर ने कहा – "मिस्टर अमित छेड़खानी कर रहे थे।"

"कर नहीं पाया था।" अमित जल्दी से बोला – "कैबिनेट हटाते ही तुम आ गये।"

"फिर ये गलत कनेक्शन किसने क्रर दिये?"

"म – मुझे क्या पता?" अमित हकलाया।

मैनेजर ने पूछा – "गड़बड़ क्या है?"

"गड़बड़?" मशीनरी के अन्दर झांकते इलैक्ट्रीशियन ने कहा – "मौत का सामान हुआ पड़ा है यहां तो – गलती से अगर किसी ने टी.वी. ऑन करने की कोशिश की होती तो मौत निश्चित थी।"

"ऑन–आफ स्विच ने झटका मारा तो था मुझे?"

"झटका?" इलैक्ट्रीशियन ने चौंककर उसकी तरफ देखा – "केवल झटका मारा साहब?"

"हां।"

"बहुत खुशनसीब हैं आप।"

"मतलब?"

"मेरे हिसाब से स्विच को 'टच' करने वाला चिपक जाना चाहिये था और टी.वी. उसे तभी छोड़ता जब . . ."

"क्या बकवास किये जा रहे हो?" मैनेजर ने डांटकर उसकी बात काटी – "जो कमी है उसे दुरुस्त करो।"

इलैक्ट्रीशियन चुप हो गया।

"ऐसी ही बेवकूफियों के कारण मुजरिम पकड़े जाते हैं।"

"क्या मतलब ?"

"जरा सोच, पिछले एक साल से गांव छोड़ कर तुम लोगों के साथ विला में रह रहा हूं – आज-कल तुम शादी की चौथी वर्षगांठ मनाने शिमला आये हुऐ हो – लोगों की निगाह में मैं विला में हूं – अगर उस रात विला में न हुआ जिस रात सुनीता को यहां मरना है तो बैठे बिठाये लोगों के शक के दायरे में नहीं आ जाऊंगा मैं ?"

"इस बारे में क्या सोचा है ?"

"अमर सिंह सोचता नहीं रहता बर्खुरदार, काम को अंजाम दिया करता है – मैं केवल एक घंटा पहले शिमला में लैंड करने वाली फ्लाईट से पहुंचा हूं और ठीक एक घंटे बाद वाली फ्लाईट से उड़ कर वापस राजनगर पहुंच जाऊंगा – ठीक बारह बजे विला पर फ़ोन करके तू मुझे सुनीता की मृत्यु का समाचार दे सकता है।"

"इस यात्रा का रिकार्ड ?"

"कभी किसी को नहीं मिलेगा, रामलाल के नाम से आया हूं श्याम सुन्दर के नाम से वापस जाऊंगा।"

अमित कह उठा –"हर प्वॉइन्ट पर अच्छी तरह गौर किया लगता है आपने!"

"तभी तो विश्वास है, केवल वह होगा जो मैंने सोचा है।" कहने के बाद अमर सिंह ने पुनः रिस्टवॉच की तरफ देखा और बोला – "चलता हूं –इधर सुनीता के आने का टाईम हो रहा है उधर लेट हुआ तो फ्लाईट मिस हो जायेगी!"

अमित चुप रहा।

अमर सिंह ने एक नजर टी.वी. पर डाली और दरवाजे की तरफ बढ़ता बोला –"मेरे जाते ही तुझे कपड़े उतार कर बाथरूम में घुस जाना है 'जुबान सम्भाल के' खत्म होने से पहले बाहर नहीं निकलना, तब तक सुनीता मर चुकेगी।"

अमित के मुंह से बोल न फूट सका तो स्वीकृति से गर्दन हिलाई।

रिस्टवॉच पर नजर डालती सुनीता तेजी से लिफ्ट में दाखिल हुई।

उसे 'जुबान सम्भाल के' का एक सीन भी बगैर देखे निकल जाना गवारा नहीं था – लिफ्ट का गेट बंद करने के लिये स्विच की तरफ हाथ बढ़ाया ही था कि 'धक्क' से रह गयी।

सामने से विनाश लिफ्ट की तरफ भागा चला आ रहा था।

उसे रुकने का इशारा भी किया था विनाश ने।

सुनीता को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ।

लगा, वह सपना देख रही है।

मगर नहीं।

वह सपना नहीं था।

सचमुच विनाश भागता हुआ लिफ्ट में दाखिल हुआ।

लिफ्ट रोके रखने के लिये उससे 'थैंक्यू' कहा और पूछा – "टू विच फ्लोर डू यू वांट टू गो?"

जवाब देने की स्थिति में थी कहां सुनीता . . . और होती भी कैसे . . . जो शख्स चार साल पहले उसकी आंखों के सामने मरा था बल्कि जिसे मारने वालों में वह खुद शामिल थी वह उसके नजदीक . . . बेहद नजदीक खड़ा ही नहीं था बल्कि उससे पूछ भी रहा था कि कौन सी मंजिल पर जाना है – पल भर में वह पसीने से सराबोर हो उठी।

चेहरा पीला जर्द पड़ गया।

सच्चाई ये है कि लिफ्ट में खड़ी खड़ी वह जूड़ी के मरीज की मानिन्द कांप रही थी।

अपनी बगल में साक्षात् विनाश का भूत खड़ा नजर आ रहा था उसे।

चेहरे-मोहरे, कद-काठी और आवाज तक में कोई अन्तर नहीं।

उसने 'ब्लू कलर' का सूट और आईने की तरह

चमचमाते काले जूते पहन रखे थे। टाई पर सुन्दर डायमड पिन और कोट पर गुलाब का लाल फूल लगा था।

सुनीता का दिमाग चकरा उठा — लिफ्ट भंवर की मानिन्द तेज़ी से घूमती नजर आई उसे — चक्कर खाकर गिरने वाली थी कि विनाश ने सम्भाला, झंझोड़ता हुआ चीखा — "क-क्या हुआ मैडम . . . क्या हुआ?"

इस एहसास ने तो सुनीता के छक्के ही छुड़ा दिये कि उसे इस वक्त विनाश ने पकड़ रखा है।

खुद को बड़ी मुश्किल से सम्भाला उसने।

छिटक कर दूर हटी।

लिफ्ट की एक दीवार का सहारा लिये वह थर-थर कांपती विनाश की तरफ देख रही थी।

आंखों में खौफ!

चेहरा मुर्दे के चेहरे जितना निस्तेज!

लाख प्रयासों के बावजूद मुंह से आवाज नहीं निकाल पा रही थी जबकि विनाश ने पूछा — "बात क्या है मैडम, आपकी तबियत तो ठीक है?"

"न . . . नहीं।" हलक से टूटे फूटे लफ्ज विस्फुटित हुये — "त . . . तुम जिन्दा नहीं हो सकते।"

"मैं . . मैं ?" विनाश चौंका — "क . . क्या बात कर रही हैं आप — आपके सामने जिन्दा खड़ा हूँ।"

"क . . . कौन हो?" भयाक्रांत सुनीता अचानक हिस्टीरियाई अंदाज़ में चिल्ला उठी — "कौन हो तुम?"

उलझ से गये युवक ने कहा — "अविनाश।"

"अ - वि - ना - श?" मुंह से निकलने वाला हर लफ्ज टूटा -फूटा था।

"क्या आप मुझे जानती हैं?"

सुनीता की जुबान तालू से जा चिपकी — बड़ी तेजी से उसके दिमाग में यह विचार कौंधा, अगर ये आदमी विनाश है तो उसे पहचान क्यों नहीं रहा और जब वही नहीं पहचान रहा तो वह क्या पागलपन कर रही है?

विनाश ने स्विच दबा कर लिफ्ट का गेट बंद किया।

हड़बड़ा कर सुनीता ने तीसरे फ्लोर का बटन दबा दिया।

लिफ्ट ने सफर शुरू किया।

होंठों पर हल्की मुस्कान लिये युवक ने कहा – "लगता है, मेरी शक्ल आपके किसी परिचित से मिलती है?"

"ह – हां।" मुंह से यही एक मात्र लफ्ज बाहर आ सका।

"और शायद वह मर चुका है?"

"ह – हां।"

"क्या नाम था उसका?"

"व - व - विक्रम।" सुनीता असली नाम बताते-बताते 'चेंज' कर गई।

"कैसे डैथ हो गयी उनकी?"

"ए-एक्सीडेन्ट में।" सुनीता को मुंह से एक-एक लफ्ज निकालने में दिक्कत हो रही थी।

"ओह।" कम से कम सुनीता की नजर में साक्षात् विनाश ने पूछा – "आपके कौन लगते थे?"

"द – दूर के रिश्ते में द – देवर।"

"क्या उनकी शक्ल मुझसे इतनी मिलती थी कि आप."

वाक्य पूरा होने से पहले तीसरी मंजिल आ गई।

लिफ्ट रूकी।

और दरवाजा खुलते ही सुनीता इस तरह भाग पड़ी जैसे सैकड़ों भूत पीछे लगे हों – एक बार भी पलटकर उसने लिफ्ट की तरफ नहीं देखा – वह अपने कमरे की तरफ भाग रही थी . . . भागती जा रही थी।

बेतहाशा . . . पी. टी. उषा से कहीं तेज।

●

"अमित . . . अमित।" अर्धविक्षिप्त अवस्था में चीखती सुनीता ने बाथरूम का दरवाजा पीट डाला।

हालांकि सुनीता की पहली ही आवाज और दरवाजा पीटे जाने ने अमित को आकर्षित कर लिया था मगर, जवाब नहीं दिया।

जिस्म पर केवल अण्डरवियर पहने वह शावर के नीचे खड़ा था।

ऐसा क्यों कर रही है सुनीता?

कमरे में आते ही टी. वी. ऑन क्यों नहीं किया?

अपना पसंदीदा प्रोग्राम क्यों नहीं देखा?

कहीं कोई गड़बड़ है।

लेकिन क्या ?

कहीं ताड़ तो नहीं गई कमरे में उसकी हत्या का जाल बिछा था?

जरूर कोई अनहोनी हुई है – तभी तो बार-बार पागलों की तरह चिल्लाती जुनूनी अवस्था में दरवाजा पीट रही है – अब दरवाजा न खोलना इस बात को दर्शा देना था कि वह जानबूझकर सारी आवाजों को अनसुना कर रहा है।

शावर के चलते ही चलते एक बार उसने ऊंची आवाज में पूछा – "क्या है सुनीता?"

"दरवाजा खोलो अमित . . . जल्दी . . . प्लीज।" सुनीता गिड़गिड़ाई।

"क्या मुसीबत है यार?" उसने शावर बंद किया – "मैं नहा रहा हूं।"

"उफ्फ!" सुनीता ने तोड़ डालने वाले अंदाज में दरवाजा भड़भड़ाया – "दरवाजा खोलो।"

"आ रहा हूं।" अमित ने टालना चाहा – "तुम तब तक टी. वी. देखो – 'जुबान सम्भाल के' आ रहा होगा।"

सुनीता जैसे पागल हो गयी, चीखी – "खोलो . . . खोलो अमित।"

अंततः अमित को दरवाजा खोलना पड़ा, खोलने के साथ बिफरा – "आखिर बात क्या है?"

"व - वह जिन्दा है।" कहती हुई सुनीता अमित के गीले जिस्म की परवाह किये बगैर उससे लिपट गयी।

तेज आंधी के बीच फंसे सूखे पत्ते की तरह कांप रही थी वह।

सांस धौंकनी की मानिन्द चल रही थी।

मजबूर अमित को अपनी बांहों में समेट कर पूछना पड़ा

— "कौन जिन्दा है?"

"व - विनाश!"

"क - क्या?" अमित उछल पड़ा।

"हां अमित।" वह उससे अलग होकर उसके चेहरे की तरफ देखती कह उठी — "व - वो मुझे अभी-अभी लिफ्ट में मिला था।"

अमित ने गौर से उसका चेहरा देखा।

बिल्कुल नहीं लगता था उसके जिस्म में खून की एक भी बूंद है — ऐसी हालत में नजर आ रही थी वह जैसे भूतों से जान बचाकर भागी चली आ रही हो — अमित उसके चेहरे के फीकेपन और आंखों की निस्तेजी को देखता हुआ बोला — "बात क्या है, इतनी डरी हुई क्यों हो तुम?"

"ब — बताया तो है, लिफ्ट में विनाश मिला था।"

ठहाका लगा उठा अमित — "भूत मिला होगा उसका?"

"न — नहीं — वह जिन्दा था, उसने छुआ था मुझे मगर . . . घुटला रहा था, दर्शा रहा था जैसे मुझे जानता न हो — अपना नाम अविनाश बताया — कितना मिलता-जुलता नाम है मगर नहीं . . . मैं नहीं मान सकती वह कोई और था — दो आदमियों की शक्ल और कद-काठी इस हद तक एक नहीं हो सकती . . . और शक्ल ही क्यों, आवाज तक वही थी — हू-ब-हू वही — नहीं अमित, वह वही था — और कोई हो ही नहीं सकता . . . विनाश जिन्दा है . . . विनाश जिन्दा है।"

"पागल हो गई क्या?" अमित झल्ला उठा — "कैसे जिन्दा हो सकता है विनाश — पानी से भरे टब में पड़ी उसकी लाश हमने एक बार नहीं, अनेक बार देखी है — हम ही ने क्यों केकड़ा ने देखी है — विला के नौकरों ने देखी है — पुलिस वालों ने देखी है — सबके सामने सील करके उसे पोस्टमार्टम के लिये भेजा गया — उसके बाद अंतिम संस्कार किया गया और तुम कहती हो वह जिन्दा है . . . लिफ्ट में मिला था . . . कैसे हो सकता है ये?"

"म — मुझे नहीं पता कैसे हुआ, मगर हुआ है — वह ज़िन्दा है . . . वह जिन्दा है अमित।" पागलों की मानिन्द बड़बड़ाती वह उसके जिस्म पर आ गिरी। अमित सम्भाल न लेता

तो बाथरूम के फर्श पर गिरती।

सस्पैंस और खौफ की ज्यादती के कारण सुनीता बेहोश हो चुकी थी।

●

अमित बड़ी मुश्किल से सुनीता को बाथरूम से बेड तक ला सका — रिसेप्शन पर फोन करके किसी डाक्टर को भेजने के लिये कहा — जब तक डाक्टर, उसके साथ मैनेजर और होटल स्टाफ के अन्य दो व्यक्ति आये तब तक वह न केवल गीले जिस्म को पोंछ चुका था बल्कि कपड़े भी पहन चुका था।

चैकअप करने के बाद डाक्टर ने कहा — "कोई खास बात नहीं है, किसी शॉक के कारण बेहोश हो गयी हैं।"

अमित पर कुछ कहते न बन पड़ा।

मैनेजर ने पूछा — "हुआ क्या था मिस्टर अमित?"

"मुझे कुछ खास नहीं पता।" अमित ने 'विनाश' का जिक्र करना मुनासिब नहीं समझा — "माल रोड से लौटी और लगी जोर-जोर से बाथरूम का दरवाजा पीटने — मैं उस वक्त नहा रहा था — दरवाजा खोला तो मेरे ऊपर गिरकर बेहोश हो गयी।"

"कोई बात नहीं।" डाक्टर ने कहा — "कई लोग . . . विशेष रूप से महिलायें इतनी 'सैंसेटिव' होती हैं कि छोटी सी घटना से बुरी तरह डर जाती हैं — मुमकिन है, किसी मनचले द्वारा पीछा करने से ही नर्वस हो गयी हों।"

अमित पुनः चुप्पी साध गया।

"चिन्ता की बात नहीं है — इंजैक्शन लगा दिया है, जल्दी होश आ जायेगा।" कहने के बाद डाक्टर चला गया।

मैनेजर और स्टाफ के लोग भी।

अमित के दिमाग को अनेक सवालों ने जकड़ लिया।

सुनीता के बेहोश होने का मतलब था उस बात में कुछ न कुछ परसेन्ट सच्चाई है जो वह कह रही थी।

मगर . . . . उसमें सच्चाई कैसे हो सकती है?

कैसे जिन्दा हो सकता है विनाश?

जरूर उसने लिफ्ट में किसी ऐसे आदमी को देखा है जिसकी शक्ल विनाश से दस - बीस परसेन्ट मिलती होगी —'इस हद तक' दो आदमियों की शक्लें आमतौर पर मिल जाती हैं— तभी तो बम्बई में लगभग हर आर्टिस्ट का 'डुप्लीकेट' पहुंच जाता है।

अमित को अपना विचार जंचा।

यही सोच कर संतुष्ट हो गया कि सुनीता ने विनाश से मिलता जुलता आदमी देखा है।

'लेकिन . . . ।' दिमाग में नया विचार कौंधा — ' क्या नये हालात में सुनीता का मरना ठीक होगा?

अमित की अंतरात्मा ने कहा —'नहीं।'

'सुनीता के मरने पर बखेड़ा खड़ा हो सकता है।' ये बात शायद उसके अन्दर छुपे खौफ ने कही थी —'अभी डाक्टर आया था, होटल स्टाफ के अन्य दो लोग आये थे — सब गवाह हैं कि वह 'शॉक' से बेहोश हुई थी — कुछ देर बाद या सुबह को अगर इन लोगों को सुनीता की लाश मिली तो निश्चय ही मामला संदिग्ध नजर आयेगा — इन्वेस्टीगेटर इसके बेहोश होने तक की बखिया उधेड़ेगा — पता नहीं उसके पीछे क्या निकले और फिर . . ये सवाल भी उठ सकता है — 'ऐसी अवस्था' में सुनीता ने टी.वी. क्यों ऑन किया — उसने क्यों नहीं?

अमित को लगा, वर्तमान हालात में सुनीता की मौत उसे फंसा देगी। निश्चय किया, कम से कम आज रात सुनीता नहीं मरनी चाहिये।

'मगर।' उसे ध्यान आया —'टी.वी. के स्विच में अभी तक करेंट है।'

वह उठा।

सबसे पहले 'प्लग' विद्युत लाईन से अलग किया।

फिर . . केबिनेट खोला।

इरादा उन तारों को अलग करके, जिनके मिले होने के कारण करेंट स्विच में प्रवाहित हो रहा था, पुनः उन तारों से जोड़ने का था जिनसे अमरसिंह ने अलग किये थे — छेड़खानी करने हेतु अभी झुका ही था —

"अरे?" कमरे में आवाज गूंजी – "आप वहां क्या कर रहे हैं मिस्टर अमित?"

अमित ने इस तरह चौंक कर दरवाजे की तरफ देखा जैसे चोरी करता रंगे हाथों पकड़ा गया हो।

पलक झपकते ही जिस्म पसीने से भरभरा उठा।

कमरे में दाखिल होते मैनेजर ने पूछा – "टी.वी. में कोई खराबी है क्या?"

"ह –हां।" बौखलाहट में इसके अलावा कह भी क्या सकता था – "म – मैने ऑन किया तो चला ही नहीं।"

"कमाल है।" प्लग के नजदीक पहुंचता मैनेजर हंसा – "प्लग तो आपने निकाल रखा है,चलेगा कैसे?"

"प्लग केबिनेट खोलने से पहले निकाला था ताकि करेंट लगने का खतरा न रहे।"

"देखते हैं।" कहने के साथ मैनेजर ने प्लग वापस लगा दिया।

अमित को अपने आप पर जबरदस्त 'खीझ' हो रही थी – अब उसे सूझ रहा था, यह काम कमरा बंद करके करना चाहिये था।

उधर मैनेजर टी.वी. का स्विच ऑन करने के लिये बढ़ा, इधर अमित हिस्टीरियाई अंदाज में चिल्ला उठा – "नही . . . उसे मत छेड़ना।"

मैनेजर ने चौंककर उसकी तरफ देखा।

अमित की हालत ही ऐसी थी कि मैनेजर को पूछना पड़ा – "क्या बात है मिस्टर अमित, तबियत तो ठीक है?"

"उ – उसमें करेंट है।" अमित ने कहा।

"काहे में?"

"स – स्विच में . . टी.वी. के ऑन – ऑफ स्विच में।"

"स्विच में करेन्ट?" मैनेजर की आंखें गोल हो गयीं – "स्विच में कहां से करेंट आ गया?"

"प – पता नहीं – म . . मगर मैंने इसे ऑन करने की कोशिश की थी, बड़ी जोर से झटका मारा।" इस एहसास ने अमित के छक्के छुड़ा दिये कि यदि वह रोक न लेता तो मैनेजर

मरने वाला था, मुंह में जो अनाप – शनाप आया बकता चला गया – "त – तभी तो प्लग निकाल कर चैक करने की कोशिश कर रहा था कि क्या गड़बड़ है?"

"ऐसा था तो रिसेप्शन पर फोन करना चाहिये था, होटल में चौबिस घंटे एक इलैक्ट्रीशियन मौजूद रहता है।"

"म – मैने सोंचा कोई छोटा मोटा फाल्ट होगा।"

"क्या आप टी.वी. की मशीनरी के बारे में जानते हैं?"

"नहीं।"

"तब तो केबिनेट खोलने की बात ही दिमाग में नहीं आनी चाहिये थी।" कहने के साथ वह फोन की तरफ बढ़ा, रिसेप्शन के नम्बर डायल करता बोला –"बगैर जानकारी के इलैक्ट्रिक के आईटम्स को छेड़ना मूर्खता ही नहीं, खतरनाक भी होता है।"

अमित पर कुछ कहते न बन पड़ा।

रिसेप्शन से सम्बन्ध स्थापित होते ही उसने रूम नम्बर बताकर इलैक्ट्रीशियन भेजने के लिये कहा और रिसीवर क्रेडिल पर रखता हुआ बोला – "इस फ्लोर का निरीक्षण करने के बाद 'ग्राउन्ड' पर स्थित अपने ऑफिस की तरफ लौट रहा था कि दिमाग में विचार आया – 'जाता-जाता देख जाऊं मिसेज सुनीता को होश आया या नही'?"

"अभी तक तो नही।" अमित ने विषय बदलने में भलाई समझी।

मैनेजर ने पूछा – "सुनीता जी मिस्टर खन्ना की बेटी हैं न?"

"ह – हां।"

"तब तो आप वही अमित हुए जिन्होंने एक जमाने में 'होटलों में' गाने के क्षेत्र में तहलका मचाया था?"

अपनी तारीफ सुनकर थोड़ा खुश हुआ अमित, बोला – "तुमने ठीक पहचाना।"

"अब क्यों नहीं गाते?"

"श्रीमति जी की इच्छा नहीं है।" अमित के होठों पर हल्की मुस्कान उभरी।

"ठीक भी है, इतनी बड़ी कंस्ट्रक्शन कम्पनी के मालिक

बनने के बाद आपको ये छोटा काम करने की जरूरत भी क्या है?"

मैनेजर की बात सुनकर उसे 'खीझ' भी हुई और 'जलन' भी — खीझ इसलिये क्योंकि उसने उसके काम को छोटा कहा था और जलन इसलिये क्योंकि यह वही जानता था 'खन्ना बिल्डर्स' में उसे कितना मालिकाना हक हासिल है — उसने प्रतिक्रिया जाहिर नहीं की, विषय को थोड़ा चेंज करके बोला —"आपने कैसे जाना कि सुनीता . . .।"

"डाऊट तो आज सुबह . . यानी तभी से था जब से आप होटल में पधारे — दरअसल शिमला में मिस्टर खन्ना का पसंदीदा होटल यही था — वे जब भी आते, हमारे ही यहां ठहरते — एक बार सुनीता जी भी साथ आई थीं — काफी पुरानी बात हो गयी — उस वक्त ये छोटी थीं — उम्र के साथ शक्ल में थोड़ा चेंज तो आता ही है — एड्रेस वाले कालम में जब आपने राजनगर का एड्रेस भरा तो मैं कुछ 'कन्फर्म' भी हुआ लेकिन टोकना मुनासिब न समझा, अब मौका मिला तो . . .

"यस सर।" कमरे में दाखिल होते इलैक्ट्रीशियन ने उसकी बात काट दी।

मैनेजर ने कहा — "टी.वी. के ऑन-ऑफ स्विच में करेंट है, चैक करो।"

"स्विच में करेंट?" हौले से चौंकता हुआ वह टी.वी. की तरफ बढ़ा।

"वैसे जो आज हुआ वह सुनीता जी की उन दिनों की नेचर से मेल नहीं खाता।"

"मैं समझ नहीं पाया आप क्या कहना चाहते हैं?"

"डाक्टर ने बताया, ऐसा 'शॉक' अक्सर ज्यादा 'सेंसेटिव' लोगों को लगता है — अगर मैं उन दिनों को याद करूं तो दावे के साथ कह सकता हूं, कम से कम सुनीता जी किसी मनचले द्वारा अपना पीछा किये जाने से 'नर्वस' होने वाली नहीं हैं — अपने डैडी के ठीक विपरीत बडी बोल्ड और बिंदास लड़की थीं ये — मिस्टर खन्ना जहां मिलनसार, भावुक और दयालु आदमी थे वहीं, न ये अपने से नीचे के लोगों से बात करना पसंद करती थीं, न किसी की परवाह करती थीं — जरा सी गलती पर इन्होंने हैड

वेटर' के गाल पर तमाचा जड़ दिया था – ऐसी लड़की भला छोटी – मोटी बात पर इतना 'शॉक' कैसे खा सकती है?"

"उम्र के साथ नेचर में भी चेंज आता है।" अमित ने कहा।

"करेक्ट।" मैनेजर बोला – "वैसे भी, जैसी घटनायें सुनीता जी के साथ घटी हैं – वे आदमी को गम्भीर और परिपक्व बना देती हैं।"

"मतलब?"

"मैंने अखबार में पढ़ा था, इनके पहले पति ने शादी के कुछ दिन बाद सुसाइड . . ."

"टी.वी. किसी ने छेड़ा है?" इलैक्ट्रीशियन ने पूछा।

मैनेजर ने कहा – "मिस्टर अमित छेड़खानी कर रहे थे।"

"कर नहीं पाया था।" अमित जल्दी से बोला – "कैबिनेट हटाते ही तुम आ गये।"

"फिर ये गलत कनेक्शन किसने कर दिये?"

"म – मुझे क्या पता?" अमित हकलाया।

मैनेजर ने पूछा – "गड़बड़ क्या है?"

"गड़बड़?" मशीनरी के अन्दर झांकते इलैक्ट्रीशियन ने कहा – "मौत का सामान हुआ पड़ा है यहां तो – गलती से अगर किसी ने टी.वी. ऑन करने की कोशिश की होती तो मौत निश्चित थी।"

"ऑन–आफ स्विच ने झटका मारा तो था मुझे?"

"झटका?" इलैक्ट्रीशियन ने चौंककर उसकी तरफ देखा – "केवल झटका मारा साहब?"

"हां।"

"बहुत खुशनसीब हैं आप।"

"मतलब?"

"मेरे हिसाब से स्विच को 'टच' करने वाला चिपक जाना चाहिये था और टी.वी. उसे तभी छोड़ता जब . . ."

"क्या बकवास किये जा रहे हो?" मैनेजर ने डांटकर उसकी बात काटी – "जो कमी है उसे दुरूस्त करो।"

इलैक्ट्रीशियन चुप हो गया।

अपना काम करने लगा वह।

अमित को भी लगा, यदि बात बढ़ाई तो सवालों के जवाब देने उसी को भारी पड़ेंगे। यह भी समझ रहा था कि मैनेजर ने इलैक्ट्रीशियन को क्यों डपट दिया है – उसे डर था, कहीं अमित ही उस पर न चढ़ दौड़े।

कमरे में सन्नाटा छा गया।

इस सन्नाटे को सुनीता के हलक से निकलने वाली कराहों ने भंग किया।

तीनों का ध्यान एक साथ उसकी तरफ गया।

मैनेजर और अमित उसकी तरफ लपके जबकि इलैक्ट्रीशियन अपने काम में मशगूल हो गया। सुनीता की चेतना लौट रही थी।

"स - सुनीता - सुनीता।" कहते हुए अमित ने बैड पर बैठकर उसका सिर अपनी गोद में रख लिया।

कुछ देर बाद सुनीता ने आंखें खोलीं – अमित के चेहरे पर नजर पड़ते ही उसने राहत की सांस ली मगर अगले पल से चेहरा पुन : पीला पड़ने लगा, आंखों में आतंक के साये नजर आये, होठ फड़फड़ाये – "व - वो जिन्दा है, अमित . . . मेरा यकीन करो . . . मैने उसे देखा है।"

"खुद को सम्भालो सुनीता।" मैनेजर की मौजूदगी के एहसास ने अमित को थर्रा कर रख दिया –"ये क्या पागलपन है?"

"किसे देखा है आपने?" मैनेजर उस पर झुका – "कहां देखा है?"

"ल – लिफ्ट में – मुझे 'जुबान सम्भाल के' देखने की जल्दी थी – जैसे ही लिफ्ट के अन्दर घुसकर . . . "

"ओफ्फो . . . सुनती क्यों नहीं सुनीता?" अमित ने यह एहसास करते ही दहाड़कर उसकी बात काटी कि अगर उसने सुनीता को बोलने दिया तो मैनेजर सब कुछ समझ जायेगा – यदि वह सुनीता के प्रथम शब्दों का 'लिंक' टी.वी. की खराबी से जोड़ दे तो समझ सकता है कमरे में किसकी हत्या का जाल बिछा था, सुनीता का सिर गोद में रखे अमित ने थोड़े कठोर स्वर में मैनेजर से कहा – "प्लीज . . . प्लीज मिस्टर मैनेजर, सुनीता

अभी अभी होश में आयी है – इसे उस घटना की याद मत दिलाओ – जिससे 'शॉक' लगा है, मामला और बिगड़ सकता है।"

उसे अजीब नजरों से घूरते मैनेजर ने कहा – "सॉरी।"

"प्लीज, हमें अकेला छोड़ दो।"

"ओ. के.।" कहने के बाद उसने इलैक्ट्रीशियन से पूछा – "कितना रह गया?"

"बस हो गया।" उसने कैबिनेट लगाते हुऐ कहा।

सुनीता भी मानो समझ चुकी थी उसे ये बातें अन्य लोगों के सामने नहीं करनी चाहियें।

कुछ देर बाद मैनेजर और इलैक्ट्रीशियन चले गये।

●

"हां, बोल अमित।" अमर सिंह ने फोन पर बुरी तरह बेचैन स्वर में पूछा – "कहां से बोल रहा है?"

अमित की आवाज उभरी – "होटल के नजदीक एक एस. टी. डी. बूथ से।"

"मैं बारह बजे से तेरे फोन का इन्तजार करता - करता पागल हो गया – सारी रात नहीं सो सका, हजार तरह की शंकायें कचोटती रहीं – इधर से होटल में फोन करने की तुक नहीं थी और तू . . . . अब, सुबह के आठ बजे फोन कर रहा है?"

"रात भर मौका ही कहां मिला?"

"खैर छोड़।" अमर सिंह परिणाम जानने के लिये मरा जा रहा था – "काम हो गया?"

झुझंला उठा अमित – "कहां हो गया?"

"क्या मतलब?" अमर सिंह उछल पड़ा – "क्या वह टाईम पर होटल नहीं पहुंची?"

"आ तो गई थी मगर . . ."

"मगर?" अमर सिंह उद्वेलित था, चेहरे पर निराशा फैल चुकी थी।

अमित बताता चला गया।

सुनीता के होटल में आगमन से लेकर, मैनेजर और इलैक्ट्रीशियन के जाने तक का वृतांत सुनाने के बाद उसने कहा — "सारी रात सुनीता एक ही राग अलापती रही — सुबह वो पांच बजे मुश्किल से सोई है, सोती छोड़ कर फोन करने आया हूं — मैनेजर ने अगर टी. वी. की खराबी और सुनीता के मुंह से निकले लफ्जों का लिंक जोड़ लिया होगा तो समझ गया होगा कमरे मे किसकी हत्या का जाल बिछा था।"

"ये सब तेरी बेवकूफी से हुआ।" अमर सिंह हत्थे से उखड़ गया था।

"म — मेरी बेवकूफी?"

"और नहीं तो क्या — स्विच से करेंट खत्म करने के लिये केबिनेट खोलने की जरूरत क्या थी?"

"आप समझ नहीं रहे डैडी, नये हालात में . . ."

"क्या हो गया था हालात को, ऐसी कौन सी आफत टूट पड़ी थी कि तुझे इरादा चेंज करना पड़ा, लिफ्ट में विनाश की शक्ल से मिलता जुलता आदमी ही तो मिल गया था। वह जरूरत से ज्यादा डर गयी —बेहोश हो गयी मैनेजर और डाक्टर कमरे में आ गये और फिर चले भी गये — ये तो और ज्यादा आदर्श स्थिति बन गयी थी बेवकूफ। वे सब गवाह होते कि सुनिता 'नर्वस' अवस्था में थी। टी. वी. में अचानक करेंट आ गया और वह मर गयी।"

"म—मैंने सोचा. . . .

"खाक सोचा तूने।" अमर सिंह उसकी सुनने को तैयार न था — "हुए हुआए काम पर पानी फेर दिया।"

नर्वस अमित ने पूछा — "अब क्या करूं?"

"करेगा क्या, मौका हाथ से निकल चुका है — इतना ही नहीं, ऐसी बेवकूफी भी कर चुका है कि खुदा - न - खास्ता अगर सुनीता को इस टूर में खुद भी कुछ हो जाये तो जेल की चारदीवारी के अन्दर चक्की पीसता नजर आयेगा।"

"मैं समझा नहीं।"

अमरसिंह की इच्छा अपने बाल नोंच डालने की हो रही थी — बड़ी मुश्किल से उसने खुद को नियंत्रित किया और थोड़े

शान्त स्वर में बोला – "जितना तूने बताया, उसे सुनकर दावे के साथ कह सकता हूं – मैनेजर अगर यह समझ नहीं गया है कि तू टी. वी. के करेंट से सुनीता को मार डालना चाहता था तो समझने के करीब जरूर पहुंच चुका है – इन हालात में अगर किसी भी तरह शिमला में सुनीता मर गयी तो तू धरा जायेगा, मैनेजर पुलिस को बयान देगा और पुलिस पलक झपकते ही लिंक जोड़ लेगी अत : सुनीता के मर्डर की बात इस तरह जहन से निकाल दे जैसे कभी सोची नहीं थी – पत्नी को खूब प्यार करने वाले पति की तरह घूम – फिर, मौज ले और प्रोग्राम के मुताबिक वापस आ जा।"

"ओ. के.।"

अमर सिंह ने हारे हुए जुआरी की तरह रिसीवर क्रेडिल पर पटक दिया।



उस वक्त ग्यारह बज रहे थे जब अमित और सुनीता 'कुफरी' जाने के लिये कमरे से निकले।

अमित ने लगभग जबरदस्ती तैयार किया था सुनीता को – यह कह कर कि अगर सारे दिन कमरे में पड़ी-पड़ी विनाश के बारे में सोचती रही तो दिमाग खराब हो जायेगा – सुनीता को बात जंची तो थी फिर भी, बेमन से तैयार हुई।

उस वक्त वे लिफ्ट के नजदीक खड़े थे।

लिफ्ट फर्स्ट फ्लोर पर थी।

अमित ने उसे ऊपर बुलाने के लिये स्विच दबाया और जेब से सिगरेट लाईटर निकाल लिया।

सुनीता की आंखे बोर्ड पर जमी थीं।

दो नम्बर से लाईट ऑफ हुई।

जाहिर था, लिफ्ट तीसरी मंजिल की तरफ आ रही है।

सुनीता की आंखें 'लिफ्ट वे' पर जम गई।

अमित उस वक्त गर्दन झुकाये सिगरेट सुलगाने में व्यस्त था जब सुनीता को पहले लिफ्ट की छत, फिर ऊपरी पोर्शन और

फिर . . . उसमें सफर करता एक मात्र शख्स नजर आया।

सुनीता के हलक से जोरदार चीख उबल पड़ी।

लिफ्ट में सफर करता शख्स विनाश था, उसे देखकर जहरीले अंदाज में मुस्कुराया भी था वह।

"क – क्या हुआ?" उसकी चीख सुनकर अमित बुरी तरह हड़बड़ाया।

"व – वो . . . .।" सुनीता ने अंगुली लिफ्ट की तरफ की और उसके साथ-साथ ऊपर की तरफ उठाती बोली – "लिफ्ट में है।"

अमित ने लिफ्ट में खड़े व्यक्ति के धड़ से लेकर पैरों तक का हिस्सा देखा था, पैरों में चमकदार जूते थे।

सरसराती लिफ्ट चौथी मंजिल की तरफ चली गई।

"कौन?" वह चीखा था।

"व – विनाश।"

सिगरेट फैंककर अमित बाज की तरह सीढ़ियों की तरफ लपका। एक-एक कदम में तीन-तीन सीढ़ियां लांघता चौथी मंजिल पर पहुंचा – बोर्ड ने बताया, लिफ्ट पांचवीं मंजिल पर पहुंच चुकी थी।

वह पांचवी मंजिल की तरफ झपटा।

लिफ्ट पहले से वहां खड़ी थी।

आस पास कोई न था।

आस-पास ही क्यों, गैलरी में दोनों तरफ दूर-दूर तक कोई न था।

उखड़ी सांस के कारण हांफता अमित कभी दांयीं तरफ सुनसान पड़ी गैलरी को देखता, कभी बाईं तरफ। लिफ्ट अभी तक यथा स्थान खड़ी थी – जाहिर था, उससे सफर करने वाला इसी मंजिल पर आया है।

मगर इतनी जल्दी गुम कहां हो गया?

प्रत्येक मंजिल पर अनेक कमरे थे – किस-किस में तलाश करता उसे?

अत : लिफ्ट में सवार हुआ और तीसरी मंजिल की तरफ सफर शुरू कर दिया – वहां सुनीता को घेरे अनेक लोग खड़े थे – सुनीता का चेहरा पीला पड़ा हुआ था, लोग उससे पूछ रहे थे

— "बात क्या है?"

जवाब नहीं दे पा रही थी वह।

अमित को लिफ्ट से निकलता देखते ही 'अमित' कह कर उससे लिपट गयी।

अमित ने उसे बाहों में भर लिया, सुनीता थर - थर कांप रही थी।

एक सज्जन ने पूछा — "क्या ये आपके साथ हैं?"

"जी हां।" अमित ने सुनीता को सान्तवना देने वाले अंदाज में उसकी पीठ थपथपाई।

"ये चीखी क्यों थीं?" एक महिला ने पूछा।

"लिफ्ट में ऊपर जाता अपना एक परिचित नजर आया था।"

कुछ देर के लिये शांति छा गयी, फिर एक बुजुर्ग ने पूछा — "इसमें इतनी जोर से चीखने की क्या बात थी?"

"कुछ नहीं . . . सॉरी।" कहने के बाद अमित सुनीता को लिये लिफ्ट में दाखिल हुआ और उसे बंद करके ग्राउन्ड फ्लोर की तरफ सफर शुरू किया, कांपते स्वर में सुनीता ने पूछा — "मिला?"

"नहीं, लिफ्ट मुझसे पहले पांचवी मंजिल पर पहुंच चुकी थी।"

"वह वही था।" आंतकित सुनीता कह उठी — "हन्डरेड परसेन्ट वही था अमित, मुझे देखकर मुस्कुराया भी था वह।"

"तुम फिर पागलपन की बातें करने लगीं, खुद को क्यों तमाशा बना रही हो?"

"उफ्फ।" सुनीता जैसे अपने बाल नोंच लेना चाहती थी — "तुम विश्वास क्यों नहीं कर रहे?"

●

"आईये . . . आईये मिस्टर एण्ड मिसेज अमित सिंह।" उन्हें अपने ऑफिस में दाखिल होता देखकर मैनेजर कुर्सी से खड़ा हो गया, हाथ मिलाने के लिये अमित की तरफ बढ़ाता बोला —

"मैं खुद आपके पास आने वाला था।"

उसकी बात पर ध्यान दिये बगैर अमित ने कहा – "हम कुछ जरूरी बातें करने आये हैं।"

"बैठिये।" उसने मेज के इस तरफ पड़ी कुर्सियों की तरफ इशारा किया।

"क्या होटल में कोई अविनाश नाम का आदमी रह रहा है?"

"अ . . . विनाश।" कुर्सी पर बैठते मैनेजर के मस्तक पर बल पड़ गये – "मेरे ख्याल से नहीं।"

"खासतौर पर पांचवीं मंजिल पर?"

"इस तरह एक - एक कस्टूमर का नाम याद रहना तो वैसे भी मुश्किल है, बात क्या है?"

"बात भी बतायेंगे, पहले इस सवाल की पुष्टि करके बताईये।"

"रजिस्टर मंगाये लेता हूं।" कहने के साथ उसने बैल बजाई।

चपरासी हाजिर हुआ। मैनेजर ने रिसेप्शन से 'एन्ट्री रजिस्टर' लाने के लिये कहा, वह चला गया तो मैनेजर ने सुनीता के पीले पड़े चेहरे की तरफ देखते हुए कहा – "मैं अब तक सुनीता जी के चेहरे पर आतंक की छाया देख रहा हूं।"

अमित के जवाब देने से पहले चपरासी रजिस्टर ले आया।

उन्होंने पांचवे फ्लोर के ही नहीं, होटल में रह रहे सभी नाम पढ़ डाले। 'अविनाश' कहीं नजर नहीं आया, रजिस्टर बगल में खड़े चपरासी को लौटाते हुए उसने मैनेजर से कहा – "इसमें तो इस नाम का कोई आदमी नहीं है।"

"अगर साफ - साफ बतायें, बात क्या है तो शायद मैं आपकी कोई मदद कर सकू?"

"विनाश को तो जानते हो न तुम?"

"व - विनाश?"

"सुनीता का पहला पति, तुमने अखबार में उसके बारे में पढ़ा था।"

"ओह . . . हां, काफी पुरानी बात हो गयी – करीब

चार साल पुरानी।"

"ये तो याद है न कि उसने आत्महत्या की थी?"

"जी हां, अच्छी तरह याद है – पूरा विवरण छपा था अखबार में, सुसाइड नोट की फोटोस्टेट भी छपी थी।"

"सुनीता का कहना है कि विनाश जिन्दा है।"

मैनेजर के मुंह से बोल न फूटा - भाड़ सा मुंह फाड़े चेहरे पर आश्चर्य के असीमित भाव लिये सुनीता की तरफ देखता रह गया जबकि सुनीता लगभग रो देने की स्थिति में अमित से कह उठी – "मेरा यकीन क्यों नहीं करते अमित?"

"असम्भव।" मैनेजर कह उठा – "चार साल पहले अखबार को याद करूं तो यह बात नामुमकिन है।"

"सुनीता के दावे के मुताबिक वह इसे कल रात लिफ्ट में मिला था – उसने छुआ भी था इसे और बातें भी की थीं, अपना नाम अविनाश बताया था – आज फिर कुछ देर पहले लिफ्ट में नजर आया।"

"ह - हद कर रही हैं आप?" मैनेजर की आंखें सुनीता पर जमी थीं।

"उसी को देखकर रात 'शॉक' लगा था और उसी को देखकर इस वक्त ये हालत है – विनाश की शक्ल से मिलता जुलता आपके स्टाफ में तो कोई नहीं है अथवा किसी अन्य सिलसिले में होटल आता हो?"

"अखबार में फोटो नहीं छपा था इसलिये नहीं जानता कि . . ."

"वह लम्बा है, करीब साढ़े छः फिट का, गोरा-चिट्टा, गोल चेहरा, काली आंखें, घनी भवें, सुतवां नाक, घुंघराले बाल और बाईं कलाई पर जहां रिस्टवॉच बांधते हैं एक बड़ा सा काला मस्सा . . . ."

बुरी तरह चौंकते मैनेजर ने कहा – "अ - आप क्या बात कर रहे हैं अमित जी, इस हुलिये का आदमी तो अभी - अभी मेरे पास से उठ कर गया है।"

"त – तुम्हारे पास से?" अमित उछल पड़ा।

सुनीता के सम्पूर्ण जिस्म में चीटियां सी रेंगने लगीं।

"अपना नाम विक्रम बता रहा था वो।"

"व – विक्रम?" रोकते - रोकते सुनीता के कंठ से चीख निकल गयी – "त – तुमने सुना अमित, उसने इनसे वही नाम लिया जो मैंने उसे उसके हमशक्ल के रूप में बताया था।"

अमित ने मैनेज़र से पूछा – "क्या बातें कर रहा था?"

"आपके बारे में पूछ रहा था।"

"हमारे बारे में?" अब अमित का चेहरा भी सुनीता के चेहरे की तरह पीला नज़र आने लगा।

"आपने ध्यान नहीं दिया – मैंने आपके ऑफिस में ऐन्टर होते ही कहा था कि मैं आपके पास आने वाला था – कारण आपके बारे में उसके द्वारा की गई पूछताछ थी, मैं इस सम्बन्ध में आपको बताना चाहता था।"

"क्या पूछ रहा था?"

"आप दोनों के नाम, राजनगर वाला एड्रेस।"

"आपने बता दिया?"

"बुराई क्या थी, बल्कि मैंने कहा –'उन्हें ऐरे गैरे समझने की भूल न करे' – राजनगर की विख्यात कंस्ट्रक्शन कम्पनी के मालिक स्व. मिस्टर खन्ना के दामाद और बेटी हैं वे।"

"उफ्फ . . . ये तुमने क्या किया?"

"आखिर आपका सही परिचय गौरव की बात है इसलिये मैंने . . ."

सुनीता ने उसकी बात काट कर पूछा – "क्या विनाश का जिक्र भी आया था?"

"हां।"

"किसने किया, आपने या उसने?"

"मैंने ही किया, कहा कि वह आपका पहला पति था।"

"फिर?"

"वह काफी बारीकियों में जाकर सवाल करने लगा।"

"और तुमने सब कुछ बक दिया होगा।" अमित दांत भींच कर गुर्रा उठा – "वो सब कुछ जो अखबारों के जरिये तुम्हे मालूम है।"

"गलती हो गई क्या?"

"जरूरत क्या थी वो सब बकवास करने की – ये कहकर सीधे हमारे पास भेज देते कि जिनके बारे में इन्क्वायरी

कर रहा है — उन्हीं से बात कर ले — कम से कम पूछते तो सही, वह कौन है और हमारे बारे में पूछताछ क्यों कर रहा है?"

"मैंने पूछा था।"

"क्या बोला?"

"गोल कर गया।"

सन्नाटा खिंच गया ऑफिस में। अमित के चेहरे पर क्रोध और खौफ के सयुंक्त भाव थे। सुनीता की आंखों तक में आतंक के साये लहराते साफ नजर आ रहे थे, मैनेजर ने पश्चाताप भरे लहजे में कहा — "मुझे इल्म नहीं था आपको बुरा लगेगा।"

"रात के बारे में तो कुछ नहीं बक दिया तुमने?"

"रात के बारे में क्या?"

"कि सुनीता किसी 'शॉक' के कारण बेहोश हो गयी थी, कमरे का टी. वी. खराब हो गया था?"

"टी. वी. का जिक्र तो नहीं आया मगर . . . सॉरी, सुनीता जी के बेहोश होने का जिक्र आ गया था।"

"जिक्र आ जाता तो टी. वी. के बारे में भी बता देते . . . टी. वी. के बारे में ही क्यों, वो पूछता तो ये भी बता देते कि हमने ब्रेक-फास्ट में क्या लिया है, लंच में क्या खाया था और डिनर लेने का होश ही न था।"

"सॉरी-सॉरी-सॉरी- अगेन सॉरी अमित जी।"

"अगर वह फिर आये तो हमें बुला लेना।"

मैनेजर ने दृढ़ता पूर्वक कहा — "मैं साले को बांध कर डाल लूंगा।"

"अब तुम एक काम करो।"

"फरमाईये।"

"हमने उसे पांचवीं मंजिल पर गुम होते देखा है। इस वक्त पांचवीं मंजिल पर जितने लोग हैं, सबकी शक्लें देखना चाहते हैं — उसे सील करके एक-एक शख्स को हमारे सामने से गुजारो, बोलो . . कर सकोगे?"

"क्यों नहीं कर सकूंगा?" कहने के साथ वह उठा — "चलिये।"

विनाश या उससे मिलती जुलती शक्ल का व्यक्ति पूरे होटल में नज़र नहीं आया। कुफरी जाने का प्रोग्राम तो मटियामेट हो ही चुका था।

कमरे में दाखिल होती सुनीता ने कहा – "अब तो तुम्हें यकीन आया विनाश जिंदा है?"

"क्यों, ऐसा क्या हो गया?"

"क्या उसका हुलिया बताते ही मैनेजर ने स्वीकार नहीं किया?"

"यह भी बताया कि हमारे बारे में सवाल कर रहा था।" अमित ने कहा – "क्या तुम्हारे भेजे में अभी तक ये बात नहीं घुसी, अगर वह विनाश होता तो पूछताछ क्यों करता, हमारे बारे में उससे ज्यादा कौन जानता है?"

यह सीधा तर्क तीर की मानिन्द सुनीता के दिमाग में घुसता चला गया।

कुछ देर सोचती रहने के बाद बोली – "बात तो ठीक है, उसे भला हमारी इन्क्वायरी करने की क्या जरूरत थी लेकिन..

"लेकिन?"

"दो आदमियों की शक्ल इतनी मिलती हो, ऐसा कैसे हो सकता है?"

"कुछ न कुछ फर्क जरूर होगा जिस पर तुम आतंकित होने के कारण ध्यान न दे सकीं और अपनी बेवकूफी से एक मुसीबत पीछे लगा ली।"

"कैसी मुसीबत?"

"अब मेरी समझ में आ रहा है।" बैड पर बैठता अमित कहता चला गया – "वह तुम्हें बिल्कुल नहीं जानता था लेकिन तुम्हारे व्यवहार ने उसे न केवल तुम्हारी तरफ आकर्षित कर दिया बल्कि जो बातें तुमने कीं, उनके बाद तुम्हारे बारे में जानने के लिये बेचैन हो उठा। उसी के परिणामस्वरूप मैनेजर से पूछताछ की – सम्भव है और भी इन्क्वायरी करे – मेहरबानी करके

इतनी मत डर जाना कि जो बात आज तक केवल हम, केकड़ा और विमला जानते हैं वह . . ."

"अ-अमित।" सुनीता के मुंह से निकलने वाले भयाक्रांत लहजे ने उसकी बात काट दी। सोफे के नजदीक फर्श पर जमी उसकी आंखों में एक बार फिर आंतक के साये लहरा रहे थे, अमित ने चौंककर पूछा — "अब क्या हुआ?"

"व: — वह यहां आया था।" आवाज मानो सुनीता के हलक से नहीं बल्कि अंधकूप से निकली — "ह — हमारे कमरे में।"

"क-क्या बात . . .।" अमित की आवाज कांप गयी।

"इधर देखो।" उसने सोफे के नजदीक फर्श की तरफ इशारा किया।

अमित ने देखा तो उछल पड़ा।

वहां जूते से कुचली गई चांसलर की आधी सिगरेट पड़ी थी।

"य - याद करो, ये सिगरेट वही पीता था और . . . आधी सिगरेट फ़र्श पर डालकर कुचल देना उसकी खास आदत थी।"

अमित पर कुछ कहते न बन पड़ा — आंखें फाड़े वह सिगरेट को इस तरह देख रहा था जैसे बिच्छू को देख रहा हो।

"व — वह वही है।" एकाएक सुनीता चीख पड़ी — "वह वही है अमित।"

"तुम पर फिर पागलपन सवार होने लगा।" अमित चीखा — "खुद को सम्भालो सुनीता।"

"ऐसा कैसे हो सकता है कि एक शक्ल के दो आदमी सिगरेट भी एक ही ब्रान्ड की पीते हों — इस असम्भव बात को सम्भव मान भी लिया जाये तो खास वही आदत भला दूसरे किसी आदमी में कैसे हो सकती है जो विनाश में थी — आधी सिगरेट पीने के बाद फ़र्श पर डालकर जूते से कुचल देना।" भयभीत सुनीता कहती चली गई — "उसके ब्रान्ड और इस खास आदत के बारे में कौन से अखबार में छपा है जो मैनेजर या कोई दूसरा उसे बता सके . . . जवाब दो अमित . . . जवाब दो।"

क्या जवाब देता अमित?

इस प्वाइन्ट ने खुद उसके दिमाग के हर पुर्जे को हिला कर रख दिया था।

और . . . यह एहसास रह-रह कर उसके जिस्म में झुरझुरी पैदा कर रहा था कि वह जो भी था, यहां आया था — उनके अपने कमरे में।

क्यों?

●

रात के बारह बजे के बाद वह खास तारीख शुरू हो गयी। जिस तारीख को चार साल पहले अमित और सुनीता की शादी हो सकी थी — 'हो सकी' शब्द इसलिये इस्तेमाल करने पड़े क्योंकि 'उस दिन' को देखने के लिये उन्हें काफी पापड़ बेलने पड़े थे।

एक मर्डर तक करना पड़ा।

रात के दो बजे तक उनकी बातों का विषय 'विनाश' रहा मगर दो बजे अमित ने कहा — "आज वो खास दिन है सुनीता जिसे 'सैलिब्रेट' करने हम दो दिन पहले शिमला आये हैं अतः हमारी वार्ता का विषय कोई तीसरा नहीं बल्कि हमारा प्यार होना चाहिये — इसलिये आओ, विनाश या उसकी शक्ल के आदमी को ही नहीं, सारी दुनिया को भूल कर खुद में खो जायें, जो होगा देखा जायेगा।"

सुनीता को अमित की बात बहुत प्यारी लगी थी।

बोली — "तुम कितने अच्छे हो अमित?"

"सो तो हूं।" उसे बाहों में भरते अमित ने कहा — "जूनियर अमित के बारे में क्या ख्याल है?"

"अब तो हो ही जाये।" सुनीता खिलखिलाकर हंसी।

सुबह के चार बजे तक इसी किस्म की बातों में खोये रहे, जाने कब नींद आई?

सुनीता की आंख खुली तो बाहर से ट्रेफिक की आवाजें आ रही थीं।

दरवाजों और खिड़कियों पर पर्दे खिंचे होने के कारण

भरपूर प्रकाश तो नहीं था परन्तु इतना अवश्य था कि सुनीता ने कलाई में बंधी सोने की रिस्टवॉच में टाईम देखा – रिस्टवॉच के अंक डायमंड के थे और सुईयां सच्चे रेडियम की।

"अरे।" टाईम देखते ही वह चौंकी – "दस बज गये।"

"उठो अमित।" उसने हौलें से झंझोड़ा – "आधा दिन निकल गया।"

"ऊंह . . . सोई रहो डार्लिंग।" करवट लेने के साथ उसने सुनीता को बाहों में भरने की कोशिश की।

सुनीता को शरारत सूझी – लेटे ही लेटे बैड के पीछे हाथ डाला, टटोल कर पर्दे से कनेक्टिड 'लट्टू' तलाश किया और हाथ में आते ही झटके से खींच दिया – पर्दे सरसराकर खिड़की के दायें बायें सिमट गये।

कमरा धूप से भर गया।

"प्लीज सुनीता।" कहते हुये अमित ने कम्बल मुंह पर डाल लिया।

और . . . यही क्षण था जब सुनीता के हलक से जबरदस्त चीख उबल पड़ी।

"क – क्या हुआ . . . क्या हुआ?" अमित हड़बड़ा कर उठा।

सुनीता की खौफजदा आंखें बैड के ठीक सामने वाली दीवार पर टंगी पेन्टिग पर चिपकी हुई थी।

अमित ने निगाहों का पीछा किया और पेन्टिग पर नजर पड़ते ही उछल कर खड़ा हो गया – आतंक के जितने साये सुनीता के चेहरे पर मंडरा रहे थे उतने ही उसके चेहरे पर इकट्ठा हो गये – जिस तरह सुनीता थरथरा रही थी, अमित भी उसी तरह थरथराने पर मजबूर हो गया, एक बार नजरें पेन्टिग पर पड़ीं तो हटने का नाम नहीं ले रही थीं।

पेन्टिग में एक शख्स आग की लपटों से घिरा चीखता नजर आ रहा था।

सामने खड़ी महिला के हाथ में स्कूटर की सर्विस करने वाला पाईप था।

पीछे खड़े मर्द के हाथ में माचिस।

"व-वही।" सुनीता हड़बड़ा उठी – "ठीक वहीं मंजर है

अमित।"

अमित ने हैरानी के साथ जाने किससे पूछा – "ये पेन्टिग यहां लगाई किसने?"

"ध - ध्यान से देखो।" डरी हुई सुनीता कहती चली गयी – "जलने वाले शख्स का चेहरा विनाश से मिलता है, माचिस वाले का तुमसे और . . और पाईप वाली मैं हूं . . . साफ पहचान में आ रही हूं मैं।"

"म - मैं पूछता हूं, इसे यहां लाया कौन?" अमित जैसे पागल हो गया था।

सुनीता चीख पड़ी – "मुझे क्या पता?"

"ह – हमारे सोने तक यह नहीं थी।"

"म – मैंने भी गौर किया था, एक झरने की पेन्टिग लगी हुई थी यहां।"

"फ – फिर . . . ये कहां से आ गयी?"

सुनीता फोन की तरफ लपकी – रिसीवर उठाया ही था कि अमित ने कूद कर उसके नजदीक पहुंचते हुये कहा – "क्या कर रही हो?"

"मैनेजर बतायेगा कि ये . . .

"पागल हो गयीं क्या?" अमित ने रिसीवर उसके हाथ से छीन कर क्रेडिल पर पटका।

"क्या मतलब?"

"उसे ये . . . ये पेन्टिग दिखाओगी – जिसमें हम दोनों विनाश का मर्डर करते साफ नजर आ रहे हैं – जो हकीकत आज तक केवल मैं, तुम, केकड़ा और विमला जानते हैं, उसे ढोल पीट-पीट कर सारी दुनिया को बताओगी?"

अवाक् रह गयी सुनीता, मुंह से बोल न फूटा।

अमित ने कहा – "निश्चित रूप से ये हरकत इन्सपैक्टर केकड़ा या विमला की है।"

"क-कैसे कह सकते हो?"

"जो कुछ पेन्टिग में दिखाया गया है उसके बारे में हमारे अलावा केवल वे जानते हैं।"

"तुम बार-बार पांचवें आदमी को भूल रहे हो अमित।"

"कौन पांचवां आदमी?"

"वही, जिसके साथ ये सब कुछ हुआ – जो पेन्टिग में जलता हुआ दिखाया गया है।"

"वो मर चुका है।"

"कहां मरा है, मुझे लिफ्ट में मिला – मैनेजर से मिला, हमारे कमरे में आया . . . सिगरेट पी।"

"ये ड्रामा उन्हीं दोनों में से किसी का खड़ा किया हुआ है।" अमित अपनी धुन में कहता चला गया – "वे हमें डराना चाहते हैं, बौखलाना चाहते हैं – पागल कर देना चाहते हैं?"

"यह सब करने से उन्हें क्या फायदा?"

चकरघिन्नी की मानिन्द घूमते अमित के दिमाग को सुनीता के सवाल का जवाब न सूझा, उत्तेजित अवस्था में उसकी तरफ देखता रह गया वह जबकि सुनीता एक एक शब्द पर जोर देती कहती चली गई – "हमारे और उनके बीच जो सौदे हुये थे, पिछले चार साल में दोनों में से कभी किसी ने उन्हें नहीं तोड़ा – विनाश की मैडीकल रिपोर्ट गुम करने के बदले एक करोड़ लेने के बाद इन्सपैक्टर केकड़ा की तरफ से कभी एक पैसे की डिमांड नहीं आई – तब भी नहीं, जब एक अन्य मामले में रिश्वत लेता रंगे हाथों पकड़ा गया – नौकरी जाती रही – स्कूटर पार्ट्स बनाने की फैक्ट्री लगा ली उसने और आज . . . इतना सम्पन्न है कि कम से कम पैसे के लिये उसे ये काम करने की जरूरत नहीं है और . . . पैसे के अलावा वह हमसे चाह क्या सकता है?"

"कायदे में जलते हुये विनाश के तीसरी तरफ विमला खड़ी दिखाई जानी चाहिये थी – उस वक्त वह भी हाल में थी मगर नहीं दिखाई गयी – क्या इससे जाहिर नहीं होता कि ये हरकत उसी की है, खुद को बचा कर रखना चाहती है वह?"

"उसने भी कभी हमसे फोन तक पर सम्पर्क स्थापित करने की कोशिश नहीं की – हम आज तक नहीं जानते वह कौन थी, कहां से आई थी और कहां चली गयी – भला वह ये सब क्यों करेगी?"

"मुमकिन है पैसे की जरूरत हो उसे?"

"पैसा चाहिये तो वह जितना चाहे, एक फोन करके हमसे हासिल कर सकती है, ये सब क्यों करेगी?"

एक बार फिर लाजवाब हो गया अमित – कोई तर्कपूर्ण

जवाब नहीं सूझा उसे।

"बाकी रह जाता है विनाश।" सुनीता कहती चली गयी — "जिस तरह सिगरेट सिद्ध कर रही थी कि मुझे लिफ्ट में मिला शख्स कोई अन्य नहीं, खुद विनाश था उसी तरह, बल्कि उससे भी ज्यादा पुख्ता तरीके से यह पेन्टिग उसे विनाश सिद्ध कर रही है अमित — सोचो, यदि वह कोई और है तो ये मंजर उसे कैसे पता?"

"और अगर विनाश है तो मैनेजर से पूछताछ क्यों कर रहा था?"

इस सवाल का जवाब सुनीता के पास नहीं था।

कमरे में सन्नाटा छा गया।

अमित ने सिगरेट सुलगाई, दिमाग को व्यवस्थित करने का प्रयत्न करता बोला — "भले ही इस वक्त मेरे पास तुम्हारे कुछ सवालों के जवाब नहीं हैं सुनीता लेकिन . . . विनाश को जिन्दा किसी कीमत पर नहीं माना जा सकता — निश्चय ही यह किसी की साजिश चल रही है — कोई हमें भयभीत करके, डराकर अपना उल्लू सीधा करना चाहता है मगर . . . समझ में नहीं आ रहा, चार बजे तक तो हम जागे हुये थे — ये पेन्टिंग कौन, कब और कैसे लगा गया?"

सुनीता के पास जवाब होता तो देती।

कमरे में काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा।

जैसे न सुनीता के पास कहने के लिये कुछ रह गया हो, न अमित के पास — सवाल जरूर उनके दिमागों में बवंडर मचाये हुये थे, अचानक सुनीता ने कहा — "यहां से चलो अमित, इसी वक्त शिमला से निकल पड़ो।"

"क्यों?"

"जब से शिमला में कदम रखा है तब से शायद ही हमने चैन की कोई सांस ली हो, वापस चलो अमित।"

"क्या जरूरी है ये घटनाएं राजनगर तक हमारा पीछा नहीं करेंगी?"

"म - मतलब?"

"नहीं सुनीता, ये कोई हल नहीं हुआ।" अमित का चेहरा कठोर हो उठा — "अगर कोई पीछे पड़ गया है तो पाताल तक

पीछा नहीं छोड़ेगा – इस तरह खौफ खाते रहने या डर कर भाग जाने से काम नहीं चलेगा – हौसला बनाये रखकर हिम्मत से काम लेना होगा – जानना होगा कि हमारे शिमला में कदम रखते ही आखिर ये चक्कर क्या शुरू हो गया – कौन है वो जो खुद को विनाश सिद्ध करना चाहता है – उद्देश्य क्या है उसका – ये जाने बगैर अब हमारी जिन्दगी का चैन वापस नहीं लौटेगा।"

"ल - लेकिन जानोगे कैसे?"

"अभी तक मैंने उसे देखा नहीं है।" अमित के जबड़े भिंच गये, दांत पीसता कहता चला गया – "एक बार . . . केवल एक बार मेरे सामने आ जाये, उसके बाद या तो वह रहेगा या मैं।"

"लगता है, तुम आज का दिन पूरी तरह 'गारत' करोगे?"

"मतलब?"

"आज . . . खास आज का दिन हमारी 'मैरिज एनीवर्सरी' का दिन है अमित, मैं इसे टेंशन में नहीं गुजारना चाहती।"

सुनीता की भावनाओं को समझते ही अमित के दिमाग को झटका सा लगा – आगे बढ़कर सुनीता के डरे हुये मुखड़े को अपनी हथेलियों में भरा उसने और आंखों में झांकता हुआ प्यार से बोला – "सॉरी . . . ये पेन्टिग मेरा दिमाग कहीं और ले गयी थी।"

"तो हम वापस चल रहे हैं न?"

"आज हम नारकंडा जायेंगे।"

"नारकंडा?"

"वहां एक काटेज लेंगे और दुनिया की 'चिल्ल पों' से दूर अपनी मैरिज एनीवर्सरी सैलीब्रेट करेंगे।"

"अमित . . ."

"वहां हर तरफ बर्फ ही बर्फ होगी – दृष्टि के अंतिम छोर तक चमचमाती हुई सफेद बर्फ – पर्वत – गगन को चूमने का प्रयत्न करती उनकी चोटियां, पाताल तक चली गई खाईयां, दर्रे और जगह जगह से फूट कर झनझनाते झरने – उनके बीच, पर्वत की किसी चोटी पर एक कॉटेज - कॉटेज में हम दोनों –

नितांत अकेले और आने वाली रात।"

हालात अगर सामान्य होते तो अमित के शब्द सुनीता को आत्मविभोर कर देते मगर इस समय ये सब सुनकर उसके चेहरे का पीलापन कुछ और बढ़ गया, बोली – "अगर वह वहां भी पहुंच गया?"

"कौन?"

"जो लिफ्ट में मिला था, जिसने ये पेन्टिग . . ."

"उफ्फ सुनीता, मुझसे कहती हो उसे भूल जाऊं – कोशिश करता हूं तो खुद याद दिला देती हो – अगर उसे दिमाग से न निकाल सकी तो कर लिया तुमने ये दिन सैलिब्रेट!"

"सोचो तो सही, अगर वह . . ."

"ओ. के. . . . हम बगैर किसी को कुछ बताये नारकंडा जायेंगे।"

"मतलब?"

"बाकायदा इस होटल से 'चॉक आऊट' होंगे – मैनेजर आदि से कहेंगे वापस दिल्ली जा रहे हैं – एक प्राईवेट टैक्सी लेंगे – खुद ड्राइव करते नारकंडा जायेंगे – रास्ते भर ध्यान रखेंगे कोई हमें 'फॉलो' तो नहीं कर रहा।"

सुनीता चुप रह गयी।

"हमारा आज का दिन और रात केवल एक दूसरे के लिये है – कल सुबह से मैं उस हरामजादे के पीछे पड़ूंगा जो खुद को विनाश साबित करने पर तुला है और भेद जाने बगैर चैन से नहीं बैठूंगा।"

"पेन्टिग का क्या करोगे?"

"राख बना कर फ्लश में बहा देने के अलावा कर भी क्या सकते हैं?"

●

नारकंडा।

शिमला से सैकड़ों मील ऊपर एक रमणीक स्थान।

हर तरफ चमचमाती सफेद बर्फ से ढके गगनचुम्बी पर्वत – पर्वतों पर सीना ताने खड़े देवदार और इलाइची के लम्बे वृक्ष

– जगह-जगह पर्वतों का कलेजा चीर कर फूट पड़ने वाले झरनें और वे दर्रे सुनीता को खौफ की दुनिया से दूर ले गये जिनमें गिरने के बाद पता ही नहीं लगता था कि झरने का पानी गया तो गया कहां?

झरनों के गिरने की संगीतमय आवाज के अलावा वहां अन्य कोई आवाज न थी।

मन-मस्तिष्क को सुकून पहुंचाने वाली शान्ति।

पर्वतों पर जगह-जगह . . . और एक दूसरे से काफी – काफी दूर बने लकड़ी के काटेज बड़े सुन्दर लग रहे थे – झोंपड़ी-नुमा लाल छत्त वाले इन काटेजों पर हरे रंग का पेंट किया गया था – कोई पर्वत की चोटी पर था तो कोई काफ़ी नीचे, दर्रे में जाकर।

अमित और सुनीता जब वहां पहुंचे तब सूरज पश्चिमी गगन को गुलनार करता एक बड़े पर्वत के पीछे अपना मुखड़ा छुपाने की तैयारी कर रहा था – बर्फ दर्पण की मानिन्द दमक रही थी – उन नजारों में खोकर अमित और सुनीता शिमला में घटी भयावह घटनाओं को भूल चुके थे।

निगाह रखने के बावजूद रास्ते में कहीं ऐसा शक नहीं हुआ कि कोई उन्हें फॉलो कर रहा है।

वे एक 'कॉटेज मालिक' के ऑफिस में पहुंचे – अपनी पसन्द की लोकेशन बताकर अमित ने कॉटेज की मांग की, मालिक ने कहा – "गाड़ी आपको यहीं छोड़नी पड़ेगी, चार मील ऊपर पर्वत की चोटी पर वैसा एक क़ॉटेज है जैसा आप चाहते हैं।"

"चलेगा।" अमित ने कहा।

सुनीता ने पूछा – "वहां क्या पैदल जाना होगा?"

"पैदल भी जा सकते हैं और टट्टू भी हैं।"

"टट्टू ही ठीक रहेंगे।"

टट्टूओं पर सवार होकर उन्होंने आगे का सफर शुरू किया।

चारों तरफ बिखरे नजारों से अपनी आंखों की रोशनी बढ़ाये जब वे कॉटेज में पहुंचे तो सूरज डूब चुका था।

चन्द्रमा उभरने लगा था।

बर्फ के बीच, पर्वत की चोटी पर स्थित कॉटेज सचमुच वैसा था जैसी अमित ने कल्पना की थी – ठीक सामने वाले पहाड़ की चोटी से एक झरना गिर रहा था – सम्पूर्ण घाटी में गूंजती उसकी आवाज बड़ी कर्णप्रिय लग रही थी।

टट्टुओं के साथ आये पहाड़ी ने कॉटेज की लाईटें ऑन कीं।

पूरा कॉटेज घुमाया।

जरूरत की हर चीज वहां थी।

अमित ने उसे टट्टुओं को लेकर अगले दिन दस बजे आने के लिये कहा।

वह अभिवादन करके चला गया।

वातावरण में धूप की जगह चांदनी बिखरने लगी – ऐसा लग रहा था जैसे दूर-दूर तक बर्फ नही, पिघली हुई चांदी बिखरी पड़ी हो। गहरी गहरी खाइयों को देखकर अमित के दिमाग में एक विचार ये भी उठा, अगर कहीं से सुनीता का पैर फिसल जाये और वह खाई में जा गिरे तो वह काम स्वयं हो जाये जिसके लिये उसके बाप ने टी. वी. के स्विच में करेंट प्रवाहित किया था।

फिर, अपने बाप की बात याद आते ही उसने इस विचार को दिमाग से झटक दिया।

उसने कहा था – 'इस टूर में सुनीता को अगर खुद भी कुछ हो गया तो जेल की चक्की तुझे पीसनी पड़ेगी।'

रात के करीब दो बजे की बात है।

अमित थक कर सो गया था।

सुनीता पूरी तरह नहीं सो पाई थी, उनींदी सी अवस्था में थी वह।

लकड़ी चरमराने की आवाज उभरी।

उसके कान खड़े हो गये।

लगा, गैलरी में कोई चल रहा है।

लकड़ियां चरमराने की आवाज एक निश्चित अंतराल पर हो रही थी – ठीक ऐसे, जैसे कोई आहिस्ता आहिस्ता लकड़ी के फट्टों पर चल रहा हो – सुनीता के दिल की धड़कनें तेज होने लगीं।

दिमाग कूद कर विनाश पर पहुंच गया।

क्या वह यहां पहुंच गया है?

कौन चल रहा है गैलरी में?

फट्टे फिर चरमराये, कोई है जरूर . . . वही होगा!

सुनीता के जिस्म में दौड़ रहे खून का दौरा तेज हो गया — दिल बार बार पसलियों से टकराने लगा — लेटे ही लेटे दाई तरफ मौजूद एक खिड़की की तरफ देखा उसने।

खिड़की से छन कर चांदनी कमरे के फर्श पर बिखरी पड़ी थी।

घाटी में गूंजती झरने की जो आवाज कुछ देर पहले तक सुनीता को सुखद नींद लाने वाली 'लोरी' लग रही थी वह बार बार उभरने वाली चरमराहट के कारण डरावनी लगने लगी।

आंखें खिड़की पर जमी थीं कि शीशे के पार विनाश का चेहरा नजर आया।

चीख पड़ने के लिये मुंह खुला जरूर लेकिन आवाज न निकल सकी — पथराई आंखें विनाश के पेट से ऊपर के हिस्से को साफ देख रही थीं — उसने किसी गहरे कलर का ओवरकोट पहन रखा था।

गले में सफेद रंग का मफलर।

सुनीता की आखें ही नहीं, सारा जिस्म पथरा गया।

दिलो दिमाग जाम।

कोशिश के बावजूद वह अपने किसी अंग को स्वेच्छा पूर्वक हिला नहीं पा रही थी।

अमित को जगाना चाहती थी वह परन्तु जुबान तालु से जा चिपकी, जिस्म जड़ हो गया।

उधर, शीशे के पार . . . चांदनी में नहाया विनाश मुस्कुरा उठा।

ऐसी मुस्कान थी वह जैसी सुनीता ने ड्राक्यूला की पिक्चर में तब देखी थी जब वह अपने शिकार का खून पीने के लिये आगे बढ़ता था — सुनीता के सम्पूर्ण जिस्म में झुरझुरी दौड़ गयी।

तभी, खिड़की के उस पार खड़े विनाश ने शीशा खटखटाया।

"अ — अमित . . . अमित।" सुनीता मानो डरावने

स्वप्न से जाग कर चिल्ला उठी।

अमित हड़बड़ा कर उठा।

खिड़की से विनाश का चेहरा गायब हो गया।

गैलरी के फट्टे इस तरह चरमराये जैसे कोई तेजी से दौड़ा हो।

ये आवाज अमित ने भी सुनी थी, मुंह से चौंका हुआ स्वर निकला — "क - कौन है बाहर?"

"व-वही।" उससे लिपटी कांप रही सुनीता ने बताया।

"तुम्हें कैसे मालूम?"

"वो खिड़की के उस पार खड़ा हमें घूर रहा था, मैंने खुद देखा।"

अमित के जबड़े भिंच गये। चेहरा कठोर हो उठा। साफ जाहिर था वह हालात से जूझने का फैसला कर चुका है।

झरने की आवाज के अलावा अब कहीं कोई आवाज न थी।

अमित ने जिस्म पर नाईट गाऊन डाला। बैड से उतरा। मेज पर रखी टार्च उठाई और दरवाजे की तरफ बढ़ा ही था कि सुनीता दौड़ कर उससे लिपट गई, बोली — "क - कहां जा रहे हो?"

"उससे निपटने।"

"न — नहीं।" वह चीख पड़ी।

"हिम्मत से काम लो सुनीता।" अमित ने लगभग जबरदस्ती उसे अपने जिस्म से अलग करते हुये कहा — "तुम यहीं रहो, मैं उसे देखता हूं — वह जो भी है, तब तक हमें डराता रहेगा जब तक डरेंगे।"

"म - मगर . . ."

अमित ने उसकी एक न सुनी, उसे बैड पर धकेल कर दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

"चर. . . र्र. . . र्र. . ."

कॉटेज का दरवाजा खुला।

उसके बीच में खड़े अमित ने टार्च ऑन की।

हालांकि बर्फ पर चांदनी बिखरी पड़ी थी — दूर-दूर तक मौजूद व्यक्ति को अगर साफ नहीं तो साये के रूप में जरूर देखा जा सकता था — इसके बावजूद उसने दरवाजे पर खड़े-खड़े टार्च का प्रकाश दायरा चारों तरफ घुमाया।

कहीं कोई न था।

अमित ने दरवाजा पार किया।

गैलरी के फ़र्श पर लगे लकड़ी के फट्टे उसके वजन से चरमराने लगे थे।

वह आगे बढ़ा, गैलरी पार की।

लॉन में बिखरी बर्फ पर कदम रखता हुआ चिल्लाया — "कौन है?"

उसकी अपनी आवाज दूर-दूर के पर्वतों से टकराकर, सन्नाटे का कलेजा चाक-चाक करती बार-बार खुद उसी के कानों पर दस्तक देने लगी — जवाब में कहीं से, कोई आवाज तो दूर, आहट तक नहीं उभरी।

कम से कम इस वक्त अमित को बिल्कुल डर नहीं लग रहा था।

एकाएक उसकी टार्च का प्रकाश दायरा बर्फ पर बने जूतों के निशान पर स्थिर हो गया।

विशेष रूप से बर्फ पर चलने के लिये बनाये जाने वाले जूतों के निशान थे वे।

अमित के जबड़े कुछ और भिंच गये — अब सन्देह नहीं था कि कॉटेज के आस-पास उसके और सुनीता के अतिरिक्त भी कोई है — अतः ऊंची आवाज में ललकारा — "तुम जो भी हो, मर्द के बच्चे हो तो सामने आओ।"

एक बार फिर उसके शब्द प्रतिध्वनित होकर सम्पूर्ण घाटी में गूंज कर रह गये।

कॉटेज के दरवाजे पर खड़ी थर-थर कांप रही सुनीता की आंखें अमित पर जमी थीं — अमित रह-रह कर टार्च का प्रकाश अपने चारों तरफ घुमाता दुश्मन को ललकार रहा था . . . और उस क्षण सुनीता के कंठ से निकली चीख घाटी में दूर-दूर तक गूंज गई जब उसने ओवरकोट वाले को कॉटेज की छत से सीधे

अमित पर छलांग लगाते देखा।

टार्च अमित के हाथ से निकलकर ढलान पर लुढ़कती चली गयी।

अमित और ओवरकोट वाला भी एक दूसरे से गुथे बर्फ पर लुढ़के।

कुछ दूर लुढ़कने के बाद रुके, अलग हुये और उछल कर आमने सामने खड़े हो गये।

चांदनी के कारण सुनीता उन्हें दो सायों के रूप में स्पष्ट देख सकती थी — केवल एक सैकिंड के लिये उन्होंने प्रतिद्वंदियों के रूप में एक दूसरे को देखा — अगले सैकिंड एक दूसरे पर झपट पड़े।

अमित ने ओवरकोट वाले के चेहरे पर घूंसा मारना चाहा था जिससे वह न केवल झुकाई देकर बच गया बल्कि सिर की जोरदार टक्कर अमित की नाक पर रसीद कर दी — हलक से चीख निकालता अमित लड़खड़ाया — सम्भल भी नहीं पाया था कि ओवरकोट वाले ने पेट में बूट की ठोकर मारनी चाही — अमित ने पैर पकड़ कर जोर से झटका दिया।

चीख के साथ ओवरकोट वाला बर्फ पर गिरा।

वह उठने की कोशिश कर रहा था, अमित ने जम्प लगा दी।

दोनों गुथ गये।

सुनीता पांच मिनट तक सांस रोके उठा-पटक देखती रही।

पांच मिनट बाद जब ओवरकोट वाला उछल कर खड़ा हुआ तो सुनीता अमित के भी खड़े होने की इंतजार कर रही थी — उधर, ओवरकोट वाला भी ऐसी मुद्रा में था कि अमित खड़ा हो तो वह पुनः हमला करे।

मगर अमित खड़ा नहीं हुआ।

ओवरकोट वाले ने उसके जिस्म में बूट की जोरदार ठोकर मारी।

जिस्म एक जगह से उछल कर दूसरी जगह जा गिरा परन्तु मुंह से आवाज तो क्या, सिसकारी तक नहीं निकली।

ओवरकोट वाला समझ गया अमित बेहोश हो चुका है

— उसने उठा पटक के दरम्यान बर्फ पर गिर गया अपना मफलर उठाकर गले में डाला और कॉटेज के दरवाजे पर खड़ी सुनीता की तरफ देखा।

"न — नहीं।" चीखती हुई सुनीता ने 'भड़ाक' से दरवाजा बंद कर लिया।

ओवरकोट वाले के होंठों पर ऐसी मुस्कान रेंगी जैसे सपोला, पथरीले खेत में रेंग रहा हो। एक-एक कदम को जमाता वह कॉटेज के बंद दरवाजे के नजदीक पहुंचा — दरवाजे पर कंधे का जोरदार वार किया।

लकड़ी के फट्टों से बने दरवाजे में दम ही कितना था? दो चार वारों के बाद चौखट सहित हिलने लगा।

ओवरकोट वाला थोड़ा पीछे हटा और फिर बूट की भरपूर ठोकर दरवाजे पर पड़ी।

चौखट सहित दरवाजे के गिरने की 'भड़ाक' की आवाज के साथ सुनीता के हलक से निकली चीख पर्वतों से टकरा-टकरा कर घाटी में यूं भटकती फिर रही थी जैसे शेरों के झुंड में फंसी हिरनी भटक रही हो।

●

अन्दर आ चुका ओवरकोट वाला शख्स फर्श पर टूट पड़े दरवाजे के ऊपर खड़ा था।

गठरी सी बनी सुनीता एक कौने में घुसी उस कबूतरी की मानिन्द कांप रही थी जो अपनी आंखों से 'बिलोटे' को अपनी तरफ बढ़ता देख रही हो — जबरदस्त सर्दी के बावजूद उसका सम्पूर्ण जिस्म पसीने से भरभराया हुआ था।

ओवरकोट वाले ने जेब से चांसलर का पैकेट निकाला। ब्राउन कलर की सिगरेट निकाल कर होंठों पर लटकाई। लाईटर ऑन किया।

हल्का संगीत बजा और इस संगीत के साथ उसने सिगरेट सुलगाई।

सुनीता की घिग्घी बंधी हुई थी बल्कि अगर यह भी लिखा जाये कि वह फूट-फूट कर रो रही थी तो अतिश्योक्ति

नहीं होगी – ओवर कोट वाला दाईं दीवार की तरफ बढ़ा, वहां लगे सारे स्विच एक साथ ऑन कर दिये उसने।

कमरा बल्ब और ट्यूब की रोशनी से भर उठा।

सुनीता की तरफ देखकर जहरीले अंदाज में मुस्कुराया वह!

"न . . नहीं!" सुनीता पर छाया सम्मोहन मानो इसी क्षण टूटा – "त-तुम वो नहीं हो सकते।"

"मैं वही हूं।" उसके मुंह से गुर्राहट निकली।

"व-विनाश . . . विनाश मर चुका है।" सुनीता दहाड़ी – "किसी कीमत पर जिन्दा नहीं हो सकता वह।"

वह हंसा, बोला – "कुछ देर बाद तुम्हें मेरे विनाश होने पर विश्वास हो जायेगा डार्लिंग।"

"क - कैसे?"

"सुबूत जो दूंगा?"

"स – सुबूत?"

"वो रसभरा चुम्बन।"

"न – नहीं!" वह कोने से उछल कर दूसरी तरफ जा खड़ी हुई।

जिस्म पर केवल नाईटी थी – इतनी झीनी की सारा जिस्म नुमाईयां हो रहा था – उसने कई बार सुनीता को ऊपर से नीचे तक देखते हुये कहा – "तुम अब भी उतनी ही हसीन, उतनी ही दिलकश और उतनी ही नशीली हो जानेमन जितनी चार साल पहले थी।"

सुनीता जहां खड़ी थी, घबराकर वहीं बैठ गयी।

कलाईयों की कैंची से वक्षस्थल ढांपा।

उसने सिगरेट में एक और कश लगाया, बोला – "मुझसे अपने जिस्म को क्या छुपा रही हो डार्लिंग – अपने पहलू में न सही, अमित की बाहों में मैंने इसे अनेक बार देखा है। मैं तुम्हारे इस गन्दे और घिनौने जिस्म को हासिल करने का ख्वाहिशमंद कभी नहीं रहा – हां, एक चुम्बन का दीवाना हमेशा रहा हूं और आज भी . . . यहां केवल वही लेने आया हूं।"

"न . . नहीं।" वह पुनः खड़ी होकर चीख पड़ी।

उसने अपने शिकार की तरफ बढ़ते ड्राक्यूला की तरह

कहा – "चाहे जितना चीख लो सुनीता, चुम्बन लिये बगैर नहीं जाऊंगा मैं।"

भय की साक्षात मूर्ति बनी सुनीता ने पीछे हटते हुये कहा – "त . . . तुम . . . आखिर तुम हो कौन?"

"होटल के कमरे से मिली सिगरेट और पेन्टिंग के बावजूद अगर तुम्हें और तुम्हारे यार को मेरे विनाश होने का यकीन नहीं है तो मेरे पास यकीन दिलाने का एक ही तरीका बचता है, वो एक मिनट लम्बा रसभरा चुम्बन।" कहने के साथ उसने आधी सिगरेट फर्श पर डाली – जूते से कुचली और दरिन्दे की तरह उसकी तरफ बढ़ता बोला – "कितने प्यारे होंठ हैं तुम्हारे, ठीक ताजे गुलाब की पंखुड़ियों जैसे – सबसे पहले हम इन्हीं का रस चूसना चाहेंगे डार्लिंग।"

सूखे पत्ते की तरह कांपती सुनीता पीछे हटी।

मगर कब तक?

इधर वह दीवार से टकराई, उधर वह बाज की तरह झपटा।

"नहीं . . . नहीं।" चीखती सुनीता के होंठों पर उसके होंठ आ टिके और जब पूरे एक मिनट बाद वह अलग हुआ तो सारे संसार का आश्चर्य सुनीता के चेहरे पर इकट्ठा हो चुका था।

"वही मजा आया न!" उसने दांत पीसते हुये पूछा।

सुनीता के मुंह से बोल न फूट सका।

वह मुड़ा और लम्बे-लम्बे कदमों के साथ कॉटेज से बाहर निकल गया।

●

"नहीं अमित नहीं।" सुनीता ने पुरजोर विरोध किया – "अब मैं हरगिज नहीं मान सकती वह कोई और है।"

अमित चीख पड़ा – "ऐसा क्या हो गया?"

"उसने मेरा चुम्बन लिया है।"

"चुम्बन?"

"ठीक उसी खास स्टाईल में जिसमें मौत से पहले लेता

था।"

"ऐसा क्या खास स्टाईल है?"

"उसे शब्द नहीं दिये जा सकते – केवल एहसास किया जा सकता है – एक खास अंदाज था उसका – ऐसा, जिसे शब्द वह खुद भी नहीं दे सकता और जिस अंदाज को शब्द नहीं दिये जा सकते, उसमें किसी का 'किस' लेने की बात कोई किसी दूसरे को समझा कैसे सकता है – उस अंदाज का इस्तेमाल केवल वही कर सकता है – वह विनाश ही है अमित, हन्डरेड परसेन्ट विनाश है वह।"

"मेरी समझ में नहीं आ रहा।" अमित का दिमाग फटा जा रहा था – "वह जिन्दा कैसे हो सकता है?"

"मुझे नहीं पता मगर . . ."

"एक मिनट के लिये मान लेता हूं वह विनाश है, अब क्या चाहता है हमसे?"

"जिसे अपनी समझ में हमने मार डाला, वह क्या चाहेगा?"

"क्या चाहेगा?"

"बदला लेना।"

"तो लेता क्यों नहीं, सारे मौके मिलने के बावजूद लिया क्यों नहीं?"

"मतलब?"

"सोचो, मैं बेहोश हो चुका था – उठाकर खाई में क्यों नहीं डाल दिया मुझे – लाख प्रयत्नों के बावजूद लाश तक बरामद नहीं की जा सकती थी और जब मैं बेहोश था, उसे तुम्हारा कत्ल करने से कौन रोक सकता था – बदला लेना था तो तुम्हें क्यों नहीं मौत के घाट उतार दिया उसने?"

"मुझे नहीं पता वह क्या सोच रहा है। बस इतना जानती हूं, वह वही विनाश है और अब मैं यहां एक पल नहीं ठहरूंगी – हमें आज ही राजनगर पहुंचना है – वहां केकड़ा से मिलेंगे, बहरहाल वह भी विनाश का उतना ही बड़ा दुश्मन है जितना हम – अगर वह हमसे बदला लेने की सोच रहा है तो छोड़ेगा केकड़ा को भी नहीं – केकड़ा का दिमाग तेज है – निश्चय ही अपने बचाव का कोई रास्ता निकालेगा, उसी में हमारा बचाव भी

होगा।"

जैसा सुनीता ने कहा, ठीक वैसा अमित भी सोच रहा था — सुनीता के ज़हन में अपने मददगार के रूप में जहां केकड़ा का नाम उभरा था वहां, ये बातें वह अपने डैडी को बताना चाहता था।

उसे विश्वास था, वे कोई रास्ता जरूर निकालेंगे।

चांद की रोशनी में ही सही, विनाश को उसने भी साफ देखा था — इस सवाल का जवाब न सूझने के बावजूद कि विनाश कैसे जिन्दा हो सकता है, उसे भी लग रहा था — है वह विनाश ही।

उसे चुप देखकर बुरी तरह बेचैन सुनीता ने पूछा — "क्या सोचने लगे?"

"सुबह होने दो, वापस चलते हैं।"

"कहिये मोहतरमा।" अपनी फैक्ट्री के शानदार ऑफिस में पड़ी ऊंची पुश्तगाह वाली रिवाल्विंग चेयर पर बैठे केकड़ा ने पूछा — "बंदा आपकी क्या खिदमत कर सकता है?"

"मुझे विपला कहते हैं।" कांच की नीली गोलियों जैसी आंखों वाली लड़की ने कहा।

"जरूर कहते होंगे।" केकड़ा अपनी विशेष 'टोन' में बोला — "बहरहाल, सबको कुछ न कुछ कहा जाता है।"

विपला के गुलाबी होंठों पर आकर्षक मुस्कान फैली — इस वक्त उसके जिस्म पर ढीला ढाला सफेद रंग का टॉप और लम्बी टांगों में कसी हुई 'जिन' थी — तांबे के तारों जैसे लम्बे बाल कंधों पर झूल रहे थे।

"ये जो सामने वाले को 'क्लीन बोल्ड' कर देने वाली मुस्कान अभी-अभी आपने मेरी तरफ बाउंसर की तरह उछाली है, कृपया इसे वापस खींच कर पुड़िया बनायें और जेब में डाल लें — केकड़ा ने अपने जीवन में अगर कोई गलती की है तो ये कि बंदा अपनी बीवी का परम भक्त है इसलिये ऐसी मुस्कानों से अपना 'विकेट' नहीं गंवाता।"

"मेरा नाम सुनकर तुम्हें कुछ याद आना चाहिये था।"

"नहीं आया तो आप याद दिला दीजिये, क्या याद आना चाहिये था?"

विमला ने उसी मुस्कान के साथ कहा – "विनाश मर्डर केस।"

"ओह।" केकड़ा के चेहरे पर चौंकने के हल्के से भाव उभरे मगर अगले पल अपने पेटेन्ट स्टाईल में बोला – "तो वो महान विभूति हैं आप?"

"जी।"

"लेकिन आपने गलत फरमाया। वह मर्डर केस नहीं, सुसाइड केस था।"

विमला ने उसकी उबली हुई आंखों में झांका – "मेरे सामने ऐसा कहने का फायदा?"

"सवाल ये है, आप बंदे का कीमती टाईम तबाह करने क्यों आई हैं?"

"मतलब?" विमला के मस्तक पर बल पड़ गये।

"देखिये बहन जी।" केकड़ा ने अपनी दोनों कोहनियां चमकदार सनमाईका वाली मेज पर टिका कर समझाने वाली मुद्रा में कहा – "अब मैं वो चार साल पुराना टटपूंजिया इन्सपैक्टर तो हूं नहीं जिसके टाईम की कोई कीमत नहीं थी – हर ऐरा - गैरा थाने में आकर झक मारने लगता था और मुझे सुननी पड़ती थी – अब मैं एक अच्छी भली फैक्ट्री का मालिक हूं – फालतू बातों के लिये टाईम नहीं है मेरे पास। स्कूटर के पार्ट्स बेचने की दुकान खोल रही हो तो रेट लिस्ट दिखाऊं?"

कीमती फर्नीचर से सजे आफिस को देखती विमला कह उठी – "काफी तरक्की कर ली है तुमने?"

"वे फोटो देख रही हो?" केकड़ा ने दांई तरफ दीवार पर लगे फोटूओं की तरफ इशारा किया।

अलग - अलग फ्रेमों में दो आदमियों के फोटो थे। दोनों के नीचे एक - एक अगरबत्ती सुलग रही थी।

"कौन हैं ये?" विमला ने पूछा।

"एक वो, जिसने शिकायत करके मुझे रिश्वत लेते पकड़वाया - दूसरा वो, जिसने रंगे हाथों पकड़ा।"

चकित विमला ने पूछा – "इनके फोटो यहां क्यों लगा रखे हैं?"

"इनकी नजरें - इनायत न होती तो बंदा इस ऊंची पुश्तगाह वाली कुर्सी पर न बैठा होता – बल्कि किसी सड़क, गली - मुहल्ले या बैरियर पर खड़ा डंडा फटकार रहा होता – तो बताइये, इनकी आरती न उतारूं तो किसकी उतारूं?"

"वही डंडा फटकार कर तुमने ये फैक्ट्री खड़ी की है।"

"बेशक।" केकड़ा ने कहा – "लेकिन सोचो, साली कोई नौकरी थी वो – चौबीस घंटे बीवी की चिक-चिक – बच्चों की फीस की किल्लत – अफसरों की झिड़कियां – पचास रूपये पैंतीस पैसे के मामूली इन्क्रीमेन्ट की इन्तजार करते रहना – ट्रांसफर करा देने की धमकी तो साला हर ऐरा-गैरा देकर निकल जाता था।"

"अगर तुम ईमानदारी से ....."

"छोड़ो।" केकड़ा ने बात काट दी – "सारे जीवन ईमानदारी से पुलिस की नौकरी करने वाले से बड़ा 'अहमक' मैं किसी को नहीं मानता – मेरा बस चले तो पुलिस के गजट में छपवा दूं – खूब रिश्वत लें - नोट पीटें – निश्चित रूप से वैसे कद्रदान कभी न कभी जरूर टकरायेंगे जैसों के फोटो यहां लगे हैं – जैसे ही टकरायें, उनका शुक्रिया अदा करें – बर्खास्त हों और अपना धंधा लेकर बैठ जायें।"

"वैसी मुसीबत में भी तुम जैसे पुलिसिये फंसते हैं, जैसी में इस वक्त तुम हो।"

"आज की डेट में जब मैं पुलिसिया ही नहीं हूं तो किसी मुसीबत में क्यों फंसूगा?"

"अपने कार्यकाल में बबूल के जो बीज बोये थे उनसे फसलें फूटनी शुरू हो गयी हैं।"

केवल एक क्षण के लिये गोल हुई केकड़ा की उबली हुई आखें, बोला – "आपकी बात दांई तरफ से मेरे भेजे में घुसी और बाई तरफ से 'फुर्र' हो गयी।"

"क्या तुम यकीन कर सकते हो विनाश जिन्दा है?"

"आप यकीन कर सकती हैं, कल जिया उल हक ने मेरे साथ गुल्ली डंडा खेला था?"

"मुझे मालूम था तुम विश्वास नहीं करोगे।" विमला ने एक-एक लफ्ज पर जोर दिया — "लेकिन असम्भव सी नजर आने वाली इस बात पर बहुत जल्द विश्वास करना पड़ेगा — क्योंकि वह उसी तरह आपसे मिलेगा जिस तरह मुझसे मिला है।"

"जब मिलेगा, देखा जायेगा।" वह कुर्सी की पुश्त से पीठ टिका कर पीछे की तरफ झूलने लगा।

"ओ. के." कहने के साथ विमला वापस जाने के लिये उठ खड़ी हुई।

"वैसे।" वह सीधा हुआ — "क्या मैं जान सकता हूं, यहां पधारने की जहमत आपने क्यों उठाई?"

थोड़े नागवारी वाले लहजे में कहा विमला ने — "मैं तुम्हें सतर्क करने आई थी।"

"कौन से खतरे से?"

"विनाश अपने हत्यारों से बदला लेने पर आमादा है।"

"मुझसे क्या कनेक्शन हुआ — उसकी हत्या आपने की थी, सुनीता और अमित ने की थी।"

"हत्या को हत्या सिद्ध करने वाला सुबूत गायब करके उसे आत्महत्या किसने बनाया?"

"किसने बनाया?"

"तुमने।"

"किसी को सुबूत नहीं मिलेगा इस बात का।"

"बदला लेने के लिये विनाश को सुबूत की जरूरत नहीं है, वह हकीकत जानता है और जो बातें मुझसे की हैं, उनसे जाहिर है —जितना दोषी मुझे, सुनीता और अमित को मानता है उतना तुम्हें भी मानता है।"

"इसलिये आप सतर्क करने चली आईं?"

"करेक्ट।"

"मुझसे रिश्तेदारी है आपकी?"

"मैं यह सोच कर आई थी मिस्टर केकड़ा कि इस मामले में हम सब एक किश्ती के सवार हैं।" विमला तमतमा उठी — "मिल कर विनाश नाम की मुसीबत का मुकाबला करें तो शायद पार पा सकें मगर, अब अहसास हो रहा है — यहां आकर मैंने भूल की - निहायत ही बदतमीज किस्म के आदमी हो तुम।"

"मुझे समझने में आप बुरी तरह चूक गई मोहतरमा – मैं बदतमीज किस्म का नहीं, बहुत समझदार किस्म का आदमी हूं।" हसंता हुआ केकड़ा प्रभावशाली स्वर में कहता चला गया – "जो लटके झटके दिखाकर आप मुझे 'टेरराइज' करने आई हैं उन्हें सुनीता और अमित पर इस्तेमाल करें तो कुछ दाल-दलिया निकल सकता है।"

"मैं जा रही हूं।" वह तमतमाती हुई दरवाजे की तरफ बढी।

"जा ही रही हैं तो सुनती जायें।" केकड़ा के लहजे में चेतावनी उभर आई – "अगर मैं आज भी पुलिसिया होता तो इस तरह जाने नहीं देता बल्कि 'जम्बूरे' से पकड़ कर बैठ जाता। सबसे पहले यह मालूम करता, असल में आप हैं कौन से खेत की मूली - उसके बाद पूछता, चार साल बाद विनाश के जिन्दा होने का हौवा खड़ा करके आप आखिर अपने कौन से स्वार्थ की पूर्ति करना चाहती हैं – ऐसी कोई कोशिश इसलिये नहीं कर रहा क्योंकि पुलिसिया नहीं हूं . . . इस किस्म की बातों से मेरा कोई वास्ता नहीं रहा - आप जो भी हैं, जो चक्कर चला रही हैं – सुनीता और अमित के साथ चलायें, जूस जरूर निकलेगा।"

भन्नाती हुई विमला बाहर निकल गई।

●

अमित और सुनीता की बातें धैर्यपूर्वक सुनने के बाद केकड़ा ने पूछा – "ये सब मुझसे कहने की सलाह तुम्हें विमला ने दी है न?"

"व - विमला?" एक साथ दोनों उछल पड़े।

केकड़ा उन्हें कड़ी दृष्टि से घूर रहा था।

"व - वह क्यों कहेगी . . . और फिर हम तो जानते तक नहीं वह कहां है – उसने हमसे सम्पर्क स्थापित नहीं किया। क्या तुमसे मिली थी?"

"करीब एक घंटा पहले।"

"क - क्या कह रही थी?"

केकड़ा ने बता दिया।

गया, कुछ देर की खामोशी के बाद अमित ने कहा, "तुम्हें पूछना चाहिये था — विनाश उसे कहां, कब और कैसे मिला — क्या कह रहा था, आखिर इरादे तो पता लगें उसके?"

"फोड़ा नहीं निकला मेरे दिमाग में।"

"मतलब?"

"क्यों पता लगाऊं किसी के इरादे?"

"बहरहाल, तुम पूरे मामले मे 'इन्वॉल्व' थे?"

"मगर अब नहीं हूं।" कहने के साथ उसने रिवाल्विंग चेयर की पुश्त पीछे की ओर आंखें बंद करने के बाद लम्बे लम्बे खर्राटें मारने लगा। झुंझलाये हुए अमित ने कहा — "कल अगर खुद विनाश तुम्हारे सामने आकर खड़ा हो गया?"

"आंखे बंद कर लूंगा, देखूंगा ही नहीं साले को।"

केकड़ा की बातों और व्यवहार ने उन्हें बुरी तरह भन्ना दिया।

भन्नाये हुए विला पहुंचे।

नौकरों से पता लगा — "अमर सिंह जी गांव गये हैं।"

अमित भिनभिना कर रह गया — अधूरी — अधूरी सुनीता भी थी।

दरअसल वे चाहते थे शिमला में जो घटनायें घटी हैं उनके बारे में किसी से डिस्कस करें — शायद कोई नतीजा निकल सके — अब उम्मीद की किरन विमला पर स्थिर थी।

शायद वही आ जाये।

शायद कोई निष्कर्ष निकल सके।

परन्तु।

रात के बारह बज गये। न अमर सिंह लौटे न विमला की सूचना मिली।

वे डबल हाईड हॉल में, अलग अलग सोफों पर पड़े थे। इस कदर निराश और निढाल जैसे किसी ने जिस्म से खून की एक एक बूंद निचोड़ ली हो — अचानक टेलीफोन की घंटी ने घनघनाकर जिस्मों में जान डाली।

अमित ने लपक कर रिसीवर उठाया और इस उम्मीद में व्यग्रता के साथ 'हैलो' कहा कि शायद अमरसिंह या विमला हो मगर दूसरी तरफ से गुर्राहट भरी आवाज उभरी — "तुम वहां

पहुंच ही गये जहां मेरा मर्डर हुआ था।"

"त - तुम?" अमित उछल पड़ा।

विनाश की खनखनाती खिलखिलाहट, साथ ही आवाज — "अपनी मौत की आवाज पहचान ली तुमने?"

"क - कहां से बोल रहे हो?"

"बहुत नजदीक से . . . केवल पन्द्रह मिनट में तुम तक पहुंच सकता हूं।"

"पहुंचकर दिखा हरामजादे, टुकड़े - टुकड़े न कर दिये तो मेरा नाम अमित नहीं।"

आंखों में खौफ की छाया लिये सुनीता अमित को इस तरह टेलीफोन पर चीखता देख रही थी जैसे पागल हो गया हो, वह चीखता चला जा रहा था — "सुनीता की तरह मैं डरने वाला नहीं हूं, मर्द का बच्चा है तो सामने आ।"

"वही बताने के लिये फोन किया है।" बर्फ की मानिन्द सर्द और कठोर स्वर में कहा गया — "मैं आ रहा हूं . . . और इस बार मेरा आगमन तुम दोनों में से एक की मौत होगा।"

"हुंह — डरा किसे रहा है कमीने, तेरा मकसद हमारी मौत होता तो नारकंडा में . . ."

"नहीं बेटे नहीं।" एक एक शब्द चबाया गया — "तुम्हें वहीं मरना है जहां मैं मरा था।"

"तुम जो बार बार खुद को विनाश सिद्ध करने की कोशिश कर रहे हो — उसमें सुनीता भले ही फंस जाये, मैं नहीं फंस सकता।" अमित चीखता चला गया — "मैं समझ सकता हूं, तुम कोई बहरूपिये हो और हमें . . ."

"मैं आ रहा हूं लल्लू, तुम्हें कत्ल करने ठीक बारह बीस पर पहुंच रहा हूं मैं।" कहने के बाद दूसरी तरफ से रिसीवर रख दिया गया। ठगा सा अमित ज्यों का त्यों खड़ा रह गया। रिसीवर से निकलकर कानों में किर्र - किर्र की आवाज गूंज रही थी — हालांकि फोन पर चीखा चिल्लाया खूब था परन्तु चेहरे पर खौफ का कत्थक चल रहा था।

"क - क्या हुआ अमित . . . क्या हुआ?" सुनीता ने झंझोड़ा।

जाने कौन सी दुनिया से लौटा अमित। रिसीवर रखने के

साथ बारह पांच बजा रही वॉल क्लॉक पर नजर डालता बोला – "वह आ रहा है।"

"य - यहां?" सुनीता के हलक से चीख निकल गयी।

अमित को जाने क्या सूझा?

तेजी से रिसीवर उठा कर एक नम्बर डायल किया।

दूसरी तरफ से फोन उठाया गया, आवाज उभरी – "पुलिस।"

"इ – इन्सपैक्टर साहब हैं?"

"बोल रहा हूं।"

"मैं अमित हूं, खन्ना विला से।" वह स्वर को नियंत्रित रखने की भरपूर चेष्टा कर रहा था – "अ – आप मुझे जानते हैं?"

"आपको इस इलाके में कौन नहीं जानता, सेवा बताईये।"

"फौरन विला में आ जायें।"

"कारण?"

"एक शख्स ने फोन पर चेतावनी दी है, वह ठीक बारह बीस पर हमारा कत्ल करने आ रहा है।"

"कमाल है।" इन्स्पैक्टर के हंस पड़ने की आवाज उभरी – "ऐसे भी कहीं कत्ल होता हैं?"

"वह आयेगा इन्सपैक्टर, हमें पूरा विश्वास है वह जरूर आयेगा।"

सर्तक स्वर में पूछा गया – "विश्वास का कारण?"

"मैं सब कुछ बता दूंगा – प्लीज . . . आप फौरन आ जायें।"

"लगता है, फोनकर्ता आपका पूर्व परिचित है – किसी पिछले झगड़े की प्रतिक्रिया स्वरूप फोन किया है आपको।"

अमित झुंझला उठा – "फोन पर ही बात करते रहेंगे या रवाना भी होंगे?"

मानो अब इन्सपैक्टर गम्भीर हुआ, बोला – "मैं जल्दी पहुंचने की कोशिश करता हूं मगर तब तक जहां भी हैं, अन्दर से सारे खिड़की दरवाजे कसकर बंद कर लें - कोई चाहे जो तरकीब इस्तेमाल करे, आप उन्हें नहीं खोलेंगे।"

"हमें कैसे पता लगेगा बाहर आप . . .

"ठीक पन्द्रह - पन्द्रह सैकिन्ड के अन्तराल पर मैं तीन बार दस्तक दूंगा।"

"ओ. के.।" तेज स्वर में कहने के साथ अमित ने रिसीवर पटक दिया।

इन्सपैक्टर से जो बातें उसने की थीं उन्हें सुन कर सुनीता के छक्के छूट गये।

अमित ने उसे ढाढ़स बंधाने की गर्ज से कहा – "डरो मत सुनीता।"

"क – क्या वो सचमुच आ रहा है?" वह बड़ी मुश्किल से पूछ पाई।

"नहीं।" वह झुंझलाया – "मेरा दिमाग खराब हो गया जो पुलिस बुलाई है।"

कांपते लहजे में पूछा उसने – "अब क्या होगा अमित?"

"होगा क्या – साले ने विला में कदम रखा तो पकड़ा जायेगा।"

सुनीता के दिलो – दिमाग पर मानो बिजली गिरी, मुंह से निकला – "क्यों न विला से भाग निकलें?"

"बेवकूफी भरी बातें मत करो, इस वक्त यहां से भागने का मतलब है – साक्षात मौत के मुंह की तरफ भागना।" कहने के साथ उसने वॉल क्लॉक पर नजर डाली।

सवा बारह बज रहे थे।

अमित झपटा। मुख्य द्वार अंदर से बंद करता चीखा – "दरवाजे खिड़कियां बंद कर लो, ये हमें केवल पुलिस के लिये खोलने हैं।"

सुनीता में हिलने तक की ताकत न थी, दरवाजे खिड़कियां तो क्या बंद करती ?

यह काम चारों तरफ दौड़ते अमित ने अकेले कर लिया।

उस वक्त बारह बज कर सत्रह मिनट हो चुके थे जब अपना काम पूरा करने के बाद अमित सोफे पर गिर पड़ा।

वह बुरी तरह हांफ रहा था।

सुनीता ने सारी शक्ति समेट कर अपने जिस्म को घसीटा।

उसके नजदीक आई।

अब दोनों की निगाहें वॉल क्लॉक में मौजूद सैकिन्ड की सुई पर जमी थीं।

उससे केवल टिक . . टिक की आवाज निकल रही थी जबकि दिल 'धाड़ - धाड़' करके बज रहे थे।

एक-एक लम्हा एक एक युग की तरह गुजरा . . . लेकिन गुजर गया।

उधर, बारह बीस हुए इधर मुख्य द्वार पर किसी ने दस्तक दी।

अमित उछल कर खड़ा हो गया, सुनीता उससे लिपट गयी।

ठीक पन्द्रह सैकिण्ड बाद पुन : दस्तक उभरी।

भयाक्रांत अमित ने पूछा – "क – कौन?"

कोई आवाज न उभरी।

पुनः पन्द्रह सैकिन्ड गुजरे . . . दरवाजे पर पुनः दस्तक दी गई।

"खोलते हैं . . . . खोलते हैं।" कहने के साथ उत्साह में भरा अमित खुद को सुनीता से अलग करके लपका।

दरवाजा खोला।

और।

वहीं का वहीं, पत्थर की शिला बनकर खड़ा रह गया।

चूं चां तक की आवाज न निकल सकी हलक से।

उसके ठीक सामने, केवल एक फुट दूर खड़ा विनाश मुस्कुरा रहा था।

साक्षात वही जिसे वे कत्ल कर चुके थे।

पुलिस इन्सपैक्टर की वर्दी उसके जिस्म पर ऐसी 'फब' रही थी जैसे बनी ही उस जिस्म के लिये हो।

सुनीता की नजरें उस पर पड़ीं तो हलक से 'किल्ली' निकल गई – किसी भी तरफ को भागते न बन पड़ा उस पर जबकि इन्सपैक्टर के होठों पर मुस्कान नहीं, नन्हें - नन्हें सर्प रेंग रहे थे मानो – उसने सिर से कैप उतारी, बोला – "मैं सही वक्त पर पंहुच गया न?"

दोनों अवाक्।

"घबराईये नहीं।" उसने पुन : कहा – "पुलिस यहां पहुंच चुकी है – अब कोई हत्यारा आपका बाल तक बांका नहीं कर सकता।"

"क - कौन हो?" सुनीता चीखने के प्रयास में रो पड़ी – "कौन हो तुम?"

"इन्सपैक्टर अविनाश।" कहते वक्त उसकी आंखों में हिकारत और होठों पर विषाक्त मुस्कान थी।

"व – वही अविनाश न . . . जो मुझे लिफ्ट में मिला था?"

"और वह भी।" वह थोड़ा आगे बढ़ा – "जिसने चुम्बन लिया था।"

हकबका गई सुनीता।

अमित की समाधि टूटी, मुंह से निकला – "त - तुम इंस्पैक्टर हो ?"

"वही . . . जिससे तुमने अभी - अभी फोन पर बात की थी।"

वह आगे बढ़ा।

"नहीं।" उसी अनुपात में पीछे हटता अमित दहाड़ा – "तुम पुलिस इन्सपैक्टर नहीं हो सकते।"

"वर्दी पर यकीन नहीं तो इसे देखो।" कहने के साथ उसने जेब से परिचय पत्र निकाल कर उसकी तरफ बढ़ाया।

परिचय पत्र लेते वक्त अमित के हाथ सौ साल के बूढ़े की मानिन्द कांप रहे थे . . . और उसे देखने के बाद तो आंखें इस कदर हैरत से फटी रह गयीं जैसे हाथी को शीशी में बंद देख रहा हो - बुरी तरह आश्चर्य चकित वह बड़बड़ा उठा – "य - यह कैसे हो सकता है?"

पल भर के लिये ठहर गये इन्सपैक्टर ने पुन : उसकी तरफ बढ़ते हुए कहा – "इस रंग-रंगीली दुनिया में सब कुछ हो सकता है माई डीयर।"

"अ - आखिर हो कौन तुम?" पीछे हटता अमित चिंघाड़ा – "ये चक्कर क्या है?"

"धीरे - धीरे सब पता लग जायेगा।"

सुनीता चीखी – "चाहते क्या हो?"

सम्पूर्ण डबल हाईट हॉल में घूमने के बाद उसकी दृष्टि बाथरूम के बंद दरवाजे पर स्थिर हो गयी, अजीब गुर्राहट भरे लहजे में कहा उसने – "यहां, जिस हॉल में तुमने मुझे मारा था – एक ऐसा डायलॉग बोलना चाहता हूं जिसे मुझसे पहले दुनिया के किसी शख्स ने नहीं बोला – या यूं कहो, ये डायलॉग बोलने का सौभाग्य कभी किसी को नहीं मिला।"

"म - मतलब?" एक साथ दोनों के मुंह से निकला।

"मैं तुम दोनों को अपनी हत्या के जुर्म में गिरफ्तार करता हूं।" कहते हुऐ उसने अपनी बैल्ट के साथ लटक रही हथकड़ी हाथ में ले ली।

वे इस तरह खड़े रह गये जैसे अंतिम समय में शेर के सामने हिरन और हिरनी खड़े रह जाते हैं।



पुलिस कमिश्नर के आफिस में एक टी.वी. और वी.सी. आर. रखा था। वी.सी. आर. में वीडियो कैसेट घूम रही थीं। कमिश्नर और इन्सपैक्टर अविनाश की नजरें स्क्रीन पर केन्द्रित थीं।

स्क्रीन पर अमित और सुनीता नजर आ रहे थे।

शिमला स्थित होटल के कमरे का दृश्य था वह।

सुबह के दस बजे का दृश्य।

सुनीता ने अभी अभी पर्दा खींचा था – कमरे में मौजूद पेन्टिग को देखकर चीखी थी – अमित हड़बड़ा कर उठा था और उसके बाद उनके बीच जो बातें हुई उन सभी को कमिश्नर ने गौर से सुना – अंत में अमित और सुनीता पेन्टिग को उतार कर बाथरूम में ले गये।

फिल्म खत्म!

इन्सपैक्टर अविनाश ने आगे बढ़कर टी.वी. और वी.सी. आर. ऑफ कर दिये।

कमिश्नर ने कुर्सी-सीधी करते हुऐ पूछा – "इसके बाद तुम इनके पीछे नारकंडा गये?"

"नो सर।" अविनाश ने सफेद झूठ बोला – "अन

उनका और ज्यादा पीछा करने की मुझे कोई जरूरत नहीं रह गई थी।"

"हमें तुम पर गर्व है इन्स्पैक्टर अविनाश, अपनी सात साल की सर्विस में तुमने एक से एक जटिल केस हल करके नये कीर्तिमान स्थापित किये हैं . . . और ये केस तो उन सभी से अनूठा था – चार साल पहले हुए एक ऐसे मर्डर को आखिर तुमने मर्डर सिद्ध कर दिया जिसे पुलिस ने सुसाइड केस समझकर फाईल बंद कर दी थी।"

"समझकर नहीं सर, इन्सपैक्टर केकड़ा ने जानबूझ कर सुसाइड केस बना दिया था इसे आपने सुना ही है, मैडिकल रिपोर्ट गायब करने के उसने एक करोड़ रूपये लिये।"

"सुना तो है और वीडियो केसिट सब कुछ क्लियर भी कर देती है, लेकिन हमारे ख्याल से केस कोर्ट में पिट जायेगा – कम से कम उतनी सजा तो इन लोगों को नहीं ही मिल पायेगी जितनी ऐसे हत्यारों को मिलनी चाहिये।"

"कारण?"

"चश्मदीद गवाह के अभाव में . . . "

कमिश्नर इतना ही कह पाये थे कि अविनाश के होठों पर रहस्यमय मुस्कान उभर आई, उसे देखकर कमिश्नर ने पूछा – "क्या बात है, इस तरह मुस्कुरा क्यों रहे हो तुम?"

"आप जानते हैं सर, सात साल में मेरा एक भी केस कोर्ट में नहीं पिटा - मुजरिम को हमेशा वही सजा हुई है जो मैंने चाही - मैं मुजरिम के खिलाफ सुबूत और गवाह ही इतने इकट्ठे कर लेता हूं कि उनका वकील लाख सिर पटकने के बावजूद कुछ नहीं कर पाता।"

"इस केस में कौन सा गवाह है तुम्हारे पास?"

"पेश करता हूं।" कहने के साथ उसने इन्टरकाम पर किसी से सम्बन्ध स्थापित किया और बोला – "उसे भेज दो।"

कमिश्नर ने हल्की मुस्कान के साथ कहा – "तुम तो हमारे सामने भी सस्पैंस क्रियेट कर रहे हो?"

"ऐसा इसलिये लग रहा है सर क्योंकि अभी आपने मुझसे यह नहीं पूछा कि इस मामले की भनक आखिर मुझे कहां से लगी। वो कौन सी घटना थी जिसके कारण मैं चार साल पहले

हुए इस मर्डर की खोजबीन करने निकल पड़ा?"

"अब बता दो।"

"शुरूआत चश्मदीद गवाह करे तो बेहतर होगा।" इधर उसका वाक्य खत्म हुआ उधर, दरवाजे पर कांच की नीली गोलियों जैसी आंखों और तांबे के तारों जैसे बालों वाली लम्बी लड़की नजर आई।

इस वक्त उसके जिस्म पर सफेद साड़ी और ब्लाऊज था।

उसने अन्दर आने की इजाजत मांगी।

कमिश्नर की इजाजत के बाद चेहरे पर गम्भीरता ओढ़े ऑफिस में आई और अविनाश के इशारे पर उसकी बगल वाली कुर्सी पर बैठ गयी।

अविनाश ने कमिश्नर को बताया – "ये विमला है सर।"

"विमला।" कमिश्नर के मस्तक पर बल पड़ गये – "वही न, जिसका जिक्र अमित और सुनीता अपनी वार्ता में कर रहे थे कि पेन्टिग में जलते हुए विनाश के तीसरी तरफ विमला होनी चाहिये थी जबकि नहीं है – इस कारण विमला पर शक भी जाहिर कर रहा था अमित।"

"ये वही विमला है।"

"तुम्हारे हाथ कहां से लग गई?"

"इसका हृदय परिवर्तन न हुआ होता तो शायद यह केस कभी न खुल पाता, विनाश के कत्ल को लोग सारे जीवन आत्महत्या समझते रहते - विमला उस हादसे की चश्मदीद गवाह है, यह बात वे केसिट में खुद कुबूल करते नजर आते हैं और वही विमला सरकारी गवाह की हैसियत से कोर्ट में सारे हादसे को ज्यों का त्यों बयान करेगी।"

"किस्सा क्या है?"

अविनाश ने विमला से कहा – "बताओ विमला।"

"विनाश से मेरी पहली मुलाकात 'कॉफी हाऊस' में हुई थी सर, पहली ही मुलाकात में हम एक दूसरे की तरफ आकर्षित हो गये और अक्सर मिलने लगे - धीरे - धीरे मैं पूरी तरह उसकी मुहब्बत की गिरफ्त में फंस गयी।" एक बार शुरू होने के बाद

विमला ने वही सब कहा जो अमित और सुनीता को बताया था - विनाश द्वारा अपने पिता की हत्या तक का वृतांत सुनाने के बाद वह सांस लेने के लिये रुकी बल्कि यह कहा जाये तो ज्यादा मुनासिब होगा, सुनाते सुनाते भावुक होकर अनियंत्रित हो गई और इस वक्त खुद को नियंत्रित करने का सा प्रयत्न करती नजर आ रही थी।

कमिश्नर साहब ध्यान पूर्वक उसकी एक एक बात सुन रहे थे।

अविनाश खामोश बैठा रहा।

दूसरी किश्त में विमला ने बताया, विनाश ने किस तरह उसे मारना-पीटना और गाली-गलौच देना शुरू किया – यह भी कि उसने क़िस तरह फोटो दिखा कर उसे काबू में किया फिर एक दिन विनाश के गायब हो जाने, कांता के जरिये विला में पहुंचने का हाल बयान किया।

"नोट करो अविनाश।" कमिश्नर ने कहा – "कांता की गवाही इस केस को और मजबूत बना सकती है, बहरहाल . . . उसने ट्रक एक्सीडेन्ट के जरिये खन्ना विला में ही नहीं बल्कि मिस्टर खन्ना के दिल में घुसने में विनाश की मदद की थी।"

"सॉरी सर, कांता अब उपलब्ध नहीं है।"

"क्यों?"

"करीब तीन साल पहले कैंसर से उसकी मृत्यु हो चुकी है।"

"ओह।" कमिश्नर का उत्साह ठंडा पड़ गया – "कैसे पता लगा?"

"विमला का बयान सुनने के बाद मेरे दिमाग में भी यही बात आई थी – मैंने इससे उसका पता पूछा – कोठे पर पहुंचा, पता लगा उसे मरे तीन साल गुजर चुके हैं।"

"यानि विमला को उसकी मौत की जानकारी नहीं थी?"

"कैसे होती सर?" विमला ने कहा – "जब विनाश ही न रहा तो मेरा उससे क्या सम्बन्ध था?"

"करेक्ट।" वे बोले – "खैर . . . उसके बाद?"

विमला ने बता दिया कि अमित और सुनीता उसके पास कैसे पहुंचे और वहां उनके बीच क्या बातें हुई?

कमिश्नर ने कहा – "यानी उस मुलाकात में विनाश के मर्डर का फैसला हो गया?"

"यह भी कि सुसाइड नोट मैं लिखवाऊंगी।"

"रहने वाली कहां की हो?"

"विजय नगर की।"

"हूं।"

इस बार विमला ने सुसाइड नोट लिखवाने से विनाश के मर्डर तक का वृतांत सुना दिया और लम्बी सांस लेने के बाद बोली – "उसके बाद सब कुछ भूल कर मैंने अपने पिता के कारोबार को कर्जमुक्त किया और उसे आगे बढाया। 'अंकुर' को जन्म दिया, आज वह साढ़े तीन साल का है – एक चिल्ड्रन होम में पल रहा है।

"अमित और सुनीता से कभी सम्पर्क स्थापित नहीं किया?"

"नो सर, लेकिन . . ."

"लेकिन?"

"सोचा था, विनाश का अन्त सुकून पहुंचायेगा मगर उस कृत्य ने मुझे और विचलित कर दिया – अंतरात्मा चीख - चीख कर कहने लगी – वाह विमला . . . वाह, अपने पिता की मौत का क्या शानदार बदला लिया है तूने – एक हत्यारे को मौत के घाट उतार दिया मगर दूसरा . . . दूसरा अभी तक सांसे ले रहा है . . . और ले भी क्यों नहीं, उनका दूसरा हत्यारा तू खुद जो है – भला अपने आपको कौन खत्म करता है – अंतरात्मा की ये आवाज मुझे जीने नहीं दे रही थी – खुद से घृणा होती जा रही थी मुझे - जब भी आईने के सामने जाती, प्रतिबिम्ब दहाड़ उठता – 'धिक्कार है विमला, धिक्कार है तुझ पर – पिता का हत्यारा करार देकर विनाश को तो मौत के घाट उतार दिया लेकिन खुद अभी तक ज़िन्दा है – अरी ऐसी ही इंसाफ करने वाली बनती है तो वही सजा खुद को भी दे जो विनाश को दी है – तू भी तो उतनी ही कुसूरवार है – तेरे पापा की भटकती रूह को तब तक शांति नहीं मिलेगी जब तक तू इस धरती पर जिन्दा है – तू स्वार्थी बेईमान और डरपोक है – अपने जीवन से सबको मोह होता है और तुझे तो इतना है कि पिता की हत्या करने के बाद

शान से जी रही है — धन्य है तू . . . तू धन्य है विमला' ।"

कहती कहती वह फूट फूट कर रो पड़ी मगर रुकी नहीं, कहती चली गई — "मैं बुरी तरह फंस गयी थी कमिश्नर साहब, अंतरात्मा जीने नही दे रही थी और नन्हा अंकुर मरने नहीं दे रहा था — अंकुर के मोह ने मुझे चार साल बांधे रखा लेकिन अंततः विजयी अन्तरात्मा रही। साढ़े तीन साल का होते ही मैंने अंकुर को 'चिल्ड्रन होम' के हवाले किया और खुद को सजा देने की खातिर पुलिस को सब कुछ सच-सच बताने का दृढ़ निश्चय करके पुलिस स्टेशन पहुंच गयी।"

"कब की बात है ये?"

"चार दिन पहले की।"

"तब तो इसे थाने पर तुम मिले होंगे?" कमिश्नर ने अविनाश से पूछा।

"यस सर।"

"उसके बाद?" कमिश्नर ने पुन : अपनी नजरें विमला पर स्थिर कर दीं।

"थाने पहुंचकर मैंने इन्सपैक्टर से मिलने की इच्छा व्यक्त की — एक पुलिस मैन ने इनके आफिस की तरफ इशारा किया और ऑफिस के दरवाजे पर पहुंचते ही इन्हें देख कर मेरे हलक से जोरदार चीख निकली — साक्षात विनाश को पुलिस की वर्दी में बैठा देखकर होशो-हवास काबू में रखती भी तो कैसे — इस तरह चीखती-चिल्लाती वापस भागी जैसे विनाश का भूत देखा हो — मेरी इस हरकत पर ये चौंक पड़े — चीखों ने थाने में मौजूद हर पुलिसमैन को हड़बड़ा दिया था — इधर मैं चीखती चिल्लाती मुख्य द्वार की तरफ दौड़ी उधर, ये दौड़ कर ऑफिस से बाहर आये — पुलिस वालों को मुझे पकड़ लेने का हुक्म दिया — उन्होंने मुझे दबोच लिया दहशत की ज्यादती के कारण मैं बेहोश हो चुकी थी।"

"विनाश से इतनी शक्ल मिलती है अविनाश की?"

"शक्ल ही नहीं मिलती सर, हूबहू वही है ये।"

अविनाश ने कहा — "इससे आगे का किस्सा मैं बयान करूं तो ज्यादा मुनासिब होगा सर।"

"बोलो।" कमिश्नर साहब उससे मुखातिब हुए

"हम लोग काफी प्रयासों के बाद इसे होश में ला पाये – होश में आते ही मुझे देखकर ये पुनः आंतकित हो उठी – इस सस्पैंस ने मुझ अकेले को ही नहीं, सारे थाने को असमंजस में डाल दिया कि मुझ पर नजर पड़ते ही इसकी हालत ऐसी क्यों हो जाती है? ये बार बार कह रही थी कि – 'नहीं . . . तुम जिन्दा नहीं हो सकते।' आप समझ सकते हैं सर इसके यह कहने पर मैं किस कदर यह जानने के लिये उत्सुक हो उठा होऊंगा कि आखिर ये मुझे कौन समझ रही है – मेरे बार बार पूछने पर जब इसने बताया तो मैं बुरी तरह चौंक पड़ा।"

"कारण?"

"इसने मुझे विनाश कह कर पुकारा था।"

"तो?"

अविनाश ने तुरन्त जवाब न दिया – कुछ देर खामोश रहा, फिर बोला – "अब मैं वो बात बताने जा रहा हूं सर जो आपसे पहले कभी किसी को नहीं बताई, इसे भी नहीं।"

"ऐसी क्या बात है?"

"विनाश मेरा भाई था।" अविनाश की आंखें शून्य में स्थिर हो गयीं – "जुडवां भाई।"

"क - क्या?" कमिश्नर साहब उछल पड़े।

विमला ने भी बुरी तरह चौंककर उसकी तरफ देखा।

"ये।" कहने के साथ अविनाश ने अपनी जेब से एक फोटो निकाल कर टेबल पर रख दिया। फोटो ब्लैक एण्ड व्हाईट था, स्वयं बता रहा था कि बहुत पुराना है और किसी थर्ड क्लास कैमरे से खींचा गया है।

कमिश्नर साहब ने फोटो उठा कर ध्यान से देखा।

ग्रामीण दम्पत्ति का फोटो था वह।

एक साल साल का बच्चा औरत की गोद में था, दूसरा मर्द की।

दोनों बच्चों की शक्ल हू-ब-हू एक थी।

विमला चेहरे पर हैरानगी लिये कभी फोटो को देख रही थी कभी अविनाश को जबकि कमिश्नर ने पूछा – "क्या ये तुम्हारे परिवार का फोटो है?"

"यस सर।" अविनाश ने कहा – "ये मेरे माता पिता हैं

जो आज भी जीवित हैं।"

"दोनों बच्चों में से तुम कौन से हो?"

"पिता की गोद में मैं हूं, मां की गोद में विनाश – ये हम दोनों का पहला और आखरी फोटो है – गांवों में बीस साल पहले फोटो खींचने का कोई साधन नहीं होता था – यह फोटो गांव के नजदीक हर पांच साल बाद गंगा किनारे लगने वाले मेले में खिंचा था, उसी मेले में विनाश गुम हो गया।"

"गुम हो गया?"

"विमला से मिलने से पूर्व तक मैं भी अपने मां बाप और सारे गांव की तरह उसे गंगा में डूब गया समझ रहा था।"

"विस्तार पूर्वक बताओ, हुआ क्या था?"

"मेरे पिता का नाम गोवर्धन शर्मा है सर। बहुत पहले उन्होनें गांव में आये एक 'योगी' से लम्बे समय तक सांस रोके रखने की विद्या सीखी थीं। उसी विद्या को उन्होंने अपनी आजीविका का साधन बनाया। वे अक्सर गांव - गांव जाकर और जब कहीं मेला लगता तो मेले में खेल दिखाते थे।"

"कैसा खेल?"

"वें जमीन में आठ-दस फुट गहरा गड्ढा खुदवाते। समाधि लगाकर उसमें बैठ जाते और गड्डे भरवा देते। चौबीस - चौबीस घन्टे तक जमीन के अन्दर रहते। इस बीच दर्शक उस गड्डे वाले स्थान पर जो फूल और पैसे चढ़ाते उन्ही से हमारा परिवार चलता था।"

"हां, ऐसा चमत्कार मेलों में हमने भी कई बार देखा है।"

"दर्शक इस खेल को चमत्कार समझकर ही पैसे आदि चढ़ाते हैं परन्तु वास्तव में ये योग की एक सामान्य प्रक्रिया है सर! समाधिरत् योगी उस दरम्यान न केवल अपनी सांसे ही रोके रखता है बल्कि नब्ज और धड़कन तक बंद कर लेता है। अभ्यास से इस समाधि का समय बढ़ाया जा सकता है।

"कमाल है।"

"उस मेले में पिता जी परिवार सहित गये थे। एक बार समाधि लगाकर जो पैसे कमाये उन्हें इकठ्ठा करके वे हम सबको मेला घुमाने निकल पड़े। मेले में घूमता विनाश बार बार 'उड़ने वाली चिड़िया' लेने की जिद कर रहा था। पिता ज़ी दिला नहीं रहे

थे — मुझे बहुत धुंधला-धुंधला याद है — बाद में माता पिता ने बताया भी, मां के कहने पर पिताजी ने उसे उड़ने वाली चिड़िया दिला दी — वह उसी में मस्त हो गया — कुछ देर बाद हम एक दुकान के बाहर बैठ कर 'जलेबी' खाने लगे — मां ने विनाश से भी कहा मगर उसे खाने का होश कहां — बार-बार चिड़िया को उड़ाने और दौड़ कर पकड़ने में मस्त था — यहीं हम तीनों का ध्यान चूका — जलेबी खत्म करने के बाद देखा तो विनाश आस-पास न था — पागलों की तरह उसे ढूंढते फिरे — मेले में हमारे गांव के अन्य लोग भी थे — उन्होंने मदद की मगर वह नहीं मिला — कई लोगों ने बताया, विनाश उड़ने वाली चिड़िया को बार-बार उड़ाता और उसका पीछा करता गंगा किनारे देखा गया था — कई ने ये भी कहा, उन्होंने विनाश को गंगा जल में उतरते देखा था — भरपूर तलाश करने और अनेक बार एनाउन्स कराने के बावजूद जब वह नहीं मिला तो मान लिया गया कि गंगा में डूब गया है, कोशिश की जाने के बावजूद उसकी लाश बरामद न हो सकी।"

"विमला के मुंह से 'विनाश' नाम सुनते ही तुम कैसे समझ गये कि वह तुम्हारा वही भाई होगा?"

"क्या हमारी शक्लें एक होना और उसका नाम भी विनाश होना पुख्ता प्रमाण नहीं है सर?"

"सो तो है मगर . . .

"मगर?"

"अगर मेले से उसे किसी ने 'किडनैप' किया था अथवा गंगा से किसी को जीवित मिल गया था तो उसने उसका नाम भविष्य के लिये भी विनाश क्यों रखा?"

"कलाई पर उसका नाम खुदा था सर।" अविनाश ने अपनी बांई कलाई आगे करने के साथ कहा — "ठीक इस तरह।"

विमला और कमिश्नर ने देखा — उसकी कलाई पर 'अविनाश' खुदा हुआ था।

विमला कह उठी —"ये सच है, उसकी कलाई पर 'विनाश' लिखा था और रिस्टवॉच बांधने वाली ज़गह पर ठीक ऐसा ही काला मस्सा भी था।"

"ये नाम भी माता पिता ने उसी दिन फोटो खिंचवाने से पहले मेले में खुदवाये थे— हमारी शक्लें इतनी मिलती थीं कि कई बार माता-पिता तक धोखा खा जाते थे – एक को दो बार खानां मिल जाता तो दूसरा भूखा रह जाता – शरारत एक करता,पिट दूसरा जाता – इसी तरह की छोटी मोटी उलझनों से बचने के लिये मां ने हमारी कलाईयों पर नाम खुदवा दिये थे।"

"फिर भी . . .

"मुमकिन है सर, उसे किसी ने दुर्भावना से किडनैप न किया हो बल्कि कहीं दूर, गंगा में बहता किसी के हाथ लगा हो —उन्होंने हमारा पता निशान निकालने की कोशिश की हो मगर सफल न हुए हों – हाथ पर खुदा नाम देखकर यह सोचते हुऐ यही नाम रहने दिया हो कि शायद यह नाम ही अपने परिवार से बिछुड़े इस बच्चे को कभी पुन ः उसके परिवार से मिला दे।"

"यही हुआ लगता है।" बड़बड़ाने के बाद कमिश्नर साहब ने विमला से पूछा – "विनाश के मां बाप का नाम क्या था?"

"उसे खुद मालूम नहीं था।"

"मतलब?"

"वह हमेशा यही कहता, जब से होश सम्भाला है – खुद को आवारा कुत्तों की तरह सड़क पर भटकते पाया – न मां -बाप की शक्ल याद है, न ही ये पता है कि दुनिया में. कहीं उसका अपना कोई है भी या नहीं, है तो कहां है?"

"लगता है वह तुम्हारा भाई ही था अविनाश।"

"विश्वास तो विमला द्वारा विनाश के बारे में बताये जाने पर थाने में ही हो गया था सर लेकिन अब जबकि विमला बता रही है उसकी कलाई पर विनाश खुदा था तो किसी किस्म के शक की गुजांईश नहीं रही - जिसे अपने पालने पोशने वालों तक की शक्ल ध्यान नहीं थी पता नहीं वह अभागा इतना बड़ा कैसे हो गया - किसी ने पाला पोशा भी था या आवारा कुत्तों की तरह दूसरों की झूठन खाता खुद पलता पोशता रहा - इन हालात में अगर वह ठग और राहजन बन गया तो आश्चर्य की बात नहीं है – आवारा कुत्तों की तरह पलने वाले बच्चे मुजरिम के अलावा और बन भी क्या सकते हैं?"

अविनाश इतना भावुक हो गया कि न कमिश्नर पर कुछ कहते बन पड़ा, न विमला पर ।

तनावपूर्ण सन्नाटा छा गया ऑफिस में।

और फिर . . . उस सन्नाटे को अविनाश ने ही तोड़ा — "मैं और सहयोगी पुलिस मैन विमला को बड़ी मुश्किल से विश्वास दिला सके कि मैं वो विनाश नहीं जो यह समझ रही है बल्कि पिछले सात साल से पुलिस में सर्विस कर रहा इन्सपैक्टर अविनाश हूं — तब कहीं जाकर इसने वो सब बताया जो आपके सामने अभी अभी कहा है — सुनने के बाद मैं चार साल पहले हुई ऐसी हत्या को हत्या सिद्ध करने के प्रति दृढ़ संकल्प हो गया जिसे हत्यारों ने केकड़ा जैसे भ्रष्ट पुलिसिये की मदद से आत्महत्या सिद्ध कर दिया था हालांकि आज अपने भाई के हत्यारों को फांसी के फंदे पर झूलते देखने की मेरी सबसे बड़ी हसरत है लेकिन यकीन कीजिये, अगर मरने वाला मेरा भाई न होता तब भी, मैं उन्हें फांसी के फंदे तक पहुंचाने के लिये इतनी ही मुस्तैदी से ड्यूटी अंजाम देता।"

"मालूम है अविनाश बल्कि . . . हम तुम्हारी ईमानदारी और कर्त्तव्य निष्ठा की मिसाल दूसरों को दिया करते हैं।"

"विमला का बयान पूरा होते ही मैंने इससे नम्बर लेकर राजनगर स्थित 'खन्ना विला' फोन किया — एक नौकर से पता लगा अमित और सुनीता शादी की चौथी वर्ष गांठ मनाने शिमला गये हैं — मैं तुरन्त विमला को लेकर शिमला पहुंचा — उस होटल के ठीक सामने स्थित होटल में ठहरा जिसमें वे लोग ठहरे हुए थे — आप समझ सकते हैं, विनाश की हत्या के जुर्म में उन्हें सीधे सीधे गिरफ्तार कर लेने से कोई फायदा न था — केवल विमला के बयान के आधार पर कोर्ट में कुछ साबित नहीं किया जा सकता था — मैंने केस को मजबूत बनाने के लिये एक योजना तैयार की — खुद को सुनीता के सामने ले गया — लिफ्ट में मुझे अपने नजदीक खड़ा देख कर उसकी वही हालत हुई जो विमला की हुई थी— मैं अनजान बना रहा, अपना वास्तविक नाम उसे बताया — मकसद उसे और अमित को ' भयग्रस्त' करने के साथ साथ उलझन में डाल देना था — लिफ्ट से निकल कर जब वह अपने रूम में पहुंची — बाथरूम का दरवाजा पीट-पीट कर

खुलवाया, तब मैं गैलरी में था — हटा तब, जब अमित ने रिसेप्शन पर फोन करके डाक्टर भेजने के लिये कहा। अगले दिन सुबह मैनेजर से मिला, मुझे मालूम था वह इस मुलाकात के बारे में उन्हें जरूर बतायेगा — उस क्षण उद्देश्य उन्हें मैसेज पहुंचाना था कि मैं विनाश नहीं कोई अन्य हूं — खुद को पुनः लिफ्ट में दिखा कर उन्हें आतंकित किया और अमित के पांचवीं मंजिल पर पहुंचने से पहले गुम हो गया — जिस वक्त वे मैनेजर के केबिन में बैठे उससे बात कर रहे थे उस वक्त मैने चांसलर की आधी सिगरेट पीकर उनके कमरे में डाली और जूते से कुचल दी — उद्देश्य उनके दिमाग को यह मैसेज पहुंचाना था कि मैं विनाश ही हूं।"

"ये मामला समझ में नहीं आया।" कमिश्नर ने कहा — "कहीं यह दर्शाने की कोशिश की कि विनाश हो, कहीं यह कि कोई अन्य हो — ऐसा क्यों किया तुमने, एक ही लाईन पर क्यों नहीं चले?"

"मैं उनके दिमागों में उलझन क्रियेट करना चाहता था — वाद-विवाद पैदा करना चाहता था उनके बीच ताकि वे चार साल पहले घटी घटना पर विस्तार से चर्चा करें और मुझे उसकी वीडियो फिल्म बनाने का मौका मिले — वैसा ही हुआ, अगले दिन सुबह कमरे में लगी पेंटिंग देखते ही वे शुरू हो गये और मैंने वह केसिट तैयार कर ली जो उनके गले में फांसी का फंदा डाल देगी!"

"पेंटिंग उनके कमरे में कैसे टांगी?"

"जिस वक्त वे कमरे में पड़ी चांसलर की आधी सिगरेट को देखकर हलकान हो रहे थे उस वक्त मैं पेन्टिग के साथ डबल बैड के नीचे था। चार बजे के बाद जब कमरे में दोनों की नाकों से निकलने वाले खर्राटें गूंजने लगे तो मैं चुपचाप निकला। झरने की पेंटिंग के स्थान पर वह पेंटिंग टांगी जो उनके होश उड़ा देने वाली थी और झरने की पेंटिंग अपने साथ लिये कमरे से बाहर आ गया, उनके बराबर वाले कमरे में पहुंचा।"

"बराबर वाले कमरे में?"

"विमला मेरी योजना के मुताबिक उसी दिन वह कमरा किराये पर ले चुकी थी!"

"ओह!"

"दोनों कमरों के बीच एक रोशनदान था – उसी के जरिये वीडियो फिल्म तैयार की – आपने देखा ही, उनमें से किसी को रोशनदान की तरफ ध्यान देने का होश न था जबकि मैं उनके गले में पड़ने वाले फांसी के फंदे की रस्सी 'बट' चुका था।"

"उसके बाद?"

"वे नारकंडा चले गये, मैं विमला के साथ यहां आ गया।"

कमिश्नर साहब मुस्कुरा दिये – हम हमेशा से तुम्हारे इसी टेलेन्ट के कायल हैं अविनाश, मुजरिम को फंसाने के लिये जो जाल तुम बिछाते हो उसमें फंस कर मुजरिम वही करता है जो तुम चाहते हो – शिमला से लौटते ही तुमने हमसे कहा कि – 'मुझे तत्काल 'विजय नगर' से राजनगर ट्रांसफर कर दिया जाये, – हमने कारण पूछा, तुमने कहा – 'शीघ्र ही इस इलाके का एक ऐसा केस खोलने और मुजरिमों को गिरफ्तार करने वाला हूं कि आप मेरी पीठ थपथपाये बगैर नहीं रह सकेंगे' – तुम्हारे पिछले रिकार्ड को देखते हुए हमने बात मान ली और सचमुच एक ऐसा केस खोल कर तुमने मुजरिमों को गिरफ्तार कर लिया जिसके खुलने की कभी कोई कल्पना तक नहीं कर सकता था।"

"अमित और सुनीता हवालात में बंद हैं सर, इजाजत हो तो केकड़ा को भी . . ."

"हमारे इजाजत देने की जरूरत ही कहां रह गयी बर्खुरदार।" कमिश्नर साहब खुश थे – "उसके खिलाफ जो सुबूत तुम्हारे पास हैं वे खुद कानूनी रूप से तुम्हें उसे हवालात में ठूंस देने का अधिकार देते हैं।"

"ओ. के. सर!" अविनाश खड़ा हो गया – "इजाजत दीजिये।"



इन्सपैक्टर अविनाश पर नजर पड़ते ही 'केकड़ा' का दिमाग 'भक्क' से उड़ गया।

जहन में विमला, अमित और सुनीता द्वारा कहा गया

एक-एक लफ्ज गूंज रहा था। उबली हुई आंखों में चल रहा था हैरत का कत्थक।

लाख कोशिश के बावजूद मुंह से चूं-चां तक की आवाज न निकाल सका – पेट में अनजानी गैस का गोला तेजी से घूम रहा था – चेहरे पर गर्दिश कर रहे थे ऐसे भाव जैसे इंसान को नहीं साक्षात कुतुबमीनार को महरौली छोड़ कर अपने ऑफिस में घुस आते देख रहा हो जबकि होठों पर कुटिल मुस्कान लिये अविनाश ने पूछा – "पहचाना मुझे?"

"न – नहीं तो।" केकड़ा ने बहुत जल्द खुद को नियंत्रित किया – "कौन हैं आप?"

"इन्स्पैक्टर अविनाश।" वह हंसा।

"तशरीफ का टोकरा उठाये यहां क्यों घुसे चले आ रहे हैं?"

अविनाश ने मजेदार स्वर में कहा – "गिरफ्तार करने आया हूं तुम्हें।"

"गलत जगह आ गये जनाब, यहां स्कूटर के नकली पार्ट्स नहीं बनते बल्कि आई. एस. आई. मार्का वाला असली माल तैयार होता है।"

"सामान्य अवस्था में आदमी जितना समझदार होता है, संकट के समय उतना ही बेवकूफ सिद्ध होता है।"

"आप बंदे को प्रवचन देने पधारे हैं?"

"मेरी शक्ल देखकर तुम्हें कुछ याद नहीं आया?" अविनाश की मुस्कान गहरी हो गयी।

"न।" उसने इंकार में गर्दन हिलाई।

"जबकि आना चाहिये था, कम से कम वो शख्स याद आना चाहिये था जिसने चार साल पहले खन्ना विला में आत्महत्या कर ली थी।" अविनाश कहता चला गया – "इसलिये याद आना चाहिये था हुजूर क्योंकि उसकी लाश तुमने खुद सील करके पोस्टमार्टम हेतु भेजी थी।"

"अरे हां यार।" केकड़ा कह उठा – "तुम्हारी शक्ल तो उससे बहुत मिलती है।"

"शक्ल ही नहीं मिलती बंदा परवर, मैं हूं ही वही।"

"अमां जाओ भी, क्यों मजाक करते हो?" दिल ही दिल

में केकड़ा भले ही थर्रा रहा हो परन्तु प्रत्यक्ष में पूरा मुकाबला कर रहा था – "भला, मुर्दे भी चलते-फिरते हैं?"

"मैं वही मुर्दा हूं बेटे।" अविनाश ने दांत पीसे – "वही विनाश हूं मैं।"

"कभी कहते हो विनाश हो – कभी अविनाश हो, तुम तो मियां पेशाब निकालने पर तुले हो मेरा।"

"बात करने की तुम्हारी ये शैली बहुत जल्दी चेंज हो जायेगी।"

"ऐसा क्यों?"

"क्योंकि विनाश मर्डर केस को सुसाइड केस बनाकर एक करोड़ और इसी तरह दूसरे केसों में रिश्वत लेकर कमाई गयी रकम से जो तुमने रियासत खड़ी की है – ये यहीं की यहीं रह जायेगी और तुम नर्क की तरफ कूच कर चुके होंगे।"

"पेंचदार बातें अपने पल्ले नहीं पड़ रहीं – सीधे बताओ न भैया, गलती क्या हो गयी इस नाचीज से?"

"समझदार तो खूब बनते थे मगर निकले निपट मूर्ख।" उसके चेहरे पर नजरें टिकाये अविनाश कहता चला गया – "तुमने इतनी छोटी बात पर विचार नहीं किया कि वो बाथटब आखिर पानी से भर किसने दिया था जिसमें जलता हुआ विनाश कूदा?"

केकड़ा के दिमाग की समस्त नसें बुरी तरह झनझनाकर रह गयीं – उबलती हुई आंखें कुछ और फट पड़ीं –पहली बार ऐसा हुआ कि उसकी लपर-लपर चलती जुबान तालु से जा चिपकी – जिस्म के सभी मसामों ने एक दूसरे से शर्त लगा कर पसीना उगला – पलकें तक नहीं झपक रही थीं पट्ठे की – अविनाश को इस तरह देखता रह गया जैसे खुद को लेने आये यमराज को देख रहा हो।

"लगता है, अब तुम्हारी बुद्धि के कपाट खुले।" रहस्यमय मुस्कान के साथ कहते अविनाश ने आगे बढ़ कर उसके हाथों में हथकड़ी डाल दी – केकड़ा इस तरह खड़ा रहा जैसे पत्थर की शिला को हथकड़ी पहनाई जा रही हो।

"ओह।" हवालात में प्रविष्ट होते केकड़ा के मुंह से निकला – "आप लोग पहले से ससुराल में हैं?"

अमित और सुनीता ने उसे देखा – दोनों के चेहरों पर नापसन्दगी के भाव उभरे।

"नाराज लगते हैं भाई लोग।" कहता हुआ उन्हीं के नजदीक फर्श पर बैठ गया।

अमित बोला – "तुमने हमारी बात पर विश्वास नहीं किया, कर लेते तो शायद यह दिन न देखना पड़ता।"

"अपनी ही बात क्यों करते हो?" केकड़ा ने कहा – "तुमसे पहले वही बात कहने विमला आई थी, मैने उसे . . ."

"उसी हरामजादी के कारण तो इस वक्त यहां हैं।"

"क्या मतलब?" केकड़ा की मक्खी जैसी मूछें फड़फड़ाई।

"हमें पुलिस वालों से सब पता लग चुका है।" अमित कहता चला गया – "विमला यहां से केवल साठ किलोमीटर दूर विजय नगर की रहने वाली है – विनाश इन्सपैक्टर अविनाश का बचपन में गुम हुआ जुड़वां भाई था – पांच दिन पहले तक अविनाश विजयनगर थाने का इंचार्ज था – उधर उस हरामजादी की अन्तरात्मा ने इस कदर कचोटा कि सारी हकीकत बताने थाने पहुंच गयी – शुरू में अविनाश को देख कर उसकी भी वही हालत हुई जो हमारी हुई थी – होती भी क्यों नहीं, कम्बख्त की शक्ल सूरत कद काठी ही नहीं आवाज तक वही है मगर अविनाश ने जल्दी ही उसका वहम दूर कर दिया - सब कुछ बक दिया साली ने – उसके बाद, अविनाश ने शिमला में ऐसा खेल खेला कि हम विनाश के मर्डर वाली घटना पर डिस्कस करने की बेवकूफी कर बैठे – अविनाश ने उस वार्ता की वीडियो केसिट तैयार कर ली।"

"यानी बंटाधार।" केकड़ा बुदबुदा, उठा, फिर कुछ याद आने पर बोला – "लेकिन . . .अगर विमला की अन्तरात्मा जाग गई थी तो हमारे पास क्या लेने आई थी?"

"टोह ले रही होगी कि हकीकत जानने पर तुम्हारी क्या प्रतिक्रिया होगी। असल में वह सरकारी गवाह बन चुकी है।"

"गुड . . . तो चश्मदीद गवाह भी है पुलिस पर, यानी कम्पलीट बंटाधार।"

"इतना सब पता लग जाने के बावजूद मेरा दावा अब भी ये है अमित कि वह कोई अविनाश - वविनाश नहीं बल्कि वही विनाश है जिसे हमने मरा हुआ समझ लिया था।" सुनीता ने कहना चाहा — "वैसा चुम्बन . . . "

"दिमाग खराब मत करो सुनीता।" अमित झुंझला उठा — "इस प्वॉइन्ट में अब डिस्कशन तक की गुंजाइश नहीं है।"

"तुम समझते क्यों . . . "

"मोहतरमा दुरुस्त फरमा रहीं हैं जनाब।" केकड़ा ने सुनीता की बात काट कर अमित से कहा — "वह हन्डरेड परसेन्ट विनाश है।"

चौंक पड़ा अमित, बोला — "किस आधार पर कह रहे हो?"

"जलता हुआ विनाश पानी से भरे हुए टब में कूदा था, याद है?"

"याद है!"

"क्या टब में पानी तुमने भरा था?"

अमित और सुनीता ने चौंककर एक दूसरे की तरफ देखा।

दोनों की गर्दन झंकार में हिली।

"तो किसने भरा, क्यों भरा?"

सुनीता और अमित हक्के बक्के केकड़ा की तरफ देख रहे थे।

"ये सवाल साला उसी वक्त हमारी खोपड़ी में घुसना चाहिये था मगर नहीं घुसा और हिन्दुस्तान यहीं मात खा गया।"

"मतलब क्या हुआ इस बात का?"

"ये सवाल हमसे उसने किया है जनाब, जो खुद को इंस्पैक्टर अविनाश कहता घूम रहा है — सीधी सी बात है, वह हमसे यह कहना चहता है कि विनाश की हत्या में 'पेंच' था — ऐसा पेंच जिस पर उस वक्त हमने गौर नहीं किया - उसे मालूम था तुम लोग उसे जलाकर मारने वाले हो — खुद का बचाने के लिये टब खुद भरा और अपनी प्लानिंग के मुताबिक जलने से पूर्व

उसमें कूद पड़ा — याद करो, जल नहीं पाया था वह।"

"क्या तुम यह कहना चाहते हो विनाश मरा नहीं था?"

"भगवान तुम्हारा भला करे।"

"बकवास।" अमित ने पूरे विश्वास से कहा — "मैंने खुद चैक किया था, नब्ज, धड़कन सांस . . . सब बंद थीं।"

"जैसे भी हुआ लेकिन कथित अविनाश का सवाल करना यह जाहिर करता है कि ये चमत्कार हुआ है, असल में वह विनाश ही है।"

"फिर खुद को अविनाश कहता क्यों घूम रहा है?"

"खुदा जाने क्या सोच रहा है, लेकिन ये तय है — जिसे सबने लल्लू समझा, वह सबको लल्लू बनाये हुए है।"

●

गांव से लौटते ही अमर सिंह को नौकरों से जो पता लगा उसे सुनकर पैरों तले से धरती खिसक गई। दौड़ा-दौड़ा थाने पहुंचा और . . . इन्सपैक्टर पर नजर पड़ते ही इस तरह जाम हो गया जैसे चाबी से चलने वाले खिलौने में भरी चाबी खत्म हो गयी हो — किंकर्त्तव्यमूढ़ अवस्था में, इन्सपैक्टर अविनाश के ऑफिस के दरवाजे पर खड़ा रह गया वह।

"आओ चाचा।" अविनाश के होंठों पर अत्यन्त जहरीली मुस्कान थी — "आओ . . . तुम्हारा ही इन्तजार था मुझे।"

"तु — तुमने . . . तुमने पकड़ा है अमित और सुनीता को?" अमर सिंह नींद से जागा।

रहस्यमय स्वर में पूछा अविनाश ने — "गलती की क्या?"

"तुम्हें शायद मालूम नहीं।" वह मेज की तरफ बढ़ता बोला — "अमित हमारा बेटा है।"

"मालूम है!"

"इ - इसके बावजूद पकड़ लिया?"

"वह पकड़ा ही तुम्हारा बेटा होने की वजह से गया है चाचा।"

"क्या मतलब?" अमर सिंह गुर्रा उठा।

"आराम से बैठो, समझाता हूं।" अविनाश ने जेब से गोल्ड फ्लेक किंग साईज का पैकिट निकाला, मस्त अंदाज में एक

सिगरेट सुलगाने के बाद बोला – "एक तुम्हीं तो हो जिसे एक एक बात, बड़े प्रेम से समझाने का तलबगार हूं।"

"मेरी समझ में नहीं आ रहा बेटे।" अमरसिंह मेज के उस पार उसके ठीक सामने वाली कुर्सी पर बैठता बोला – "आखिर मुझसे बात किस अन्दाज में कर रहे हो – गांव में तो 'प्रधान चाचा . . . प्रधान चाचा' कहते तुम्हारी जुबान नहीं थकती थी और . . . ये सिगरेट, सिगरेट पीनी कब से शुरू कर दी तुमने – कर भी दी तो शहर आते ही क्या अपने गांव की सब लोक- लाज त्याग दी – बड़ों के सामने . . . "

अविनाश ने उसकी बात काट कर कहा – "विला के नौकरों ने शायद तुम्हें यह नहीं बताया चाचा कि जो इन्सपैक्टर अमित और सुनीता को गिरफ्तार करके ले गया है उसकी शक्ल विनाश से मिलती थी, उस विनाश से . . . "

"ह - हां बताया था।" अमर सिंह कह उठा – "म – मगर ये कैसे हो सकता है, भला तुम्हारी शक्ल का . . . "

कहता - कहता खुद अटक गया अमर सिंह।

जहन को तेज झटका लगा।

भाड़ सा मुंह फाड़े सामने बैठे अविनाश को देखता रह गया वह - चेहरे पर आश्चर्य का समुद्र जोर जोर से गर्ज रहा था।

"शायद याद आ गया तुम्हें।" अविनाश का हर लफ्ज जहर से सराबोर था।

"त – तो विनाश क्या वो विनाश था?" अमर सिंह बड़बड़ा उठा – "तुम्हारा जुड़वां भाई?"

"सब याद आ जायेगा चाचा . . . सब याद आ जायेगा।"

"म – मगर।" अमर सिंह दहाड़ उठा – "वह जिन्दा कैसे हो सकता है?"

"पांच दिन पहले तक मैं भी यही समझता था विनाश उसी वक्त गंगा में डूब कर मर गया जब सात साल का था मगर विमला के बयान से पता लगा, ऐसा नहीं था - सारा गांव धोखे में रहा - असल में वह जीवित अवस्था में गंगा से किसी के हाथ लग गया - जाने कहां - कहां भटकता विमला का पति बना, उसके बाद विला में आया – सुनीता से शादी हुई अंततः

अनिता, सुनीता और विमला के हाथों मारा गया - तुमने सुना अमर सिंह, विनाश बीस साल पहले गंगा में डूब कर नहीं मरा था बल्कि चार साल पहले विला में मरा है।"

"न – नहीं . . . नहीं . . . ये नहीं हो सकता।" अमर सिंह पागलों की तरह हलक फाड़ कर चिल्ला उठा – "ऐसा हरगिज नहीं हो सकता।"

"क्यों नहीं हो सकता?" अविनाश हंसा – "इसमें इतना 'बौराने' की क्या बात है– नदी में डूबे लोग अक्सर बच जाते हैं।"

"ल - लेकिन विनाश . . . लेकिन विनाश . . . "

अविनाश ने एक एक लफ्ज चबाते हुए वह बात पूरी की जिसे अमर सिंह कह नहीं पा रहा था – "लेकिन विनाश इसलिये नहीं बचा होगा क्योंकि बीस साल पहले वह खुद नहीं डूबा था बल्कि तुम्हारे द्वारा मार कर गंगा में बहा दिया गया था।"

"न – नहीं।" अमर सिंह बौखला उठा – "य – ये झूठ है।"

"अगर ये झूठ है।"अविनाश फिर हंसा – "तो ये सच्चाई कुबूल करनी पड़ेगी कि असल में वह तुम्हारे बेटे के हाथों चार साल पहले मारा गया है?"

अमर सिंह का जी चाहा अपने बाल नोंच ले, पागल सा होकर चिंघाड़ उठा वह – "अ - आखिर . . . आखिर ये चक्कर क्या है?"

"चक्कर ऐसा है चाचा कि जब समझ में आयेगा तो बड़े-बड़े धुरन्धर घनचक्कर बन जायेंगे।" दांत भींच कर अविनाश कहता चला गया – "हालांकि तुम्हें मैं असली चक्कर समझाने के मूड में हूं लेकिन तुम समझने के मूड में नजर नहीं आ रहे।"

"समझाओ . . . प्लीज . . . मुझे समझाओ अविनाश, ये सब आखिर हो कैसे गया?"

"पहले स्वीकार करो, तुमने बीस साल पहले विनाश की हत्या करके गंगा में बहा दिया था।"

अमरसिंह ने कांपते लहजे में पूछा – "य – ये बात किस 'बेस' पर कह रहे हो?"

"सुनना चाहता है तो सुन।" मारे गुस्से के अविनाश का चेहरा सुर्ख हो गया — "करीब पांच साल पहले रेड लाईट एरिये में छापा मारा तो एक कोठे से मुझे गोमती मिली।"

"ग - गोमती?" अमरसिंह उछल पड़ा।

"वह, जिसके सामने तूने सात साल के नन्हें विनाश की हत्या की थी।"

अमरसिंह का चेहरा पीला पड़ गया, काटो तो खून नहीं।

"याद कर, गोमती अपने ही गांव की बेटी थी — उसका कसूर ये था कि वह सुन्दर थी, हरिजन परिवार की थी और अपने छोटे भाई के साथ मेला घूमने आई थी — जमींदार होने के नाते मेले में बाकायदा तेरा डेरा लगा था — गोमती और उसके भाई को बहला फुसला कर तू डेरे में ले गया — भाई को बांधकर अलग केबिन में डाला और उसे मारने की धमकी देकर गोमती से दुराचार करने लगा — ठीक उसी वक्त अपनी उड़ने वाली चिड़िया का पीछा करता अभागा विनाश वहां पहुंच गया और बोला — 'अले अमल सिंह चाचा, तुम तो गोमती दीदी के साथ गंदा काम कल लहे हो?' — तेरे पैरों के नीचे से धरती खिसक गयी — तू समझ गया, विनाश ने जो देखा है उसे पचा नहीं पायेगा और . . . सारे गांव में जो तेरी इज्जत है वह मिट्टी में मिल जायेगी — उसे बचाने के लिये तू सात साल के मासूम बच्चे पर झपटा — तेरे मजबूत हाथ उसकी गर्दन पर पड़े — 'अमल सिंह चाचा . . . अमल सिंह चाचा' करते-करते उसकी आवाज घुटती चली गई — गोमती उसे बचाने का भरसक प्रयास कर रही थी मगर तेरे ये नापाक हाथ मेरे भाई की गर्दन से तभी हटे जब उसके प्राण-पखेरू उड़ गये — चीखती-चिल्लाती गोमती को तूने एक बार फिर उसके भाई को मार डालने की धमकी देकर सहमा दिया — विनाश की लाश अपने डेरे के ठीक पीछे बह रही गंगा के हवाले की — गोमती के भाई को तो कुछ पता ही न था और गोमती बेचारी तेरी धमकी का शिकार थी — जो कुछ उसके साथ हुआ और जो उसने देखा, उस सबका जिक्र किसी से न कर सकी।"

अमर सिंह आंखें फाड़े उसकी तरफ देख रहा था।

"बोल हरामजादे चाचा . . . बोल।" अविनाश के रूप में

मानों ज्वालामुखी फट रहा था — "ये सच है या नहीं कि उसके बाद तू अक्सर गोमती को डरा धमका कर हवेली बुलाने लगा . . . छह महीने बाद गोमती अचानक गायब हो गयी — कोई नहीं जान सका उसे वह शख़्स विजयनगर के एक कोठे पर बैठा गया जो 'अरबन' गांव का जमींदार ही नहीं, प्रधान भी था — सारा गांव जिसे इज्जत और सम्मान ही नहीं देता था बल्कि देवता मानता था — वही दरिन्दा गोमती को केवल इसलिये एक 'बाई' के हवाले कर गया क्योंकि गोमती उसके बच्चे की मां बनने वाली थी — बाई ने उसका बच्चा गिरवा दिया और धंधा कराने लगी।"

भावुकता की ज्यादती के कारण अविनाश बुरी तरह हांफने लगा था।

अमरसिंह के चेहरे पर ऐसे भाव थे जैसे चौराहे पर नंगा खड़ा हो।

"जब गोमती दीदी छापे के दरम्यान मेरे हाथ लगीं तो एक ऐसी गंदी बीमारी से ग्रस्त थीं जो वेश्याओं को अक्सर लग जाती है — मैंने अस्पताल में इलाज कराना चाहा लेकिन बीमारी इलाज से बाहर निकल चुकी थी — मरते वक्त उन्होंने मुझे वह सब बताया जिसे सुन कर इस वक्त तेरे होश उड़े हुये हैं मगर सोच . . . सोचने की कोशिश कर हरामजादे, ये सब सुनकर उस भाई पर क्या गुजरी होगी जो बचपन से जवान होने तक इस भ्रम का शिकार रहा कि उसका जुड़वां भाई दुर्घटनावश गंगा में डूब कर मर गया — क्या गुजरी होगी उस शख़्स पर जिसे ये पता लगा कि उसके भाई का हत्यारा वो आदमी है जिसे सारे गांव की तरह वह भी 'प्रधान चाचा' कहता है, नहीं सोच सकता तो मैं बताता हूं।" भभकते स्वर में अविनाश कहता चला गया — "गोमती दीदी की चिता को आग लगाते वक्त मैंने उनकी बरबादी और अपने भाई की हत्या का बदला लेने की कसम खाई — पुलिस वाला होने के नाते जानता था, बगैर पुख्ता सुबूतों और चश्मदीद गवाह के कुछ नहीं होगा और . . . पन्द्रह साल पुरानी घटनाओं के सुबूत या गवाह जुटने का सवाल ही न था — उन दिनों विमला से मेरी मुहब्बत चल रही थी — काफी हाऊस में हम अक्सर मिलते थे मगर वर्दी पहन कर कभी नहीं मिला क्योंकि एक पुलिस वाले के ऐसे सम्बन्धों को देखकर लोग मजे

लेते हैं।"

"क – क्या तुम उसी विमला की बात कर रहे हो जो..."

"हां चचा जान, उसी विमला की बात कर रहा हूं मैं।" अविनाश के हर लफ्ज में व्यंग्य था।

"तो वह . . .

"बदला लेने की ठान लेने और बदला लेने में जमीन आसमान का अंतर होता है।" उसकी बात काट कर अविनाश कहता चला गया – "इस उलझन ने मुझे गुमसुम कर दिया – एक दिन विमला ने 'उदासी' का कारण पूछा – मैंने सब कुछ बता दिया – सुन कर 'अवाक्' रह गयी – चाहती वह भी थी कि मैं अपने भाई की हत्या और गोमती की बरबादी का बदला लूं परन्तु कैसे – इस सवाल का जवाब वह भी न दे सकी – उन्हीं दिनों, विमला के घर एक अत्यन्त दर्दनाक दुर्घटना घटी – कुछ लुटेरे रात के वक्त उनके घर में घुसे – विमला को बांध कर डाल दिया – उसके पापा ने विरोध किया तो कत्ल कर गये और जो मिला उसे समेट कर फरार हो गये – असल में आज तक पता नहीं लगा वे लुटेरे कौन थे मगर मेरे दिमाग में बदला लेने की योजना जन्म ले चुकी थी। दर्दनाक घटना के करीब महीने भर बाद जब अपनी योजना विमला को बताई तो वह उछल पड़ी – पहले तो उस सब के लिये तैयार नहीं हुई जो योजना के तहत होना था मगर मेरे समझाने पर मान गयी।"

"य – योजना क्या थी तुम्हारी?"

मैंने दुहेरी जिन्दगी शुरू कर दी – इन्सपैक्टर अविनाश तो था ही, विनाश के नाम से कांता के कोठे पर जाना शुरू किया – टिब्बा जैसे चंद टुच्चे बदमाशों से दोस्ती की – छोटी-मोटी ठगी राहजनियां भी कीं – विनाश ही के नाम से कोर्ट में जाकर विमला से शादी की – विमला के सभी परिचित मुझे विनाश के नाम से जानते थे – खुद को विनाश के नाम से स्थापित करने में खास दिक्कत नहीं हुई क्योंकि इन्सपैक्टर अविनाश के रूप में काफी दूर के थाने पर तैनात था।"

"इसके बाद?"

"मैंने और विमला ने रंगमंच के एक ऐसे अधेड़ कलाकार

को खोज निकाला जो उन दिनों पैसे-पैसे के लिये मोहताज था — वह केवल दो हजार रूपये में तैयार हो गया — हम उसे घर ले आये — जिस कमरे में लुटेरों ने विमला के पिता की हत्या की थी उसमें बकरे का खून बिखेरा, अधेड़ को विमला के पिता के कपड़े पहनाये — मैंने अपने हाथ में खून सना चाकू लिया और विमला ने वे फोटो खींचे जिनका आगे चलकर मेरी योजना में अहम रोल था — गौर करो, एक भी फोटो में अधेड़ का चेहरा साफ नहीं था।"

"इन्हीं में से एक फोटो विमला ने अमित और सुनीता को . . ."

"सुनते रहो अमरसिंह, सुनते रहो . . . हर चीज बुद्धि में खुद-ब-खुद फिट हो जायेगी।" अविनाश कहता चला गया — "एक रात मैंने एक ट्रक चुराया — विमला ने उसे चलाया, मिस्टर खन्ना को कुचलने की कोशिश की और मैंने बचाया — शायद बताने की जरूरत नहीं कि ये ड्रामा मैंने खुद को खन्ना विला और मिस्टर खन्ना के दिल में स्थापित करने के लिये किया था।"

"रिवेंज तुम्हें मुझसे लेना था, मिस्टर खन्ना बीच में कहां से आ गये?"

"मिस्टर खन्ना को बीच में इसलिये आना पड़ा क्योंकि तेरा पिल्ला उनकी नकचढ़ी लड़की को अपने प्रेम-जाल में फंसा कर अरबपति बनने के ख्वाब देख रहा था।"

"ये बात पहले से मालूम थी तुम्हें?"

"रखनी पड़ती है चचा, मेरी तरह किसी प्लानिंग पर काम करने वाले को ऐसी जानकारियां रखनी पड़ती हैं।"

"मान लिया मालूम था — फिर भी खन्ना विला में 'स्थापित होने का क्या मतलब हुआ?"

"टोका टाकी करने की जगह ध्यान से सुनता रहे तो बात खोपड़ी में बेहतर तरीके से फिट होगी।" अविनाश ने कहा — "मेरी योजना धीरे-धीरे मिस्टर खन्ना के दिलो-दिमाग में उतरने के बाद उनकी नॉलिज में यह बात लाना थी कि सुनीता अमित नामक एक जालसाज के प्रेमजाल में फंसी है लेकिन उन्होंने मुझे खुद इस काम पर लगा दिया — सो, मामला और आसान हो गया — यहां यह बता देना अपना परम कर्तव्य

समझता हूं कि खन्ना विला में विनाश वाला रोल अदा करने के बावजूद कोई ये सिद्ध नहीं कर सकता कि विजयनगर थाने पर उस दरम्यान इन्सपैक्टर अविनाश एक दिन भी अनुपस्थित रहा — अमित के बारे में पता लगाने हेतु उसके गांव जाने के बहाने तो मैं विजयनगर में एक जटिल मर्डर केस भी सुलझा आया था अतः विनाश अपना काम कर रहा था, अविनाश अपना। विनाश वाले काम में मुझे एक ही आदमी से खतरा था . . . और वह था, इन्सपैक्टर केकड़ा — कम्बख्त को पहले ही दिन से शक था कि ट्रक एक्सीडेन्ट प्लान्ट किया गया था — जाने कहां से यह खबर भी निकाल लाया कि उसे लड़की चला रही थी — मैं ये बिल्कुल नहीं चाहता था कि मिस्टर खन्ना की मृत्यु हो —दो कारण थे, पहला — वे सचमुच बेहद नेकदिल और दयालु इन्सान थे, दूसरा — मेरा उद्देश्य अमित के अरबपति बनने के षडयंत्र के मध्य का सबसे बड़ा रोड़ा बन कर सामने आना था — यह तभी हो सकता था जब मिस्टर खन्ना जीवित रहते और मेरे कहने में आकर सुनीता की शादी उससे न होने देते — मुझे मालूम था, मिस्टर खन्ना न रहे तो सुनीता को अमित से शादी करने से रोकने वाला कोई न रहेगा — मैं किसी भी तरह अमित के रास्ते का रोड़ा न बन सकूंगा और जब ये पहला काम पूरा न होगा तो मेरी आगे की पूरी योजना स्वतः धराशायी हो जायेगी — इन्हीं दो कारणों से उन्हें बचाने की भरपूर कोशिश की। इसके बावजूद जब उनकी लाश सामने आयी तो मुझे लगा, अब तक की सारी मेहनत पर पानी फिर गया है मगर मिस्टर खन्ना की वसीयत खुलते ही मुझमें पुनः जान पड़ गयी — सभी आशाओं के विपरीत वे ऐसी वसीयत कर गये थे — जिसने खुद मुझे अमित की राह का रोड़ा बना दिया — इस रोड़े को हटाने के लिये उसने क्या-क्या खेल खेले, उन्हें विस्तार से बताने की जरूरत इसलिये नहीं क्योंकि तू जानता है — मगर मेरा प्रयास था वह मेरी हत्या करने का फैसला ले — इसके अलावा मैं उसके पास और कोई विकल्प छोड़ने को तैयार न था और ये तब होता जब उसे जंच जाता कि विनाश का मर्डर किये बगैर वह अरबपति तो क्या मिस्टर खन्ना की दौलत के जर्रे तक का मालिक नहीं बन सकता — जब यह बात थोड़ी-थोड़ी उसकी समझ में आने लगी तो अपनी योजना के मुताबिक

विमला को खन्ना विला में एन्टर किया – उसका अमित और सुनीता की मौजूदगी में आना तय था और तय था कि एक दूसरे को देख कर हमे क्या एक्टिंग करनी है – उस सबका परिणाम वही हुआ जो मैंने पहले से सोच रखा था यानी वे विमला से अकेले में मिलने के लिये पगला उठे – विमला ने मुझे फोन करके एक एड्रेस देते हुये अगले दिन बुलाया – हम जानते थे, अमित और सुनीता चालाक बने उस टेलीफोन कॉल को सुन रहे हैं – उम्मीद के मुताबिक वे मुझसे पहले उस एड्रेस पर पहुंचे – विमला को इस रूप में सामने लाने के दो लाभ थे – पहला, अमित को पक्के तौर पर 'विनाश' का मर्डर करने के लिये तैयार करना –दूसरा, मर्डर की जो भी योजना बने वह पूरी तरह मेरी जानकारी में रहे – कहो प्रधान जी, क्या इससे पहले तुमने कोई ऐसा किस्सा पढ़ा, देखा या सुना है जिसमें किसी शख्स ने अपने ही मर्डर की प्लान बनाई हो?"

"ल – लेकिन ये प्लान तुमने बनाया क्यों?" अमर सिंह की बुद्धि हवा में तैर रही थी – "रिवेंज तो मुझसे लेना था न?"

"अभी तक नहीं समझा?" अविनाश इस तरह हंसा जैसे उसकी अक्ल पर तरस खा रहा हो – "नहीं समझा तो सुन, विमला ने अपना विश्वास जमाने के लिये उनकी मौजूदगी में मुझसे सुसाइड नोट लिखवाया – जरा सोच, कितना शानदार सीन था वह – दूसरे कमरे में मौजूद वे मैजिक आई के जरिये सारा सीन देख रहे थे इसलिये मैंने जाते ही विमला की हवा निकाल दी – विमला को तो खैर सब पता था कि कब क्या होगा और वह एक्टिंग कर रही थी लेकिन बेचारे अमित और सुनीता की सचमुच हवा 'शंट' हो गयी – टिब्बा के नाम पर नाटक को एक और मोड़ देकर उनकी शंट हो चुकी हवा दुरूस्त की गई और फिर . . . उन्होंने समझा, मैंने मजबूर होकर यह सोचते हुये सुसाइड नोट लिख दिया है कि विमला मेरे मुकरने पर उसका इस्तेमाल कोर्ट मे करेगी।"

"विमला वाकई प्रेग्नेन्ट थी या वो भी नाटक था?"

"क्यों, एक शादी शुदा महिला प्रेग्नेन्ट नहीं हो सकती क्या – बहरहाल, वह पत्नी है मेरी।"

अमर सिंह चुप रह गया।

"अब आते हैं मर्डर पर।" अविनाश ने कहा – "उधर तय हुआ विनाश को शुक्रवार वाले दिल फलां तरीके से 'खलास' करके फलां तरकीब से आत्महत्या सिद्ध कर दिया जायेगा – इधर मैंने बचने के इन्तज़ाम स्वरूप बाथटब पानी से भरा, चेहरे और बालों सहित पूरे जिस्म पर 'एस्बेस्टस' का लेप किया – तुम्हारी जानकारी में होगा, एस्बेस्टस एक ऐसे पदार्थ का नाम है जिस पर आग असर नहीं करती। शरीर पर इसका लेप करके कई लोग ज्वालामुखी के अन्दर तक टहल आये हैं – उसी दिन अपना मैडिकल चैकअप करा कर रिपोर्ट जेब में डाली और मरने के लिये मुस्तैद होकर लपक पड़ा विला की तरफ।"

"रिपोर्ट जेब में क्यों डाली तुमने?"

"ताकि केकड़ा अमित और सुनीता के हाथों में हथकड़ियां डाल सके।"

"ओह।"

"केकड़ा को समझने में मुझसे भूल हुई – जितनी मुस्तैदी और खुर्राट अंदाज में वह इस मामले के पीछे लगा हुआ था उससे लगा, वह एक बेहद ईमानदार, काबिल, ब्रिलियेन्ट और काईयां पुलिस वाला है – ज़ो शख्स कत्ल होने से पहले समझ गया कि कत्ल होने वाला है उसके बारे में मैं और सोच भी क्या सकता था – कई बार तो अपने सवालों से मुझ तक के छक्के छुड़ा दिये – हालांकि होटल में उसने मिस्टर खन्ना की जायदाद में से फिफ्टी परसेन्ट मांग खुल्लम-खुल्ला की मगर मैं समझा, फ़ंसाने के लिये बेवकूफ़ बना रहा है – शुक्रवार की रात में जब बैरियर पर मिला तो विमला के बारे में पट्ठे ने ऐसे-ऐसे सवाल किये कि दांतों तले पसीना आ गया मुझे – कोशिश के बावजूद उसके एक भी सवाल का ऐसा जवाब न दे सका जो उसे सन्तुष्ट कर सकता – उधर, मुझे मालूम था – विला में मेरे कातिल बेचैनी से इन्तजार कर रहे हैं अतः किसी तरह केकड़ा से पीछा छुड़ा कर बैरियर से निकला – विला में पहुंचा – उसकी प्लानिंग के मुताबिक जला और अपनी प्लानिंग के मुताबिक बाथरूम का दरवाजा खोलकर बाथटब में कूद पड़ा।"

"जब तुम्हें जलने का खतरा नहीं था तो बाथटब में क्यों कूदे?"

"उनके और दुनिया के सामने लाश भी तो पेश करनी थी अपनी — जरा खोपड़ी भिड़ाओ, अगर उनके दिमाग में यह न डालता कि आग मेरे बाथटब में कूदने के कारण बुझ गयी तो वें ये सोचते कि आग में पूरी तरह घिर जाने के बावजूद आखिर मैं जला क्यों नहीं?"

"ल — लेकिन अमित ने तुम्हारी नब्ज, धड़कन, और सांसें चैक की थीं।"

रहस्यमय अंदाज में मुस्कुराते अविनाश ने कहा — "हैरत की बात है चाचा, इस रहस्य को अभी तक तुम भी नहीं समझे।"

"क — क्या मतलब?"

"गोवर्धन शर्मा के बेटे के लिये खुद को मुर्दा सिद्ध कर देना क्या मुश्किल था?"

उछल पड़ा अमर सिंह, मुंह से हैरत भरे शब्द निकले — "य — यानी अपने पिता से यह विद्या तुमने भी सीख ली थी?"

"जरूरत थी तो सीखनी पड़ी।" अविनाश के होठों पर रोचक मुस्कान थी — "हालंकि मैं केवल दस मिनट तक अपनी सांस, धड़कन और नब्ज को कंट्रोल कर सकता था लेकिन जो काम करना था उसके लिये दस मिनट काफी थे। यकीन न हो तो पूछ लेना उनसे — विमला ने अमित और सुनीता को पांच मिनट से ज्यादा बाथरूम में नही ठहरने दिया!"

"और जब केकड़ा पहुंचा?"

"गजब तो तभी हुआ।"

"मतलब?"

"मुझे मालूम था, वह मैडिकल रिपोर्ट बरामद कर लेगा — उसने की, मैं समझता था — तुरन्त मेरी हत्या के आरोप में उन्हें लोहे के कंगन पहना देगा मगर नहीं पहनाये — बस, यही गजब हुआ था — मैं सोच तक नहीं सका था कि ऐन टाईम पर केकड़ा का रुख ये होगा — केकड़ा ने यह रुख अख्तियार करके मेरी योजना चौपट कर दी — टब में पड़ा-पड़ा मैं ये सोच सोच कर हलकान हो रहा था — कि जब मेरी हत्या के जुर्म में अमित और सुनीता गिरफ्तार ही न होंगे तो क्या लाभ हुआ मेरे मरने और इतने लम्बे चौड़े प्लान का — मगर, कम से कम उस वक्त मेरे हाथ में कुछ न था — शांत पड़ा अपनी योजना के निकलते

जुलूस को देखता रहा।"

"पोस्टमार्टम से कैसे बचे?"

"बचने की क्या जरूरत थी, डाक्टर गिरवर मेरे घर के आदमी बन चुके थे।"

"क – क्या मतलब?" हैरत के असंख्य भाव अमर सिंह के चेहरे पर काबिज हो गये।

"योजना हर प्वॉइन्ट पर अच्छी तरह गौर करने के बाद बनाई थी चचा जान, शनिवार को पोस्टमार्टम का टर्न डाक्टर गिरवर का होता था – सारी रात मेरी लाश शुक्रवार की शाम के बाद मरे अन्य लोगों की तरह 'मोरचरी' में पड़ी रहनी थी – योजना के मुताबिक मुझे रात ही में उठकर डाक्टर गिरवर के घर जाना था, उनसे मिलना था और कहना था – 'देख लीजिये अपनी जिद् का अंजाम – अंततः उन्होंने मेरा मर्डर कर दिया – सही वक्त पर अगर टब में न कूद जाता या योग-क्रिया न जानता होता तो सचमुच मर जाता – उनकी समझ के मुताबिक तो अब भी मर चुका हूं – अब एक ही तरीका है – मेरी जगह पोस्टमार्टम करके कोई और लाश उन्हें सौंप दें और मुझे चुपचाप अपने गांव निकलने दें – मुझे इल्म था, वे सुनीता के फंसने की कीमत पर मेरी बात नहीं मानेंगे सो, सोच रखा था – उन्हें कुछ ऐसा लिख कर दे दूंगा जिसे वे मेरी मौत से पहले लिखा दर्शा कर कोर्ट में पेश कर देंगे – उससे सुनीता बच जायेगी और अमित को मेरी हत्या के जुर्म में फांसी होगी – मुझे मालूम था इस शर्त पर वे मेरा साथ देने के लिये तैयार हो जायेंगे क्योंकि उनका भी मिस्टर खन्ना की तरह एक ही मकसद था – सुनीता को अमित के चंगुल में न फंसने देना मगर हालात बदल चुके थे।"

"बदले हालात में क्या किया?"

"उस वक्त रात के पौने दो बजे थे जब वे मुझे मोरचरी में लुढ़का कर सोने चले गये – मैं उठा – सील वाले कपड़े को फाड़ कर बाहर निकला – उसी समय मोरचरी के बाहर लगा ताला खोल कर विमला अन्दर आई – उसके प्राण भी वही सोच-सोच कर सूखे जा रहे थे जिसने मेरे छक्के छुड़ाये हुये थे अर्थात् . . . सारे ड्रामे का लाभ क्या हुआ – अमित और सुनीता खुले घूम रहे हैं, केकड़ा ने तो सचमुच ही इसे आत्महत्या का

मामला बना दिया परन्तु उस वक्त न मेरे हाथ में कुछ था, न विमला के – बस यह सोचा, जो होगा देखेंगे – फिलहाल इस झमेले से तो निकला जाये – झमेले से निपटने के लिये डाक्टर गिरवर से मिलना जरूरी था अतः दो बजे उनके घर पहुंचा – मुझे देखते ही उनकी 'किल्ली' निकल गई। आत्महत्या की सूचना उन तक पहुंच चुकी थी – मैंने झपट कर मुंह दबोचा और मुश्किल से जीवित होने का विश्वास दिला सका – अब तुम्हारी समझ में आ रहा होगा कि विनाश के रूप में मैं डाक्टर गिरवर की इतनी चमचागिरी क्यों करता रहता था – दरअसल मुझे मालूम था, अन्ततः उन्हीं से काम पड़ना है अतः उनके दिल में भी मैंने वही जगह बना ली जो खन्ना के दिल में बनाई थी अर्थात् पूरे प्रकरण में मेरी कोई गलती नहीं थी और उनकी नजर में मैं पीड़ित और सहानुभूति का पात्र था – जब उन्होंने पूछा – 'मैं जिन्दा कैसे हूं–' तो वही लल्लू वाला रोल अदा करता हुआ बोला – 'देख लीजिये डाक्टर साहब, ये सब आप ही की जिद् के कारण हुआ – हम तो उसी दिन गांव लौट जाना चाहते थे जिस दिन सुनीता ने हमारे द्वारा पहनाई गई शादी की माला तोड़ कर फैंक दी थी – 'आप ही ने रोक लिया – हम पहले ही कहते थे, सुनीता अमित के जाल में इस कदर फंसी हुई है कि कोई चाहे जितने प्रयास कर ले कामयाब नहीं हो सकता परन्तु आप नहीं माने, बार-बार बाबूजी की अंतिम इच्छा का हवाला देकर हमें उसका पति बनाये रहे – देख लीजिये अंजाम, आज उन्होंने ऐसी तरकीब से हमारी हत्या कर दी कि लोग आत्महत्या समझ रहे हैं – सही वक्त पर पानी से भरे टब में न कूद पड़ते और गांव में योग-क्रिया न सीखी होती तो सचमुच मर जाते – पहले तो इसलिये सांस, धड़कन और नब्ज रोक कर पड़े रहे कि अगर उन्हें जिन्दा होने का पता लग गया तो जान से मारे बगैर नहीं छोड़ेंगे और बाद में यह सोच कर जिन्दा न जताया कि यदि ऐसा किया तो अमित के साथ साथ सुनीता भी हत्या करने की कोशिश के आरोप में पकड़ी जायेगी – इससे बाबू जी की आत्मा को और आपको भी कष्ट होगा – बस यही सोच कर मुर्दा बने मोरचरी तक आ गये' – जहां ये सोच कर डाक्टर गिरवर मेरे प्रति अभिभूत हो उठे और सहानुभूति से भर गये कि मेरा प्रयास अब

भी उन्हें या मरहूम मिस्टर खन्ना की आत्मा को कष्ट न पहुंचाना है वहीं अमित के साथ-साथ सुनीता के लिये भी उनका दिल नफरत से भर गया, गुर्रा उठे वे – 'हद हो गयी विनाश . . . हद हो गयी, ये लड़की तो सारी सीमायें लांघ गयी – मर्डर तक कर डाला तुम्हारा – उफ्फ – नहीं, अब वह रहम के काबिल नहीं है – आओ, मैं अभी तुम्हें पुलिस कमिश्नर के पास ले चलता हूं – सारा किस्सा साफ-साफ़ बताते हैं उन्हें – तुम्हारी हत्या करने की कोशिश में उसे सजा होती है तो भुगते – जो जैसा करेगा, वैसा भुगतना होगा' – मेरे पैरों तले से धरती खिसक गयी, ऐसा करने का मतलब था उल्टा मेरा फंस जाना – अतः चेहरे को दीनहीन ना कर कहा – 'नहीं डाक्टर साहब, गुस्से में भर कर हम कोई सा कदम नहीं उठा सकते जिससे बाबूजी की आत्मा त्राही-त्राही कर उठे – भरपूर प्रयासों के बावजूद हम सुनीता का भला तो कुछ कर न सके अपने हाथों बुरा क्यों करें?' उन्होंने हैरत से मेरी तरफ देखा, बोले – 'क्या कहना चाहते हो?' मैंने असली बात कही – 'बस आप हमें चुपचाप इस शहर से निकाल दें – हम अपने गांव चले जायेंगे और लौट कर कभी शहर का रुख नहीं करेंगे – यहां के लोग अगर यह समझें कि विनाश नपुंसक था सलिये आत्महत्या कर ली तो समझते रहें, कम से कम सजा तो हीं होगी सुनीता को – हमारे बाद वे अमित से शादी करती हैं करें, उन्हें रोका भी कैसे जा सकता है – जो उनके नसीब में खा है वो तो होगा ही मगर जेल की चक्की तो नहीं पीसेंगी म से कम।' डाक्टर गिरवर कह उठे – 'ऐसा कैसे हो सकता है पोस्टमार्टम के बाद हमें लाश वापिस सौंपनी पड़ती है।' मैंने सूमियत के साथ कहा – 'क्या किसी और लाश को स्टमार्टम के बहाने क्षत - विक्षप्त करके हमारे कपड़े पहना कर हवाले नहीं कर सकते?' वे बोले – 'लाश तो पोस्टमार्टम म्यान क्षत - विक्षप्त हो ही जाती है क्योंकि सिर, सीना और आदि सब खोलने पड़ते हैं लेकिन लाश कहां से आयेगी – चरी में पहुंचने वाली हर लाश का रिकार्ड रखा जाता है भले लावारिस लाश हो।' मेरे पास इस सवाल का जवाब था के पहले ही से सोच लिया था कि इस स्पॉट पर एक लाश जरूरत पड़ेगी और उसके इन्तजाम स्वरूप विमला को काम

सौंपा भी था परन्तु एकदम से जवाब नहीं दिया ताकि डा
गिरवर को यह न लगे कि मैंने सारी तैयारी पहले से कर रखी
— कुछ देर चुप रहा, जैसे समस्या का निदान समझ में न आ
हो — फिर बार-बार उन्हीं से पूछने लगा कि एक लाश
इन्तजाम कैसे हो — पहले तो ये सारा नाटक करने के लिये ते
ही न थे लेकिन जब मैंने समझाया इसी में सुनीता की भला
तो तैयार हो गये, बोले — 'एक ही तरीका है, किसी ऐसे आ
की लाश कब्र से चुराई जाये जिसे आज ही दफनाया गया हो
तुम्हारी कद काठी का हो।' उनके कहने की देर थी, मैं लाश
तलाश में निकल पड़ा — उनकी कोठी के बाहर विमला
इन्तजार कर रही थी। उसने बताया मेरी कद-काठी से मि
जुलता शख्स आज कौन सी कब्र में दफनाया गया है — फ
कुदाल आदि का पूरा पूरा इन्तजाम पहले से पुख्ता था — ला
को निकालकर डाक्टर गिरवर की कोठी पर पहुंचाने में डेढ़
लग गया — प्लानिंग के मुताबिक विमला विजयनगर जा चु
थी — डाक्टर गिरवर की मदद से मैंने लाश को अपने क
पहनाए, सिर के पृष्ठ भाग में जख्म किया और उन्हीं की मदद
सील करके सुबह के साढ़े चार बजे मोरचरी में रख कर आग
जाहिर है, पोस्टमार्टम के दरम्यान डाक्टर गिरवर ने जानबूझ
लाश का चेहरा इतना विकृत कर दिया कि पहचानी न जा
और पुनः सील करके सुनीता के हवाले कर दी — वहां भी
को मुझसे क्या भावनात्मक लगाव था जो लाश को नहलाने
की औपचारिकता में पड़ता — पोस्टमार्टम से लाश जैसी
चिता पर रख कर फूंक दी गयी — अन्त्येष्टी में डाक्टर गि
साथ रहे। वह सारा दिन मैंने उनके घर में छुपे रह कर गुजार
रात के ग्यारह बजे लौटे और मैं बारह बजे गांव चले जाने
वादा करके विजयनगर पहुंच गया।"

अमरसिंह पर कुछ कहते न बन पड़ा, नजरें अ
चेहरे पर जमी रहीं।

"मेरी और विमला की हालत विचित्र थी।" अ
कहता चला गया — "इतने पापड़ बेलने और रिस्क उठा
बावजूद फायदा कुछ नहीं हुआ था — बात वहीं की वहीं
विनाश पैदा हुआ और मर भी गया लेकिन अमित उसकी

के जुर्म में न पकड़ा जा सका – काफी माथा-पच्ची करने के बाद एक तरकीब सूझी – मैंने विमला से कहा – 'अब तो केवल ये हो सकता है कि कोई चक्कर चला कर मैं खुद इस केस की इन्वेस्टीगेशन करूं और सिद्ध कर दूं कि विनाश ने आत्महत्या नहीं की बल्कि उसकी हत्या की गई थी।' विमला ने कहा – 'तरकीब तो अच्छी है लेकिन डाक्टर गिरवर के रहते ये सब नहीं हो सकता। वे सारी हकीकत जानते हैं, ऐसा कोई भी चक्कर शुरू होते ही समझ जायेंगे कि तुम्हीं विनाश हो – वे सबको बता देंगे कि विनाश मरा नहीं था।' विमला के तर्क से मैं कांविन्स हुआ – कम से कम तब तक ऐसा कोई चक्कर नहीं चलाया जा सकता था जब तक डाक्टर गिरवर जिन्दा थे – हम सच्चे दिल से उनके मरने की दुआयें करने लगे और करीब तीन महीने पहले ब्रेन हेमरेज से वे मर गये – अब हमारे सामने मैदान खुला था – पुनः कहानी तैयार की – वह कहानी जो मैंने इन्सपैक्टर अविनाश के नाते कमिश्नर को सुनाई है – यह कि विमला की अन्तरात्मा की आवाज उसे थाने ले गयी – मेरे सामने अचानक ये केस आया और शिमला जाकर न केवल हल किया बल्कि वे सुबूत भी जुटाये जो निर्विवाद रूप से अमित, सुनीता और विमला को विनाश के हत्यारे ही साबित नहीं कर देंगे बल्कि केकड़ा को भी जेल की चक्की पीसने पर मजबूर कर देंगे।"

"तो क्या विमला को भी विनाश की हत्या के जुर्म में ..."

"तुम्हें अभी तक कानून की जानकारी नहीं है प्रधान जी।" अविनाश ने लच्छेदार लहजे में कहा – "विमला सरकारी गवाह बन चुकी है और सरकारी गवाह को कोर्ट इसलिये चेतावनी देकर बरी कर देती है क्योंकि उसने सच्चाई तक पहुंचने में कानून की मदद की।"

अमर सिंह अवाक् मुद्रा में उसकी तरफ देखता रह गया।

"पूरी योजना अच्छी तरह ठोक बजाकर बनाई गयी है चचा जान, कहीं कोई छेद नहीं मिलेगा तुम्हें।" अविनाश एक-एक शब्द को चबाता कहता चला गया – "तुमने कई बार पूछा, रिवेन्ज जब तुमसे लेना था तो खेल खन्ना विला में क्यों खेला – अब भी समझ में न आया हो तो सुनो, कान में तेल डाल कर सुनो अमर सिंह – तुम अपने लाडले को विनाश की हत्या के

जुर्म में फांसी के फंदे पर झूलता देखोगे — उस विनाश की हत्या के जुर्म में जिसे असल में बीस साल पहले तुमने खुद मारा था।"

"म — मैं ऐसा हरगिज नहीं होने दूंगा।" अमर सिंह चीख पड़ा।

अविनाश ने उसे चमचमाती आंखों से घूरा — "कैसे रोकोगे?"

"म — मैं सारी दुनिया को सच्चाई बता दूंगा।"

अविनाश ने हंसते हुये पूछा — "कौन सी सच्चाई?"

"वही, जो तुमने अभी-अभी बताई है।"

"ये कि अविनाश ने ही विनाश बन कर विला में अपना मर्डर कराया?"

"ह - हां।"

"क्यों?"

हड़बड़ा गया अमर सिंह — "म — मतलब?"

"क्या कहोगे लोगों से, अविनाश ने ऐसा क्यों किया — क्यों 'वह' अमित को अपने मर्डर में फंसाना चाहता है — फायदा क्या हुआ उसे, आखिर अमित से दुश्मनी क्या है अविनाश की?"

अमर सिंह बगलें झांकने लगा, जवाब न सूझा उसे।

"मैं ही विनाश बना था, इस बात पर तुम लोगों को केवल तब यकीन दिला सकते हो जब स्वीकार करो कि विला में आया विनाश इसलिये विनाश नहीं था क्योंकि उसे तुम बीस साल पहले अपने हाथों से खत्म कर चुके थे . . . अगर तुम ऐसा करते हो तो सोचो कितनी बड़ी कामयाबी होगी मेरी — मैं उस शख्स के मुंह से अपना अपराध कबूल करवा लूंगा जिसने बीस साल पहले मेरे भाई की हत्या की थी और यदि इस सच्चाई को खुद कुबूल न करे तो दुनिया का कोई आदमी कभी सच्चाई नहीं जान सकता।"

हकबकाया अमर सिंह उसकी तरफ देखता रह गया।

"तुम बुरी तरह फंस चुके हो अमर सिंह।" अविनाश ने पुनः एक-एक लफ्ज चबाया — "विनाश की हत्या के जुर्म में अमित को बचाने की कोशिश करोगे तो खुद फांसी के फंदे पर झूल जाओगे — खुद को बचाओगे तो अमित गया — तुम बाप बेटों में से एक को तो विनाश की हत्या के जुर्म में फांसी पर

झूलना ही होगा — कौन झूले — ये फैसला तुम्हें करना है — मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता — मुझे तो अपने भाई की हत्या के जुर्म में तुममें से एक चाहिये — देखना केवल ये है तुम्हें अपनी जान ज्यादा प्यारी है या बेटे की?

अचानक अमर सिंह के दिमाग में एक विचार तेजी से कौंधा, बोला — "मैं खुद को भी बचा लूंगा बेटे और अमित को भी।"

"सुनूं तो सही कैसे करोगे ये चमत्कार?" अविनाश की मुस्कान गहरी हो गयी।

"तुमसे क्या बात करूं ?" उत्साह से भरा अमरसिंह खड़ा होता हुआ बोला — "अब मैं कमिश्नर से बात करूंगा।"

"जाओ . . . जरूर करो।" कहने के साथ अविनाश ने अपनी पीठ कुर्सी की पुश्त से टिका दी और आराम की मुद्रा में आता बोला — "मेरी शुभकामनायें तुम्हारे साथ हैं।"

●

कमिश्नर की आंखें हैरत की ज्यादती के कारण फटी रह गयीं — अमर सिंह ने बड़ी सफाई से 'गोमती प्रकरण' छुपाकर उन्हें बताया कि अविनाश किस तरह विमला की मदद से विनाश बन कर खन्ना विला में स्थापित हुआ, किस तरह अमित और सुनीता को अपने मर्डर के लिये उकसाया — किस तरह बचा और अब किस तरह विमला को बचाता हुआ अमित और सुनीता को एक ऐसे मर्डर के इल्जाम में फांसी कराना चाहता है जो असल में कभी हुआ ही नहीं। सुनने के बाद कमिश्नर ने कहा — "यदि तुमने सच कहा है तो बड़े ही ऊंचे दर्जे का और बेहद खतरनाक षडयंत्र है ये — इस रचने के जुर्म में इन्सपैक्टर अविनाश की न केवल नौकरी जायेगी बल्कि कानून लम्बी सजा देगा उसे।"

"एक एक लफ्ज सच है कमिश्नर साहब।"

"ये सब तुम्हें पता कैसे लगा?" कमिश्नर ने पूछा — "कैसे जान गये कि अविनाश फलां षडयंत्र के तहत विनाश बना और फलां-फलां तरीके से अपना मर्डर शो करके बच गया?"

"उसी ने बताया है।"

"अविनाश ने?" कमिश्नर चौंक पड़ा — "फोड़ा निकला

है उसके दिमाग में?"

"ज — जी ?" अमर सिंह बौखला गया।

"क्यों बताया उसने?"

"उ — उसने बताया है सर . . ."

"होश में रहो मिस्टर अमर सिंह।" कमिश्नर गुर्रा उठा — "क्या तुम हमें इस बात पर विश्वास दिलाना चाहते हो कि एक मुजरिम ने अपना सारा षडयंत्र, एक-एक बात खुलासा करके खुद उसे बताई जिसके खिलाफ षडयंत्र रचा था — ऐसा कहीं होता है, ये तो मुजरिम द्वारा अपने पैरों में कुल्हाड़ी मारने वाली बात हो गयी।"

"समझने की कोशिश कीजिये सर — उसका दावा है, मैं सब कुछ बताये जाने के बावजूद उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकूंगा।"

"ये षडयंत्र उसने क्यों रचा?"

"उसे वहम है सर — केवल वहम कि बीस साल पहले उसके भाई को मारकर मैंने गंगा में बहाया था।" यही वह जवाब था जिसके दिमाग में कौंधते ही अमरसिंह में उत्साह का संचार हुआ था औंर जिसके बूते पर अविनाश से कहा था — 'मैं खुद को भी बचा लूंगा बेटे और अमित को भी।' एक-एक शब्द पर जोर डालता अमरसिंह कहता चल गया — "हालांकि इसमें सच्चाई रत्तीभर नहीं हैं लेकिन वह इसी वहम का शिकार होकर मुझसे रिवेंज लेने पर आमादा है— कहता है, मैंने उसके जिस भाई को मारा है उसी की हत्या के जुर्म में अपने बेटे को फांसी के फंदे पर झूलता देखूंगा।"

"तुमने वहम दूर करने की कोशिश की?"

"खूब की . . . लेकिन वहम तो वहम है साहब।"

"कब हुआ उसे वहम?"

"ज — जी?" अमर सिंह इसलिये बौखला गया क्योंकि इस सवाल का जवाब उसने पहले नहीं सोचा था।

कमिश्नर गुर्रा उठा — "ये वहम उसे बचपन से था या इन्सपैक्टर बनने के बाद हुआ?"

खोपड़ी घूम गयी अमर सिंह की, सोचा — "यदि बचपन से कहा तो कमिश्नर पूछेगा, रिवेंज लेने की बात पन्द्रह साल बाद

क्यों उठी।" अतः जल्दी से बोला – "इन्सपैक्टर बनने के बाद हुआ होगा।"

"हुआ होगा, या हुआ है?"

"ह – होगा इसलिये कहा – उसने वहम का कारण नहीं बताया।"

"कारण नहीं बताया तो तुमने वहम दूर करने की कोशिश क्या कह कर की?"

लाजवाब हो गया अमर सिंह, बोला – "आप एक सैकिंड के लिये भी मुझे सच्चा मान कर मामले पर विचार करने को तैयार नहीं हैं।"

"चलो हो जाते हैं तैयार।" कमिश्नर ने कहा – "सबसे पहले यकीन दिलाओ, जो तुमने कहा वह सच है।"

"क – कैसे यकीन दिलाऊं?"

"सुबूत पेश करो।"

"स – सुबूत तो मेरे पास नहीं है।"

"तो यह सब सिर्फ एक कहानी रही न – खुद जवाब दो, ऐसे मामलों में कहानियां सुनाने से काम चलता है या सुबूत पेश करने से?"

अमरसिंह पर कुछ कहते न बन पड़ा।

"और कहानी भी परफैक्ट नहीं सुना पा रहे तुम।"

"म – मतलब?"

"फॉर एक्जामप्ल।" कमिश्नर ने कहा – "यही न बता सके कि अविनाश को वहम कब और क्यों हुआ, ऐसी हालत में तुम्हारी बात को सच मानें भी तो कैसे ?"

अमर सिंह कसमसाकर रह गया।

अपनी बात खुद उसे नहीं जंच रही थी।

विडम्बना ये थी कि सारी हकीकत जानने के बावजूद वह सामने वाले को संतुष्ट नहीं कर पा रहा था।

कमिश्नर मुस्कुराया, बोला – "जिस शख्स पर तुमने इतना खतरनाक षड़यंत्र रचने का घृणित आरोप लगाया है, उसे पुलिस की सर्विस में सात साल हो गये हैं मिस्टर अमर सिंह और इन सात सालों उसका कैरियर बेदाग ही नहीं, शानदार रहा है – इसके बावजूद हमने यह सोच कर तुम्हारी बातें ध्यानपूर्वक सुनीं

कि सच बोल रहे हो सकते हो मगर अफसोस, तुम बगैर किसी सुबूत के हमारे एक ऐसे इंस्पैक्टर पर कीचड़ उछालने . . . ."

"बस . . . बस कमिश्नर साहब।" अमर सिंह भभकते स्वर में कहता चला गया – "बहुत तारीफ कर चुके अपने उस काबिल इंसपैक्टर की जो असल में इस दुनिया का सबसे खतरनाक जालसाज है।"

"तुम फिर . . ."

"अमित और सुनीता विनाश के हत्यारे इसलिये नहीं हो सकते क्योंकि . . . क्योंकि विनाश को मैंने बीस साल पहले अपने हाथों से।" अमर सिंह दहाड़ता चला गया – "सचमुच इन हाथों से मार कर गंगा में बहा दिया था।"

"क – क्या मतलब?" कमिश्नर उछल पड़ा।

"जब विनाश बीस साल से इस दुनिया में है ही नहीं तो अमित और सुनीता ने उसे कहां से मार दिया?"

"म – मिस्टर अमर सिंह, होश में तो हो तुम?"

"होश में रहने लायक आपके उस हरामजादे इन्सपैक्टर ने छोड़ा कहां है?" अमर सिंह मानों सचमुच पागल हो चुका था – "केवल इसी बात को छुपाये हुये था मैं, इसी कारण आपके सवालों का जवाब नहीं दे पा रहा था – अब पूछिये क्या पूछना है, आपके हर सवाल का तर्कपूर्ण जवाब दूंगा – मैंने उसके सात वर्षीय भाई की हत्या की, ये उसका वहम नहीं बल्कि सच्चाई है। ये सच्चाई उसे आज से पांच साल पहले गोमती से पता लगी।"

"गोमती कौन?"

अमर सिंह बताता चला गया, कुछ नहीं छुपाया उसने।

कमिश्नर के चेहरे पर गम्भीरता छा गयी। अब अमरसिंह की कहानी का हर लिंक उन्हें स्पष्ट मिला नजर आ रहा था। कुछ देर शान्त रह कर सभी प्वॉइन्ट्स पर गौर करने के बाद बोले – "तुम्हें पता है न, कोर्ट इसे इकबालिया बयान मान कर तुम्हें फांसी तक की सजा दे सकती है!"

"इसलिये तो सच से कतरा रहा था।"

"यानी तुम विनाश के कत्ल की सजा भुगतने को तैयार हो?"

"अपने काबिल इंस्पैक्टर से भी जेल की चक्की पिसवानी

होगी आपको?"

"ऐसा क्यों?" कमिश्नर के मस्तक पर बल पड़ गये।

"जब विनाश साला बीस साल पहले मेरे हाथों मर चुका था तो विमला का पति कहां से बन गया – ट्रक एक्सीडेन्ट के जरिये कौन घुस आया खन्ना विला में – कौन था वो जिसे अमित और सुनीता ने मारने की कोशिश की – जाहिर है, वह आपका शानदार रिकार्ड वाला इन्स्पैक्टर था – वह एक-एक शब्द सच है जो मैंने कहा – सारा षडयंत्र उसी ने रचा था – क्या इतना घुमावदार षड़यंत्र रचने वाले को कोर्ट छोड़ देगी?"

"निश्चय ही कोर्ट उसे सख्त सजा देगी।"

"तो ठीक है, मेरे साथ-साथ उसे भी गिरफ्तार कीजिये तथा सुनीता और अमित को छोड़ दीजिये।"

"स – सॉरी . . . छूट वे भी नहीं सकेंगे।"

"क – क्यों?"

"अगर ये दफा तीन सौ दो के मुल्जिम नहीं है तो तीन सौ सात के तो हैं ही।"

"ल – लेकिन वह सब उन्होंने इसी की साजिश में फंसकर किया।"

"मुजरिम . . . मुजरिम है, भले ही जुर्म चाहे जिसकी साजिश में फंस कर किया हो।"

अमर सिंह अवाक् रह गया।

एक बार फ़िर, कुछ कहते न बन पड़ा उस पर।

हर तरफ अंधेरा ही अंधेरा नजर आ रहा था।

"सोच लो अमर सिंह, अच्छी तरह सोच लो। तुम्हें किस लाईन पर चलना है?" रहस्यमय मुस्कान के साथ कमिश्नर कहता चला गया – "जो लाईन हमारे सामने बैठकर अख्तियार की, फायदा उससे भी कुछ नहीं होने वाला – अविनाश को खुद को विनाश बनाने और अपने मर्डर की साजिश रचने की सजा मिलेगी तो अमित और सुनीता को उसका कत्ल करने की कोशिश की – केकड़ा तो फंसा ही पड़ा है और तुम . . . तुम विनाश की हत्या के जुर्म में गये – अर्थात् उधर से अकेला अविनाश, इधर से तुम, तुम्हारा बेटा . . . . सुनीता और केकंड़ा लुभाव में – विमला सरकारी गवाह बन कर सुरक्षित किले में जा

बैठी है।"

"अ – आप कहना क्या चाहते हैं?"

"सीधी सी बात है, जिस तरीके से तुम अपनी कुर्बानी देकर बेटे को बचाने की कोशिश कर रहे हो – पहले तो वह तरकीब कामयाब नहीं होगी – हो भी गयी तो आत्मघाती सिद्ध होगी – न तुम बचोगे, न बेटा।"

"अमर सिंह उछल पड़ा – "य - ये आपसे किसने कहा मैं अमित को बचाने की कोशिश कर रहा हूं?"

"तुम्हारी बोगस कहानी से क्लियर है।"

हलक फाड़ कर दहाड़ उठा अमर सिंह – "ये बोगस कहानी नहीं, सच्चाई है . . सच्चाई।"

"देखो अमर सिंह।" कमिश्नर उसे समझाने वाले अन्दाज में बोला – "हम मानते हैं एक अधेड़ आयु के आदमी को अपना जवान बेटा खुद से प्यारा होता है – उस वक्त तो और भी ज्यादा जब बेटा एक ही हो – इस उम्र में आदमी उसकी लाश नहीं देखना चाहता। बेटे के कंधे पर महायात्रा पर जाना सबको अच्छा लगता है – इसके बावजूद ऐसे बाप कम होते हैं जो बेटे की बला अपने सिर ले लें – बला भी ऐसी जिसका अंजाम केवल फांसी है – तुमने ऐसी कोशिश की, इसके लिये हम इंसानी तौर पर तुम्हारी भावनाओं की कद्र करते है,परन्तु पुलिस कमिश्नर के नाते यही कहेंगे कि यह तुम्हारा बेवकूफाना कदम है – कानून के हिसाब से सजा उसी को मिलनी चाहिये जिसने जुर्म किया है और वैसे भी . . हम समझा चुके हैं, खुद की कुरबानी देने के बावजूद तुम अपने बेटे को नहीं बचा सकते।"

अमर सिंह की इच्छा हुई – अपने बाल नोंच डाले, कसमसा कर कह उठा वह – "प – पता नहीं आप क्या-क्या कहते चले जा रहे हैं। मैं कसम खाकर कहता हूं – विनाश की हत्या मैंने अमित को बचाने के लिये झूठ-मूठ नहीं कुबूली बल्कि सचमुच मारा है उसे।"

"अब हम तुमसे वो सवाल करते हैं जो अब तक नहीं किया लेकिन कोर्ट सबसे पहले करेगी।"

"कौन सा सवाल?"

"क्या सबूत है तुमने बीस साल पहले विनाश को मार

कर गंगा में बहा दिया था?"

"स - सबूत?" अमर सिंह को तारे नजर आ गये – "जब मैं कुबूल कर रहा हूं तो सुबूत की क्या जरूरत रह गयी?"

"बात फिर वहीं आ गई अमर सिंह – कोर्ट में कहानियां नहीं चलतीं, सुबूत और गवाह चाहियें – किसी के कहने मात्र से अदालत किसी को किसी का हत्यारा नहीं मान लेती और तुम्हारे केस में तो हरगिज नहीं मानेगी – सामने वाला वकील चीख चीख कर कहेगा – 'मिस्टर अमर सिंह अपने जवान बेटे को बचाने के लिये मनघड़ंत कहानी सुना रहे हैं योअर ऑनर' – उस वक्त कैसे सिद्ध करोगे कहानी मनघड़ंत नहीं है?"

अमर सिंह कमिश्नर की तरफ इस तरह देखता रह गय जैसे दिमागहीन व्यक्ति किसी की तरफ देख रहा हो।

अजीब अवस्था में था वह। सच्चाई कुबूल करने व बावजूद कुछ नहीं कर पा रहा था और कुछ नहीं सूझा तो फफक फफक कर रो पड़ा – "यकीन कीजिये कमिश्नर साहब, सच्चा वही है, मेरा विश्वास . . .

"हमारे विश्वास करने से कुछ नहीं होगा अमर सिं कोर्ट को विश्वास आना चाहिये और कोर्ट किसी के र गिड़गिड़ाने पर विश्वास नहीं करती – अगर तुमने विनाश मारा था तो . . . कोई तो सुबूत होगा?"

"हा . . . हा . . . हा!" बुलन्द ठहाका लगाया अविन ने।

अमर सिंह उसे इस तरह देख रहा था जैसे एक पा दूसरे पागल को देखकर सोच रहा हो कि वह आखिर हंस रहा है?

खुलकर ठहाका लगाने के बाद अविनाश ने सि सुलगाई। अमर सिंह को जला कर राख कर देने वाले अंदा कश लगाने के बाद पूछा – "मिला कोई ऐसा सुबूत जिससे को विनाश का हत्यारा साबित कर सको?"

"क – कहां से लाऊं सुबूत . . ."

"सुबूत होता तो मुझे ही इतना घुमावदार षडयंत्र की क्या जरूरत थी अमर सिंह - गवाह के रूप में गोमती

आज वह भी नहीं है लेकिन जाल देख . . . और जाल की धार, देख! ऐसा फंसा है तू कि खुद उस जुर्म को कुबूलता फिर रहा है जिसका दुनिया में एक भी प्रमाण नहीं है सोच . . . आज कितनी बड़ी सफलता अर्जित की है मैंने – तेरे बार-बार यह कहने से कितना सुकून मिल रहा है कि तू ही मेरे सात साल के मासूम भाई का हत्यारा है।"

"स - सुकून मिल रहा है तो बात यहीं खत्म कर दे अविनाश।" अमर सिंह गिड़गिड़ा उठा – "मैं हारा, तू ज़ीता – विनाश की हत्या के जुर्म में जो सजा चाहे मुझे दे ले मगर मेरे अमित को मत फंसा, बख्श दे उसे।"

"ये बात तो माननी पड़ेगी अमर सिंह, तू उतना जलील और कमीना नहीं निकला जितना मैंने सोचा था – मैंने सोचा था; तू विनाश की हत्या के जुर्म में अपने बेटे को फांसी पर झूलता देख लेगा लेकिन कुबूल नहीं करेगा कि उसका कत्ल तूने किया था परन्तु इंसानियत से इतना नहीं गिरा तू – अपने बेटे के लिये ही सही मगर इंसानियत तुझमें है।"

"त – तो बात खत्म समझूं, तेरा रिवेंज पूरा हुआ समझूं न?"

"कमान से निकले तीर वापस नहीं आया करते चचा जान।"

"क – क्या मतलब?"

"अब मेरे किये भी कुछ नहीं होगा, होगा वही जो निर्धारित कर चुका हूं।"

"अगर खुद कहो कि तुम्हीं विनाश बन कर . . ."

"क्यों कहूं, अपने गले में साजिश रचने का फंदा क्यों डालूं मैं?"

अमर सिंह हड़बड़ा कर रह गया।

"वैसे भी तेरे जैसे जमींदारों की फितरत से अच्छी तरह वाकिफ हूं – जरा सी अंगुली दबी नहीं कि रोकर, गिड़गिड़ा कर अपना उल्लू सीधा करने पर आमादा हो जायेंगे। इतना कच्चा मत समझ कि उधर तू टसुवे बहायेगा इधर मैं पसीज जाऊंगा – आ, अमित और केकड़ा से मिलाता हूं तुझे – सब मिल कर सोचो, मुझसे कैसे निपटा जाये?"

अमर सिंह पर कुछ कहते न बन पड़ा।

अविनाश खींचता हुआ हवालात में ले गया।

हवालात में मौजूद अमित, सुनीता और केकड़ा खड़े हो गये।

"सुना इन्हें।" दांत पीसते अविनाश ने अमर सिंह को इतना तेज धक्का दिया कि अमित और केकड़ा न सम्भाल लेते तो मुंह के बल जमीन पर गिरता। इधर उन्होंने अमर सिंह को सम्भाला उधर अविनाश बराबर गर्ज रहा था – "वो कहानी इन सबको सुना जो कुछ देर पहले मैंने तुझे सुनाई थी।"

"ड. – डैडी।" अमित के मुंह से निकला।

सुनीता सहमी खड़ी थी।

केकड़ा ने सीधे अविनाश से कहा – "क्यों धक्का-मुक्की कर रहे हो मियां?"

उसकी बात पर ध्यान दिये बगैर अविनाश पुन : अमर सिंह पर झपटा। दोनों हाथों से उसका गिरेबान पकड़ कर झंझोड़ता हुआ चीखा – "मैं कहता हूं सुना . . . सुना इन सबको वो कहानी।"

"अरे सुना भी दे ताऊ।" केकड़ा ने अमर सिंह से कहा – "क्यों मार खा रहा है – जो भी कहानी है सुना दे।"

और . . . अमर सिंह शुरू हो गया।

हैरत से सराबोर हुए वे तीनों एक-एक लफ्ज सुनते रहे।

अविनाश न केवल चहलकदमी करता रहा बल्कि एक के बाद दूसरी सिगरेट सुलगाता रहा।

पूरी कहानी सुनने के बाद अमित और सुनीता के मुंह से जहां बोल न फूट सका वहीं केकड़ा कह उठा – "तो वो तुम हो ताऊ जिसके मारे हम तीनों हवालात की हवा चख रहे हैं?"

अमर सिंह बोले तो क्या बोले?

केकड़ा ने सीधे अविनाश से कहा – "तुम तो मियां म्यूजियम में रखने वाली वस्तु हो, क्या दिमाग पाया है – खोपड़ा हिला कर रख दिया मुझ तक का – ये भेजा फाड़ देने वाला प्लान तुम्हें सूझा तो सूझा कैसे – प्लग-पाने की कसम, हाथ मिलाने को जी चाह रहा है तुमसे – वाह, कहां ला के मारा है ताऊ को?"

"ताऊ को भूल जा केकड़ा, अपने बारे में सोच।"

"क्या सोचूं?"

"मैने जो जिस तरीके से किया उस सबको इतनी डिटेल में तुम्हारी नॉलिज में इसलिये लाया हूं ताकि किसी को मलाल न रहे कि क्या, कैसे हो गया, पता ही न चला – पता होता तो बचाव हेतु ये कर लेते, वो कर लेते – हालंकि न अमर सिंह ने मेरे भाई को बचने का मौका दिया था, न तुम दोनों ने मुझे।" अविनाश ने सुनीता और अमित को घूरा – "लेकिन मैं पूरा मौका दे रहा हूं – सारा षड़यंत्र सामने है, मैं तुम्हारे सामने हूं – मैं . . . जिसकी हत्या करने के आरोप में तुम्हें फांसी होगी – बच सकते हो तो बचो, रास्ता एक ही है– साबित कर दो कि मैं वही हूं जो विला में मरा – तुम जानते हो मैं वही हूं लेकिन . . . साबित नहीं होने दूंगा ये सच्चाई।"

"डैडी।" अमित ने अमर सिंह से कहा – "आप लोगों को बता क्यों नहीं देते कि विनाश . . . "

"बता चुका हूं, कमिश्नर को सब कुछ बता चुका हूं लेकिन . . . "

"लेकिन?"

अमर सिंह ने कमिश्नर से हुई वार्ता दोहरा दी।

"तुम भी रहे भोंदू के भोंदू ही ताऊ।" केकड़ा कह उठा – बगैर सुबूत के तो ये होना ही था – बेकार कमिश्नर के पास जाकर एक्सीलेटर पर एक्सीलेटर देकर पेट्रोल फूंकते रहे – मेरे पास आ जाते, पहले ही बता देता गला फाड़ फाड़ कर सबको ये बताने से कोई फायदा नहीं होने वाला कि तुम बीस साल पहले विनाश का क्रिया-कर्म कर चुके हो।"

"तुम्हें अपने दिमाग के बारे में कुछ ज्यादा ही खुशफहमी है केकड़ा?"

"हां जनाब।" वह अविनाश की तरफ घूमा – "है तो सही।"

"इस्तेमाल करो उसका, बच कर दिखाओ।"

"वो कहावत है न, मरता क्या न करता – कोशिश तो करेंगे ही सरकार लेकिन . . . "

"लेकिन?"

"मुझे तो नाजायज ही इन मरदूदों के साथ चिपका रखा है तुमने – इतनी बड़ी खता नहीं थी मेरी – रिश्वत ही तो ली थी – तुम जैसे चन्द हरिश्चन्द्रों को छोड़कर आज कौन ये पवित्र कमाई नहीं कर रहा?"

"देखा जाये तो तूने मुझे सबसे ज्यादा मानसिक टॉर्चर किया –मैडिकल रिपोर्ट गायब न करता तो चार साल पहले वह दिन देख लेता जो आज देखा है।"

"गलती तुम्हारी है, उसी समय टब में पड़े-पड़े आंखों का बस जरा सा इशारा कर देते, फिर देखते मैं क्या करता?"

अविनाश मुस्कुराकर रह गया।

"बाई द वे . . . विमला को क्यों भेजा था मेरे ऑफिस में?"

"तुम्हें आगाह करने कि मुसीबत आने वाली है, दुश्मन पर धोखे से हमला करना मेरा सिद्धांत नहीं है।"

"गुड!" केकड़ा ने कहा – "सिद्धांतवादी लोग मुझे पसंद हैं!"

"दोपहर बाद तुम्हें कोर्ट में पेश किया जायेगा। आराम से जमानत हो जाने दूंगा ताकि पूरे हाथ पैर मार सको!" कहने के बाद उसने आधी सिगरेट फर्श पर डाली और जूते से कुचल कर बाहर निकल गया।

"कमाल की चीज है यार।" केकड़ा बुदबुदाया – "ऐसी मार पहले कभी नहीं खाई, पट्ठा भिगो-भिगो कर मार रहा है।"



जमानत के वक्त अविनाश के इशारे पर सचमुच सरकारी वकील ने कोई अड़ंगा नहीं डाला। अमित, केकड़ा और सुनीता छूट गये। अदालत की सम्पूर्ण कार्यवाही के दरम्यान अविनाश के होठों पर उन्हें चुनौती देती मुस्कान थिरकती रही थी।

वह कोर्ट से थाने की तरफ लौट रहा था, विमला बगल वाली सीट पर बैठी थी।

अविनाश ने कहा – "बड़ी चुप-चुप हो विमला, क्या सोच रही हो?"

"मैं इस कदम से सहमत नहीं हूं अविनाश।"

"जमानत होने देने वाले से?"

"हूं!"

"हाथ पैर मारने दो उन्हें, मजा तो अभी आयेगा!"

"तुम्हें मजे की सूझ रही है और मैं सोच रही हूं . . . "

"कहीं वे सच्चाई साबित न कर दें?" बात अविनाश ने पूरी की।

"मौका ही क्यों दें?"

"पगली।" उसने प्यार से एक बार विमला की तरफ देखने के बाद नजरें पुन: सड़क पर गड़ाते हुए कहा – "बेवजह डर रही हो – भला तुमसे बेहतर कौन जानता है – स्कीम में 'मसाम' के बराबर छेद नहीं है जिससे सिद्ध कर सकें कि मैं ही वो शख्स हूं जो विनाश बनकर विला में गया था!"

"वो सब मैं जानती हूं और मानती भी हूं तुम्हें विनाश सिद्ध नहीं कर पायेंगे मगर . . . "

"छोड़ो इस बात को।" अविनाश ने विषय चेंज किया – "अंकुर कैसा है?"

"आज सुबह मिल कर आई हूं, तम्हें याद कर रहा था।"

"अब देखो न, इतनी तक सावधानी बरती है हमने – अंकुर मुझे पापा नहीं, अंकल कहता है – कल अगर उसे भी कोर्ट में पेश करने लगे तो मुझे तुम्हारा पति सिद्ध नहीं कर सकेंगे!"

"वो सब तो ठीक है अविनाश लेकिन वही बात हुई जिसका डर था।"

"किसका डर था?"

"लोग मुझे पापा और पति की हत्यारी समझने लगे हैं!"

गम्भीर हो गया अविनाश, बोला – "ये तो होना ही था – स्कीम बनाते वक्त ही सोच लिया था कि ये स्पॉट आयेगा – लोग उसी बात को सच मानेंगे जो पुलिस को बताओगी अर्थात् पहले विनाश के प्यार में अंधी होकर पापा की हत्या में सहभागी बनी – बाद में विनाश का मर्डर करके बदला लिया – लेकिन

लोगों के समझने से क्या होता है विमला – हम जानते हैं, हमारी अन्तरात्मा जानती है ये सब झूठ है – न तुम्हें अपने पापा के मर्डर से कुछ लेना देना था, न विनाश मरा है।"

"फिर भी लोगों की हिकारत भरी नजरें देखकर अच्छा नहीं लगता – सुबह चिल्ड्रन होम की मालकिन मिली – हालांकि इस बारे में कहा कुछ नहीं लेकिन नज़रों में फर्क था, बोलचाल में फर्क था – अपने लिये उसकी आंखों में वो सम्मान ही नजर नहीं आया मुझे जो आज से पहले नजर आता था।"

"तुम्हारा बयान आज ही के पेपर में छपा है न, धीरे - धीरे सब ठीक हो जायेगा।" कहने के साथ उसने जीप एक साईड में लगा दी।

"क्या हुआ?" विमला ने पूछा।

"यहां से मेरा थाना अलग दिशा में है मैडम, विजयनगर की तरफ जाने वाली सड़क अलग दिशा में।"

"क्या तेरा – मेरा लगा रखा है?"

"फिलहाल मैं पुलिस इन्स्पैक्टर हूं और तुम मेरे केस की चश्मदीद गवाह, इससे ज्यादा हमारे बीच कोई रिश्ता नहीं है।"

"क्यों?" विमला मुस्कुराई – "भाई की पत्नी क्या तुम्हारी कोई नही लगती?"

"लगेगी . . . धीरे-धीरे लगेगी।" अविनाश हंसा – "तब लगेगी जब मैं लोगों की नजरों में सारी हकीकत अपने माता पिता को बता चुका होऊंगा – वे मुझसे तुम्हें और अंकुर को घर लाने के लिये कहेंगे . . . कहेंगे कि भले ही आज विनाश दुनिया में नहीं है लेकिन बहू तो है, उसका बेटा तो है – वे हमारे साथ ही रहने चाहियें – मैं तुमसे मिलूंगा, लोगों की नजरों में अपने घर चलकर रहने को कहूंगा – तुम नफरत से मुंह सिकोड़ लोगी – कहोगी – 'मैं विनाश से नफरत करती हूं' – मैं गिड़गिड़ाऊंगा, मेरे माता पिता गिड़गिड़ायेंगे, कहेंगे – 'विनाश ने जैसा करा, वैसा भरा . . . हमारा क्या कसूर है बहू . . . विनाश के किये की सजा उसे मिल गयी – तुमने अपने हाथ से दी – हमें शिकवा नहीं, फख्र है – यही सजा मिलनी चाहिये थी उसे लेकिन अंकुर हमारा पोता है, तुम हमारी बहू हो . . . हमारे साथ रहो' – तुम पसीजोगी मगर एकदम नहीं – धीरे-धीरे सब सामान्य होगा –

हम एक छत के नीचे रहने लगेंगे और फिर . . . एक दिन लोगों को पता लगेगा, विमला और अविनाश ने शादी करने का फैसला कर लिया है – शादी हो जायेगी, सुहागरात मनेगी।"

"धत्!" कहने के साथ विमला जीप से उतर गई।

●

"कमाल है।" विला के डबल हाईट हॉल में बैठा अमर सिंह कह उठा – "खौफ की ज्यादती के कारण इतनी मोटी-मोटी बातें जहन में नहीं आईं – एक मिनट में, बड़ी आसानी से धरा जायेगा वह – फौरन साबित हो जायेगा कि वही विनाश बना था।"

"प्रवचन ही चलता रहेगा ताऊ या प्रवचन का कारण भी बखानोगे?" केकड़ा ने कहा – "वो कौन सी मोटी-छोटी बातें हैं जिनसे एक मिनट में वो साबित हो जायेगा जो होना चाहिये?"

"केस फाईल में उसका सुसाइड नोट लिखा होगा।" उत्साह में भरा अमर सिंह कहता चला गया – "कोर्ट में शादी के वक्त जो एप्लीकेशन लगाई थी, वह रिकार्ड से निकलवाई जा सकती है – उस राईटिंग का मिलान इन्सपैक्टर की राईटिंग से करो, मामला फिनिश।"

अमित और सुनीता की आंखें जगमगाईं।

केकड़ा ने ऐसा मुंह बनाया जैसे किसी ने जबरदस्ती मुंह में कुनैन की गोली ठूंस दी हो।

"क्या हुआ?" अमरसिंह ने उससे पूछा – "तुम्हें मजा नहीं आया?"

"मजा साला किसी के बाप का नौकर तो है नहीं कि आये ही आये।"

अमित बोला – "बात में वजन है, राईटिंग . . . "

"वजन क्यों नहीं होगा?" केकड़ा ने उसकी बात पूरी नहीं होने दी – "आखिर बात बापूजान के मुखारबिन्द से निकली है!"

"तुम्हें क्यों नहीं जंची?" अमर सिंह ने पूछा।

"इतने मोटे-मोटे 'लूज प्वॉईन्ट' कोई कूढ़ मगज तक नहीं

छोड़ सकता – उसकी तो बात ही निराली है जिसने ऐसा चक्करदार चक्कर चलाया कि हम सब घनचक्कर बने हुये हैं।" केकड़ा कहता चला गया – "भेजे का इस्तेमाल करो, क्या उस महान हस्ती ने इतना बड़ा छेद छोड़ रखा होगा। जिसने अपना पूरा प्लान बताने के बाद हमें यह चैलेंज देकर खुला छोड़ रखा है कि साबित कर सकते हैं तो करें कि वह वही है।"

"राईटिंग अलग कैसे करेगा वो अपनी?"

"अलग नहीं करेगा ताऊ, पहले से अलग होगी।"

"वो कैसे?"

केकड़ा ने सुनीता से पूछा – "शादी के लिये कोर्ट में लगायी गयी एप्लीकेशन उसने तुम्हारे सामने लिखी थी?"

"नहीं . . . लिखी लिखाई जेब से निकाली थी।"

"मामला फिनिश।" केकड़ा ने मुंह पिचकाया – "किसी और से लिखवाकर लाया होगा।"

"लेकिन।" अमित ने कहा – "सुसाइड नोट हमारे सामने लिखा था।"

"जो उसने लिखा वो विमला पर रहा, जो विमला ने यहां . . . मर्डर स्पाट पर छोड़ा वह किसी और का लिखा होगा बल्कि उसी का लिखा होगा जिससे एप्लीकेशन लिखवाई होगी।"

"तो विमला की राईटिंग होगी वह।"

"जरूरी नहीं, तिगड़म जोड़ने से जूस नहीं निकलेगा।"

अमर सिंह को जैसे कुछ याद आया – "पैन पर फिंगर प्रिंट्स भी तो थे?"

"कोई फिंगर प्रिंट्स नहीं थे – जांच कराई थी मैंने।" केकड़ा ने कहा – "विमला ने झूठ बोला था।"

"उन दिनों में, थाने पर उसकी हाजिरी आदि की जांच की जानी चाहिये – कहीं न कहीं गड़बड़ जरूर मिलेगी – जैसे . . . उसने खुद बताया, मर्डर से अगले दिन . . . यानी जिस दिन पोस्टमार्टम हुआ, अंतिम संस्कार किया गया – उस सारे दिन वह डाक्टर गिरवर की कोठी में छुपा रहा – जाहिर है, अपनी इन्स्पैक्टर वाली ड्यूटी से गैर हाजिर रहा होगा?"

"पहले दिन या दो चार दिन पहले किसी केस के सिलसिले में विजयनगर से बाहर की रवानगी दिखा दी होगी।"

"जहां की रवानगी दिखाई होगी वहां नहीं पहुंचा होगा।"

केकड़ा ने कहा – "दिमाग पर जोर मत डालो, मैं इन्स्पैक्टर रहा हूं – जानता हूं गैरहाजिर रह कर हाजरी कैसे दिखाई जाती है।"

"तुम समझ नहीं रहे।" अमर सिंह अपने बाल नोंचने को तैयार हो गया – "अगर इस तरह, यहीं बैठे-बैठे सब प्वॉईन्ट्स का जवाब देते रहोगे तो कैसे बात बनेगी – बहरहाल, भाग-दौड़ और खोजबीन तो करनी पड़ेगी।"

"सूखी दण्ड - बैठक पेलने से कोई फ़ायदा नहीं ताऊ।"

"सुना है, जुर्म चाहे जितनी चालाकी से, चाहे जितने प्वॉईन्ट्स दिमाग में रखकर किया जाये मगर मुजरिम से कहीं न कहीं, कोई न कोई भूल चूक जरूर हो जाती है – ज़रूरत होती है उसे पकड़ने की – पकड़ने के लिये मैदान में उतरना जरूरी है – इतने लम्बे चौड़े प्लान में कहीं तो चूका होगा अविनाश, कोशिश तो की जानी चाहिये।"

"करो कोशिश, बंदे की शुभकामनायें तुम्हारे साथ हैं।"

"तुम साथ नहीं हो?"

केकड़ा ने इन्कार में गर्दन हिलाने के साथ कहा – "ना।"

"क्यों?"

"जितना घुटा हुआ वह सिद्ध हुआ है और जितने आत्म - विश्वास के साथ हमें खुला छोड़ा है उसे देखते हुए मुझे उसके प्लान में 'मसाम' बराबर छेद मिलने की उम्मीद नहीं है – भूल-चूक मुजरिम से जल्दबाजी, हड़बड़ाहट या बौखलाहट आदि में होती है जबकि उसने सारा प्लान ठंडे दिमाग से बनाया, आराम से कार्यान्वित किया।"

"इसका मतलब तो ये हुआ कि निराश होकर बैठ जायें?" अमित झुंझलाया – "मान लें कि कोर्ट में वही होगा जो वह चाहता हैं?"

"ये नही बका मैंने।"

"प्लीज केकड़ा, दिमाग पर जोर डालो।" सुनीता के लहजे से जाहिर था उसे केवल उसी पर भरोसा है – "कहीं न कहीं, कोई न कोई मिस्टेक जरूर हुई होगी उससे।"

"मिस्टेक तो हुई पड़ी है मगर उससे नहीं हुई।"

"क्या मतलब?" एक साथ तीनों ने पूछा।

"हम उस मिस्टेक का फायदा उठा सकते हैं।"

"आखिर कौन सी मिस्टेक है वह?" अमर सिंह ने पूछा।

केकड़ा ने सुनीता से कहा – "तुम्हें पूरी दरियादिली के साथ बाप से मिली दौलत की थैली का मुंह खोलना होगा मोहतरमा।"

"पैसा क्या हम सब की जान से बढ़कर है?" सुनीता ने कहा।

"तो ठीक है, केकड़ा अपना खेल शुरू करता है।"

"म - मगर करना क्या चाहते हो?"

"तुमने सुना होगा ताऊ, दीवारों के कान हाथी से बड़े होते हैं – जो फितूर मेरी खोपड़ी में है, उसे वहीं रहने दो और तुम अविनाश के लम्बे चौड़े प्लान में से उस छेद को ढूंढने में जुटे रहो जिसके जरिये उसकी हवा निकाली जा सके।" केकड़ा कहता चला गया – "तुम अपने तरीके से 'मंढो' मैं अपने स्टाइल से जूझता हूं, तभी कोई दाल-दलिया निकलेगा।"



"अरे।" अपने फ्लैट का दरवाजा खोलते ही इन्स्पैक्टर यादव चौंक पड़ा – "तू यहां केकड़ा?"

"काला काम करना हो तो थाने पर नहीं, इन्स्पैक्टर के घोंसले पर सजदा करना चाहिये।"

"काला काम?"

"दांये-बांये हटे तो अंदर घुसूं?"

यादव एक तरफ हटा।

केकड़ा ने अन्दर कदम रखा। सोफा और सेन्टर टेबल जैसी चीजों की मौजूदगी के कारण उस कमरे को ड्राइंग रूम कहा जा सकता था। उधर यादव ने दरवाजा वापस बंद किया इधर सूटकेस सेन्टर टेबिल पर रखने के बाद केकड़ा सोफे पर बैठता बोला – "भाभी कहां हैं?"

"आगरा।"

"किसी प्राईवेट डाक्टर से इलाज करा लेता यार?"

"पागलखाने में नहीं कहा।" यादव हंसा – "हफ्ता भर पहले मैं वहीं, सब्जी मंडी थाने पर तैनात था – अचानक विजयनगर भेज दिया गया – एकदम से तो फैमिली शिफ्ट की नहीं जा सकती, बच्चों के एग्जाम . . . "

"यही समस्या है साली, पुलिस की नौकरी में धक्के बहुत खाने पड़ते हैं – बच्चे कौन से मीडियम में पढ़ते हैं?"

"इंग्लिश मीडियम में।"

"गुड।"

"क्या हुआ?"

"कुछ नहीं – वैसे भी, बच्चों को घसियारे थोड़ी बनाना है जो हिन्दी मीडियम में पढ़ायें।"

"तू बढ़िया रहा, फैक्ट्री शानदार चल रही है न?"

"औपचारिक बात कह रहा है या सचमुच मानता है कि मैंने तरक्की की है?"

"तरक्की करने वाला आदमी आज उसे माना जाता है जिसके पास नावा हो और तेरे पास कमी नहीं, तनख्वाह के भरोसे रहता तो सारे जीवन में मिला कर उतने लाख रूपये पाता जितने एक साल में पीट लेता है।"

केकड़ा तुरन्त मतलब की बात पर आ गया – "तू भी पीटना चाहता है नावा?"

"यानी?"

"ये देख।" उसने सूटकेस खोल दिया, सौ-सौ की गड्डियों से भरा था वह, बोला – "ये सब तेरे हो सकते हैं।"

"कैसे?" यादव रोमांचित था।

"जिस थाने पर तुझे हफ्ता भर पहले तैनात किया गया है, उस थाना क्षेत्र में सत्तरह मार्च 1989 वाले दिन सेठ लक्ष्मी नारायण की कोठी में लूट हुई थी – फाईल थाने के रिकार्ड में होगी – लुटेरे बेटी को बांध कर एक कमरे में डाल गये – सेठ को निपटा गये।"

"विमला और उसके बाप की बात कर रहा है न?"

"बड़ा पहुंचा हुआ है यार, एक हफ्ते में जान भी गया

उसे?"

"मिला नहीं हूं, अखबार पढ़ा था।"

"तब तो मेरे साथ चल रहे चक्कर का भी पता होगा?"

"सूटकेस न खोलता तो वही जिक्र छेड़ने वाला था, किस्सा क्या है वो . . . इतने दिन बाद तू लपेटे में कैसे आ गया?"

"कोई लपेटा नहीं है।" केकड़ा ने लापरवाही के साथ कहा – "सारा किस्सा टांय - टांय फिस्स कर दूंगा।"

"हुआ क्या था?"

"उस गांव के कोस क्यों गिनता है, जहां जाना नहीं – सूटकेस पर आ।"

"ये भी ठीक है।"

"तुझे एक से ज्यादा यानी दो, तीन या ज्यादा से ज्यादा चार ऐसे बदमाश पकड़ने हैं जिनका पेशा लूट हो और विघ्न पड़ने पर किसी का कत्ल कर देने से भी न चूकते हों। वे दूसरी अनेक लूट कुबूल करने के साथ लक्ष्मी नारायण के यहां हुई लूट कुबूल करेंगे – लक्ष्मी नारायण का कत्ल भी कुबूलेंगे।"

"क्या बात कर रहा है यार?" यादव उछल पड़ा – पुलिस को दिये गये अपने बयान में विमला खुद कुबूल कर चुकी है कि सब कुछ उसी का कराया हुआ था। सेठ उसकी शादी विनाश से नहीं होने दे रहा था। एक रात विनाश के लिये दरवाजा खुद खोला – विनाश ने कत्ल किया – उसे बांधा और लूट का ड्रामा रचा गया – बाद में जब उसे पता लगा विनाश घुटा हुआ क्रिमिनल था तो राजनगर में जाकर सुनीता और अमित की मदद से उसका मर्डर किया – उसी का सुसाइड केस बनाने के चक्कर में तो तू . . . "

"विमला झूठ बोल रही है।"

"भ – भला ऐसा झूठ कोई क्यों बोलेगा जो खुद उसी की सामाजिक प्रतिष्ठा की ऐसी तैसी कर दे – ऐसी दो-दो हत्याओं के इल्जाम कोई अपने मत्थे क्यों मढ़ेगा जो वास्तव में उसने नहीं कीं, हत्यायें भी अपने बाप और पति की?"

"बात लम्बी हो जायेगी यादव, सूटकेस पर आ।"

"लेकिन . . . "

"बस इतना समझ, सेठ के यहां सचमुच लूट हुई थी — हकीकत में लुटेरे ही लक्ष्मी नारायण को हलाल करके गये थे मगर वे आज तक पकड़े नहीं गये — इस बात का फायदा उठाती हुई विमला ने एक बड़ा मकसद हासिल करने हेतु खुद को बदनाम तक करना कुबूल किया — अब अगर असली लुटेरे और हत्यारे पकड़े जायें तो 'तिगनी का नाच' नाच जायेगी वो।"

"लेकिन पकड़े कहां से जायें, मुझे क्या पता पांच साल पहले . . ."

"होश की बात कर यादव।" केकड़ा ने कहा — "इतनी छोटी-छोटी बातें न समझ सकने वाला इन्स्पैक्टर कभी 'नावा' नहीं पीट सकता — अबे वो लुटेरे वो होंगे जिन्हें तू कहेगा कि ये हैं — जिसे हवाई जहाज बनाकर हवालात में लटका देगा वही हजार बार कसम खा-खा कर खुद को लक्ष्मी नारायण का हत्यारा बतायेगा।"

"वो सब तो ठीक है लेकिन . . ."

"फिर लेकिन?"

"सेठ के यहां से चोरी हुई कोई चीज भी तो बरामद होनी चाहिये उनसे?"

"ये की तूने इस सूटकेस को अपना बनाने वाली बात।" केकड़ा ने खुश होकर सूटकेस उसकी तरफ सरकाया और जेब से एक फोटो निकाल कर नोटों के ऊपर डालता हुआ बोला — "इसे देख।"

वह एक नैक्लेस का फोटो था।

"ये क्या है?" यादव ने पूछा।"

"उस कीमती नैकलेस का फोटो जिसे लुटेरे कैश और दूसरे जेवर के साथ लूट ले गये थे।"

"तेरे हाथ उसका फोटो कहां से लग गया?"

"बीमा कम्पनी की फाईल से।"

"मतलब?"

"नैकलेस ज्यादा कीमती था इसलिये सेठ ने उसका बीमा करा रखा था - कम्पनी विमला को इसका क्लेम भी दे चुकी है।"

"तो?"

"अब भिड़ा दिमाग, ये नैकलेस तू लुटेरे की बीवी, बहन

या मां के गले से बरामद करेगा तो क्या सिद्ध नहीं हो जायेगा कि सेठ का हत्यारा वही है?"

"इसके साथ लूटा गया बाकी जेवर?"

"पांच साल पहले हुई लूट के माल में से तूने ये बरामद कर लिया, ये क्या छोटा तीर मारा है – बाकी जेवर लुटेरे बेच कर खा गये।"

बात यादव की समझ में आ रही थी, बोला – "नैकलेस कहां से आयेगा?"

"मैं दूंगा।"

"नकली?"

"एकदम असली बेवकूफ, ठीक ऐसा . . . कारीगरों की कमी नहीं है इस मुल्क में।"



इन्स्पैक्टर यादव ने विमला को नैकलेस दिखाते हुए पूछा – "क्या आप इसे पहचानती हैं?"

"ह – हां।" विमला ने नैकलेस को देखते ही उठा लिया – "मम्मी का नैकलेस है ये – मरते वक्त मेरे सामने अपने गले से उतार कर पापा को दिया था – कहा था, 'जब विमला की शादी हो तो मेरी तरफ से देना'।"

"उसके बाद, लुटेरों द्वारा अन्य जेवर और कैश के साथ इसे भी लूट लिया गया?" यादव ने कहा।

बड़ा तेज झटका लगा विमला के दिमाग को।

हालांकि इन्स्पैक्टर सच कह रहा था मगर, नई परिस्थितियों के मुताबिक इस सच को स्वीकार नहीं करना था उसे – हवा में परवाज करते दिमाग के साथ कई क्षण तक हकबकाई अवस्था में इन्स्पैक्टर की तरफ देखती रही – यह भी समझ गयी कि बगैर सोचे समझे नैकलेस को अपना कह कर गलती कर चुकी है, यादव ने उसे चुप देख कर पूछा – "क्या मैने गलत कहा?"

"पूरी तरह गलत कहा।" वह अपने दिमाग को व्यवस्थित

करती बोली।

"वो कैसे?"

"अगर दो महीने पहले आपने मुझसे यह सवाल किया होता तो मुमकिन है – 'हां' कहती क्योंकि मैं खुद भी लोगों से यही कहा करती थी कि हमारे घर में लूट और पापा का मर्डर अज्ञात लुटेरों ने किया था मगर . . . अपनी अन्तरात्मा की आवाज पर दो महीने पहले हकीकत कुबूल कर चुकी हूं – दरअसल कोई लूट नहीं हुई थी, कोई लुटेरे नहीं आये थे बल्कि मेरी ही मदद से विनाश . . ."

"वो सब मैं अखबार में पढ़ चुका हूं।"

"तब तो आपको ये कहना ही नहीं चाहिये था।"

"अगर पुलिस को दिया गया आपका बयान सच है तो, ये नैकलेस मुझ पर कैसे पहुंच गया?"

"क – क्या पता?" विमला पसीने से नहा गयी – "क – कहां से मिला आपको?"

"एक चोर की बीवी के गले में पड़ा था।"

"मतलब?"

"कल मैंने लूट के इरादे से एक कोठी में घुसे बदमाश पकड़े – रुक्का और इकबाल – सारी रात सख्ती से पूछताछ की – अन्य कई डकैती और हत्या कुबूल करने के साथ उन्होंने आपके यहां हुई वारदात भी कुबूल की – मैं चौंक पड़ा – अखबार में आपका बयान पढ़ चुका था – सवाल-जवाब किये तो रुक्का बोला – 'अखबार मैंने भी पढ़ा था – सोचा भी था कि विमला देवी झूठ क्यों बोल रही हैं मगर यह सोच कर चुप लगा गया – मैं पंगा क्यों लूं – होगा कोई चक्कर – मेरी करतूत को कोई किसी और के या अपने मत्थे मंढ रहा है, इसमें मुझे आपत्ति भी क्या हो सकती थी मगर अब . . . ज़ब सारी बात खुल गई है तो, सच्चाई ये है साब . . . पता नहीं विमला देवी क्यों झूठ बोल रही हैं – उसके यहां डकैती मैंने, इकबाल और करीम ने डाली थी।"

"ब - बकता है।" विमला ये जानते बूझते चीख पड़ी कि ये सच भी हो सकता हैं – "झूठ वो बोल रहा है।"

– "मुझे भी ऐसा लगा था।" होठों पर कुटिल मुस्कान

लिये यादव कहता चला गया – "सख्ती की, तो बोला – 'मैं साबित कर सकता हूं साब, वो काम हमीं तीनों का था' – मैंने पूछा – 'कैसे' – बोला – 'उस लूट में से मेरे हिस्से में अन्य जेवर के साथ एक नैकलेस भी आया था जो इतना सुन्दर था कि बेचने का मन नहीं हुआ, वो आज भी मेरी बीवी के गले में पड़ा है'– जाहिर था, सच्चाई जानने की गर्ज से उसे उसके घर ले गया – वहां से उसने ये नैकलेस बरामद कराया।"

छक्के छूट गये विमला के।

इस एहसास ने उसे हिला कर रख दिया कि –'असली मुजरिम पकड़े गये हैं।'

"नैकलेस की पुष्टि कराने आपके पास लाया – आपने देखते ही पहचान लिया।" यादव बोला – "जाहिर है, वह सच बोल रहा है।"

"झ - झूठ है।" विमला चिंघाड़ उठी – "वो झूठा है इन्स्पैक्टर, असल में हमारे यहां कभी डकैती पड़ी ही नहीं – पापा को लुटेरों ने नहीं, मेरी आंखों के सामने विनाश ने कत्ल किया था – मैंने फ़ोटो खीचे थे, फोटो कोर्ट में जमा हैं।"

"सवाल फिर वही उठता है, आपका नैकलेस उसकी बीवी के गले में कैसे पहुंच गया?"

"म – मुमकिन है!" विमला बुरी तरह हड़बड़ा उठी – "ये ठीक वैसा ही नजर आने वाला कोई दूसरा नैकलेस हो?"

"तो आपका नैकलेस आपके पास होगा?"

"म – मेरा नैकलेस?" विमला को दिन में तारे नजर आ गये।

"चोरी तो वह हुआ ही नहीं था – जो हुआ, आपकी और विनाश की मिलीभगत से हुआ।"

"स – सच यही है!"

"अपना नैकलेस दिखाने का कष्ट करेंगी?"

"न - नहीं है!"

"क्यों?" यादव की आंखें गोल हो गयीं।

"ब – बाद में आर्थिक तंगी के कारण मैंने बेच दिया था!"

"किसे?"

"एक सर्राफ को!"

यादव ने सख्त स्वर में कहा – "सर्राफ का नाम भी होगा कोई?"

विमला का दिमाग फिरकनी की तरह घूम रहा था – किसका नाम ले; बेचा होता ले भी – इन्स्पैक्टर तुरन्त उसके पास जाकर पूछताछ करेगा जिसका नाम लेगी – उसे लगा, वह बुरी तरह फंस गयी है।

यादव के लहजे में व्यंग आ घुसा – "सर्राफ का नाम याद करने में बड़ी देर लग रही है आपको?"

"म – मनोहर लाल को बेचा था।" एकाएक विमला को अखबार में छपा विजयनगर के प्रसिद्ध सर्राफ की मृत्यु का समाचार याद आ गया।

"खुद उन्हें?" यादव ने पूछा – "या उनकी दुकान पर बैठे किसी अन्य शख्स को – उनके किसी लड़के को या नौकर को?"

विमला ने कहा – "नैकलेस मैंने खुद उन्हें दिया था!"

"और वे इस बात की पुष्टि नहीं कर सकते कि आपने नैकलेस उन्हें बेचा या नहीं?"

"क - क्यों नहीं करेंगे, जाकर पूछ सकते हो?"

"जीते जी स्वर्ग या नर्क में जाना कम से कम मेरे बस का तो है नहीं?"

"म - मतलब?"

"मतलब ये विमला जी कि मनोहर लाल मर चुके हैं और उनकी मृत्यु की खबर आपको न होना कम आश्चर्य की बात नहीं है – उनकी गिनती विजय नगर के नहीं, देश के बड़े सर्राफों में होती थी – सभी पेपरों में खबर छपी थी – तेरहवीं की रस्म के बारे में तो कई दिन तक उनके बेटों द्वारा दिया गया विज्ञापन छपता रहा था, मैंने आगरा में पढ़ा।"

"मैंने नहीं पढ़ा।" धींगा-मुश्ती वाला जवाब देना विमला की मजबूरी थी।

कुछ देर यादव चुप रहा बल्कि यह लिखा जाये तो ज्यादा बेहतर होगा कि कड़ी नजरों से घूरता रहा विमला को, फिर एक लम्बी सांस लेने के बाद बोला – "खैर, अगर आपने नैकलेस

बेच दिया था तब तो ये वही भी हो सकता है!"

"ब - बिल्कुल हो सकता है, मुमकिन है उसने खरीद लिया हो?"

"नहीं, खरीदने की हैसियत तो खैर उसकी नहीं है – हां, ये सम्भव है कि जिसने मनोहर लाल से खरीदा हो – पठ्ठे ने उसी के यहां हाथ साफ कर दिया हो!"

"ऐसा ही हुआ लगता है!"

"तब सवाल ये उठता है, उसने आपका नाम क्यों लिया – उसका पता क्यों नहीं बताया जहां से वास्तव में उड़ाया है?"

विमला के पास कहने के लिये कुछ हो तो कहे!

"और . . . !" यादव ने एक-एक शब्द पर जोर दिया – "उसे कैसे मालूम कि मनोहर लाल को बेचे जाने से पहले यह आपका था?"

विमला झुंझला उठी – "आप भूल रहे हैं, ये वैसा ही दूसरा नैकलेस भी हो सकता है।"

"तब भी उसे कैसे पता लगा ऐसा नैकलेस आप पर भी था?"

"म - मुझे क्या पता?"

"आप पल्ला झाड़ सकती हैं, लेकिन मुझे पता लगाना पड़ेगा कि ऐसा हुआ तो हुआ कैसे?"

"अ – आखिर आप मुझ पर क्या शक कर रहे हैं?" विमला हावी होने की गर्ज से कहती चली गई – "क्या ये कि जो बयान मैंने किसी के दबाव में नहीं, अपनी अन्तरात्मा की आवाज पर पुलिस को दिया है – वह झूठा है – किसी का दिमाग खराब होगा कि वह बैठे-बिठाये झूठ-मूठ खुद को अपने पिता और पति का हत्यारा कहने लगे?"

"उलझन तो यही है विमला जी – तर्कों के आधार पर सोचता हूं तो आप भी झूठी नजर नहीं आतीं – बात सही है, बैठे बिठाये कोई क्यों खुद को दो-दो हत्याओं का जिम्मेदार बतायेगा लेकिन . . ."

"लेकिन?"

"रूक्का एक तरह से सिद्ध कर चुका है कि आपके यहां डकैती उसने और उसके साथियों ने डाली – जब ये हकीकत

नहीं है तो कैसे सिद्ध कर पा रहा है वह – आपका या आपसे मिलता जुलता ये नैकलेस उसकी बीवी के गले में क्यों कर था?"

एकाएक विमला ने कहा – "मैं उससे मिलना चाहती हूं!"

"अ - आप?" – यादव यह सोचकर चौंक पड़ा कि सचमुच वही हुआ था जो केकड़ा ने कहा था।

"क – क्यों, क्या मैं नहीं मिल सकती?"

"मिल क्यों नहीं सकतीं मगर, सवाल ये है . . . आप उनसे मिलना क्यों चाहती हैं?"

"देखूं तो सही, ये झूठ-मूठ के लुटेरे कहां से पैदा हो गये – क्यों खुद को पापा का कातिल बता रहे हैं – जिन सवालों ने आपके दिमाग को उलझन में डाला हुआ है – मुझे तो हिला कर ही रख दिया है उन्होंने – शायद उनसे बात करके कोई गुत्थी सुलझे?"

यादव ने कंधे उचका दिये।



"ये इकबाल है!" यादव ने रूल से इशारा किया – "और ये रूक्का!"

विमला ने दोनों को बड़ी गहरी नजर से देखा – शक्ल से ही छटे हुए लग रहे थे।

विमला ने सोचा – 'तो ये हैं असल में उसके पापा के हत्यारे?

जी चाहा, आगे बढ़ कर मुंह नोंच ले और चीख-चीख कर पूछे – 'क्या बिगाड़ा था मेरे पापा ने तुम्हारा?

मगर! . .

मुंह नोचना तो दूर, कुबूल तक नहीं कर सकती थी कि उसके यहां डकैती पड़ी थी – वैसे, इन दोनों में से वह कोई नहीं था जिसने उसे बांधा था – उसे अच्छी तरह पहचान सकती थी वह – फिर भी, उसने मन ही मन अविनाश की मदद से इन्हें पापा की हत्या का सबक सिखाने का फैसला किया।

यादव ने गुर्राहटदार स्वर में उनसे पूछा – "पहचानते हो इन्हें?"

"विमला है!" इकबाल ने कहा।

यादव ने विमला से पूछा – "क्या आप भी इन्हें पहचानती हैं?"

"हमें नहीं, करीम को पहचानेगी ये।" रूक्का ने कहा – "इसके कमरे में वही घुसा था, उसी ने बांधकर डाला – हम दोनों इसके बाप वाले कमरे में थे।"

"कहां है करीम?" यादव ने आंखें निकालीं।

"पता नहीं!" इकबाल ने कहा।

"ऐसे नहीं बताएगा हरामजादे!" कहने के साथ यादव ने मारने के लिये रूल हवा में उठाया ही था कि –

"स – सच इन्स्पैक्टर साहब!" इकबाल डरा हुआ नजर आया – "दो साल से वह हमारे साथ नहीं रहता!"

यादव दांत भीचकर गुर्राया – "मैं तेरी चमड़ी उधेड़ दूंगा!"

"जो सच्चाई थी, बता चुके हैं इन्स्पैक्टर साहब!" आतंक रूक्का के चेहरे पर भी नजर आ रहा था – "रात भर चमड़ी उधेड़ते रहे . . . और उधेड़ लीजिये लेकिन जो पता नहीं वो कैसे बता सकते हैं?"

"अच्छा ये बताओ!" इन्स्पैक्टर को दिखाने के लिये विमला को पूछना पड़ा – "झूठ क्यों बोल रहे हो तुम?"

"कौन सा झूठ?" इकबाल ने पूछा।

"कि तुमने हमारे यहां डकैती डाली, मेरे पापा का मर्डर किया?"

"झूठ तुम बोल रही हो!" रूक्का बफर पड़ा – "इन्स्पैक्टर साहब भी यही कह रहे थे – मैंने नैकलेस बरामद कर दिया, क्या वो तुम्हारा नहीं है?"

"मेरे दिमाग में क्या फोड़ा निकला है जो बेवजह खुद को अपने पापा का हत्यारा कहूंगी?"

"हमारे ही दिमाग में क्या फोड़ा निकला है जो किसी और के जुर्म को कुबूल करें?"

"क्या फर्क पड़ता है – इतनी डकैतियां डाली हैं, इतने

कत्ल किये हैं — एक झूठी डकैती और कत्ल भी कुबूल कर लोगे तो तुम्हें मिलने वाली सजा में लम्बा-चौड़ा हेर-फेर नहीं हो जायेगा!"

"फिर भी, जो हमने नहीं किया उसे क्यों कुबूल करेंगे?"

"पुलिस की मार के आगे तुम जैसे गुण्डे अक्सर वह कुबूल कर लेते हैं जो नहीं किया होता!"

"इस बात पर मुझे एतराज है विमला जी।" यादव ने कहा — "नैकलेस की बरामदगी सुबूत है इस बात का कि ये वारदात इन्होंने पुलिस के डंडे से डर कर कुबूल नहीं की!"

"कई बार कह चुका हूं इन्स्पैक्टर साहब . . . और फिर कहता हूं!" रूक्का बोला — "इस औरत के झूठ के पीछे कोई गहरा राज है — कोई यूं ही झूठा इल्जाम अपने सिर नहीं लेता — हमें मालूम है इसके बाप को हमने मारा था, अगर फिर भी ये . .

"खामोश!" यादव रूल हवा में उठा कर इतनी जोर से दहाड़ा कि वे दोनों ही नहीं, विमला भी सहम गई।

यादव गुर्रा रहा था — "फालतू बोलने की इजाजत किसने दी तुम्हें?"

दोनों ने डर कर चेहरे झुका लिये।

"अगर तूने सचमुच सेठ को मारा था तो बता।" गर्जने के साथ यादव ने बांये हाथ से रूक्का के बाल पकड़ लिये — क्यों मारा था?"

"वो साला तिजोरी की चाबी नहीं बता रहा था!"

"तो उसे मारता पीटता, जान से मारने की क्या जरूरत थी?"

"व - वो बात ये थी इन्स्पैक्टर . . .

"हां — हां . . . बोल!" यादव ने उसके बालों को झटका दिया।

वह दर्द से बिलबिलाया लेकिन बोला नहीं . . . और जवाब न देना मानो अक्षम्य अपराध था।

यादव ने रूक्का पर इस तरह रूल बरसाने शुरू कर दिये जैसे इंसान के नहीं, जानवर के जिस्म पर बरसा रहा हो बल्कि जानवर के जिस्म पर डंडे बरसाते वक्त भी इंसान थोड़ा रहम खा सकता है — यादव का हाल ऐसा था जैसे रूई धुन रहा हो।

हवालात में रूक्का की चीखें गूंजने लगीं।

इस तरह डकरा रहा था वह जैसे हलाल होता बकरा।

शुरू में यह सोचकर विमला को सुकून मिला कि उसके पापा के हत्यारे जितने पिटें ठीक है मगर शीघ्र ही खुद भी कांपने लगी — रूक्का को पीटता यादव इंसान नहीं, दरिंदा नजर आने लगा था।

वह हस्तक्षेप करने वाली थी कि —

इकबाल चीख पड़ा —"ब— बताता हूं . . . मैं सच्चाई बताता हूं इन्स्पैक्टर साहब, रूक्का को मत मारो !"

"तू बता ।" यादव ने रूक्का को छोड़ कर उसके बाल जकड़ लिये —"क्यों मारा था सेठ को ?"

"एक आदमी ने हमें इस काम के एक लाख रूपये दिये थे!"

उछल पड़ी विमला, मुंह से बरबस निकल पड़ा —"किसने?"

इकबाल चुप रहा!

"जवाब दे !" यादव उसे झंझोड़ता हुआ दहाड़ा।

"हमने उसकी शक्ल नहीं देखी!"

"फिर झूठ ?" चिघांड़ने के साथ यादव ने रूल उठाया।

चीखते कराहते रूक्का ने कहा —"ये झूठ नहीं है इन्स्पैक्टर साहब, चेहरे पर नकाब डाले वह खुद एक रात हमारे ठिकाने पर आया था — लक्ष्मी नारायण के कत्ल हेतु एक लाख में सौदा किया — पचास काम से पहले दिये, पचास बाद में — साथ ही ये भी कहा घटना डकैती नजर आनी चाहिये — जो मिले, वो तुम्हारा!"

"इसका जिक्र भी किया था उसने!" इकबाल ने विमला की तरफ इशारा किया —"कहा था —'सेठ की एक लौंडिया है — उसे नहीं मारना, कोई बदतमीजी मत करना उसके साथ — बस बांध कर डाल देना'— हमने ऐसा ही किया !"

कनखियों से विमला की तरफ देखते यादव ने पूछा —"ये सब क्यों कहा उसने ?"

"न पूछने की जरूरत थी, न पूछा !"

उनका बयान सुनकर विमला के रोंगटे खड़े हो गये थे।

यादव ने अगला सवाल किया –"वारदात के बाद भी मिला वह ?"

"बाकी के पचास हजार देने आया था!"

"तब भी शक्ल नहीं देखी ?"

"पहले की तरह नकाब पहने हुए था!"

"नकाब से केवल चेहरा छुपाया जा सकता है, कद काठी नहीं!"

"वह लम्बा था!" रूक्का ने बताया –"करीब साढ़े छः फुटा, हष्ट-पुष्ट लगता था!"

"इतने लम्बे आदमी आमतौर पर कम होते हैं!" यादव गुर्राया –"ठीक से बताओ, इतना ही लम्बा था वह ?"

"रूक्का का अन्दाजा शायद कुछ कम का है!" इकबाल ने कहा –"मेरे ख्याल से पौने सात फुट का होगा।"

विमला के जहन में अविनाश चकरा रहा था!

साढ़े छः फुटा तो वह भी है।

उस वक्त यादव विमला को कनखियों से देख रहा था जब रूक्का ने कहा –"उसकी बांई कलाई पर, रिस्टवॉच बंधी थी एक काला मस्सा था!"

धड़ाम . . . . . धड़ाम !

धुम्म . . . . . . धुम्म !!

ये विस्फोट विमला के जहन में हुए।

हवालात भंवर की मानिन्द तेजी से घूमती प्रतीत हुई उसे।

"कोई और पहचान ?" यादव की आवाज विमला को कहीं दूर से आती महसूस हुई। रूक्का ने कहा –"पैरों में चमकदार जूते पहने हुए था, जिस्म पर काला लिबास।"

"आवाज सुनी थी उसकी ?"

"सुनी थी!"

"फिर सुनो तो पहचान लोगे ?"

"श – शायद !" इकबाल बोला –"गारंटी से नहीं कह सकते!"

"जानने की कोशिश नहीं की ?" यादव ने पुनः पूछा –"सेठ का कत्ल कराने में उसका क्या इन्टरेस्ट था ?"

"क्या करना था जानकर, हमें एक लाख से मतलब था।"

जाने कितने सवाल पूछे यादव ने, वे जवाब देते रहे, लेकिन उन सवाल जवाबों से विमला को जैसे कोई मतलब न था। उसके दिमाग में केवल दो बातें चकरा रही थीं – साढ़े छः फुट लम्बा कद और बांई कलाई पर मस्सा!

क्या वह अविनाश था ?

क्या पागलपन की बात सोच रही है वह ?

अविनाश ऐसा नहीं कर सकता – ऐसा नहीं है उसका अविनाश!

और फिर . . . क्यों करेगा ?

उसे क्या फायदा था ?

विमला भयंकर विचारों के मकड़जाल में फंस गयी।

चौंकी तब, जब यादव ने झंझोड़ा।

"क्या बात है, क्या सोचने लगीं आप ?"

"ऐं . . . ह . . . हां . . . कुछ नहीं !" विमला मुश्किल से खुद को अर्धनियंत्रित कर पाई।

यादव ने पूछा –"चलें ?"

"एक मिनट।" कहने के बाद वह इकबाल से मुखातिब हुई –"क्या कहा था तुमने, उसकी आवाज पहचान लोगे ?"

"गारंटी से नहीं कहा था!"इकबाल बोला –"शायद पहचान लूं!"

"मैं तुम्हें एक आवाज सुनवाती हूं –पहचानने की कोशिश करना!"

इकबाल ही नहीं सब चुप रहे।

विमला ने यादव से पूछा –"यहां मौजूद फोन का एक्सटेंशन है ?"

"एक इंस्टूमेन्ट मेरे आफिस में लगा है – दूसरा हैड मुहर्रिर के पास।"

"मैं फोन मिलाती हूं, दूसरे इन्स्टूमेन्ट पर इकबाल को भेजो – ये दूसरी तरफ से बोलने वाले की आवाज पहचानने की कोशिश करेगा!"

यादव की आंखें टेढ़ी हो गयीं, पूछा –"क्या आपको

किसी पर शक है ?"

"मेरे साथ आओ!" कहने के साथ विमला हवालात से बाहर निकल गयी, उसके आफिस में कदम रखती बोली —"शक तो किसी पर तब होता जब वो वारदात सच होती जो ये बक रहे हैं!"

"तो किसकी आवाज, क्यों सुनायेंगी उसे ?"

"ऐसे ही, जहां मूड होगा मिला दूंगी — देखें आवाज को सुनकर क्या कहता है ?"

"ओह!"

उसके बाद . . . तैयारी हो गयी।

अविनाश का नम्बर इस तरह मिलाया उसने कि यादव न देख सके।

केवल एक रिंग के बाद दूसरी तरफ से रिसीवर उठा लिया गया, अविनाश की आवाज उभरी —"हैलो!"

"मैं बोल रही हूं!" विमला ने कहा।

"ओह, बोलो डार्लिंग !" अविनाश ने उसकी आवाज पहचान ली —"कहां से बोल रही हो ?"

"घर के अलावा कहां से बोलूंगी ?"

"हां, सो तो है!"

कुछ देर विमला ने उसे उलझाये रखा। उद्देश्य दूसरे इन्स्टूमेन्ट पर मौजूद इकबाल को उसकी आवाज अच्छी तरह सुनाना था — उसने पूरी सावधानी बरती थी कि यादव या इकबाल को भनक न लगे वह कहां, किससे बात कर रही है!

निरर्थक बातें करके फोन रख दिया।

इकबाल को यादव के आफिस में बुलाया गया, उसने आते ही कहा —"य — यही . . . . ठीक यही आवाज थी इन्स्पेक्टर साहब !"

"ये आदमी महाझूठा है इन्स्पैक्टर।"विमला दहाड़ उठी।

"क — क्या मतलब, आप ये बात कैसे कह सकती हैं ?"

"जिसे मैंने फोन मिलाया, वह पांच फुट से एक इंच लम्बा नहीं है!" कहने के बाद तमतमाई हुई अवस्था में विमला उठी और एक पल भी ठहरे बगैर बाहर निकल गई।

"पड़ गया उस्ताद, उसके दिमाग में वो बीज पड़ गया जो मैं डालना चाहता था।" विमला के जाते ही भीतरी कमरे से यादव के आफिस में कदम रखते केकड़ा ने कहा —"अब वो फसल फूटेगी जो किसी के लम्बे चौड़े प्लान की धज्जियां उड़ा देगी!"

"मेरी समझ में नहीं आ रहा तू क्या कर रहा है — बस तेरा कहा किये जा रहा हूं"

"तू यहां क्या कर रहा है बे ?" केकड़ा ने इकबाल को डांटा —"हवालात में जाकर लेट मार!"

इकबाल इस तरह गायब हो गया जैसे वहां कभी था ही नहीं।

यादव ने कहा — "जो कुछ मैंने देखा उससे यह बात तय है कि विमला का पुलिस को दिया गया बयान झूठा है मगर कोई शख्स खुद पुलिस के पास जाकर अपने मत्थे दो दो हत्याओं का झूठा इल्जाम क्यों मढ़ेगा, ये बात समझ में नहीं आ रही!"

"फिर कहता हूं यादव, बेकार माथा पच्ची करके अपने दिमाग की नसों को कष्ट मत पहुंचा — केवल नावे पर ध्यान दे, वो सूटकेस आखरी नहीं था जो तेरा हो चुका है — ऐसे ऐसे कई सूटकेस उतार दूंगा तेरे हलक में — उस घड़ी को दुआएं देगा तू जिस घड़ी इस थाने पर भेजा गया!"

"आगे क्या करना है ?"

"आज रात ये दोनों हरामी के पिल्ले हवालात से फरार हो जायेंगे।"

"फिर ?"

"जरूरत पड़ी तो फिर गिरफ्तार दिखा दिये जायेंगे!"

"अगर तेरा मकसद कोर्ट में विमला के बयान को झूठा सिद्ध करना है तो ज्यादा उखाड़ — पछाड़ की जरूरत नहीं रही!" यादव कहता चला गया —"इस केस को ज्यों का त्यों कोर्ट में ले जा — मेरा दावा है, वह झूठी सिद्ध हो जायेगी — जब मेरे ही सामने न टिक सकी, मेरे ही सवालों का सही जवाब न दे सकी

तो धुरंधर वकीलों के सामने क्या टिकेगी ?"

"उसके सलाहकार में तेरे से कई गुना ज्यादा भेजा है!"

"मतलब ?"

"वो इससे आधे समय में वैसा ही तीसरा नैकलेस तैयार करा लेगा जितने समय में मैंने दूसरा कराया है – विमला उसे लेकर कोर्ट में खड़ी हो जायेगी, कहेगी हमारा नैकलेस मेरे पास है – कभी चोरी नहीं हुआ – मामला टांय-टांय फिस – झूठी वो नहीं, तेरे ये जमूरे सिद्ध हो जायेंगे!" केकड़ा कहता चला गया –"तब उनका वकील जमूरों से पूछेगा –"अब बताओ, वास्तव में यह नैकलेस तुम्हारे हाथ कहां से लगा – जमूरे आंय –बांय–शांय गायेंगे – छींटे तुझ तक . . . बल्कि मुझ तक पड़ सकते हैं!"

यादव का चेहरा बुझ गया।

"कच्चे मामले कोर्ट में नहीं ले जाने चाहियें मित्र – उल्टी धज्जियां उड़ जाती हैं इसलिये आज रात इन्हें फरार कर दे!"

"तो फिर इस सबके पीछे तेरा मकसद क्या था ?"

"मकसद था नहीं प्यारे, बल्कि है –मकसद ये है कि विमला कोर्ट में जाकर खुद पुलिस को दिये अपने बयान को झूठा कहे!"

"ऐसा कैसे हो सकता है ?"

"होगा।" केकड़ा ने दृढ़ता पूर्वक कहा –"दिमाग के एक जादूगर को यही चमत्कार करके दिखाऊंगा मैं।"

●

"गोवर्धन . . . गोवर्धन . . . अरे ओ गोवर्धन!" पागलों की तरह चीखता एक देहाती सारे मेले में दौड़ा-दौड़ा फिर रहा था। लोगों को धक्के देता, भीड़ को चीरता वह जिधर से निकल जाता खलबली मच जाती।

एकाध ने रोक कर पूछा भी –"क्या हुआ भैया ?"

"मुझे गोवर्धन से मिलना है . . . छोड़!" वह जबरदस्ती

खुद को छुड़ा कर पुनः दौड़ने लगता।

शीघ्र ही वहां पहुंच गया जहां दर्शकों की भीड़ का एक वृत्त सा बना हुआ था।

वृत के बीच में रेत का एक टीला था।

टीले पर फूल और पैसे बिखरे पड़े थे। ये फूल और पैसे दर्शकों की तरफ से फैंके जा रहे थे।

देहाती उसी पागलों वाले अंदाज में "गोवर्धन . . . गोवर्धन" चीखता भीड़ को चीर कर रेत के टीले पर लपका और हाथों से टीले को मटियामेट करता चीखा —"निकालो . . . गोवर्धन को बाहर निकालो।"

"अरे!" वृत्त के बीच खड़ी एक अधेड़ औरत उसकी तरफ लपकती चिल्लाई —"क्या करता है हरिया . . . सारा खेल बिगाड़ेगा क्या ?"

"तुझे खेल की पड़ी है भौजाई, वहां विनाश मिल गया!"

"व — विनाश ?" अधेड़ महिला ज्यों की त्यों खड़ी रह गयी।

"अरे देख क्या रहे हो ?" हरिया ने फावड़े हाथों में लिये खड़े दो देहाती नौजवानों से कहा —" जल्दी से गड्डा खोदो, गोवर्धन को बाहर निकालो — इसका बेटा मिल गया, वो गंगा में डूब कर नहीं मरा था . . . विनाश जिन्दा है!"

"ये तू क्या कह रहा है हरिया . . . क्या कह रहा है तू?" अधेड़ औरत ने तंद्रा टूटते ही उसे झंझोड़ डाला।

हरिया ने कहा —"तू बड़ी भागवान है भौजाई, आज बीस साल बाद तेरा बेटा मिल गया।"

"क —कहां है . . कहां है मेरा बेटा ?" अधेड़ औरत खुशी से मानो पागल हो गयी।

"घाट पर !"

औरत घाट की तरफ दौड़ने के लिये पलट पड़ी!

हरिया ने लपक कर पकड़ा उसे —"कहां जाती है ?"

"घाट पर !" उसने तेज झटका दिया — "छोड़ मुझे।"

"अरी मगर इतने बड़े घाट पर कहां ढूंढेगी उसे ?"

"तो तू साथ चल !"

"गोवर्धन को तो ले ले !"

पगलाई अधेड़ औरत ने फावड़े वालों से कहा —"अरे देखते क्या हो, उन्हें बाहर निकालो!"

और फिर . . . युद्ध स्तर पर गड्ढा खोदने का काम शुरू हो गया।

फावड़े वाले ही नहीं हरिया और अधेड़ औरत तक हाथों से ही रेत हटाने में जुट गये।

पांच फुट गहरा गड्डा खोद कर जब हरिया ने गोवर्धन को खुशखबरी सुनाई तो वह भी पागल हो उठा, दोनों हाथों से हरिया का गिरेबान पकड़कर झंझोड़ता चीखा —"पर तू उसे वहां छोड़ क्यों आया, साथ ले के आता!"

"वहां बवाल हो गया था, पुलिस आ गयी थी!"

"पुलिस ?"

"हां, मैंने विनाश को देखते ही पहचान लिया था। उसके साथ एक और आदमी था जिसे वो बापू कह रहा था। खुशी से पागल होकर मैंने विनाश को पकड़ लिया — उसे खींचने लगा — साथ का आदमी उसे अपनी तरफ खींच रहा था — भीड़ इकट्ठी हो गयी — पुलिस आ गयी — मैंने बताया — 'ये गोवर्धन का बेटा है' — पुलिस ने पूछा — 'कौन गोवर्धन' —मैंने बता दिया, उसने कहा —"मैं इन्हें यहां लिये बैठा हूं , तू गोवर्धन को ला'— मैं उसे बता कर आया हूं, तेरा दूसरा बेटा भी पुलिस का अफसर है, अगर उसने उन्हें जाने दिया तो सजा करवा देगा — बस, भागा तेरे पास आया हूं, जल्दी से चल !"

"पर तूने विनाश को पहचाना कैसे ?"

"हद करता है, अपने अविनाश से शक्ल मिलती है। बिल्कुल दूसरा अविनाश . . . "

और फिर जो वे हरिया के साथ भागे हैं तो तन मन की सुध न रही।

जिधर से निकल गये खलबली मच गयी।

●

कद-काठी और शक्ल सूरत से हूबहू अविनाश अंगूठा पी

रहा था।

चेहरे पर मासूमियत भरी मूर्खता के भाव!

तन पर खद्दर का कुर्ता, धोती और जूतियां!

सिर पर छोटे छोटे बाल लेकिन लम्बी चोटी। चोटी में गांठ लगी थी।

बालों में सरसों का इतना तेल कि बहता हुआ कनपटी तक आ रहा था।

गंगा किनारे पड़े एक तख्त पर बैठा था वह । साथ में उसी जैसे कपड़े पहने एक अधेड़ भी था। बगल में एक पुलिस-मैन लम्बी लाठी का एक सिरा रेत में धंसाये दूसरे सिरे पर ठोड़ी रखे खड़ा था।

"हम यां क्यू बैठे हैं बापू ?" उसने मुंह से अंगूठा निकाल कर पूछा, पूछते ही अंगूठा फिर मुंह में।

अधेड़ ने कहा –"लगत है बिटवा, तेरे मां-बाप मिल गये।"

"झूठ बोलत है बापू!" उसने पुनः अंगूठा मुंह से निकाला –"तू खोया ही कां था और मां गांव में है!"

"छोड़, तेरी समझ में कुछ न आवत!" अधेड़ ने कहा!

वह फिर अंगूठा चुसकने लगा।

सिपाही ने अधेड़ से पूछा –"क्या ये सचमुच तेरा बेटा नहीं है ?"

"ना भैया . . . . ."

"का कहत है बापू ?" कहने के साथ विनाश ने उसे धक्का दिया।

असावधान बैठा अधेड़ तख्त से लुढ़क कर रेत में जा गिरा!

"अरे . . . अरे . . . क्या करता है ?" सिपाही लपका।

"तू हट!" अधेड़ को सम्भालते विनाश ने कहा –"मेरा बापू . . . मैं मारूं या कुटूं!"

यही क्षण था जब गोवर्धन, हरिया और अधेड़ औरत आंधी तूफान की तरह भागते वहां पहुंचे।

"अरी रुकमणी!" विनाश को देखते ही उसकी तरफ लपकता गोवर्धन चिल्ला उठा –"ये तो सचमुच अपना विनाश

है।"

रूक्मणी दौड़कर विनाश से जा लिपटी —"मेरा बेटा . . . मेरा विनाश!"

विनाश ने मुंह से अंगूठा निकालकर उसे जोर से धक्का दिया।

मुंह से चीख निकालती रूक्मणी रेत में जा गिरी।

गोवर्धन लिपटा तो उसका भी यही हाल किया, साथ ही मूर्खों की तरह दहाड़ा —"ई क्यूं लिपटत हैं हमसू ?"



"बात क्या है विमला !" पैसेन्जर सीट पर बैठे अविनाश ने पूछा —"इतने गुस्से में क्यों हो तुम ?"

विमला ने जवाब नहीं दिया।

मारूति ड्राइव करती उसकी आंखें सड़क पर जमी थीं।

चेहरा तमतमाया हुआ था। दांत ही नहीं, होंठ तक सख्ती के साथ भींच रखे थे उसने। अविनाश को उसके जबड़ों के मसल्स बार बार फूलते पिचकते साफ नजर आ रहे थे।

"कल जब तुमने मुझे फोन किया, निरर्थक बातें करके काट दिया तो मैं चक्कर में पड़ गया — काफी देर तक सोचता रहा ये फोन आखिर तुमने किया क्यों था — समझ न सका तो वापस रिंग किया — बंसी ने उठाया — काफी देर पहले किसी पुलिस वाले के साथ गई हो जबकि फोन पर तुमने कहा था, घर से बोल रही हो — झूठ क्यों बोला तुमने, कहां से और क्यों फोन किया था, किस पुलिस वाले के साथ कहां गई थीं?"

विमला ने दांत भींचे रखकर कहा —"जितने सवाल तुम्हारे दिमाग में हैं — कल से मेरे जहन में उससे कई गुना ज्यादा सवाल चकरा रहे हैं और उन सबके जवाब तुम्हें देने हैं अविनाश . . . तुम्हें!"

"आखिर हुआ क्या है ?" अविनाश झुंझला उठा।

विमला ने पुनः जबड़े भींच लिये।

"लगता है पागल कर दोगी — थाने में इस तरह घुसीं जैसे सुलगता तीर घुसा चला आ रहा हो — पूरे अधिकार के साथ

मुझे अपने साथ चलने के लिये कहा — वहां और पुलिस वाले भी थे — मैंने धीमी आवाज में समझाना चाहा, वहां तुम्हें पत्नी की तरह पेश नहीं आना चाहिये था — समझने की जगह चीखने चिल्लाने लगीं, मजबूरी में तुम्हारे साथ आना . . . . . . "

"शुक्र मनाओ, सबके सामने पोल नहीं खोली तुम्हारी!"

"प — पोल ?" अविनाश उछल पड़ा — "कौन सी पोल?"

विमला ने उसे घूरा, भाव ऐसे थे जैसे कच्चा चबा जाना चाहती हो। बगैर कुछ कहे नजरें पुनः सड़क पर गड़ा दीं।

सस्पैंस की ज्यादती के कारण अविनाश चीख पड़ा —"बोलती क्यों नहीं ?"

"चुप रहो!" विमला के इस लहजे में कोड़े जैसी फटकार थी।

सकपका गया अविनाश।

विमला से ऐसे व्यवहार की वह कल्पना तक नहीं कर सकता था।

हैरान था वह। बहुत दिमाग घुमाने के बावजूद समझ नहीं पाया कि हो क्या सकता है ?

विमला ने गाड़ी एक पार्क में रोकी।

दोपहर का समय होने के कारण पार्क वीरान पड़ा था।

गाड़ी लॉक करने तक का होश नहीं था विमला को। इग्नीशियन से चाबी खींची और तेज कदमों के साथ एक तरफ को बढ़ गई — गाड़ी जल्दी-जल्दी लाक करके अविनाश विमला के पीछे लपका।

ऊंचे-ऊंचे पेड़ों के बीच घने झुरमुट में रुकी।

पीछे से अविनाश ने पहुंच कर उसके दोनों कंधों पर हाथ रखने के साथ प्यार से पूछा —"हुआ क्या विमला ?"

"छुओ मत !" गुर्राने के साथ उसने न केवल कंधे झटके बल्कि दो कदम आगे भी बढ़ गई।

धैर्य के मानों सभी बांध टूट गये, खुद को अपमानित महसूस करके अविनाश चीख पड़ा —"होश में तो हो ?"

"बेहोश थी!" विमला पलटी —"होश तो कल आया है!"

"भगवान के लिये बताओ आखिर बात क्या है, वरना . .

. वरना पागल हो जाऊंगा मैं!"

"तुम बहुत दिमाग वाले हो न ?" विमला ने हर लफ्ज चबाया –"बहुत चालाक ?"

"तुमसे क्या चालाकी दिखाई मैंने ?"

"मैंने फोन किया, इधर उधर की बातें करके काट दिया – इतनी सी बात को कैच कर जाते हो तुम और इन्क्वायरी पर आमादा हो जाते हो कि फोन क्यों किया गया था – मानना पड़ेगा, दिमाग तो वाकई तेज है तुम्हारा!"

"कहना क्या चाहती हो ?"

"रूक्का, इकबाल और करीम को जानते हो ?"

"ये कौन हुए ?" अविनाश के मस्तक पर बल पड़ गये।

"बात पांच साल पुरानी हो गयी।" विमला के दांत भिंचे हुए थे –"भूल गये होगे,वैसे भी . . . एक छोटा सा काम ही तो लिया था तुमने उनसे!"

चकरा गया अविनाश –"म - मैंने किससे क्या काम लिया था ?"

"एक मर्डर कराया था केवल!"

"म . . . मर्डर ?" अविनाश उछल पड़ा –"म – मैंने . . . मैंने मर्डर कराया था, किसका ?"

"मेरे पापा का ।"

अवाक् रह गया अविनाश।

जैसे सिर पर बम फटा हो, जिस्म पर बिजली गिरी हो!

आश्चर्य की पराकाष्ठा के कारण . . . मुंह खुला रह गया!

हलक से आवाज न फूट सकी।

"आ गया न गश ?" विमला का लहजा जहर बुझा था –"आना ही था . . . ये सोचकर गश आना ही था कि आखिर मैं ये कैसे जान गई ?"

"त – तुम . . . तुम पागल हो गई क्या ?" अविनाश के हलक से अविश्वसनीय लहजा निकला।

"पागल तो अब तू होगा कमीने, बाल तो अब तू नोंचेगा अपने!" विमला गुर्राती चली गई –"क्योंकि मुझे इतना तक मालूम हो चुका है – ये सौदा तूने एक लाख में किया था –

पचास हजार मर्डर से पहले, पचास मर्डर के बाद!"

अविनाश हलक फाड़ कर दहाड़ा —"ये जहर तुम्हारे जहन में भरा किसने ?"

"तेरे दुर्भाग्य ने!"

"म - मतलब ?"

"रूक्का और इकबाल पकड़े जा चुके हैं!"

"उफ्फ . . . कौन रूक्का और इकबाल ?"

"वे . . . जिन्हें तूने एक लाख रूपये देकर पापा का . ."

"बार-बार ये घिनौनी बात कहने से पहले सोचो तो सही विमला, मुझे पापा का कत्ल कराने की क्या जरूरत थी — वे तो खुद पसंद करते थे मुझे, चाहते थे कि हम दोनों की शादी हो जाये!"

"लेकिन तेरे दिमाग पर भाई की हत्या का बदला लेने का भूत सवार था!"

"त —तो ?"

"अपनी योजना के लिये 'बेस' की जरूरत थी तुझे!"

"बेस ?"

"और तुझे बेस नजर आया हमारे यहां डकैती डलवाने में, पापा का मर्डर कराने में!"

हैरत की ज्यादती के कारण अविनाश की आंखें ही नहीं, मुंह भी फटा का फटा रह गया।

"पापा के कत्ल की जरूरत पूछी थी न मुझसे ?" विमला फुंफकारती चली गई —"उम्मीद है समझ गया होगा — अब और कुछ पूछ, आज मेरे पास तेरे हर सवाल का जवाब है।"

"ये झूठ है विमला, मैंने कोई बेस तैयार नहीं किया —वो तो . . . वो तो जब वारदात हो गयी, तब मेरे दिमाग में उसे बेस बनाकर बदला लेने की योजना बनी।"

"वो तेरे प्यार में अंधी हुई विमला थी अविनाश जिसने इस बकवास पर विश्वास कर लिया और एक ऐसी योजना पर तेरा साथ देना कुबूल किया जिसमें आगे चल कर मैं सारे समाज की नजरों में कलंकनी बन जाने वाली थी — आज . . . जबकि आंखें खुलीं', अंधापन दूर हुआ तो खुद पर ग्लानि हो रही है — उफ्फ — सारा षडयंत्र उसी समय मेरी समझ में क्यों नहीं आ

गया – ये बात दिमाग में क्यों नहीं आयी कि ब्रेन मास्टर इस तरह अचानक किसी घटना को बेस बनाकर योजनाएं नहीं बनाया करते बल्कि अपने फेवर में हालात क्रियेट करते हैं – पापा का कत्ल ठीक उन दिनों हो गया जिन दिनों तू विनाश की हत्या का बदला लेने के लिये मरा जा रहा था – ये बात मेरी समझ में आज आ रही है कि ऐसा संयोग नहीं हुआ करता – उस वक्त तब भी नहीं आई तब तूने एक कलाकार को पापा के कपड़े पहनाये, खुद चाकू सम्भाला और मुझसे फोटो खींचने के लिये कहा –वाह, क्या चाल थी – पहले खुद जिसका कत्ल कराया, बाद में उसी को कत्ल करते फोटो भी खिंचवा लिये-बेटी फोटो खींचती रही मगर समझ न सकी कि नकली और असली मंजर में ज्याद फर्क नहीं है – ठीक भी है, वक्त रहते अगर कोई षडयंत्र को समझ जाये तो 'ब्रेन मास्टर' ही कौन कहे तुझे ?"

"व –विमला!" अविनाश ने झपट कर उसके दोनों कंधे पकड़े –"तुम किसी बहुत बड़ी गलतफहमी का शिकार हो गयी लगती हो – बताओ वो पुलिस वाला कौन था – कहां गयी थीं उसके साथ – क्या कहा उसने, फोन कहां से और क्यों किया था ?"

"तेरी आवाज सुनाई थी इकबाल को ?"

"क्यों ?"

"क्योंकि तू उनसे चेहरे पर नकाब डालकर मिला था फिर भी, अपनी लम्बाई को कैसे छुपाता – कलाई पर मौजूद इस मस्से का क्या करता और . . . ये तो तूने सोचा भी न होगा कि आवाज के जरिये पकड़ा जायेगा!"

"मेरी समझ में नहीं आ रहा तुम क्या कह रही हो –प्लीज सारा किस्सा बताओ!"

गुर्राती हुई विमला ने यादव के आने से लेकर इकबाल को उसकी आवाज सुनाने तक का वृतांत सुना दिया। अविनाश की आंखें फैलती चली गयीं। विमला के चुप होते ही वह चीख पड़ा –"ये किसी की साजिश है विमला, तुम्हें मेरे खिलाफ भड़काने के लिये किसी ने षडयंत्र रचा है!"

"नहीं !" उसने जहरीले स्वर में कहा –"मैं नहीं मान सकती दुनिया में कोई तुझसे बड़ा षडयंत्रकारी हो सकता है!"

"समझने की कोशिश करो '— ये अमर सिंह, केकड़ा, अमित और सुनीता का कोई जाल है!" अविनाश कहता चला गया — "जरा सोचो, जिस वारदात के मुल्जिम पांच साल में पता न लग सके वे अचानक यादव के हाथ कहां से लग गये ?"

"इसमें सोचने वाली क्या बात है, मुल्जिम दस साल बाद भी पकड़े जा सकते हैं!"

"सामान्य अवस्था में बात ठीक है लेकिन सोचने वाली बात ये है विमला, वे मुल्जिम तभी क्यों पकड़े गये जब वे लोग हमारे जाल से निकलने के लिये छटपटा रहे हैं ?"

"जैसे मेरे पापा का कत्ल ठीक तभी क्यों हुआ जब तुझे योजना के लिये बेस की तलाश थी ?"

"उफ्फ !" अविनाश की इच्छा अपने बाल नोंच डालने की हुई —" तुम समझ क्यों नहीं रहीं ?"

"यकीन कर . . . यकीन कर जलील आदमी, कम से कम मैं अब तेरी बातों के किसी चक्रव्यूह में नहीं फंसने वाली!" विमला सर्पणी की तरह फुंफकारती चली गई —"अमर सिंह, केकड़ा, अमित और सुनीता के नामों का फायदा उठाकर जो एक बार फिर तू मुझे लपेटे में लेने की कोशिश कर रहा है उसमें कामयाब नहीं हो सकता — वे बेचारे क्या षडयंत्र रचेंगे — वे तो खुद तेरे उस जाल में फंसे फड़फड़ा रहे हैं जिसे अमर सिंह द्वारा साफ-साफ बताये जाने के बावजूद पुलिस कमिश्नर तक न समझ सका — जी चाहता है, इसी वक्त जाकर कमिश्नर को हकीकत बता दूं मगर नहीं . . . तेरी सजा केवल एक आदमी के सामने तेरे चेहरे से नकाब नोंच डालना नहीं है — ये काम भरी अदालत में करूंगी मैं — जरा सोच, कैसी विडम्बना है — मैंने सुनीता और अमित से कहा था कि विनाश से अपने पापा की मौत का बदला लेना चाहती हूं — तेरे जाल में उलझी उस वक्त मैंने ये बात यह सोच कर कही थी कि झूठ बोल रही हूं — सोच तक नहीं सकती थी कि सच भी वही है — तू सचमुच मेरे पापा का हत्यारा है और मैं तुझे छोडूंगी नहीं अविनाश . . . भरी अदालत में तेरे घिनौने षडयंत्र की धज्जियां उड़ा दूंगी मैं और तू कुछ नहीं कर सकेगा।" कहने के बाद विमला तेज कदमों के साथ गाड़ी की तरफ बढ़ी। अविनाश ने उसे रोकना चाहा मगर

कामयाब न हो सका।

●

पुलिस जीप टायरों की भयंकर चरमराहट के साथ थाने के प्रांगण में रुकी।

ड्राइविंग सीट से अविनाश कूदा – चेहरे पर जलजले के से भाव लिये लम्बे-लम्बे कदमों के साथ इन्स्पैक्टर के ऑफिस की तरफ बढ़ा और दरवाजे पर पहुंचते ही ठिठक गया, बल्कि चौंक पड़ा।

इन्स्पैक्टर यादव के साथ वहां केकड़ा भी मौजूद था।

यादव मेज के पीछे अपनी कुर्सी पर था, केकड़ा उसके दाईं तरफ एक अन्य कुर्सी पर।

"आओ मित्र . . . . आओ।" केकड़ा ने कहा –"यहां बैठा तुम्हारा ही इन्तजार कर रहा था मैं ।"

अविनाश ने खुद को नियंत्रित किया, ऑफिस में दाखिल होता बोला –"मैं समझ गया था ये सारा गेम तुमने खेला है!"

"यहां कदम रखने से पहले केवल शक होगा, उसे विश्वास में बदलने के लिये ही बंदा यहां मौजूद है।"

"तुम गये मिस्टर यादव !" मेज के इस तरफ पड़ी कुर्सियों में से एक पर बैठते हुए अविनाश ने सीधे यादव से कहा –"केकड़ा की तरह अब तुम्हारे जिस्म पर भी ज्यादा दिन पुलिस की वर्दी नहीं रहेगी!"

"अगर आप कामयाब होते हैं जनाब तो वादा रहा, यादव अपनी फैक्ट्री के आफिस में आपका फोटो टांगेगा!" जवाब अब भी केकड़ा ने दिया – "धूपबत्ती और अगरबत्ती जला कर रोज खुशबू ठूंसा करेगा आपके फोटो की नाक में ।"

रहा नहीं गया अविनाश पर, गुर्रा उठा –"तुमने मुझसे उलझ कर अपने जीवन की सबसे बड़ी और आखिरी गलती की है केकड़ा!"

"ऐन यही लफज मैं आपकी खिदमत में अर्ज करने वाला था हुजूर!"

"मतलब ?"

"ताऊ के मुखारबिन्द से एक स्टोरी आपने मुझे सुनवाई थी – अपने रिवेंज की कहो या षडयंत्र की – तहेदिल से कुबूल करता हूं, आपने मुझे अपनी बुद्धि का लोहा मानने पर मजबूर कर दिया – साथ ही चैलेंज दिया कि हममें से किसी में दिल-गुर्दा हो तो आपको कोर्ट में कत्ल हुआ विनाश सिद्ध करके दिखायें –ताऊ, उसके लौंडे और उसकी बीवी ने तुम्हारे प्लान में छेद ढूंढने की कोशिश की – हमें मालूम था, मसाम के बराबर छेद नहीं मिलेगा – उस तरफ सिर खपाई करनी बेकार है – हां एक ऐसी मिस्टेक हुई पड़ी थी जिस पर आपका कोई वश न था – वो मिस्टेक थी, सेठ लक्ष्मी नारायण के यहां लूट और कत्ल की वारदात के असली मुल्जिमों का अब तक पुलिस के हाथ न लगना – हमने उस मिस्टेक का फायदा उठाया – मुल्जिम पकड़े गये और अब . . . एक स्टोरी मै आपको सुनाता हूं बंदापरवर, आप में दिल - गुर्दा है तो मेरे जाल से बच कर दिखायें!"

"मैं सब समझ रहा हूं!" अविनाश गुर्राया –"तुमने बीमा कम्पनी से फोटो निकलवाकर दूसरा नैकलेस तैयार कराया। इकबाल और रूक्का को डकैती और कत्ल कुबूल करने पर मजबूर किया . . . "

"और आपकी श्रीमति जी का दिमाग इतना खराब कर दिया कि अब आप उसे दुरूस्त नहीं कर सकते !" बात केकड़ा ने पूरी की।

अविनाश घूरता रह गया उसे।

"वैसे एक बार फिर तहे दिल से आपकी खोपड़ी का लोहा मानता हूं – मेरी जुबान को कष्ट दिये बगैर आप खुद-ब-खुद सारी स्टोरी समझ गये!" एक सैकिन्ड का अन्तराल लेकर केकड़ा ने फिर कहा –"तो जनाब . . . हालात अब इस मुकाम पर हैं कि जैसा चैलेंज आपने बंदे को दिया था ठीक वैसा ही चैलेंज बंदा आपकी तरफ सरका रहा है – मैंने जो – जो, जिस-जिस तरह किया आपके संज्ञान में है – अब आपके बस का है तो उसे अपनी श्रीमति जी के भेजे में उतारिये, समझाईये उन्हें कि ये सब केकड़ा की चाल है – आप जानते हैं, अगर उन्हें सैट न कर सके तो वे कोर्ट को हकीकत बता कर आपके पूरे

प्लान में पंक्चर कर देंगी। वैसे बंदे का दावा है, कम से कम आपसे तो अब वे सैट होंगी नहीं . . . यानी, अगली तारीख पर कोर्ट के मुल्जिम वाले कटहरे की शोभा आप बढ़ा रहे होंगे।"

अविनाश के होठों पर व्यंगात्मक मुस्कान उभर आई, बोला —"हालांकि वे ख्वाब पूरे नहीं होंगे केकड़ा जो तुम देख रहे हो मगर एक मिनट के लिये तुम्हें खुश करने हेतु मान लेता हूं कि विमला कोर्ट में मेरे खिलाफ बयान दे देगी — तब भी; तुम्हें क्या फायदा होगा, कभी सोचा ?"

"सोचा !"

"क्या नतीजा निकला ?"

आराम से कहा केकड़ा ने —"कोई फायदा नहीं होगा।"

"मतलब ?"

"विला में जिसके कत्ल का ड्रामा हुआ तुम वही विनाश हो, ये सिद्ध होने पर अमित और सुनीता को ये फायदा होगा कि उन पर मुकदमा दफा तीन सौ दो नहीं बल्कि तीन सौ सात के तहत चलेगा और तीन सौ सात का जुर्म सिद्ध भी हो जाये तो कम से कम फांसी की सजा का कोई किस्सा नहीं है — बंदे पर तुम्हें कत्ल करने का नहीं, एक करोड़ लेकर कत्ल को सुसाइड बनाने का इल्जाम है, वह वहीं का वहीं रहेगा — चाहे ये सिद्ध हो कि मरने वाला विनाश था, चाहे ये कि वो तुम थे।"

"तो तुम्हारी इस कसरत का फायदा ?"

"यही तो समझाना चाहता हूं सरकार को !" केकड़ा हंसा —"सारे काम आदमी फायदे के लिये नहीं करता, कुछ काम अपनी सनक पूरी करने के लिये भी किये जाते हैं और . . . सामने वाला अगर चैलेंज दे तो, सनक जाना बंदे की पुरानी बीमारी है!"

एक पल चुप रहने के बाद अविनाश ने कहा —"तुम्हारे ये रुक्का और इकबाल कोर्ट में दस मिनट नहीं ठहर पायेंगे मेरे सामने!"

"मालूम है!"

"फिर ?"

"कोर्ट की बात छोड़िये!" केकड़ा ने रहस्यमय स्वर में कहा —"वो साले तो हवालात तक में एक रात नहीं टिक पाये!"

"क – क्या मतलब ?" अविनाश उछल पड़ा।

केकड़ा बोला –"हवालात का गेट तोड़ कर फरार हो गये।"

अविनाश केकड़ा के कार्टूननुमा चेहरे को देखता रह गया।

●

अविनाश परेशान था।

अपने ऑफिस में बैठा बार-बार विमला को फोन मिला रहा था लेकिन हर बार बंसी उठाता।

वह अब तक कोठी पर नहीं पहुंची थी।

पांचवीं बार भी जब यही जवाब मिला तो अविनाश ने झुंझलाकर रिसीवर क्रेडिल पर पटका। उस वक्त वह गर्दन झुकाये सिगरेट सुलगाने में व्यस्त था जब एक सिपाही की आवाज उभरी –"ये आदमी आपसे मिलना चाहता है सर, कहता है आपके गांव से आया है!"

अविनाश ने चेहरा ऊपर उठाया।

सिपाही के साथ खड़े आदमी को देखते ही चौंका – "अरे . . गोविन्द, तू ?"

"हां अविनाश भैया!" धोती कुर्ता पहने युवक ने आगे बढ़कर कहा –"खुशखबरी लाया हूं!"

"आ, बैठ!" अविनाश कुर्सी से खड़ा हो गया।

"बैठने का होश कहां भैया, खुशखबरी सुन कर तुम भी नहीं बैठ पाओगे – गांव की तरफ दौड़ पड़ोगे फौरन!"

"ऐसी क्या खुश खबरी लाया है ?" नजदीक आकर अविनाश ने दोनों हाथ अपनत्व के भाव से उसके कंधे पर रखे।

गोविंद ने कहा –"अपना विनाश मिल गया है!"

"क – क्या ?" अविनाश भौंचक्का रह गया, सिगरेट फर्श पर जा गिरी।

"भैया सम्भाल खुद को ।" गोविन्द बोला –"एकदम से ज्यादा खुशी मिल जाना भी ठीक नहीं होता ।"

गोविन्द की बात सुनकर चौंका सिपाही भी था।

अविनाश की हालत तो ऐसी हो गयी जैसे दिलो-दिमाग नाम की चीज उसके पास न हो।

"जिसने उसे पाला, उसका कहना है – सात साल का विनाश उसे अपने गांव के नजदीक गंगा किनारे पड़ा मिला – सांस चल रही थी !" अपनी धुन में गोविन्द कहता चला गया –"बड़ा अच्छा और सीधा सच्चा आदमी है बेचारा – हम लोगों को तलाश करने की उसने खूब कोशिश की – विनाश को साथ लिये गांव-गांव घूमा भी मगर हम तक न पहुंच सका – पहुंचता भी कैसे, उसका गांव हमारे गांव से बहुत दूर है, मजबूर होकर बेचारे ने खुद पाला-पोशा मगर . . ."

"म – मगर !" अविनाश दहाड़ उठा।

"विनाश में अक्ल वही सात साल वाली है, कुछ समझता ही नहीं!"

"मिला कहां वह, कैसे मिला ?"

"सबसे पहले हरिया चाचा की नजर पड़ी . . . !" गोविन्द कहता चला गया और अविनाश के होश यह सोच सोच कर उड़े जा रहे थे कि ये खबर उसके दुश्मनों को मिल गई तो क्या होगा?

कोर्ट में खड़े विनाश की कल्पना मात्र से उसके छक्के छूट गये।

गोविन्द की बात अभी अधूरी ही थी कि अविनाश ने झपटकर उसे पकड़ा।

लगभग घसीटता हुआ न केवल ऑफिस से बाहर बल्कि जीप तक ले गया!

सिपाही ने लपक कर रिसीवर उठाया, नम्बर डायल किया।

सम्बन्ध स्थापित होते ही बोला – "केकड़ा साहब से बात करनी है!"

"बोल रहा हूं!" दूसरी तरफ से केकड़ा की आवाज उभरी।

सिपाही फुसफुसाया – "थाने से जयचंद बोल रहा हूं साहब!"

"बोल!"

"कम से कम एक लाख की खबर है मेरे पास!"

"मिलेंगे!"

जयचंद इतिहास दोहराने लगा।



"खोल दे बापू . . . खोल दे हमकू नईं तो मर जायेंगे।" एक कमरे के अन्दर मोटी रस्सी से जंगले की ग्रिल के साथ बंधा विनाश आजाद होने के लिये हाथ पैर मारता बार-बार चीख रहा था – "देख . . . हम मर गये तो बहोत पछतायेगा तू . . . बहोत रोयेगा . . . हमें खोल दे . . . अगूंठा चूसने दे हमकू . . . नईं तो सबकू मार देंगे . . . ये रस्सी तोड़ देंगे . . . वो जंगला उखाड़ देंगे!"

ये चीखें गोवर्धन के मकान ही में नहीं, दूर दूर तक गूंज रही थीं।

सारा गांव मकान के दरवाजे पर हुज्जूम लगाये खड़ा था।

बंद कमरे के बाहर, बरामदे में पड़ी चारपाईयों और मूढ़ों पर गोवर्धन, हरिया, रूक्मणी, गांव के पंच माने जाने वाले बुजुर्ग और वो आदमी बैठा था जिसे विनाश बापू कहता था।

उसका नाम हरशरण था।

माथे पर पट्टी बंधी थी – पट्टी गोवर्धन के सिर पर भी थी।

अविनाश ने सबसे पहले हरशरण से बात की। उसके गांव आदि का नाम पूछा। विस्तारपूर्वक जाना कि विनाश उनके हाथ कैसे लगा। उसने बताया – "जब होश आया तो इसने बताया, किसी 'अमल सिंह चाचा' ने इसका गला घोंट दिया था क्योंकि वो गोमती दीदी के साथ बुला काम कल लहा था औल इसने देख लिया था!"

"अपने मां-बाप का और गांव का नाम नहीं बताया इसने?" अविनाश ने पूछा।

"सबके नाम बताये पर गांव का नाम नई बता सका –

तुम्हारा नाम भी बताया था। ये बताया वह मेला देखने आया था मगर कौन सा मेला, कहां लगा था -- कुछ नहीं बता सका था – वैसे हम बेऔलाद वाले हैं ब्राबूजी पर ना हम किसी का बच्चा रखना चाहते थे ना हमारी घर वाली – वो तो बिचारी बीस साल से यही रट रही है कि इसकी असल मां तो रो-रो के पागल होती होगी – किसी तरह ढूंढो – इसे उसी को सौंप दो – इतने साल मैंने कोशिश भी करी पर कुछ पता निशान ना मिला – जहां भी मेला लगता इसे लेकर पहुंच जाता – अब तो आशा ही न रही थी कि इसके मां बाप इसे पहचान सकेंगे फिर भी मेले में लाया और बाबू जी भगवान का लाख-लाख शुकर है . . .

"बार-बार बाबूजी क्यों कह रहे हैं आप मुझे, मैं भी आपके लिये वैसा ही हूं जैसा विनाश!"

हरशरण चुप रह गया।

"उसे बांध क्यों रखा है?" अविनाश ने पूछा -- "इतना चीख चिल्ला क्यों रहा है?"

"बांधें नहीं तो क्या करें – देखो, हमारे मस्तक पर लगी चोट को देखो . . . अपने बापू के सिर बंधी पट्टी को देखो – उसी ने ईंट मारी है – ये बेचारे बेटा-बेटा कह कर लिपटे उसने.."

"ऐसा क्यों किया उसने?"

"हमने बताने की कोशिश की पर हमारे अलावा किसी को बापू नहीं मानता – हमारी घरवाली के अलावा किसी को मां नहीं कहता – यहां से चलने की ज़िद्द पकड़े हुये है – कहता है मैं उसे आप लोगों को बेच रहा हूं – खुला छोड़ दें तो सबको चोट पहुंचाये। अक्ल जरूर मोटी है पर शरीर में बड़ी ताकत है उसके!"

"अक्ल ऐसी कैसे रह गयी?"

"अब क्या कहूं बाबू जी?"

"फिर बाबूजी?"

"माफी दे दो बाबूजी!"

पुनः एतराज करता-करता रुक गया अविनाश। हरशरण के भोलेपन पर हौले से मुस्कुराया और 'मैं बात करता हूं उससे' कहता हुआ कमरे के बंद दरवाजे की तरफ बढ़ा।

अन्दर से लगातार विनाश के चीखने-चिल्लाने की आवाजें आ रही थीं।

इधर अविनाश दरवाजा खोल कर कमरे में दाखिल हुआ उधर विनाश की चीख-चिल्लाहटों को ब्रेक लग गये।

लकवा सा मार गया उसे।

आंखें और मुंह फाड़े हक्का-बक्का अविनाश की तरफ देखता रह गया।

अविनाश ने भी देखा, वह हूबहू उसी जैसा था – कलाई पर मौजूद मस्से सहित।

फर्क था तो बालों और पहनावे आदि में।

"अरे?" विनाश के मुंह से शब्द निकले – "तू तू है या मैं हूं?"

"सोच!" अविनाश बगैर मुड़े दरवाजा बंद करता बोला – "ऐसा कैसे हो सकता है?"

"तू बता, मेरी शकल क्यों चुराई?"

"चुराई नहीं है!" अविनाश उसके नजदीक पहुंचा – "भगवान ने हम दोनों की शकल एक जैसी बनाई है!"

"क्यूं?" विनाश ने आंखें निकालीं।

"क्योंकि हम दोनों भाई हैं, जुड़वां भाई!"

"ऐसा क्यूं हुआ?"

"तेरी कलाई पर तेरा नाम लिखा है न?"

"लिखा है, पढ़ना नीं आता पर बापू कहता है . . . "

"देख!" अविनाश ने अपनी कलाई आगे की – "ठीक वैसे ही, मेरी कलाई पर मेरा नाम लिखा है!"

"अरे हां!" उसके चेहरे पर हैरत के भाव उभर आये – "सच्ची में . . . तेरा क्या नाम है?"

"अविनाश!"

"वाह!" वह खुश नजर आया – "मेरा विनाश . . . पर तू खो कां गया था?"

"खो मैं नहीं गया था पगले!" अविनाश भावुक हो उठा – "खो तो तू गया था हमसे – तेरे पीछे बहुत बड़ा बखेड़ा कर बैठा मैं और तू इस रूप में जिन्दा है . . . काश पहले मिल जाता!"

"मां ने तो बताया नई कि मैं कई खो गया था?"

"तुझे अमर सिंह चाचा के बारे में कुछ याद नहीं?"

"उसका नाम मत ले।" विनाश के सम्पूर्ण जिस्म में एक साथ असीमित गुस्से की तरंगें दौड़ती नजर आईं – "उसी साले ने तो गला घोंटा था मेरा – मिल जाये तो कच्चा चबा जाऊं!" उसने दांत किटकिटाये – "गोमती दीदी के साथ बुरा काम कर रहा था, मैंने का तो गला घोट दिया . . . साला . . . हरामी . . . गंदा!"

"तू उसके डेरे में अपनी उड़ने वाली चिड़िया लेने गया था न?"

"अरे?" वह चकित रह गया – "तुझे कैसे पता?"

"मैं तेरा भाई हूं!"

"तू तो सचमुच भाई लगता है। अच्छा बता . . . उसके बाद का हुआ?"

"अमर सिंह ने तुझे मरा समझ कर गंगा में डाल दिया। असल में तू बेहोश था। बहता-बहता दूर निकल गया। हरशरण के हाथ लगा!"

वह एकदम गुर्रा उठा – "बापू का नाम लेता है?"

"माफ कर दे, समझाने के लिये लेना पड़ा लेकिन ये सच है – इधर हमने तुझे ढूंढने की बहुत कोशिश की उधर उन्होंने ."

"सब यही कै रहे हैं – तू भी यही कै रहा है – तो मान लेता हूं – तू मेरा भाई है न, झूठ क्यूं बोलेगा?"

"तो अब तेरी दो मां हैं, दो बापू हैं – एक - एक यहां और एक - एक तिमार गांव में।"

"वा . . . वा . . . सबके एक-एक मां-बाप होते हैं, मेरे दो-दो हैं – ये तो, मजा आ गया!"

"अब मैं तुझे खोलता हूं!" कहने के साथ अविनाश ने रस्सी की गांठ खोलनी शुरू की।

"तू तो बड़ा अच्छा है भैया।" वह खुश हो गया – "कब से चिल्ला रहा हूं मुझे खोल दो . . . मैं अंगूठा चूसूंगा पर सुनतेई नई सुसरे!"

"श – शीं : . . . . ।" अविनाश ने होंठों पर अंगुली रखी – "बड़ों को गाली नहीं देते!"

"सुसरा कोई गाली होती है?" वह भड़क उठा।

"अच्छा नहीं होती . . . ले . . . खोल दिया!"

आजाद होते ही उसने अंगूठा मुंह में ठूंसा और इस तरह चुसकने लगा जैसे भूखे के आगे थाली रख दी हो।

अविनाश उसे देखकर मुस्कुरा रहा था।

"ही . . . ही . . ." करके उसने भी अपने पीले दांत चमका दिये और अचानक अंगूठा चुसकता दरवाजे की तरफ़ दौड़ पड़ा।

"अरे।" अविनाश चौंक कर लपका – "कहां जाता है?"

विनाश बरामदे में पहुंचा

खलबली मच गयी वहां।

वह सीधा हरशरण से बोला – "देख बापू, मेरे जैसा तेरा एक और बेटा – बहोत अच्छा है ये, मुझे खोल दिया!"

अविनाश भी बरामदे में आ चुका था।

अपनी बात पूरी करते ही विनाश पुन : अंगूठा मुंह में डाल कर चुसकने लगा।

"मैं इलाज के लिये इसे शहर ले जाना चाहता हूं!" अविनाश ने बरामदे में आते हुए कहा।

"हमकू इलाज नई कराना!" विनाश एकदम भड़का और अगले पल मुस्कुराते अविनाश को देखकर नर्म स्वर में बोला – "तू भी हमारे साथ घर चल न भैया, मां तो मुझे ही देखकर खुश हो जाती है – दो-दो बेटों को देखेगी तो बहोत खुश हो जायेगी!"

"अब हम अमर सिंह से बदला लिये बगैर मां को मुंह नहीं दिखायेंगे!" अविनाश ने उसकी कमजोर नस पकड़ ली थी।

"अमर सिंह!" पुन : उसका सारा वजूद सुलगता नजर आया –"कां है वो हरामी?"

"उसी के पास ले चलने की बात कर रहा हूं तुझे!"

"चल . . . जल्दी चल!" विनाश उसे पकड़ कर खींचने ही जो लगा।

अविनाश ने हरशरण से पूछा – "आपको कोई एतराज?"

"तुम्हारा भाई है, हमें क्यों ऐतराज होता – बस यही सोच-सोच कर जी मिचला रहा है, जब इसकी मां हमें अकेला

देखकर हजार सवाल करेगी और हम बतायेंगे तो . . . कहती तो रहती थी तुम लोगों को तलाश करने के लिये पर पता नहीं ये सुनकर कैसा महसूस करेगी कि तुम लोग मिल गये हो?"

"चिंता मत कर बापू।" विनाश ने कहा — "मां से कहियो, जालिम को मारकर ही उसे अपना मुंह दिखायेंगे अब हम दोनो भैया!"

अविनाश को मालूम था, सीधे सादे हरशरण पर वह जुल्म कर रहा है परन्तु मजबूर था — उसे ये डर सता रहा था कि हवेली से अमर सिंह को फ़ोन द्वारा विनाश के मिलने की खबर न मिल गई हो।



"ये मोड़ पसंद आया भाई!" अमर सिंह की हवेली में मौजूद केकड़ा ने धारा प्रवाह बोल रहे एक ग्रामीण के बीच में हस्तक्षेप करते हुए कहा — "क़िसी विमला — शिमला की ज़रूरत नहीं रही — साले को किस्मत ने ही चारों खाने चित्त दे मारा — यानि कि असली विनाश को कोर्ट में पेश करो और चादर तान कर लम्बे-लम्बे खर्राटे मारो!"

चेहरे पर ऐसे भाव लिये देहाती उसकी तरफ देखने लगा जैसे समझने की कोशिश क़र रहा हो कि उसने कहा क्या है?

अमर सिंह, अमित, सुनीता!

सभी रोमांचित थे।

बल्कि यह लिखा जाये तो ज्यादा मुनासिब होगा कि ख़ुश थे, चेहरे दमक रहे थे उनके।

अमर सिंह ने बैचेन स्वर में देहाती से पूछा — "उसके बाद क्या हुआ?"

"अविनाश उसे लेकर शहर चला गया।" देहाती ने इस तरह चारो तरफ देखते हुए बताया जैसे चोरी कर रहा हो — "मगर सरकार, आपके खिलाफ गांव वालों में बड़ा गुस्सा है क्योंकि उसने अपने ही नहीं गोमती के बारे में भी सब कुछ बता दिया — मेरी राय है, आप फौरन यहां से निकल लें — गांव वालों

को पता लग गया आप आये हुए हैं तो . . . "

"बता सकता है, उसे लेकर अविनाश कहां जायेगा?"

"क्या पता सरकार, यहां से तो इलाज कराने के लिये कह कर . . .

"क्यों इसका भेजा चाट कर अपना कीमती टाईम किल कर रहा है ताऊ?" केकड़ा ने पुन : हस्तक्षेप किया – "इसके दिमाग में हमारे काम का जितना 'मलूदा' था, सब उगल चुका है। हमसे पूछ अविनाश उस असली लल्लूराम को कहां ले जायेगा?"

"बताओ!" अमित ने व्यग्र स्वर में पूछा।

"किसी ऐसी जगह जहां आदमी का बच्चा न पहुंच सके!"

"मतलब ?"

"अंगूठा चूस लल्लू के अवतरित होने का मतलब यूं समझ ताऊ कि बैठे बिठाये तेरे और तेरे पूरे खानदान के पौं बारह हो गये – उसके दुनिया या कोर्ट के सामने आने का मतलब है तू भी दफा तीन सौ दो से मुक्त और तेरा कुपुत्र भी – दोनों पर तीन सौ सात का मुकदमा चलेगा और उससे तगड़ा मुकदमा चलेगा उस पर जिसने खुद को विनाश बना कर कत्ल कराया। वो तो समझो गया बारह के भाव।"

"लेकिन ये सब होगा तो तभी जब हम उसे कोर्ट तक पहुंचा दें ?"

"करेक्ट !" केकड़ा ने कहा –"उधर, अविनाश मरते मर जायेगा लेकिन खुद को बारह के भाव जाने से बचाने के लिये जान लड़ा देगा अर्थात् लल्लू को ऐसी जगह रखेगा जहां कोई न पहुंच सके – इसलिये बंदे का कहना है, हमारा टाईम अमेरिका के राष्ट्रपति से कई गुना ज्यादा कीमती है, फौरन शहर के लिये कूच कर जाना चाहिये!"

अमर सिंह ने कुछ कहने के लिये मुंह खोला ही था कि–

बहुत से लोगों के शोर मचाने की आवाज आई।

"ये शोर कैसा हैं ?" अमर सिंह ने जाने किससे पूछा।

देहाती के चेहरे पर खौफ के साये मंडरा उठे, बोला –"शायद गांव वालों को आपके आने का पता लग गया है

सरकार !"

अमर सिंह, सुनीता, अमित और केकड़ा एक चौड़ी खिड़की पर लपके। इस वक्त वे तीसरी मंजिल पर थे। दूर से दौड़े चले आ रहे ग्रामीणों के हुज्जूम को देखकर सबके चेहरे पीले पड़ गये।

उनके हाथों में लाठी, भाले, त्रिशूल, खुखरी, तलवार और कृपाण जैसे हथियार थे।

आगे-आगे दौड़ रहे कुछ युवकों के हाथ में जलती हुई मशालें भी।

"उन्होंने मुझे यहां देख लिया तो जिन्दा जला डालेंगे !" कहने के बाद भय से थर-थर कांपता देहाती किसी के जवाब का इन्तजार किये बगैर ऐसे गायब हो गया जैसे कभी था ही नहीं!

"क – क्या करें ?" अमर सिंह की आवाज कांप रही थी।

अमित चिल्लाया –"भागो डैडी!"

"वे हवेली को जला कर राख कर देगें!"

"जान हवेली से ज्यादा नहीं है!"

"क्या कहते हो केकड़ा ?"

केकड़ा लम्बे लम्बे कदमों के साथ दरवाजे की तरफ बढ़ता बोला –"कूच !"



अविनाश की सबसे बड़ी समस्या विनाश को छुपा कर रखना थी।

वह समझता था, विमला को किसी न किसी तरह सच्चाई पर विश्वास दिला देगा मगर विनाश के दुनिया के सामने आने का मतलब था, बगैर किसी के कुछ कहे सब कुछ स्पष्ट हो जाना।

कहां रखे उसे ?

जीप ड्राइव करता वह इसी समस्या में उलझा हुआ था।

विनाश चुपचाप बैठा अंगूठा चुसक रहा था।

अचानक अविनाश के जहन में एक शिकारगाह का खाका उभरा।

दिमाग में उम्मीद की किरन जगमगाई।

राजनगर से बीस किलोमीटर बाहर जंगल के बीचों बीच किसी राजा द्वारा बनाया गया शिकारगाह था वह ।

जीर्ण-शीर्ण।

कहीं से टूटा, कहीं से ठीक।

तीन साल पहले तक आस-पास के गांवों में वह भूतहा समझा जाता था।

दिन छुपने के बाद की तो बात ही दूर, दिन दहाड़े भी आस-पास फटकने की कोई हिम्मत नहीं करता था। कुछ घटनायें भी ऐसी हुईं कि शिकारगाह भूतहा सिद्ध होता चला गया। कभी उसके आस-पास कोई लाश पड़ी नजर आ जाती तो कभी किसी मानव जिस्म के अस्थि-पंजर।

जिस राजा ने उसे बनवाया था, आज उसका दसवां वंशज उसका मालिक था परन्तु डर के मारे वह भी वहां कभी नहीं फटका — यूं कहा जाये तो बेहतर होगा कि पुश्तैनी जायदाद की सूची में से पठ्ठे ने उसके कालम पर कलम फिरा रखी थी।

अविनाश को इसलिये याद आया क्योंकि वह एक 'ड्रग रैकेट' का पीछा करता वहां पहुंचा था और फिर . . . . उसने यह भेद खोल दिया था कि शिकारगाह भूतहा नहीं बल्कि 'ड्रग स्मगलर्स' का अड्डा बना हुआ था।

उन्होंने ही उसे भूतहा फेमस किया था ताकि कोई उधर न फटके।

अविनाश को उसके महफूज कमरे याद आये।

सुरक्षित और गुप्त तहखाना याद आया।

फिलहाल विनाश को रखने के लिये उसके पास उससे बेहतरीन जगह नहीं थी।

जीप उधर ही मोड़ दी।

शिकार गाह अब भी लावारिस और वीरान था।

कहीं की छत टूटी पड़ी थी तो कहीं की पूरी तरह सुरक्षित। छतों, टूटे बुर्जों और दीवारों तक पर सूखी हुई लम्बी-लम्बी घास और झाड़ियां नजर आ रही थीं। जब एक झटके से

उसने वहां जीप रोकी तो कई गिद्ध, कबूतर और चीलों ने पंख फड़फड़ाये।

"ये तू हमकू कहां लियाया भैया ?" विनाश ने पूछने के बाद अंगूठा पुनः मुंह में दे लिया।

अविनाश उसे जीप से उतार कर मलवे के ढेर पर चढ़ता बोला —"अमरसिंह को यहीं सबक सिखायेंगे।"

"वो यहां रैता है ?" उसने उसके साथ घिसटते पूछा।

"रहता तो शहर में है, मैं फंसा कर लाऊंगा उसे यहां।"

"फंसा के कैसे ?"

"देखता रह।" कहने के बाद वह मलवे पर खड़ी झाड़ियों से बचता उस तरफ को बढ़ा जिधर उसकी जानकारी के मुताबिक तहखाना था।

वातावरण में पानी के पत्थरों के टकराने का शोर गूंज रहा था।

अविनाश जानता था, शिकारगाह की पिछली साइड में साफ पानी का एक पथरीला नाला हैं। खास उसी के किनारे पर शिकारगाह शायद यह सोच कर बनवाया गया था ताकि घोड़े आदि के लिये पानी का इंतजाम अलग से न करना पड़े।

अर्ध टूटे बरामदों से गुजरता अविनाश विनाश को एक ऐसे बड़े हाल में ले गया जो छत और दीवारों की दृष्टि से पूरी तरह महफूज था परन्तु धूल, जगह जगह बने मकड़ी के जाले और उल्लू जैसे जानवरों का बसेरा था।

हॉल के बीचों-बीच काले पत्थर का बना एक हाथी खड़ा था।

धूल उस पर भी जमी थी।

अविनाश उसी की तरफ बढ़ा और सूंड के अन्दर हाथ डालकर एक खटका सा दबाया।

घरघराहट की तेज आवाज के साथ हाथी चबूतरे सहित अपनी जगह से हट गया।

"अरे।" ये खेल देखकर विनाश खुश हुआ —"यू क्या जंतर—मंतर ?"

"आ।" होठों पर हल्की मुस्कान लिये अविनाश ने उसकी बांह पकड़ी और जहां से हाथी हटा था वहां नजर आ रही

सीढ़यों पर उतरता चला गया। करीब पन्द्रह सीढ़ियां उतरने के बाद वे कमरे में पहुंचे।

कमरे में एक लम्बा चौड़ा रोशनदान था।

उसकी वजह से दिन का भरपूर प्रकाश फैला हुआ था वहां।

रोशनदान के दूसरी तरफ से नाला बहने की आवाज आ रही थी।

अविनाश शिकारगाह की मुकम्मल भौगोलिक स्थिति से वाकिफ था। उसे मालूम था, बाहर की तरफ से ये रोशनदान नाले के किनारे इतनी ऊंचाई पर था कि कोई उसके जरिये तहखाने में नहीं झांक सकता था — उसे एक ऐसे रास्ते की जानकारी भी थी जो यहां से सीधा नाले के पार खुलता था परन्तु उसे खोल कर देखने की कोशिश उसने इसलिये नहीं की क्योंकि विनाश को यहां अकेले रहना था और देख लेता तो, चाहे जब बाहर निकल सकता था।

तहखाने की जमीन पर सूखी हुई लम्बी घास कालीन की मानिन्द बिछी थी।

दायीं तरफ एक दुछत्ती थी।

अविनाश को जगह पूरी तरह फिट लगी। बस एक ही कमी थी यहां।

गर्मी बहुत थी।

पसीने से लथपथ हो गया वह।

"यहां तो आग बरस रही है भैया।" विनाश ने कहा।

उसकी तरफ देखते ही अविनाश चौंक पड़ा, बोला —"हां . . . गर्मी तो है, लेकिन . . . मजबूरी है।"



बुरी तरह परेशान और हड़बड़ाये हुए अविनाश ने पूछा —"कल किस समय आयी थी वह यहां ?"

"करीब तीन बजे।" चिल्ड्रन होम की मोटी मालकिन ने बताया —"अंकुर को लेकर चली गयी। गुस्से में मालूम पड़ती

थी। मैंने पूछा भी क्या बात है मगर जवाब नहीं दिया।"

अविनाश समझ गया।

पार्क से विमला सीधी यहां आयी थी।

कोठी पर पहुंची ही नहीं। न अंकुर को ले जाने से पहले, न बाद में।

कल शाम विनाश को शिकारगाह में छोड़कर आने के बाद से वह आज सुबह तक लगातार विमला को खोज रहा था।

सारी रात कोठी पर नहीं पहुंची वह।

हर तरफ से निराश होकर अविनाश चिल्ड्रन होम पहुंचा और यहां जो सूचना मिल रही थी वह उसके हौसले पस्त कर देने वाली थी। विमला अंकुर सहित गधे के सींग की तरह गायब हो गयी थी।

जाहिर था जानबूझ कर गायब हुई है।

लेकिन कहां . . . कहां गई होगी ?

लाख दिमाग खपाने के बावजूद जवाब न सूझा।

परेशान हाल अपने ऑफिस में आ बैठा।

उस वक्त वह शिकारगाह के तहखाने में मौजूद विनाश के खाने का प्रबंध करने के बारे में सोच रहा था जब टेलीफोन की घंटी बजी। झुंझलाये अंदाज में रिसीवर उठा कर उसने अक्खड़ स्वर में कहा —"हैलो।"

"मैं बोल रही हूं!"

"व — विमला !" अविनाश उछल पड़ा —"क — कहां हो तुम, तुम्हें ढूंढता-ढूंढता . . ."

सर्द स्वर में कहा गया —"मुझे मालूम है!"

"फ — फिर मिली क्यों नहीं — एक बार, सिर्फ एक बार मिलो विमला!"

"कल मिलूंगी !"

"क — कहां ?"

"कोर्ट में !"

"क — कोर्ट ?"

"भूल गये ?" स्वर बेहद कर्कश था —"कल केस की महत्वपूर्ण तारीख है!"

"व — विमला, समझने की कोशिश करो। ये सब

केकड़ा का जाल है। उसमें फंस कर तुम सब कुछ ध्वस्त कर दोगी। केवल पांच मिनट के लिये मिलो। उस स्टोरी में बहुत सी विसंगतियां हैं। मैं तुम्हें पांच मिनट में कान्विन्स कर लूंगा!"

"मैं अब पांच सौ साल में भी तुम्हारी बातों में नहीं आने वाली!" दांत पीसे गये —"मुझे मजबूर करने के लिये तुम्हारे पास केवल एक मोहरा था। उसे भी मैं चिल्ड्रन होम से निकाल कर अपने संरक्षण में ले चुकी हूं!"

"उफ्फ ।" अविनाश ने अपने बाल नोंच लिये —"मेरे बारे में कितनी निम्न बातें सोचने लगी हो तुम — प्लीज विमला, इस वक्त मुझे तुम्हारी बहुत जरूरत है। अकेला पड़ गया हूं मैं, उधर विनाश सचमुच . . . ."

दूसरी तरफ से रिसीवर पटक दिया गया।

अविनाश का मुंह खुला का खुला रह गया — कान में ही नहीं, जहन तक में किर्र . . र . . . की आवाज गूंज रही थी।

●

"शिकारगाह के अन्दर उसने कहां रखा हुआ है विनाश को ?" पिछली सीट पर बैठे अमित ने पूछा।

"उसकी छत पर शराब की एक बोतल पड़ी है!" केकड़ा ने खिन्न स्वर में कहा—"उसके अन्दर बंद है विनाश!"

"क — क्या मतलब ?" एक साथ तीनों चौंक पड़े।

अमित की बगल में बैठी सुनीता ने कहा —"प्लीज केकड़ा, मजाक मत करो!"

"मजाक से मेरा कभी कोई रिश्ता नहीं रहा!"

"मतलब ये हुआ, शिकारगाह के अन्दर उसने विनाश को कहां रखा है — ये तुम्हें नहीं मालूम ?" राल्स रायल ड्राईव करते अमर सिंह ने कहा।

"देखो ताऊ ।" केकड़ा पैसेंजर सीट पर बैठा था — "पीछा करते वक्त मैंने उसे खाना लेकर शिकारगाह में जाते देखा — जाहिर है, उसने विनाश को वहीं रखा है। वहां से आगे पीछा करना यानी शिकारगाह में घुसना मुझे न केवल इसलिये मूर्खता

लगी कि उस पर मेरे द्वारा पीछा किये जाने का भेद खुल सकता है बल्कि ऐसा होने पर उसके द्वारा अपनी हड्डी-पसलियों के टूटने का खतरा भी नजर आया और केवल अपनी सनक पूरी करने के लिये मैं हड्डियों का सुरमा बनवाने के मूड में नहीं था!"

"मतलब ?"

"पहले भी कई बार पत्तल में रखकर परोस चुका हूं।" अविनाश साला कोर्ट में चित गिरे या पट, मुझे मिलने वाली सजा में कोई फर्क नहीं पड़ना। इतने पापड़ केवल इस सनक को पूरी करने के लिये बेल रहा हूं कि जब जेल की चक्की साली पीसनी ही है तो क्यों न उसी की पार्टनरशिप में पीसी जाये जो मुझसे चक्की पिसवाने पर आमादा है ?"

"व — वो तो हम समझते हैं!" अमरसिंह ने कहा।

"तो ये क्यों नहीं समझते कि उसने विनाश को शिकारगाह में रखा है — ये कम्पलीट इन्फारमेशन है। तुरन्त कमिश्नर से मिलो। उसे पटाओ। फोर्स लेकर शिकारगाह में पहुचों। फोर्स अपने आप ख़ोज लेगी उसे!"

अमित ने कहा —" क्या इससे बेहतर ये न होगा कि हम ही लोग शिकारगाह चलें। विनाश को अपने कब्जे में ले लें और रात भर अपनी कस्टडी में रखने के बाद कल सीधा कोर्ट में पेश करें?"

केकड़ा ने अमरसिंह से कहा —"तू अपने इस नालायक पुत्र को समझा नहीं सकता ताऊ ?"

"मतलब ?"

"बेवजह हाथ में आई बाजी को गंवाने की फिराक में है पट्ठा!" केकड़ा कहता चला गया —" उधर अविनाश को पता लगा नहीं कि विनाश शिकारगाह से फुर्र है, वह हाथ धोकर बल्कि स्नान करके हमारे पीछे लग जायेगा। हम विनाश को अपनी कस्टडी में रखना चाहेंगे, वह निकलना चाहेगा। सारी रात धमा-चौकड़ी मचेगी। अंजाम ऊपर वाला जाने यानी अविनाश भी कामयाब हो सकता है जबकि जो मार्ग में बता रहा हूं वह सीधा सच्चा और आज ही हन्डरेड परसेन्ट कामयाबी दिलाने वाला है। विनाश को पुलिस कमिश्नर की सुपुर्दगी में सौंपो और सारी रात चादर तान कर खर्राटे मारो!"

"रास्ता तो यही ठीक है !" अमर सिंह ने कहा।

अमित बोला —"ये बात मैं केवल इसलिये कह रहा था कि कहीं कमिश्नर अपने इन्स्पैक्टर का ही पक्ष न ले ले — विनाश को बरामद करने के बावजूद अगर उसे कोर्ट में पेश नहीं किया तो . . . ."

झुंझला उठा केकड़ा —"कमिश्नर की जन्मतिथि पता है तुझे ?"

"क्या मतलब ?" एक साथ तीनों चौंक पड़े।

"जिस दिन वो पैदा हुआ, उस दिन सौ हरिश्चन्द्र मरे होंगे।"

गाड़ी में सन्नाटा छा गया।

करीब एक मिनट बाद अमर सिंह ने कहा —"कमिश्नर के पास जाकर किस्से को आज ही खत्म कर देना मुनासिब है।"

"बंदे को यहीं 'धकेल' दो ।" केकड़ा ने कहा।

"क्यों ?" अमर सिंह चौंका —"तुम नहीं चल ?"

"बुद्धि के कपाट खोल कर रखा कर ताऊ — अभी अभी उसकी जन्म तिथि बताई है तुझे, इसके बावजूद नहीं सोच सकता कि मेरे जैसे कर्मकांडी पुलिसिये को सामने देखकर उसका ब्लड प्रेशर किस कदर हाई फाई हो जायेगा ?"

"यानी ?"

"अपना काम टांय-टांय फिस्स कराना हो तो बंदे को साथ ले चलो। गारन्टी है, मुझे देखकर वह ठीक उस पोजीशन में आ जा गा जिस पोजीशन में मुगले आजम का अकबर सलीम - अनारकली को लिपमा-चिपटा देखकर आ जाता था — सोचो, उस अवस्था में कौन पटरी पर ला पायेगा उसे ?"

"ल् — लेकिन तुम्हारे बगैर . . .."

"इस अभियान में हममें से किसी को अचार नहीं डालना है!" केकड़ा कहता चला गया — "पटाकर उसे शिकारगाह तक ले जाना भर है, उसके बाद का सारा काम कमिश्नर करेगा। उसकी फोर्स करेगी!"

अमर सिंह को लगा, केकड़ा ठीक कह रहा है।

सो . . . उसे एक जगह ड्राप करके राल्स रायल पुलिस मुख्यालय की तरफ बढ़ गयी।

कुछ देर वहीं खड़ा केकड़ा राल्स रायल के पिछले हिस्से को देखता मुस्कुराता रहा।

गाड़ी के ट्रेफ़िक में गुम होते ही उसने हाथ देकर एक टैक्सी रोकी। दरवाजा खोल कर पिछली सीट पर लुढ़कता बोला —"चल मेरे भैया।"

"कहां चलूं साब ?" ड्राइवर ने पूछा।

"जहन्नुम देखा है ?"

ड्राइवर चौंका। पलट कर पीछे देखा और यह समझ में आते ही मुस्कुरा उठा कि पैसेन्जर जिन्दा-दिल है, बोला —"नहीं साब!"

"सीधा चल, हम दिखा देते हैं!"

ड्राइवर ने टैक्सी आगे बढ़ा दी।

करीब आधा घंटा सफर करने के बाद एक पब्लिक टेलीफोन बूथ के नजदीक रूकवाई, बाहर निकलता बोला —"तू यहीं ठहर, यमराज को अपने आगमन की पूर्व सूचना दे आऊं!"

ड्राइवर मुस्कुरा कर रह गया।

बूथ के अन्दर पहुंच कर केकड़ा ने नम्बर रिंग किया। दूसरी तरफ बेल जाने लगी। सड़क की तरफ पीठ की। माऊथ पीस पर रूमाल डाला। दूसरी तरफ से रिसीवर उठाने के साथ कहा गया —"हैलो!"

"इन्स्पैक्टर अविनाश से बात करनी है!"

"बोल रहा हूं, आप कौन ?"

"पुलिस मुख्यालय से सुखबीर सिंह बोल रहा हूं साब!"

"हां !" अविनाश की आवाज —"बोलो सुखबीर!"

केकड़ा शुरू हो गया।

●

"इस वक्त उसने कहां रखा हुआ है विनाश को ?"

"स — सॉरी सर ।"अमर सिंह ने कहा —"ये बात अभी हम बताना नहीं चाहते।"

"क्यों ?" कमिश्नर के मस्तक पर बल पड़ गये।

अमित बोला —"आप फोर्स लेकर साथ चलिये, हम उसे बरामद करा देंगे!"

कमिश्नर ने अमर सिंह, सुनीता और अमित को बहुत ध्यान से देखा।

अविनाश की जो इमेज उनके जहन में थी वह उन्हें इनकी बातों पर विश्वास करने की इजाजत नहीं दे रही थी परन्तु जो वे कह रहे थे — कुछ देर बाद वह झूठ या सच प्रमाणित हो जाने वाला था और . . . .

कमिश्नर ने सोचा —'सामने वाला ऐसा झूठ क्यों बोलेगा जो कुछ देर बाद पकड़ा जाने वाला हो ?'

उन्हें वे सच बोलते लगे।

'मुमकिन है।' कमिश्नर की तर्क बुद्धि ने उनसे कहा —"सचमुच गोमती द्वारा यह पता लगने के बाद इन्स्पैक्टर अविनाश बेदाग और शानदार करेक्टर के बावजूद पागल हो उठा हो कि अमर सिंह ने उसके भाई की हत्या की थी— भावुकता अक्सर भले आदमी को भटका कर मुजरिम बना देती है — सम्भव है, उसने वह सारा षडयंत्र रच डाला हो जो ये लोग कह रहे हैं!

'और फिर! विचार उनके दिमाग को मथ रहे थे —'अब तो इनका कहना ये है कि विनाश जिन्दा मिल गया है। अविनाश ने उसे कहीं छुपा रखा है और ये उसे बरामद करा सकते है!

न करा सके तो खुद-ब-खुद झूठे सिद्ध हो जायेंगे।

कार्यवाही करना कमिश्नर को उचित लगा, अतः बोले —"क्या आप लोगों को खबर लीक हो जाने का खतरा है ?"

"आपसे नहीं सर।" अमर सिंह ने एक-एक लफ्ज नाप तोल कर कहा —"हम स्टाफ़ पर विश्वास नहीं कर सकते!"

"स्टाफ को नहीं बताया जायेगा!"

कई पल के लिये ऑफिस में सन्नाटा छा गया।

अमरसिंह, सुनीता और अमित ने एक दूसरे की तरफ देखा और फिर सुनीता ने कहा —"यहां से करीब बीस किलोमीटर दूर एक पुराना शिकारगाह है। अविनाश ने विनाश को वहीं छुपा रखा है!"

"ओ. के. !" कहने के साथ कमिश्नर ने टेबल पर रखे

कई फ़ोनों में से एक का चोंगा उठा लिया।

●

दूसरी तरफ से पूछा गया —"विनाश जिन्दा है क्या ?"

"क — क्या ?" अविनाश चौंका।

"कमिश्नर साहब के ऑफिस में अमर सिंह, अमित और सुनीता बैठे हैं सर!" दूसरी तरफ से कहा गया —"मैं अन्दर चाय देने गया था। जितनी भनक लगी, उससे लगा . . . वे लोग कमिश्नर साहब को ये बता रहे थे कि विनाश जिन्दा है और आपने उसे कहीं छुपा रखा है — वे चाहते थे कमिश्नर साहब वहां छापा मारें!"

"फ — फिर ?"

"अभी-अभी कमिश्नर साहब के कमरे से छापे की तैयारी करने के आदेश हुए हैं— जगह का नाम नहीं बताया गया, मैं भूला नहीं हूं सर —एक बार आपने मुझे सस्पैंड होने से बचाया था इसलिये ये फोन करना अपना कर्तव्य समझा!"

"बोल कहां से रहे हो सुखबीर ?"

"मुख्यालय के बाहर स्थित बूथ से बोल रहा हूं सर!"

अविनाश रिसीवर क्रेडिल पर पटकने के साथ उछल कर खड़ा हो गया।

चेहरा सुर्ख नजर आ रहा था, जबड़े क़से हुए।

●

कमिश्नर के नेतृत्व में, उनकी एम्बेसडर गाड़ी के साथ करीब पन्द्रह जीपों में पुलिस दल शिकारगाह पहुंचा। गाड़ी में अमर सिंह उन्हें बता चुका था कि शिकारगाह में विनाश कहां है, यह उन्हें नहीं मालूम —'क्यों नहीं मालूम' — के जवाब में कहा —'उसका पीछा करते वक्त मैंने शिकारगाह में घुसना मुनासिब न समझा'— सुनकर कमिश्नर ने कहा —'ठीक ही किया, वैसे भी उसकी कोई जरूरत नहीं है — ये इन्फारमेशन काफी है कि

शिकारगाह में है, फोर्स खुद तलाश कर लेगी!'

अमर सिंह, अमित और सुनीता उत्साहित थे।

कमिश्नर ने माईक पर कहा —"चारों तरफ फैल जायें, शिकारगाह में जो भी हो उसे एरेस्ट कर लें!"

पुलिस टिड्डी दल की तरह चारों तरफ फैल गयी।



अविनाश ने तेजी से ब्रेक मारे।

पुलिस जीप जंगल के बीच पेड़ों के झुरमुट में रुकी।

ब्रगल वाली सीट पर पड़ी मोटी रस्सी की गुच्छी सम्भाले वह जीप से कूदा।

पूरब दिशा में काफी दूर पथरीला नाला और शिकारगाह के खंडहर को पिछला हिस्सा नजर आ रहा था। अविनाश ने एक नजर इस बात पर डाली कि जीप शिकारगाह के किसी हिस्से से नजर तो नहीं आयेगी!

संतुष्ट होने के बाद एक तरफ को लपका।

एक कुवें के नजदीक रुका।

तीन फुट ऊंची, टूटी-फूटी बाउन्ड्री पर चढ़ कर नीचे झांका।

कुवां सूखा पड़ा था।

अविनाश ने रस्सी का एक सिरा कुवें के सबसे नजदीक वाले पेड़ के साथ बांधा, दूसरा सिरा कुवें में लटकाया और उतरता चला गया। जिस्म में ऐसी फुर्ती भरी हुई थी जैसे चाबी से चलने वाला खिलौना हो।

सूखे कुवें में उतरते ही उसने हाथों से एक तरफ पड़ा कूड़ा करकट हटाया।

एक खुंटी जैसी चीज हाथ में आते ही अंदर की तरफ दबाई।

घरघराहट के साथ कुवें की एक दीवार में छोटा सा दरवाजा पैदा हो गया।

अविनाश ने बेखौफ उसके अन्दर जम्प लगाई।

अंदर अंधेरा था।

उसने ज़ेब से टार्च निकालकर ऑन की और दौड़ता चला गया।

सुरंग करीब सात फुट ऊंची, तीन फुट चौड़ी थी।

एक स्थान ऐसा भी आया जहां छत के ऊपर से न केवल पानी के पत्थरों से टकराने की धीमी-धीमी आवाज आ रही थी बल्कि यहां-वहां से बूंदें भी टपक रही थीं।

जाहिर था, वहां सुरंग नाले के नीचे से गुजर रही थी।

करीब पांच मिनट दौड़ने के बाद अविनाश आठ बाई आठ के एक ऐसे क़मरे में पहुंच गया जिसके बीचों-बीच लोहे का एक बहुत मोटा खम्बा था। खम्बे का एक सिरा कमरे के फर्श में गुम था, दूसरा छत में —लोहे की छोटी-छोटी सीढ़ियां खम्बे से इस तरह लिपटी हुई छत तक चली गई थीं जैसे चन्दन के तने के चारों और लम्बा सर्प लिपटा हो।

अविनाश उस सीढ़ी पर पहुंचा जहां से हाथ बढ़ाकर छत को आराम से स्पर्श कर सकता था!

टार्च की मदद से छत में लगा एक कुंदा तलाशा, पकड़ा और तेज झटका दिया।

घरघराहट की आवाज के साथ छत में रास्ता बना, काफी सारी सूखी और लम्बी घास नीचे आ गिरी।

●

तहखाने के ऊपर भारी बूटों की आवाज गूंज रही थी।

विनाश बेचैन नजर आ रहा था। अंगूठा मुंह में और दूसरा हाथ कुर्ते की जेब में डाले वह सीढ़ी की सबसे ऊपर वाली पैड़ी पर बैठा तहखाने की छत से कान लगाये उन आवाजों को और स्पष्ट सुनने का प्रयत्न कर रहा था।

तभी, तहखाने में घरघराहट की आवाज गूंजी।

विनाश ने चौंककर आवाज की दिशा में देखा।

कमरे के फर्श का छोटा सा हिस्सा एक तरफ सरक गया था।

अपनी जगह बैठे-बैठे विनाश ने चकित भाव से उस तरफ़ देखा और उस वक्त तो उछल ही पड़ा जब फर्श में बने गद्दे के ऊपर अविनाश के पेट से ऊपर का भाग नजर आया।

"अरे ?" किल्ली निकल गई विनाश के मुंह से —"तू जमीन के अन्दर से आ गया भैया ?"

"श — शी . . . !" अविनाश ने होठों पर अंगुली रखकर उसे चुप रहने का इशारा किया।

मगर विनाश चुप रहने वाला कहां, आदतानुसार जोर से बोला —"ये मकान तो सचमुच का जंतर मंतर है भैया!"

बौखला गया अविनाश, उसे अपने नजदीक आने का इशारा करता फुसफुसाया —"नीचे आ!"

"तू ऊपर आ जा भैया!" वह बोला —"देख, ऊपर कोई है . . . आवाज आ रही है!"

ऊपर किसी ने कहा —"ये जोर-जोर से किसके बोलने की आवाज आ रही है ?"

"हम हैं!" विनाश ने दोनों हाथों से छत पीट डाली —"खोलो इसे!"

अविनाश के छक्के छूट गये।

उसकी सुनने को तैयार नहीं था विनाश।

जबरदस्त फुर्ती के साथ तहखाने में आया। दौड़ कर सीढ़ियों पर चढ़ा।

"आजा . . . आजा . . . !" विनाश को खेल सूझ रहा था।

ऊपर, किसी ने भारी बूट फर्श पर पटका —"आवाज नीचे से आती प्रतीत हो रही है!"

"इसके नीचे तहखाना तो नहीं है सर ?" अन्य आवाज।

"मुमकिन है!" अविनाश पहचान गया, यह आवाज कमिश्नर की थी —"पुरानी इमारतों में अक्सर इस किस्म की कारस्तानियां कर दी जाती थीं, रास्ता तलाशने की कोशिश करो!"

"हाथी की सूंड!" हलक फाड़कर विनाश इतना ही कह पाया था कि अविनाश ने घबराकर उसका मुंह भींच लिया।

विनाश 'गूं — गूं' करके मचलने लगा।

"अमर सिंह !" ऊपर वार्ता चल रही थी —"क्या तुम्हें इस इमारत के बारे में कुछ पता है ?"

अमर सिंह की आवाज —"मैं भी आपकी तरह पहली बार अन्दर घुसा हूं सर!"

अमरसिंह का नाम सुनकर तो मानो पागल हो गया विनाश।

अविनाश के हाथ से अपना मुंह आजाद कराने के लिये पूरी ताकत लगा दी उसने और . . . उसे नाकाम करने के लिये पूरी ही ताकत अविनाश को लगानी पड़ी। उसे सीढ़ियों से नीचे खींचने की कोशिश करता दांत भींच कर गुर्राया —"नीचे चल विनाश!"

विनाश कहां सुनने वाला ?

परन्तु . . . मुंह दबोचे अविनाश एक-एक सीढ़ी करके अंततः उसे तहखाने के फर्श पर ले ही आया।

उस वक्त वह उसे लगभग घसीटता हुआ फर्श में बने रास्ते की तरफ बढ़ रहा था जब विनाश ने सारी शक्ति समेट कर जोर से झटका दिया।

उधर अविनाश दूर जाकर गिरा इधर विनाश दहाड़ा —"जबरदस्ती क्यूं करता है मेरे साथ ?"

"जोर से मत बोल बेवकूफ !" अविनाश दांत भींच कर गुर्राया।

"अच्छा ?" विनाश भड़क उठा —" बेवकूफ बोलेगा हमकू ?"

अविनाश हाथ जोड़कर गिड़गिड़ा उठा —"समझने की कोशिश कर मेरे भाई, ऊपर . ."

"ऊपर सुसरा अमर सिंह है।" वह फिर दहाड़ा —"आवाज की पहचान है हमकू। उसने हमारा गला दबाया . ..

अविनाश ने पुनः झपट कर उसका मुंह दबोच लिया परन्तु इस बार ज्यादा देर न भींचे रख सका। विनाश ने पूरी ताकत से अपनी कोहनी उसके पेट में मारी थी।

न चाहते हुए हलक से चीख निकली। दूर जा गिरा वह।

"कुश्ती करनी चाहता है, तो आ !" विनाश दोनों घूंसे तान कर खड़ा हो गया।

अविनाश उछल कर खड़ा हुआ, गिड़गिड़ाया —"समझने की कोशिश कर यार, उसके साथ बहुत से लोग है!"

"तो का हुआ — मैं डरूं हूं बहौत से लोगन से — तू होगा डरपोक . . . . कायर, मैं ना डरूं!"

तभी, तहखाने की छत पर जोर जोर से कुदाल टकराने की आवाजे गूंजन लगी।

एक पल के लिये दोनों का ध्यान छत की तरफ गया।

अविनाश समझ गया — रास्ता न मिल पाने की अवस्था में फर्श को तोड़ डालने का फैसला लिया गया है।

अब . . . अविनाश ने होलेस्टर से रिवाल्वर खींच लिया। उस पर तानकर गुर्राया —"चल . . . उस गड्ढे में उतर!"

"अच्छा ?" विनाश हत्थे से उखड़ गया —"बंदूक से डरायेगा हमकू ?"

"उधर चल वरना गोली मार दूंगा!"

किसका उधर चलना ?

सीधी-सीधी जम्प ही जो लगा दी उसने अविनाश पर।

फ़ायर अविनाश को करना नहीं था — सो, बिगड़े हुए सांड की तरह विनाश उसके जिस्म पर आ गिरा।

रिवॉल्वर हाथ से छूट गया। स्वयं दूर जाकर गिरा। गिरते ही उछल कर खड़ा हुआ लेकिन तब तक विनाश झपट कर रिवॉल्वर उठा चुका था। अब सारी बातें भूल कर खौफजदा अविनाश दहाड़ उठा —"गोली मत चलाना वि . . . .

इतनी देर में तो पट्ठे ने दबा ही जो दिया ट्रेगर।

"धांय !" फायर की आवाज दूर-दूर तक गूंज उठी।

मगर गोली जाने कहां गई थी ?

दूसरी बार ऐसी हरकत करने का मौका दिये बगैर अविनाश ने जान पर खेलकर उस पर जम्प लगा दी।

रिवॉल्वर वाली कलाई पकड़ कर जोर से उमेठी।

विनाश के हलक से चीख निकली।

रिवॉल्वर अविनाश के हाथ में पहुंच चुका था।

दांतों पर दांत जमा कर उसने विनाश की बांई टांग को निशाना बना कर फायर किया।

ठीक इसी क्षण विनाश नीचे बैठ गया था।

गोली और चीख साथ साथ गूंजी।

"व . . . विनाश . . .!" टांग की जगह सीने से उबलते लहू को देखकर अविनाश हलक फाड़ कर चीख पड़ा।

एक पल . . . केवल एक पल के लिय तड़पा था विनाश।

अगले पल घास के कालीन पर औंधें मुंह जा गिरा।

अविनाश आंखें फाड़े उस दृश्य को देख रहा था। रिवॉल्वर की नाल से धुवां अब भी निकल रहा था। समूचे संसार की हैरत ही नहीं, वेदना भी अविनाश के चेहरे पर इकट्ठी हो गयी।

रिवॉल्वर हाथ से फिसलकर घास पर गिरा।

"व – विनाश . . . विनाश!" चीखता वह दौड़ा।

नब्ज चैक की . . . धड़कन देखी . . . और उससे लिपट कर फूट-फूट कर रो पड़ा।



"द – देखिये सर !" अमर सिंह कह उठा – "फायरों की आवाज के अलावा तीन बार विनाश का नाम लेकर चीखने की आवाजें आई हैं और आवाज भी आपने पहचान ली होगी। इन्स्पैक्टर अविनाश की आवाज थी वह । जरूर उसे हमारे आपके पास पहुंचने की सूचना मिल गई होगी। हमसे पहले यहां पहुंचा होगा। सारे रास्तों की जानकारी उसे होगी ही . . . . ."

"गोलियां कौन किस पर और क्यों चला रहा है ?" उद्वेलित कमिश्नर ने पूछा।

"क – क्या पता साहब ?"

"चुप रहो!" उत्तेजित अवस्था में कमिश्नर ने उसे डांटा।

अमर सिंह सकपका गया।

फायर और चीखों की आवाजों के कारण हाथ के नजदीक कुदालों से फर्श में गढ्ढ़ा करने का प्रयत्न करते जवान रुक गये थे। कमिश्नर साहब चीखे – "रुक क्यों गये, ये चार छः इंच मोटा फर्श नहीं टूट रहा तुमसे ?"

जवान पुनः जुट गये।

●

बच्चों की तरह बिलखते अविनाश ने तहखाने की छत की तरफ देखा।

कुदालों के प्रहार सम्पूर्ण ताकत से किये जा रहे थे।

जब छत में लगे पत्थर के छोटे-छोटे किरचे तहखाने में गिरने लगे तो अविनाश उठा। आंसुओं से तर चेहरे पर किसी फैसले की दृढ़ता के भाव उभरे। रिवॉल्वर उठाकर वापस होल्स्टर में रखा।

विनाश की लाश कंधे पर डाली और जबड़े भींचे उस रास्ते की तरफ बढ़ गया जिधर से आया था। उधर अविनाश गुम हुआ । फर्श यथास्थान फिक्स हुआ, इधर —

"जय सिया राम ।" इस नारे के साथ केकड़ा दुछत्ती से सूखी घास पर कूदा —"हो गया काम ।"

उसके गले में एक वी.सी.. आर. लटक रहा था, हाथों में वीडियो कैमरा।

"एक वीडियो फिल्म तूने बनाई थी खलीफा, एक हमने बनाई है।" केकड़ा ने कैमरा चूमा — "तेरी फिल्म में रोमांटिक सीन ज्यादा थे, अपनी में फाईटिंग ज्यादा है . . . शोले-वोले सबका रिकार्ड तोड़ - मरोड़ कर फैंक देगी साली!"

छत पर कुदालों के प्रहार जोर-जोर से हो रहे थे।

"आराम से उस्ताद!" केकड़ा ऊपर देखता हुआ बोला —"सिर पर गिराओगे क्या ?"

●

"सारी घास खून से रंगी पड़ी है सर !" अमर सिंह उद्वेलित था —" जरूर यहां किसी का कत्ल हुआ है, या . . . या जख्मी तो जरूर ही हुआ है कोई!"

"कौन ?" तहखाने में मौजूद कमिश्नर ने पूछा।

"म – मेरा ख्याल है, विनाश . . . या अविनाश ?"

"यानी दोनों भाई एक दूसरे का मर्डर करने पर आमादा हो गये होंगे ?"

सकपका गया अमर सिंह । कुछ सूझ नहीं रहा था उसे।

कमिश्नर ने एक इन्स्पैक्टर से पूछा –"तुम्हें क्या लगता है शर्मा – यहां जो भी थे, वे कहां गये ?"

"किसी गुप्त रास्ते से फरार हो गये लगते हैं सर ।"

"ढूंढ़ो, रास्ता न मिले तो यहां के फर्श में भी वैसा ही मोखला बना दो!"

कमिश्नर साहब ने तहखाने की छत और हाल के फर्श में बने मोखले की तरफ इशारा करके कहा –"कुछ न कुछ तो यहां हुआ ही है, भले ही वह ड्रामा रहा हो।"

"ड – ड्रामा क्या मतलब कमिश्नर साहब ?" अमर सिंह ने घबराकर पूछा।

कमिश्नर ने उसे घूरते हुए कड़े स्वर में कहा –"अगर हमें यहां से अविनाश या . . . जैसा तुम्हारा दावा है, विनाश नहीं मिला मिस्टर अमरसिंह तो खुद को पुलिस को धोखा देने के प्रयास में गिरफ्तार समझना।"

"क – क्या बात कर रहे हैं सर ?" अमर सिंह बौखला गया –"वो विनाश . . . विनाश चिल्लाती अविनाश की आवाज?"

कमिश्नर ने दांत भींच कर कहा –"वैसी आवाजें आवाज बदलने में माहिर दो टके के आर्टिस्ट के मुंह से निकलवाकर चाहे जिसको सुनाई जा सकती हैं!"

अवाक् रह गया अमर सिंह।

"वो भ्रष्ट इन्स्पैक्टर कहां है ?" कमिश्नर ने पूछा –"खुद को बेगुनाह और अविनाश को जालसाज सिद्ध करने के जिस मिशन पर आजकल तुम लगे हुए हो उसमें वह भी तो तुम्हारे साथ है ?"

"क – कौन . . . केकड़ा सर ?"

"वो फायरिंग, आवाजें और ये खून . . . सब उसी के गुल तो नहीं ?"

"न – नहीं सर, वो तो इस वक्त विला में होगा!"

"देखेंगे!" कहने के बाद वे शर्मा की तरफ बढ़ गये।

●

अविनाश रात के दो बजे अपने क्वार्टर पर पहुंचा।

बुरी तरह थका हुआ था वह। स्विच ऑन करने के लिये हाथ बढ़ाया कि –

"गुड मार्निंग जनाब !" अंधेरे में आवाज गूंजी।

अविनाश उछल पड़ा। आवाज पहचान लेने के बावजूद मुंह से निकला –"कौन ?"

जवाब में 'कट' की आवाज हुई।

राईटिंग टेबल पर रखा टेबल लैम्प ऑन हुआ।

केकड़ा का चेहरा साफ नजर आया।

चेहरा ही क्यों, समूचा वजूद नजर आ रहा था उसका। अविनाश की राईटिंग टेबल पर बैठे केकड़ा ने अपने दोनों पैर टेबल पर फैला रखे थे। दोनों हाथों के बीच में मौजूद वीडियो केसिट को अंगुलियों पर नचा रहा था।

"तुम यहां ?"

"शिमला समझौता करने आया हूं!"

"मतलब?" कहने के साथ अविनाश ने स्विच ऑन कर दिया।

कमरा ट्यूब की दूधिया रोशनी से भर गया।

केकड़ा के पोज में बाल बराबर फर्क नहीं आया। हल्की मुस्कान के साथ बोला – "यानी कम रोशनी में हम जंचे नहीं आपको?"

"रात के इस वक्त मेरे कमरे में तुम्हारी मौजूदगी का मतलब?" अविनाश गुर्राया।

"बताता हूं, दरवाजा बंद कर दो!"

अविनाश हिला नहीं, उसे घूरता रहा।

"बात आप ही के फायदे के लिये बकी है सर!" केकड़ा ने पैर मेज से हटा कर फर्श पर रखे – "नहीं जंची तो चौपट पड़ा रहने दो!"

अविनाश ने केसिट की तरफ इशारा करके पूछा – "ये क्या है?"

"ये!" अपने हाथ में दबी केसिट पर नजर गड़ाये केकड़ा कुर्सी से खड़ा हुआ और चहलकदमी शुरू करता बोला – "ये मेरे डायरेक्शन में बनी एक फिल्म है, देखोगे?"

"यहां वी. सी. आर. या वी. सी. पी. नहीं है।"

"कलर्ड टी. वी. भी नहीं है। होगा भी कैसे 'नजराना' तुम लेते नहीं?"

"मतलब की बात बोलो!"

"एक फिल्म तुम्हारे डायरेक्शन में बनी थी। वो रोमांटिक ज्यादा थी। एक्शन भी कम था, बल्कि था ही नहीं। ओपनिंग सीन में खिड़की पर पड़ा पर्दा सरकता है। कमरा सूर्य रश्मियों से भर जाता है। सुनीता की नजर एक पेंटिंग पर पड़ती है। अमित महाशय भी हड़बड़ा कर उठते हैं। पेंटिंग को देखते हैं और हल्ला मचाने लगते हैं। बस! इसके बाद पिछली बातें। पेंटिंग को उतार कर बाथरूम में ले जाना। फिल्म खत्म। इसके ठीक विपरीत एक फिल्म बंदे ने तैयार की है। सबसे पहली खूबी, डबल रोल वाली फिल्म है ये। एक्शन ही एक्शन। मारधाड़ ही मारधाड़। कैमरा आन होता है। एक शिकार गाह का बेसमेन्ट। बेसमेन्ट के ऊपर से पुलिस के भारी बूट्स की आवाजें। सबसे ऊपर वाली सीढ़ी पर बैठा विनाश छत से कान लगाये उन आवाजों को सुन रहा है। बेसमेन्ट के फर्श में मोखला पैदा होता है। दूसरा विनाश नजर आता है। उसका मकसद पहले विनाश को वहां से निकाल कर ले जाना है मगर दूसरा विनाश 'लल्लू' है। पट्ठा समझता ही नहीं। पुलिस छत तोड़ रही है। थ्रिल शुरू। लल्लू वाले विनाश का मर्डर। दूसरे विनाश का फूट-फूट कर रोना। यानी सेन्टीमेन्टस का टच। अंतिम सीन! लाश लेकर निकल जाना! दी ऐन्ड!"

"य - ये सब . . . ये सब!" अविनाश हकला उठा। आंखें फैली हुई थीं – "ये सब तुम्हें कैसे पता?"

"सॉरी! भूल गया था। कैमरा दुछत्ती में फिट है।"

"व - वहां तुम कब और कैसे जा दुबके?" अविनाश ने पूछा – "क्या विनाश ने . . .

"शूटिंग उसकी इजाजत से चल रही थी।"

"मतलब?"

"स्क्रिप्ट की पृष्ठभूमि समझानी पड़ेगी!" केकड़ा ने कहा – "रंगमंच के दो आर्टिस्ट हैं। बाप – बेटे। बेटे की मां और बाप की बीवी कैंसर से ग्रस्त है। दोनों उसे बचाना चाहते हैं। पल्ले में पैसा नहीं। फरिश्ते के रूप में केकड़ा मिलता है। मरीज के इलाज के लिये सुनीता की गांठ से पैसा देता है। बाप को हरशरण बनाता है। बेटे को विनाश। विनाश का फेस मास्क अमेरिका से बन कर आया है। दोनों मेले में छोड़ दिये जाते हैं। हरिया के आस पास मंडराते हैं। बाकी काम खुद हो जाता है!"

"य - यानी जो मरा, वह विनाश नहीं था?"

"कोर्ट में ये बात सिद्ध न हो सकेगी, बहरहाल . . . मेरे पास फिल्म है यार।"

"म - मतलब?"

"अमर सिंह, अमित और सुनीता खुश हैं। मैं भी ऐसा दर्शाता हूं जैसे उन्हीं की तरह अन्जान हूं . . . मगर मुझे मालूम है। फेस मास्क और हरशरण वाला चक्कर कोर्ट में नहीं चलेगा। पहले तो फेस मास्क ही पकड़ा जायेगा दूसरे, इन्क्वायरी हरशरण द्वारा बताये गये गांव तक पहुंचेगी। मामला टांय-टांय फिस्स हो जायेगा। मेरा असली उद्देश्य लल्लू को कोर्ट में पहुंचाना नहीं बल्कि हुजूर के हाथों उसके कत्ल का शाट लेना है। सिच्वेशन क्रियेट करने के लिये एक तरफ अमर सिंह आदि के जरिये शिकारगाह में पुलिस पहुंचाता हूं। दूसरी तरफ सुखबीर बनकर हुजूर को फोन करता हूं। खुद जाकर दुछत्ती में छुप जाता हूं। विनाश बना आर्टिस्ट आपको फायर करने पर मजबूर कर देता है!"

"यानी मरने तक को तैयार हो गया वह?"

"अजी मरने को तो आजकल जानवर भी तैयार नहीं होता बंदापरवर।" केकड़ा ने कहा – "मंजे हुये कैमरा मैन की तरह दुछत्ती में फिट होने से पूर्व मैं उसे बता चुका हूं कि मैंने अविनाश के रिवॉल्वर से असली गोलियां निकालकर नकली गोलियां भर दी हैं। बकरे के खून से भरा एक गुब्बारा देता हूं जिसे फायर होते ही फोड़ते हुये उसे चारों खाने चित्त हो जाना है!"

"ल - लेकिन असल में मेरे रिवॉल्वर की गोलियां नहीं बदलीं।" अविनाश चीख पड़ा – "बिल्कुल ही निर्दोष नौजवान का मर्डर करा दिया तुमने?"

"किया आपने है जनाब।" केकड़ा पूरी तरह मस्त था – "खोपड़ी भिड़ायें, पहली बात तो ये कि इस केसिट के मुताबिक उस विनाश के हत्यारे आप हैं जिसकी हत्या के इल्जाम में अमित और सुनीता को फांसी पर लटकवाना चाहते हैं। मान लिया आप ये सिद्ध कर देते हैं कि मरने वाला विनाश नहीं, उसके मेकअप में काला चोर था – तब भी, केसिट बताती है कि आपने उसे विनाश समझ कर मारा। यदि विला में मारा गया विनाश, सचमुच विनाश था – आप नहीं थे तो विनाश को इस तरह कैद करने। भागे-भागे फिरने और अंत में उसका मर्डर करने की क्या जरूरत थी?"

"तुमने तो विमला वाली चाल चल दी थी, फिर ये . . ."

"वो चाल नहीं। 'को चाल' थी। केवल आपके दिमाग को उलझन में डालने हेतु ताकि विनाश के सामने आते ही आप यह सोच कर उसे खुर्दबीन से न देखनें लगें कि केकड़ा का कोई हथकंडा तो नहीं है। आपका दिमाग पहले ही विमला ने हिला रखा था। उधर, मैंने यह बात जहन में ठूंस दी कि बंदे ने विमला वाला खेल खेला है। अगर विमला अभी तक उस जाल में उलझी हुई है तो ये उसकी कमअक्ली है। उस स्टोरी में ऐसी कई विसंगतियां हैं जिन पर ध्यान दिया जाये तो सारी स्टोरी साफ-साफ बनावटी नजर आयेगी।"

केकड़ा के चुप होने पर कुछ देर के लिये सन्नाटा छा गया क़मरे में।

अविनाश ने पूछा – "अब क्या चाहते हो तुम?"

"केकड़ा ने अपने हित के अलावा कभी किसी का हित नहीं सोचा!" वह कहता चला गया – "अमित विनाश की हत्या के जुर्म में फांसी का फंदा चूमता है, चूमे – सुनीता जेल की चक्की पीसती है, पीसे – अमर सिंह बाल नोंचता फिरता है, फिरे – बंदे को इस चक्कर से निकाल। कोर्ट में सिद्ध कर कि केकड़ा ने रिश्वत के एक करोड़ तो क्या, एक दमड़ी तक नहीं ली!"

"ये कैसे सिद्ध हो सकता है?" अविनाश ने कहा –

"केसिट में उन्होंने साफ-साफ यह बात की है और तुम जानते हो, अदालत पहली ही तारीख पर केसिट देख चुकी है!"

"मेरे बारे में अमित और सुनीता ने जो बातें कीं वे गलत- फहमी का शिकार होकर कीं।"

"मैं समझा नहीं!" अविनाश के मस्तक पर बल पड़ गये।

"उस रात नाईट ड्यूटी पर सब इन्स्पैक्टर सरफराज तैनात था। सबसे पहले घटना स्थल यानी विला में वही पहुंचा, लाश की जेब से मैडिकल रिपोर्ट बरामद की। सब कुछ समझ गया। अमित और सुनीता पैरों में पड़ गये। बचाने की गुहार की। सरफराज ने कहा – 'मैं सब इन्स्पैक्टर हूं। मेरे किये कुछ नहीं होगा। इन्स्पैक्टर साहब को खुश करना पड़ेगा और केकड़ा साहब एक करोड़ से कम में खुश नहीं होंगे' – अमित और सुनीता सहमत हो गये। मैडिकल रिपोर्ट सरफराज ने अपनी जेब में सरकाई। बोला – 'साहब से इस बारे में तुम कोई बात नहीं करोगे। मैं खुद कर लूंगा। पैसा भी मेरे हाथ में दोगे' – अमित और सुनीता को काम होने से मतलब था – सो, इस बारे में केकड़ा से कोई बात नहीं की मगर समझते यही रहे कि केकड़ा ने एक करोड़ में ये काम किया। इसी गलतफहमी के तहत उन्होंने शिमला के होटल में वो डायलॉग बाजी की!"

"यानी अपनी करतूत सरफराज के मत्थे मंढ़ोगे?"

केकड़ा ने तत्परता पूर्वक कहा – "तुम्हारा अंकुर जिये!"

"ये कैसे साबित करोगे कि सरफराज ने तुम्हें कुछ नहीं दिया?"

"अजी हवा भी नहीं दी।" केकड़ा बोला – "ये बात कोर्ट में साबित करना बंदे का काम है।"

"सरफराज?"

"सफाई देने नहीं आ सकता, एक एक्सीडेन्ट में मारा जा चुका है बेचारा!"

"ओह!" अविनाश को मानना पड़ा कि केकड़ा का दिमाग बहुत तेज चलता है – "लेकिन अमित और सुनीता कोर्ट में ये बयान क्यों देने लगे?"

"ये भी मैंने बताया बर्खुरदार तो आप क्या करेंगे?"

"य – यानी?"

"मारा-मारी से भरपूर ये केसिट चाहिये तो ये तुच्छ काम आपको करना पड़ेगा।"

"आदमी ज़्यादा चालाक हो केकड़ा तो ओवर कान्फिडेन्स में गलती कर जाता है!"

सोचने वाले अन्दाज में सुकड़ गयीं केकड़ा की उबली हुई आंखें – "क्या गलती हो गयी हुजूर?"

"केसिट लेकर यहां आना क्या कम बड़ी गलती है?" कहने के साथ अविनाश ने रिवॉल्वर निकाल कर उस पर तान दिया!

केकड़ा ने उसी मस्ती में कहा – "ये हमारे बीच कहां से आ टपका सरकार?"

"क्यों?" अविनाश के होंठों पर मुस्कान फैल गयी – "इसके हमारे बीच न आने के बारे में कोई एग्रीमेन्ट था?"

"कुछ एग्रीमेन्ट अलिखित होते हैं जनाब!" केकड़ा ने कहा – "कुछ ऐसा ही एग्रीमेन्ट आपके और मेरे बीच था। दिमागी जंग छिड़ी थी हमारे बीच और दिमाग से ही एक दूसरे को मात देने का एग्रीमेन्ट था। दिमागी लड़ाई के बीच रिवॉल्वर निकालना 'फाउल' है – वैसे भी, इस किस्म के हथियार दिमागी जंग लड़ने वालों का बाल तक बांका नहीं कर पाते।"

"क्या कहना चाहते हो?"

"असली केसिट कहीं और है बंदापरवर, इसमें तो अमिताभ बच्चन ठुमके लगाता नजर आयेगा आपको!"

अविनाश ने झपटकर रिवॉल्वर के दस्ते का वार केकड़ा के चेहरे पर किया।

चीख के साथ राईटिंग टेबल से टकराता केकड़ा दहाड़ा – "फाउल!"

अविनाश की भरपूर ठोकर केकड़ा के पेट में पड़ी। पतला-दुबला कार्टूननुमा केकड़ा मुंह के बल फर्श पर गिरता चीखा – "अब तेरा अब्बा भी उस केसिट को कोर्ट में चलने से नहीं रोक सकता।"

●

विमला कोर्ट रूम में दाखिल हुई।

कक्ष में सनसनी फैल गयी।

अविनाश उछल कर खड़ा हो गया।

उसने काली साड़ी, काला ब्लाउज और काले ही सैंडिल पहन रखे थे। उस लिबास में उसका गोरा जिस्म, जहां से भी नुमाईयां हो रहा था, कुछ और गोरा लग रहा था। कांच की नीली गोलियों जैसी आंखों में सख्ती के भाव थे। चेहरे पर संगेमरमरी कठोरता। न्यायाधीश सहित सभी की आंखें विमला पर केन्द्रित थीं। अविनाश चाहता था, वह एक बार उसकी तरफ देखे। ऐसा हुआ भी। विटनेस बॉक्स की तरफ बढ़ती विमला ने एक नजर उस पर डाली और वह ऐसी नजर थी जो अविनाश का कलेजा भीतर तक चीरती चली गई। गुलाबी होंठों पर अपने लिये हिकारत भरी मुस्कान तैरती देखी थी अविनाश ने!

अविनाश हिल उठा, चीखा — "गवाही से पहले मैं पांच मिनट गवाह से बात करनी चाहता हूं योर ऑनर।"

"मुझे किसी से बात नहीं करनी मी लार्ड।" विटनेस बॉक्स में पहुंच चुकी विमला ने जख्मी सर्पणी की तरह पलट कर अविनाश की तरफ देखा। अविनाश के चेहरे पर याचना के से भाव थे।

मुल्जिम वाले कटहरे में खड़े केकड़ा के होंठों पर कुटिल मुस्कान रेंगी।

उम्मीद की किरन अमित और सुनीता के चेहरों पर भी मंडरा रही थी।

कक्ष में कमिश्नर साहब भी मौजूद थे।

न्यायाधीश ने कहा — "अगर गवाह नहीं चाहता तो उसे किसी से बात करने की इजाजत नहीं दी जा सकती!"

अविनाश कसमसा कर रह गया।

विमला की गवाही शुरू हुई और जब वह धारा प्रवाह पुलिस को दिया गया अपना बयान दोहराती चली गई तो

अविनाश और केकड़ा चौंके।

अमित और सुनीता के चेहरे बुझ गये।

दर्शक दीर्घा में बैठे अमर सिंह का चेहरा भभकने लगा था।

बयान देते वक्त विमला ने कई बार भेदभरी मुस्कान केकड़ा और अविनाश की तरफ उछाली थी।

अविनाश के चेहरे पर ऐसे भाव थे जैसे मौत के मुंह से अभी-अभी लौटा हो।

विमला ने वह वृतांत भी कह सुनाया जिसके परिणाम स्वरूप इंस्पैक्टर यादव का हश्र भी केकड़ा वाला ही होना तय था।

उसके चुप होते ही सरकारी वकील ने कहा – "योर ऑनर, चश्मदीद गवाह का बयान सुनने और इंन्स्पैक्टर अविनाश द्वारा खींची गई वीडियो फिल्म को देखने के बाद मेरे ख्याल से इस केस में कहने के लिये कुछ नहीं रह गया है। शीशे की तरह साफ है कि अमित और सुनीता ने मिस्टर खन्ना की जायदाद की खातिर . . ."

"सरकारी वकील साहब कूदकर इतनी जल्दी नतीजे पर न पहुंचें तो बेहतर है!" इन शब्दों के साथ अमित, सुनीता और केकड़ा का वकील उठा। पहले चोंगा दुरूस्त किया। फिर चश्मा और पुरजोर स्वर में बोला – "हालांकि मैं सैकड़ों सवाल करके सरकारी गवाह को घिघिया सकता हूं मगर इसकी जरूरत नहीं समझता। हां . . . एक फिल्म जरूर दिखाना चाहता हूं अदालत को – एक फिल्म सरकारी वकील ने पेश की थी, एक मैं पेश करता हूं मी लार्ड।" दहाड़ने जैसी आवाज में उसने एक वीडियो केसिट हवा में लहराने के साथ कहा – "ये है वो केसिट . . . वो केसिट जो चश्मदीद गवाह को ही नहीं, इन्स्पैक्टर अविनाश को भी बेनकाब कर देगी!"

केकड़ा मुल्जिम वाले कटहरे में सीना ताने खड़ा था।

अमित, सुनीता और अमर सिंह को मालूम नहीं था उस केसिट में क्या है?

खुली अदालत में केसिट चलाई गई।

और जब वह चली। न्यायाधीश चौंक पड़े। कमिश्नर

साहब उछल पड़े।

विमला का चेहरा फक्क।

कक्ष में मौजूद हर शख्स सांस रोके विनाश – अविनाश की फाईटिंग देख रहा था।

अमर सिंह, अमित और सुनीता के चेहरों पर जगमगाहट।

ऐसा सदमा लगा कोर्ट को कि फिल्म खत्म होने के एक मिनट बाद तक सन्नाटा छाया रहा।

"सरकारी वकील साहब के मुंह से जुबान हो तो बोल कर दिखायें मी लार्ड।" अमित आदि के वकील की आवाज मानो उसी कक्ष में नहीं, पूरी कचहरी में गूंज रही थी – "जरा बतायें तो सही कोर्ट को, किसने किया है विनाश का मर्डर और . . . वकील साहब को ही क्यों कहूं। जिसके मुंह में जुबान हो वो बोले। दुनिया के हर शख्स को चैलेंज है मेरा!"

"मुझे ये चैलेंज कबूल है वकील साहब!" एकाएक कोर्ट के दरवाजे से आवाज उभरी।

हर नजर स्वतः उधर घूम गयी।

हंगामा मच गया कक्ष में।

दरवाजे पर एक और अविनाश . . . या विनाश खड़ा था।

केकड़ा ने अपनी गुद्दी पर हाथ मारने के साथ कहा – "ये गोट भी गयी!"

कोर्ट में बैठे अविनाश के होंठों पर रहस्यमय मुस्कान थी।

न्यायाधीश के कई बार आर्डर . . . आर्डर कहने के बाद पुनः व्यवस्था कायम हो सकी।

"आपको जो कहना है, विटनेस बॉक्स में आकर कहें!"

वह आगे बढ़ा। जूतों की ठक . . . ठक के साथ विटनेस बॉक्स में पहुंचा।

न्यायाधीश ने पूछा – "आप विनाश हैं या अविनाश?"

"दोनों में से कोई नहीं सर!"

"मतलब?"

"मेरा नाम सुधीर है!" कहने के साथ उसने अपने चेहरे

से फेसमास्क नोंच लिया।

एक बार फिर कक्ष में हलचल मच गई।

पुनः मुश्किल से व्यवस्था कायम की जा सकी।

जज ने सवाल किया — "फेसमास्क लगाये क्यों घूम रहे हैं आप?"

"ये मास्क मुझे मिस्टर केकड़ा ने दिया है योर ऑनर।" एक बार शुरू होने के बाद सुधीर वही सब बताता चला गया जो केकड़ा ने स्वयं अविनाश को बताया था, बताने के बाद बोला — "मिस्टर केकड़ा का प्लान वह केसिट तैयार करके अदालत को धोखा देना था और वही ये कर रहे हैं!"

"तो तुम जिन्दा कैसे हो?"

"इसके लिये इन्स्पैक्टर अविनाश का शुक्रगुजार हूं!"

"क्यों?"

"मिस्टर केकड़ा ने इन्हें चकमा देने की कोशिश की जरूर लेकिन ये एक क्षण के लिये भी चकमा नहीं खाये।" सुधीर ने कहा — "गांव वाले भले ही मुझे विनाश समझ रहे थे लेकिन इन्होंने कमरे में घुसते ही ताड़ लिया कि मेरे चेहरे पर मास्क है!"

"कैसे ?"

"जवाब मिस्टर अविनाश दें तो बेहतर है!"

न्यायाधीश ने अविनाश की तरफ देखा।

अविनाश उठा और विटनेस बॉक्स में आकर बोला — "विनाश मर्डर केस की मैंने मुकम्मल इन्वेस्टिगेशन की है योर ऑनर, मुझे पक्के तौर पर मालूम था कि विनाश का मर्डर अमित, सुनीता और विमला के हाथों विला में हो चुका है। इस अवस्था में अपनी शक्ल के किसी आदमी को देखकर उसे विनाश मान लेने का सवाल ही न था। मुझे उसी समय शक हो गया कि यह बचाव के लिये छटपटा रहे दुश्मनों की कोई चाल है जब गोविन्द ने थाने में आकर विनाश के मिल जाने की सूचना दी। मैं ये जानने दौड़ा-दौड़ा गांव पहुंचा कि दुश्मन ने क्या चाल चली है। कमरे में घुसते ही मैं ताड़ गया कि चेहरे पर फेसमास्क है। सुधीर का सारा जिस्म पसीने से लथपथ था लेकिन चेहरे पर कहीं पसीना न था। होता भी कैसे, मास्क पर पसीना नहीं आया करता।"

कटहरे में अब तक किसी तरह खड़ा केकड़ा बैठता हुआ बोला – "जय सिया राम, जीना हराम।"

लोग सांस रोके अविनाश के आगे बोलने का इन्तजार कर रहे थे।

"कमरा बंद करके मैंने इसका फेसमास्क नोंचा। ये हतप्रभ रह गया। वो सब उगलना पड़ा जो अभी-अभी कोर्ट को बताया है। मैंने सोचा, कोर्ट के सामने केकड़ा की ये घिनौनी हरकत भी आनी चाहिये अतः सुधीर को केकड़ा के प्लान के मुताबिक काम करते रहने को तैयार किया। सुधीर को दिये गये आश्वासन के मुताबिक केकड़ा ने तो मेरे रिवॉल्वर में नकली गोलियां नहीं डालीं मगर, मैं जरूर डाल कर ले गया था। बकरे के खून से भरा गुब्बारा पेट की जगह सीने पर इसलिये रखकर फोड़ना पड़ा ताकि वीडियो फिल्म बनाते केकड़ा को यह न लगे कि वह सुधीर का खून नहीं बल्कि उसी के द्वारा बहकाने के लिये दिया गया बकरे का खून है।"

सारी बातों पर गौर करने के बाद न्यायाधीश ने कहा – "मुल्जिम जमानत का अनुचित लाभ उठाते हुये और जुर्म करते प्रतीत होते हैं अतः अदालत फैसले की तारीख तक के लिये जमानत रद्द करती है और मुल्जिमान को जेल भेजने का हुक्म देती है।"

●

"कोर्ट में जो कहा, उसे छोड़ो अविनाश!" सड़क पर दौड़ रही जीप की पैसेन्जर सीट पर बैठी विमला ने पूछा – "असल में तुम्हें कब पता लगा कि विनाश, विनाश नहीं है?"

"पहले तुम बताओ!" जीप ड्राइव करते अविनाश ने कहा – "केकड़ा की चाल को कब ताड़ीं?"

"जब फोन पर तुम्हारी आवाज सुनने के तुरन्त बाद इकबाल ने कहा यही वह आवाज है!" – विमला ने बताया – "इतना बड़ा सूरमा दुनिया में कोई नहीं होता जिसने पांच साल पहले केवल दो बार किसी की आवाज सुनी हो और उसे फोन पर सुनते ही पहचान ले। समझ गई, मेरे जहन में तुम्हारे प्रति जहर भरा जा रहा है!"

"उफ्फ . . . फिर वो नाटक?"

"दुश्मन को धोखे में रखने की ये अदा मैंने तुम्हीं से सीखी है!"

"ल – लेकिन . . . कम से कम मुझे तो विश्वास में ले लेतीं। अदालत तक में सांसें रोके रखीं मेरी!"

विमला खिलखिलाकर हंसी, बोली – "शेर को पता तो लगा कोई सवा सेर भी है!"

"लग गया देवी जी।" अविनाश भी हंसा – "पता लग गया कि आप मेरी ग्रेट पत्नी हैं!"

"अब तुम बोलो, कब ताड़े?"

"तहखाने में ले जाने के बाद!" अविनाश ने कहा – "वहां बहुत गर्मी थी लेकिन उसके चेहरे पर पसीना न देख कर मैं चौंक पड़ा!"

●

फैसले की तारीख!

कक्ष में छायी शान्ति से केवल न्यायाधीश की आवाज छेड़छाड़ कर रही थी – "वकीलों की बहस, प्राप्त सुबूतों और चश्मदीद गवाह पर गौर करने के बाद ये अदालत इस नतीजे पर पहुंची है कि अमित और सुनीता ने जायदाद के लालच और अपने रास्ते का रोड़ा समझकर विनाश की हत्या की। विनाश चूंकि विमला के पिता का हत्यारा था इसलिये विमला ने भी अमित और सुनीता की पूरी मदद की परन्तु अदालत उसे सरकारी गवाह बन जाने के कारण बाइज्जत बरी करती है। केकड़ा को एक करोड़ रूपया रिश्वत लेकर हत्या को आत्महत्या बनाने का प्रयत्न करने के जुर्म में दस साल की बामुशक्कत कैद का हुक्म देती है। अमित और सुनीता के साथ किसी किस्म की रियायत करने का अदालत के पास कोई कारण नहीं है अतः उन्हें फांसी . . ."

"नहीं . . . नहीं . . . !" दर्शक दीर्घा में बैठा अमर सिंह अचानक रिवॉल्वर निकालकर खड़ा होता हुआ गर्जा – "ये अन्याय है . . . जुल्म है . . . जिसकी हत्या के इल्जाम में मेरे बेटे और बहू को फांसी पर लटकाने का हुक्म दिया जा रहा है वह

अदालत में ज़िन्दा खड़ा मुस्कुरा रहा है।"

अविनाश की मुस्कान गहरी . . . और गहरी हो गयी।

"मैं इसे जिन्दा नहीं छोडूंगा।" अमरसिंह दहाड़ा – "मेरा बेटा नहीं तो ये भी नहीं . . . ये भी नहीं . . . ये भी नहीं!"

हर 'ये भी नहीं' पर दांत भींचे अमर सिंह ट्रेगर दबाता चला गया!

अविनाश उसकी तरफ पीठ करके खड़ा हो गया था।

पूरे छः धमाके हुये!

उसके बाद भी अमरसिंह क्योंकि ट्रेगर दबाता रहा इसलिये 'क्लिक . . क्लिक' की आवाज गूंजी।

तब कहीं जाकर आसपास मौजूद लोगों ने उसे दबोचा!

कक्ष में अफरा-तफरी मच गयी थी।

जो हुआ, पलक झपकते हो गया।

अविनाश उसकी तरफ घूमा, सामने वाले को जलाकर राख कर देने वाली मुस्कान के साथ बोला – "मुझे मालूम था तू ये बेवकूफी करेगा इसलिये बुलेटप्रूफ जाकेट पहन कर आया था।"

"तू जिन्दा है!" लोगों के बंधनों में मचलता अमर सिंह मानो पागल हो गया – "तू अभी तक जिन्दा है हरामजादे! कितनों को अपनी हत्या के जुर्म में फांसी पर चढ़ कर मरेगा?"

✸ समाप्त ✸

शुरू में आपको बिल्कुल नहीं लगा होगा कि 'लल्लू' इतने जबरदस्त षड़यंत्रों का मायाजाल है। हर नये उपन्यास में मेरा प्रयास एक नये 'प्लाट' को लेकर नये किस्म का उपन्यास लिखने का रहता है। कृपया निष्पक्ष लिखें, लल्लू आपकी इस कसौटी पर खरा उतरा अथवा नहीं?

वेद प्रकाश शर्मा
'तुलसी'
K 1264 शास्त्री नगर
मेरठ

'जिगर का टुकड़ा' से दुकान सजायें
प्रतियोगिता के विजेता

हमें अनेक बुकसेलर बंधुओं की सजी हुई दुकानों के फ़ोटोग्राफ्स मिले। फ़ोटुओं के आधार पर निम्न 31 बुकसेलर बंधुओं को पुरस्कृत किया जा रहा है।

1. सर्वोदय बुक स्टाल — जोधपुर — प्रथम पुरस्कार (ब्लैक एण्ड व्हाइट टी. वी.)
2. गणेश पुस्तक भंडार — भीलवाड़ा — द्वितीय पुरस्कार (कूलर)
3. शबनम बुक स्टाल — धुलिया — तृतीय पुरस्कार (टेप रिकार्ड)
4. महादेव मारुती भंडारे — औंगलेवाडी (महाराष्ट्र) (ब्रीफकेस)
5. जगत बुक स्टाल — नागपुर ''
6. स्वस्थ मेला एवं पुस्तक भण्डार — हिण्डन नदी ''
7. पी0 के0 बुक सेलर — गोहाटी ''
8. चोपड़ा बुक शॉप — लुधियाना ''
9. च्वाइस बुक सेन्टर — बेतिया ''
10. भारतीय पुस्तक भण्डार — भीलवाड़ा ''
11. गोपाल प्रसाद बुक सेलर — गया ''
12. कक्कड़ बुक कॉर्नर — फतेहाबाद ''
13. कक्कड न्यूज एजेन्सी — हिसार ''
14. ओ0 पी0 बुक स्टाल — उदयपुर ''
15. अरोरा बुक सेन्टर — फिरोजपुर सिटी ''
16. श्याम न्यूज एजेन्सी — बालाघाट ''
17. नेशनल बुक सेन्टर — बीकानेर ''
18. मलहोत्रा बुक डिपो — सहारनपुर ''
19. तिवारी न्यूज एजेन्सी — मारवाड़ जक्शन ''
20. राजकुमार बुक डिपो — अजमेर ''
21. प्रकाश न्यूज एजेन्सी — हल्द्वानी ''
22. सुभाष कॉमिक्स स्टोर — भटिण्डा ''
23. ओंकार वस्तु भंडार — गया ''
24. साबू कुमार अत्तारी — जसूर ''
25. आशाराम गुप्ता — चन्दोसी ''
26. नरेन्द्र बुक स्टाल — जम्मू तवी ''
27. प्रीतपाल सिंह — मोगा ''
28. स्वाति मैगजीन सैन्टर — रायपुर ''
29. जय श्रीराम बुक स्टाल — बहराइच ''
30. फ्रेन्डस बुक स्टाल — प्रधान नगर ''
31. अभाहान — सिलचर ''

उपरोक्त सभी परिश्रमी विजेताओं को उपरोक्त पुरस्कार भेजे जा रहे हैं। प्रथम, द्वितीय, एवं तृतीय पुरस्कार प्राप्त विजेताओं की सजीधजी दुकानों के कलर्ड फोटो "पारिवारिक तुलसी कहानियां" के जून 94 अंक में प्रकाशित किये जा रहे हैं।

का नया




Kashmir
JAMMU